प्राप्ति स्थान :

१. सम्यग् ज्ञान प्रचारक मंडल,
रामललाजी का रास्ता, जयपुर-३.

२. स्वाध्याय संघ कार्यालय,
घोड़ों का चौक, जोधपुर.

३. श्री साधुमार्गी जैन ज्ञान धार्मिक पाठशाला,
सीटी पुलिस के सामने, जोधपुर.

४. भण्डारी सरदारचन्द एण्ड सन्स
पुस्तक विक्रेता
त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर.

卐

मूल्य : कच्ची जिल्द ६.५० रु० मात्र (ज्ञान खाते)
पक्की जिल्द ८.५० रु० मात्र ,,
(प्लास्टिक कवर सहित)

卐

द्वितीयावृत्ति : २००० श्री वीर सम्वत् २५०
दिसम्बर १९७४ विक्रम सम्वत् २०३१

卐

मुद्रक :
प्रदीप प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
घास मण्डी बाजार, जोधपुर (राज०).
फोन : 22172

प्रकाशकीय—

भगवान महावीर स्वामी के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के पुनीत अवसर पर स्वाध्याय स्तवनमाला का प्रकाशन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मंडल को हार्दिक प्रसन्नता है।

स्वाध्यायी श्रावकों, सामायिक के साधकों, शिविरार्थियों धार्मिक शाला के बालक बालिकाओं तथा नवयुवकों आदि प्रत्येक जैन व जैनेतर के लिये भी इस उपयोगी स्तवनमाला के संग्राहक हैं स्वाध्याय संघ जोधपुर के संयोजक सुश्रावक श्री संपतराजजी डोसी। श्री डोसीजी स्वयं एक अच्छे तत्वज्ञ, चर्चा रसिक श्रमणोपासक एवं प्रबल उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। स्वाध्याय संघ की गतिविधियों के प्रचार प्रसार में आप पूरी लगन से जुटे हुए हैं। स्वाध्यायियों के ज्ञान, दर्शन, आचरण व वक्तृत्व कला आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहे इसके लिये भी आप स्वाध्याय केन्द्रों, स्वाध्यायी शिविरों का संचालन एवं उपयोगी साहित्य का प्रकाशन आदि विविध उपायों में प्रयत्नशील हैं। वक्ताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी यह संग्रह भी आपके प्रयत्न का ही सुफल है।

प्रस्तुत संग्रह का प्रथम संस्करण डोसीजी के व्यक्तिगत प्रयत्नों से स्वाध्यायी श्रावकों व पाठकों के समक्ष गत पर्यूषण पर्व के पावन प्रसंग पर पहुंच चुका हैं। तीन माह में ही सारी पुस्तकों की समाप्ति एवं इसकी प्रबल मांग पुस्तक की आवश्यकता, उपयोगिता एवं लोकप्रियता का प्रमाण है। मण्डल को पुस्तक के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है। इस संस्करण में कुछ कम उपयोगी स्तवनों के स्थान पर ४० अत्यन्त उपयोगी नई रचनाएं और जोड़ी गई है।

स्तवनों की अनेक पुस्तकों से चयनित यह संग्रह कई पुस्तकों का कार्य कर सकता है। अतः समाज के उदार दानी मानी सज्जनों से निवेदन है कि सम्यग् ज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु धार्मिक शिविरों, स्वाध्यायियों, प्रचारकों आदि के माध्यम से गांव २ व घर २ में इसके अमूल्य अथवा अर्ध मूल्य में वितरण कराने में, जिससे सभी क्षेत्रों में प्रार्थना, स्वाध्याय व सामायिक आदि प्रवृत्तियां चालू कराने में सहायक हो सके, अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग कर सहयोग प्रदान करें।

चन्द्रराज सिंघवी
मंत्री
सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर।

संग्राहक की कलम से—

भारतवर्ष में सैकड़ों ग्राम व नगर प्रति वर्ष सन्त महासतियों के चातुर्मासों से वंचित रहते हैं। मुनिराजों व महासतियों की संख्या की अल्पता के कारण तथा आहार विहार आदि की अनेकों मर्यादाओं के कारण उनका पदार्पण मद्रास, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, बंगाल आदि अनेकों प्रान्तों में प्रायः नहींवत हो पाता है। इस कारण ऐसे क्षेत्रों को सम्भाले रखने का दायित्व श्रावक वर्ग पर विशेष आ जाता है। पर्वाधिराज पर्यूषण के अवसर पर श्रद्धालु व जानकार श्रावकों द्वारा सेवाएं देकर इन क्षेत्रों का यतकिंचित रक्षण स्व० स्वामीजी श्री पन्नालालजी म० सा० एवं प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर १०८ श्री हस्तीमलजी म० सा० की दीर्घ दृष्टि व सदुपदेशों का ही सुफल हैं।

गत चार वर्षों से मेरे को भी इस सेवा की लड़ी में एक कड़ी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनुभव से साधारण श्रोताओं, नवयुवकों, महिलाओं तथा बालक बालिकाओं को धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए संगीत कला का भी महत्व महसूस हुआ। पर्वाधिराज पर्यूषण के अवसर पर सेवा देने हेतु बाहर जाते समय

हर वर्ष संगीत की अनेको पुस्तकें भी साथ ले जाने की आवश्यकता महसूस हुई तथा इसके अलावा भी अनेकों पुस्तकें सुलभता से सभी स्वाध्यायियों के लिये प्राप्त भी होना सम्भव नहीं था। यही कठिनाई इस प्रकार के संग्रह करने व छपवाने का प्रमुख कारण बनी। गत पर्यू षण पर ही इसका पहला संस्करण निकला। सभी स्वाध्यायियों को तो यह संग्रह विशेष उपयोगी लगा ही साथ ही अनेकों श्रावक संघों, धार्मिक पाठशालाओं, स्वाध्यायी तथा शिक्षण शिविरों में भी इसकी आवश्यकता व उपयोगिता समान रूप से महसूस की गई।

प्रस्तुत संग्रह में महापुरुषों के प्रेरणास्पद जीवन चरित्र, शिक्षाप्रद कथानक, सरस एवं सुन्दर प्रार्थनाएं, दुर्व्यसन त्याग के मार्मिक पर सरल उपदेश, रोचक संवाद, छोटी २ स्तुतियां, कव्वालियां आदि भी सभी पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, देव, गुरु, धर्म, दान, शील, तप, भाव, क्रोध, मान, माया, लोभ, कुव्यसन, कर्मवाद, ईश्वरवाद, पर्यू षण, संवत्सरी आदि अनेकों विषयों पर मारवाड़ी, गुजराती, हिन्दी, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में पुरानी, नई, फिलमी आदि विविध तर्जों में रचित ३२५ रचनाएं संग्रहित की गई है।

प्रत्येक रचना को शीघ्र ढूंढ निकालने हेतु अनुक्रमणिका स्तवन की पहली गाथा या उसकी प्रचलित टेर के अनुसार वर्णानुक्रम से दी गई है। अनुक्रमणिका के बाद में प्रमुख २ विषयों के स्तवनों की पृष्ठ संख्याएं भी अलग से दी गई है। पुस्तक के अन्त में प्रत्याख्यानों के संकलन से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

प्रूफ देखने में विशेष सावधानी रखने पर भी व्यक्तिगत व सामाजिक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण, त्रुटियां रह जाना संभव है। आशा है पाठक इसके लिये क्षमा करेंगे। पाठकों से निवेदन हैं कि जिनके पास और भी सुन्दरतम रचनाएँ हों वो निम्न पते पर भेजने की कृपा करें ताकि उपयोगी लगने पर पुस्तक के द्वितीय भाग या आगामी संस्करण में ली जा सके।

पुस्तक की अच्छाई का सारा श्रेय इसमें संकलित रचनाओं के बनाने वालों को हैं जिनका आभार प्रदर्शन करना अपना पुनीत एवं परम कर्तव्य समझता हूँ। सभी कार्यकर्ताओं का, जिनका इस कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग रहा उनका भी आभारी हूँ।

भवदीय :

सम्पतराज डोसी

संयोजक :

स्वाध्याय संघ, जोधपुर।

अनुक्रमणिका

प्रत्याख्यान सूत्र

स्तवन

(अ)

(ख)

(झ)

(त)

(थ)

(द)

(फ)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(श)

(स)

(ह)

(अ)

प्रमुख २ विषयों के स्तवनों की पृष्ठ संख्याएँ

॥ मंगलाचरण ॥

(१)

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजलि नमं संति ।
तं देव-देव महियं, सिरसा वंदे महावीरम् ॥

अर्थः- जो देवों के भी देव है । जिनको देवगण अन्जलि जोड़े नमस्कार करते हैं, उन देव-देवों से पूजित भगवान महावीर स्वामी को सिर झुकाकर वंदन करता हूँ ।

(२)

एगो वि नम्मुकारो, जिणवर व सहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा ॥

अर्थः- जिनवर श्रेष्ठ श्री वर्द्धमान प्रभु को किया गया एक भी नमस्कार भक्त नर एवं नारी को भवसागर से पार कर देता है ।

(३)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥

अर्थः- अरिहंत भगवान इन्द्र से पूजित और सिद्ध मोक्ष में स्थित हैं। जिन-शासन की उन्नति करने वाले आचार्य और सिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़ने व पढ़ानेवाले पूज्य उपाध्याय तथा सम्यग्ज्ञान दर्शन चरित्र रूप रत्नत्रय के आराधक श्री संत मुनिराज ये पांचों परमेष्ठी प्रतिदिन हमारा मंगल करें।

(४)

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः।
वीरेणाभिहतः स्वकर्म-निचयो, वीराय नित्यं नमः॥
वीरा-त्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं-वीरस्य घोरं तपो।
वीरे श्री धृति-कान्ति-कीर्ति-निचयो,-हे वीर! भद्रंदिश॥

अर्थः- श्री वीर सब सुरेन्द्र एवं असुरेन्द्र से पूजित हैं। श्री वीर प्रभु को विद्वान सेवन करते हैं। श्री वीर ने अपने कर्म समूह का नाश किया है। उस श्री वीर को हमारा नमस्कार हो। श्री वीर भगवान से चतुर्विध तीर्थ की प्रवृति हुई। श्री वीर का कठोर तप है। वीर भगवान में श्री, धृति, कान्ति और कीर्ति का समूह विद्यमान है। ऐसे हे वीर भगवान! हमें भद्र कल्याण प्रदान करें। अर्थात् सन्मार्ग दिखलावें।

(५)

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

अर्थः-भगवान श्री वीर मंगल रूप है, श्री गौतम प्रभु मंगल है। स्थूलिभद्र आदि मुनीश्वर मंगल रूप है, जैन धर्म मंगल रूप हो।

(६)

तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्तिहराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिन, भवोदधिशोषणाय ।।

अर्थः-हे नाथ! त्रिभुवन की पीड़ा हरण करने वाले आपको नमस्कार हो। पृथ्वीतल के निर्मल भूषण आपको नमस्कार हो। त्रिभुवन के परमेश्वर, आपको नमस्कार हो। भवसागर को सुखाने वाले हे जिनेन्द्र, आपको नमस्कार हो।

(७)

अविनाशी अविकार, परमरस धाम है।
समाधान सर्वज्ञ, सहज अभिराम है।।
शुद्ध वुद्ध अविरुद्ध, अनादि अनंत है।
जगत सिरोमणि सिद्ध, सदा जयवन्त है।।

(८)

चौवीसमा महावीर शूरवीर महाधीर,
वाणी मीठी खाँड खीर सिद्धारथ नन्द है।

नागणी सी नारी जाण, घट में वेराग आण,
जोग लियो जग भाण छोडया मोह फंद है।

चवदह हजार संत, तार दिया भगवंत,
कर्मों का किया अन्त पाम्या सुख कंद है।

भणे कवि 'चन्द्रभाण' सुणो हो विवेकवान्,
महावीर धरियां ध्यान उपजे आनन्द है॥

॥ वीर हिमाचल से निकसी ॥

वीर हिमाचल से निकसी,
गुरु गौतम के मुख-कुण्ड ढ़री है।
मोह महाचल भेद चली,
जग की जड़ता सब दूर करी है॥
ज्ञान-पयोनिधि मांहि रली,
बहु भङ्ग तरङ्गनते उछरी है।
ता सुचि शारद गंग नदी,
प्रणमी अंजली निज शीश धरी है॥ १॥

ज्ञान सुनीर भरो सरिता,
सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।
कर्मज ब्याधि हरंत सुधा,
अघमैल हरंतशिवा कर मानी॥
वीर जिनागम ज्योति बड़ी,
सुरवृक्ष समान महा सुख दानी।

लोक अलोक प्रकाश भयो,
मुनिराज वखानत है जिनवानी ॥ २ ॥

शोभित देव विषे मघवा,
उडुवृन्द विषे शशि मंगल कारी ।
भूप समूह विषे वली चक्री,
पति प्रगटे वल केशव भारी ॥
नागन में धरणेन्द्र बड़ो,
चमरेन्द्र असुरन में अधिकारी ।
त्यों जिनशासन संघ विषे,
मुनिराजदिपे श्रुतज्ञान भंडारी ॥ ३ ॥

॥ छन्द ॥

कैसे करि केतकी कनेर एक कह्यो जाय,
आक-दूध गाय दूध अन्तर घनेर है ।
रीरी होत पीरी पर हूँस करे कंचन की,
कहां काग-वानी कहां कोयल की टेर है ।
कहां भानु तेज भयो आगियो विचारो कहां,
पूनम को उजारो कहां अमावस अन्धेर है ।
पक्ष छोड़ि पारखी निहारो नेक नीगे करि,
जैनवैन और वैन अन्तर घनेर है ॥ ४ ॥

वीतराग वानी साची मुक्ति की निशानी जानी,
सुकृत की खानी ज्ञानी आप मुख वखानी है ।

इनको आराधके तिर्या हैं अनन्त जीव,
ताकोही जहाज जान सरधा मन आनी है।
सरधा है सार धार सरधा से ही खेवो पार
श्रद्धा विन जीव ख्वार निश्चै कर मानी है।
वाणी तो घनेरी है पर वीतराग तुल्य नाहिं,
इसके सिवाय और छोरां सी कहानी है ॥ ५ ॥

॥ दया सुखांरी बेलड़ी ॥

दया सुखांनी बेलड़ी, दया-सुखांनी खाण।
अनंता जीव मुक्ते गया, दयातणां फल जाण ॥ १ ॥

हिंसा दुखनी बेलड़ी, हिंसा दुखनी खाण।
अनंता जीव नरके गया, हिंसा तणा फल जाण ॥ २ ॥

जिम सुणो तिम ही करो, तो पहुँचे निरवाण।
कईएक हृदय राखजो, थांने सुण्यांरों परमाण ॥ ३ ॥

साधु भाव समचे कह्या, मत कोई करजो ताण।
कईएक हृदय राखजो, थांने सुण्यांरों परमाण ॥ ४ ॥

॥ षट द्रव्य की सज्झाय ॥

षट द्रव्य ज्या में कह्यो भिन्न भिन्न, आगम सुणत वखान।
पंचास्तिकाया नव पदारथ, पांच भाख्या ज्ञान ॥ १ ॥

चारित्र तेरे कह्या जिनवर, ज्ञान दर्शन प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ।।२।।

चौवीस तिर्थंकर लोक मांही, तिरण तारण जहाज।
नव वासु नव प्रति वासुदेवा, बारे चक्रवर्ती जाण ।।३।।

बलदेव नव सव हुआ त्रैसठ, घणा गुणारी खाण।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ।।४।।

चार देशना दिवीओ जिनवर, कियो पर उपकार।
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत, चार शिक्षा धार ।।५।।

पांच संवर जिनेश्वर भाख्या, दया धर्म प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ।।६।।

और कहां लग करू वर्णन, तीन लोक परमाण।
सुणत पाप विनाश जावे, पावे पद निरवाण ।।७।।

देव विमाणीक मांहे पदवी, कही पांच परधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ।।८।।

।। अगर जिनदेव के चरणों में ।।

अगर जिनदेव के चरणों में, तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से, तेरा उद्धार हो जाता ।। टेर ।।

न होती जगत में ख्वारी, न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता....अगर ।।१।।

रोशनी ज्ञान की खिलती, दीवाली, दिल में लहलाती ।
हृदय-मन्दिर में भगवन् का, तुझे दीदार हो जाता....अगर ॥२॥

परेशानी न हैरानी, दशा बन जाती मस्तानी ।
धर्म का प्याला पी लेता, तो बेड़ा पार हो जाता....अगर ॥३॥

जमी का बिस्तरा होता, व चादर आसामां बनता ।
मोक्ष गद्दी पे फिर प्यारे, तेरा अधिकार हो जाता....अगर ॥४॥

चढ़ाते देवता तेरे, चरण की धूल मस्तक पर ।
अगर जिन देव की भक्ति में, मन इकतार हो जाता .. अगर ॥५॥

"राम" जपता अगर माला का, मनका एक भक्ति से ।
तो तेरा घर ही भक्तों के, लिये दरबार हो जाता....अगर ॥६॥

॥ अरिहन्त जय जय सिद्ध प्रभु जय जय ॥

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय ।
साधु जीवन जय जय, जिन धर्म जय जय ॥१॥

अरिहन्त मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल ।
साधु जीवन मंगल, जिन धर्म मंगल ॥२॥

अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम ।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम ॥३॥

अरिहन्त शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं ।
साधु जीवन शरणं, जिन धर्म शरणं ॥४॥

चार शरण दुःख हरण जगत में, और न शरणा कोई होगा ।
जो भव्य प्राणी करे आराधन, उसका अजर अमर पद होगा ॥

॥ अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर ॥

अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करें ।
क्षमा भाव से शान्ति धरकर, मीठा ही व्यवहार करें ॥१॥

सिद्ध प्रभु का शरणा लेकर, मान बड़ाई दूर करें ।
विनित भाव से छोटे बनकर, लघुता का व्यवहार करें ॥२॥

आचार्य का शरणा लेकर, झूठ कपट का त्याग करें ।
सीदा सादा रहना अच्छा, जीवन सारा सरल करें ॥३॥

उपाध्याय का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करें ।
जरूरत से जो ज्यादा लक्ष्मी, अपना क्या कल्याण करे ॥४॥

मुनियों के चरणों में गिरकर, अपना कुछ उद्धार करें ।
मूल कषायों को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करे ॥५॥

॥ अरे करले रे करणी ॥

(तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान् भगत)

मेरा मान न बन नादान, अरे करले रे करणी,
अरे करले रे करणी ।
तेरा होगा बड़ा रे कल्याण कि, एक दिन पायेगा तू निर्वाण ॥टेर॥

लाख चोरासी योनि भंवर में, समय अनन्त गंवाया ।
प्रबल पुण्य से दुःख उठाते, यह मानव तन पाया रे ।
अब चेत जरा रे इन्सान, थोड़ा तो करले धरम और ध्यान ।अरे।१।

भाई बहन मां बाप देख रे, तेरे ये नाति आठारा ।
मृत्यु आयेगी जब तेरे सिर, कोई न बचावन हारा रे ।
है काल बड़ा रे बलवान, घड़ी भर भजले जरा भगवान् ।अरे।१।

देह महल धन धान्य बाग में, मस्त बना मतवारा ।
मान जिसे रे कहे तूं मेरा, वह झूठा जगत पसारा रे ।
ओ चार दिनों के मेहमान, झोली में भरले जरा सामान ।अरे।३।

छोड़ अरे जंजाल जगत का, ले ले जिनन्द सहारा ।
तीन लोक में "पारस" कहता, धर्म ही तारणहारा रे ।
कर भाव शील तप दान, सुनले रे गुरु केवल फरमान ।अरे।४।

।। अरे सत्संग करने में ।।

अरे सत्संग करने में, तुझे क्यों शर्म आती है ।
बिना सत्संग के आयु, पशु मानिंद जाती है ।।टेर।।

तमाशा देखने रंडी का, महफिल बीच जाते हो ।
धर्म के स्थान के अन्दर, तुझे क्यों नींद आती है ।अरे।१।

करे लुच्चे की तूं संगत, पिलावे वो तमाखु भंग ।
फेर परनारी का परसंग, तो वो इज्जत घटाती है ।अरे।२।

अरे सत्संग बड़ा जां में, चश्म को खोल करके देख।
तिरे सत्संग से पापी, जिसकी गिनती न आती है।अरे।४।

अगर लाखों, करोड़ों का, करे पुण्य दान कोई है।
मगर लवमात्र की सत्संग, खास मुक्ति दिलाती है।अरे।५।

कहे यों चोथमल पुकार, सभी है झुठा ये संसार।
एक सत्संग जग में सार, भव सागर तिराती है।अरे।६।

।। अहो कृष्ण पियारा, वचन हमारा ।।

(तर्ज–माण्ड-म्हारी आंखड़ल्यारो प्यारो दुलारो)

अहो ! कृष्ण पियारा, वचन हमारा, सुनले कान लगाय ।।टेर।।
सदा सरीखो ना रहो रे, गेंद ज्यों पलटा खाय।
इन्द्र चन्द्र, नागेन्द्र को भी, देवे कर्म रुलाय ।।अहो।। १ ।

मदिरा योग से राज्य तुम्हारा, पल में होसी ख्वार।
नगरी सगरी देखत क्षण में, बल जल होसी छार ।।अहो।।२।।

तेरा खांडा से तेरा मरना, जरद कुमार के हाथ।
मरेंगे जा कोशाम्बी वन में, सुन गोपीयन का नाथ ।।अहो।।३।।

हाथी घोड़ा सब ही बलसी, जलसी भवन भण्डार।
महल महिलायत पुत्र मित्रगण, एक न चलसी लार ।।अहो।।४।।

सुनके कृष्णजी चिन्तातुर हो, पाया दुःख अपार।
नगर हमारा नहीं जले प्रभु, ऐसा कहो उपचार ।।अहो।।५।।

प्रभु फरमावे तप अखिण्डत रहे, जब तक नहिं जलाय ।
तपस्या क्षति सुर देखसी तव, नगर देसी जलाय ।।अहो।।६।।

धर्म दलाली करले जिनसे, हो जासी कल्याण ।
नरभव पाकर करणी करसी, भावी अम्मम पहिचान ।।अहो।।७।।

।। अरे सबसे खमाले रे ।।

(तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान्)

यह वैर विरोध विसार, अरे सबसे खमाले रे ।
अरे दिल से खमाले रे ।
है आज बड़ा त्योहार, करले रे भाई भाई से प्यार, अरे सबसे ।ध्रुव।

प्राणी मात्र है मेरे भाई, यह भाव न मन में लाया,
किन्तु सबसे नित्य झगड़ कर, उल्टा वैर जगाया रे ।
उल्टा वैर जगाया ।
रे यों करत व्यवहार, थोड़ा भी मन में किया न विचार ।अरे।१।

दीन दुःखी इन छह कायों की, पीड़ा नहीं मिटाई,
किन्तु उनका अव्रत रखाकर, पीड़ा अधिक बढ़ाई रे ।
पीड़ा अधिक बढ़ाई ।
रे समझ मूरख सरदार, कि इसका फल है नरक दरबार ।अरे।२।

मात-पिता और संत सती की, सेवा नहीं बजाई,
किन्तु उनका हृदय दुखाकर, करली करम कमाई रे ।
करली करम कमाई ।
अब एक यही आधार, विनय से करले क्षमा स्वीकार ।अरे।३।

आज पुण्य से नगर जयपुर, में संवत्सरी आई।
केवल कहते "पारस" सुन रे, जीवन में ला नरमाई।
जीवन में ला नरमाई।
अरे सफल बना त्यौहार, करले रे शत्रु-मित्र से प्यार ।अरे।४।

।। अवसर मत चूको ।।

अवसर मत चूको, मुक्ति रो मेलो, करलो प्रेम सूं ।।टेर।।
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, चार तीर्थ गुणगारी।
इनकी सेवा करो तिरो, भव सिन्धु रहो हुशियारी रे ।।१।।
।। अवसर मत० ।।

आगम वाणी सुण हो प्राणी, मिट जावे सब सांसा।
चारों गति में आवागमन का, हो रया अजब तमासा रे ।।२।।
।। अवसर मत० ।।

दया धर्म की गोठ करो नित, भांग भजन की पीदो।
नियम नशा की लाली लाकर, इण विध जुग जुग जीवो रे ।३।।
।। अवसर मत० ।।

होगा जो पुण्यवान जिन्हों को, यह मेला मन भावे।
दूजा मेला मांय जायने, गांठ का दाम गमावे रे ।।४।।
।। अवसर मत० ।।

कहे 'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य, सुण लेना सब भाया।
करी जोड़ अजमेर शहर में, सांवण महीने गाया रे ।।५।।
।। अवसर मत० ।।

॥ अविद्या प्रेतनी तेने द्वन्द कैसा मचाया है ॥

(तर्ज : अगर जिनराज के चरणों में)

अविद्या प्रेतनी तेने, द्वन्द कैसा मचाया है ।
भुला के सुपथ से चेतन, कुपथ माँही भ्रमाया है ॥टेर॥

सच्चिदानन्द प्रभु तज के, उपल पूजन चलाया है ।
गोरि-गोबर गधा घूरा, पेड़ पानी पुजाया है ।अ०।१।

पुत्र के काज बलि देना, महिष मेंढ़ा मुरग अज को ।
पति को छोड़ पर पति से, पुत्र लाना बताया है ।अ०।२।

भोग भोगी बने जोगी, दया की रीत जाने ना ।
भंग गाँजा चरस पी के, कहे आनन्द आया है ।अ०।३।

पुजाये कुगुरू ऐसे, जिन्होंके धाम धन दारा ।
तिन्हों का मूढ़ लोगों को, प्रगट झूठा खवाया है ।अ०।४।

पुत्र के पठन पाठन में, खरच कौड़ी नहीं करना ।
ब्याह में बेअरथ धन को, लुटाना तो सिखाया है ।।अ०।५।

दया में धर्म सब जग जाने, मूढ़ से मूढ़ भी माने ।
धरम के हेत हिंसा भी, करो ये ते सुनाया है ।अ०।६।

धर्म जो होय हिंसा से, फेर क्यों कर दया कीजे ।
ध्यान दे के लखो बुधजन, घोर अंधेर छाया है ।अ०।७।

सुगुरु श्री मगनमुनि ध्याई, कई 'माधव' अविद्या ने ।
धर्म का नाम ले ले कर, कर्म बंधन बढ़ाया है ।अ०।८।

।। आओ जैनों तुम्हें बताएँ, झाँकी जैनिस्तान की ।।

(तर्ज : आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ)

आओ, जैनों ! तुम्हें बताएँ, झांकी जैनिस्तान की,
भाव सहित सब मिल गुण गाओ, गाथा है महान की ।
वन्दे शासनम्, वन्दे शासनम् ।।टेर।।

कौशिक नाग डसा पग मे, फिर भी प्रभु बांवी से न टले ।
केवल करूणा खातिर नेमी, तोरण से मुंह मोड़ चले ।।
संकट में भी चन्दन बाला, प्रभु को पा हर्षाई थी ।
दीक्षा लेकर राजमती ने, सच्ची प्रीत निभाई थी ।।
आन न झुकने दी सीता ने, अपने शील महान् की ।।१।।

मेघ मुनि ने कष्ट सहन कर, भी जीवों को शरण दिया ।
गज सुकुमाल मुनि ने जलते, अंगारों को सहन किया ।।
धर्म रुची ने विष जैसे, कड़वे तुम्बे को खाया था ।
जम्बू ने आठों रमणी, वैभव सब ठुकराया था ।।
मुनि बनकर धन्ना ने करदी, कथनी सत्य जबान की ।।२।।

रक्षा हेतु शान्ति प्रभु ने, सारा तन भी तोल दिया ।
सत्य हेतु अर्हन्नक श्रावक, मरने को भी तैयार हुआ ।।

केवल न्याय निभाने खातिर, पद्मनाभ से कृष्ण लड़े ।
ब्रह्मचर्य के लिए सुदर्शन, हंसते हंसते शूली चढे ।।
खेमाशाह ने श्री संघ हित, सारी सम्पति दान की ।। ३ ।।

धर्म क्रान्ति हित धर्मसिंह ने, कब्रों में निवास किया ।
शासनयश हितधर्म दास ने, अनशन तक स्वीकार किया ।।
लोकाशाह ने ज्ञान बाण ले, यतियों का भ्रम जाल हना ।
केवल कहते पारस तू भी, अपना जीवन धन्य बना ।।
आओ जैनों ! हम सब मिलकर, नाद करें जयगान की ।। ४ ।।

।। आउखो टूटा ने सांधो को नहीं ।।

आउखो टूटा ने सांधो को नहीं रे, तिण कारण मती करो प्रमाद रे ।
जरा आया ने शरणो को नहीं रे, हिंसा टाली ने धर्म अराध रे ।।

कुटुम्ब कबीलो नारी कारणे रे, मूरख संचे बहुला पाप रे ।
चोर तणी परे छंडी जूरसी रे, सहसी इह लोक परलोक संताप रे ।।

धन गड़ियो रे लेणो लोक में रे, जाणे पीता लगहु बताय रे ।
जीभ थी नथी आवे बोलणो रे, रहि हु स मन री मन मांय रे ।।

ऊंचा चुणाया मन्दिर मालीया रे, दे दे धरती में ऊंडी नींव रे ।
एक दिन ऊवा छोड़ी चालसी रे, सुख दुख सहसी अपणो जीव रे ।।

चक्रवर्ती हलधर राणा केशवा रे, इम वलि इन्द्र सुरां रो नाथ रे ।
उगी उगी ने सगला आथम्या रे, जोयजो आ अचरज वाली बात रे ।।

जुगल्या रो तीन पल्ल रो आउखो रे, लम्बी ज्यांरी तीन कोस की काय रे।
कल्पवृक्ष पुरे दस जात रा रे, बादल जिम गया विरलाय रे।।

भगवंत चौवीसमा वर्धमानजी रे, शक्रेन्द्र बोल्यो इसड़ो वात रे।
स्वामी दोय घड़ी तो वढ़ावजो रे, जिम यह भष्म ग्रह टल जाय रे।।

वलता श्री वीर जिनंद ऐसी कहे रे, सुन रे शक्रेन्द्र म्हारी बात रे।
तीन काल में बात हुई नहीं रे, आउखो बधायो नहीं जाय रे।।

अथिर संसार तजि मुनि निसर्या रे, करता मुनि नवकल्पी बिहार रे।
भारण्ड पंखी को जेने ओपमा रे, न धरे ममता नेह लिगार रे।।

चारित्र पाले रूढ़ो रीत सु रे, देवे वली अपनो छंदो रोक रे।
तुरन्त विराजे मुनि मुक्ति में रे, यश लहे इह लोक परलोक रे।।

शब्द रुपादि में समता करो रे, मत करो कोई अहंकार रे।
चौथ ऋषिजी कहे जालोर में रे, सुत्र थी होज्यो मुझे निस्तार रे।।

।। आ चादर थारे कर्मों री ।।

(तर्ज : आ बावासा री लाडली, कठीने चाली रे.......)

आ चादर थारे कर्मों रो, कालो पड़ जासी रे।
हँस हँस ने क्यों बांधे पाप, याने कठे छुड़ासी रे।। ध्रुव ।।

ब्रह्मचर्य ने छोड़ आज क्यों, व्यभिचार में डोले रे,
असल रतन ने छोड़ अरे तू, पत्थर ने क्यों मोले रे।
हिवड़े री खिड़की खोल, नहीं तो दुखड़ो पासी रे।।१।।

सब सुं मीठो बोल जगत में, कड़वो क्यों तू बोले रे।
इमरत रे प्याले में तू क्यों, बून्द जहर री घोले रे।
भलो बुरो करियोड़ो थारे, आडो आसी रे ॥२॥

धर्म कर्म रो भरो खजानों, खर्च कियाँ नहीं खूटे रे,
मिटे कर्म जंजाल ओ झगड़ो, जनम मरण रो छूटे रे।
सुण 'वीर मण्डल' री बात, त्याग सुं मुक्ति पासी रे ॥३॥

॥ आछो आनन्द रंग बरसायो ॥

(तर्ज – अवधु सो जोगी गुरू मेरा)

आछो आनन्द रंग बरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ॥टेर॥
अरिहंत नमूं पद पहले, भव्य जीवां ने शिवपुर मेले।
लोकालोक को रूप बतायो ॥१॥

दूजे पद श्री सिद्ध ध्याऊं, कर जोड़ी ने शीश नमाऊं।
जनम मरण को दुःख मिटायो ॥२॥

आचारज पद तीजे सोहे, चारों तीरथ के मन मोहे।
ज्ञान ध्यान में चित्त रमायो ॥३॥

उपाध्याय मेरे मन भावे, कई सन्तों को ज्ञान भणावे।
जां की बुद्धि को पार न पायो ॥४॥

सर्व साधुजी गुण का दरिया, जाने पाप सहु पर हरिया।
मोंकु मुक्ति को पंथ बतायो ॥५॥

ये तो पांचों ही पद भज भाई, नित एक चित्त ध्यान लगाई।
कारज सिद्ध हुवे मन चायो ।।६।।

"नन्दलाल" मुनि गुणधारी, तस शिष्य कहे हितकारी।
मैं तो मांगलिक आज मनायो ।।७।।

।। आता आता ही श्वास रुक जाएगा ।।

जरा धर्म की गठरी बांधो, मोत मस्तक पे हो रही सवार है।
आता २ ही श्वास रुक जाएगा, इसका न कुछ एतवार है ।।

आने के वाद मौत कुछ भी न होगा, यों ही तड़फ मर जावोगे,
मन की मुरादें मन में रहेगी, पूरी न करने पावोगे।
बाँधो पानी से पहले पाल है, सुखी बनने का यदि खयाल है ।।१।।

कल पर धरम को विलकुल न छोडो, कल क्या पता क्या होजाए,
बदले में राज्य के वनवास हो गया, रघु भी समझने नहीं पाये।
औरों का फिर क्या सवाल है, प्रभु भक्ति ही जग में सार है। २।।

जीवन की जो पल है वीत जाती, वापिस न फिर वह आ सकती,
आती को पकड़ो जाने लगेगी, फिर तो न पकड़ी जा सकती।
धर्म करने का अवसर उदार है, प्यारे प्रभुजी ही तारनहार है ।।३।।

माता के तुल्य पर नारी को समझो, मिट्टी सा समझो तुम पर धन,
आत्मा के तुल्य सव जीवों को समझो, शिक्षा सुनाता है 'मुनि धन'।
ज्ञान सुनने का फिर यही सार है, कुछ ले लो तो बेड़ा पार है ।।४।।

॥ आतमा रे दाग लगाइजे मती ॥

आतमा रे दाग लगाइजे मती, उजली ने मेली बनाइजे मति । टेर ।

आतमा है थारी असली सोनो, सोने में खोट मिलाइजे मति । १ ।

आतमा है थारी अमृत कूंपी, अमृत में जहर मिलाइजे मति । २ ।

आतमा है थारी ज्ञान री दीवड़ी, फूंक मार इनने वुजाइजे मति । ३ ।

आतमा है थारी ज्ञानरी गुदड़ी, पापरी खोली तुं चढ़ाइजे मति । ४ ।

आतमा है थारी ज्ञानरी पावड़ी, मुक्ति चढी पाछो आइजे मति । ५ ।

॥ आतम दमवो रे प्राणियां ॥

आतम दमवो रे प्राणियां, आतम दमियां सुख थाय ।
परने दमियां दुखड़ो हुवे, या छे वीरनी वाय । १ ।

स्ववश जो आत्म ना दमे, परवश निश्चय दमाय ।
देखो जगना रे जीवड़ा, किण-किण विध से दुःख पाय । २ ।

सुखनी रे आशा करी-करी, हरतो परना तूं प्राण ।
सुख निश्चय इम ना मिले, भाखे त्रिजग भाण । ३ ।

जीमे भोजन जिम जहेर नो, धरी मूढ जीवणरी आश ।
तिम हीज मोह हिंसा थकी, वंछे सुखनी रे राश । ४ ।

कर्ता हर्ता सुख दुःख तणो, आतम मित्र अमित्र ।
भला भूंडा आचार ने, वर्त्यां होवे रे मित्र । ५ ।

दुःख वैतरणी नदी तणां, वली कूड सामली नो जोय।
आपे निश्चे दुर आतमां, जो पापे प्रवृति होय। ६।

नन्दन वन सम सुख सही, वली कामधेनु सम जोय।
तेहे आपे सु आतमा, रूड़ी रीते जो होय। ७।

दुर्दम दमवी निज आत्मा, अति उत्तम वलि जोय।
संयम तप से रे वश किया, वेहु लोके सुख होय। ८।

आप्त वाणी उर आण ने, धारे मुनि धर्म जेह,
तेह निश्चै शिव गति लहे, हूं पिण वंछू प्रभु एह। ९।

॥ आनन्द मंगल करूं आरती ॥

आनन्द मंगल करूं आरती, सन्त चरण की सेवा।
शिव सुख कारण विघ्न निवारण, पंच परमेष्टी देवा ॥टेर॥

प्रथम आरती अरिहन्त देवा, कर्म खपे तत् खेवा।
चौसठ इन्द्र करे तस सेवा, वाणी अमृत मेवा ॥१॥

बीजी आरती सिद्ध निरन्जन, भंजन भव-भव फेरा।
चिदानन्द सुख मिले अखण्डा, मिटे भवो भव फेरा ॥२॥

तीजी आरती श्री आचार्यजी, छत्तीस गुण गम्भीरा।
संघ शिरोमणि सोहे दिनमणि, दे हित बोध अनेरा ॥३॥

चौथी आरती उपाध्यायजी, भणे भणावे एहवा।
सूत्र अर्थ करे तत् खेवा, सेवा करे तस देवा ॥४॥

पंचम आरतो सर्व साधुजी, भारण्ड पंखी जेवा ।
महाव्रत पाले दूषण टाले, अविचल शिव सुख लेवा ॥५॥

भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्टी देवा ।
विनयचन्द मुनि गुण गावे, लेवा शिव सुख मेवा ॥६॥

गावे सीखे ने सुणे आरती, भविजन भाखे एहवा ।
तेह तणा पातिक टल जावे, नित उठ मंगल मेवा ॥७॥

॥ आँसूड़ा ढलकावे मारो आँखड़ली ॥

म्हारे आँगण आया, मत जावो महावीर ।
आंसूड़ा ढलकावे, म्हारी आंखड़ली ॥टेर॥

चंपा लुटगी में बिकयोड़ी, पग बन्धन बंधियोड़ा ।
म्हारो कौन सुणेला, दुनियां मांये महावीर ॥२॥

मात पिता सब सखियां छूटी, छूट्यो सब परिवार ।
थे तो दुखिया ने, मत ठुकरावो महावीर ॥३॥

आप पधारया मनड़ो हरख्यो, पण कांई पड़ गई चूक ।
म्हारे पगल्यां धरता ही, पाछा फिरिया महावीर ॥३॥

उड़द बाकला देख आप क्यों, पाछा फिर गया नाथ ।
मैं तो दुखियारी और, कांई लाऊँ महावीर ॥४॥

थां बिन दुखिया की सुणवाई, कौन करेला नाथ ।
मै तो पलकां सूं पूजूं, भगवान महावीर ॥५॥

जोधाणे में कियो चौमासो, कुमुद मुनि गुण गावे ।
सती चन्दना रा कारज, थे तो सारया महावीर ।।६।।

।। आशाओं का हुआ खातमा ।।

आशाओं का हुवा खातमा, दिल की तमन्ना धरी रही ।
बस परदेशी हुआ रवाना, प्यारी काया पड़ी रही ।ध्रुव।

करना करना आठ प्रहर ही, मूरख कूक लगाता है ।
मरना मरना मुझे कभी ना, लब्ज जबां पर लाता है ।।
लेकिन मरना ही होगा, नहीं झंडी किसी की गड़ी रही ।।१।।

एक पंडितजी पत्री लेकर, गणित हिसाब लगाते थे ।
सभी काल तेजी मंदी का, होनहार बतलाते थे ।।
आया काल चले पंडितजी, कर में पत्री पड़ी रही ।।२।।

एक वकील ऑफिस में बैठे, सोच रहे थे अपने दिल ।
फलां दफा पर बहस करूंगा, पॉईन्ट मेरा अति प्रबल ।।
इधर कटा वारंट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही ।।३।।

एक सेठजी बैठे दुकान पर, जमा-खरच खुद जोड़ रहे ।
कितना लेना कितना देना, यही तो हरदम सोच रहे ।।
काल बलि की लगी चोट जब, कलम कान पर टंगी रही ।।४।

जेन्टलमेन एक घूमन को, वक्त शाम के जाता था ।
पांच सात थे मित्र साथ में, बातें बड़ी बनाता था ।।
ठोकर लगी पड़े बाबूजी, बंधी हाथ में घड़ी रही ।।५।।

एक राजा का इलाज करने, डाक्टरजी तैयार हुए।
विचित्र दवा औजार इंजेक्सन, मोटर कार सवार हुए ॥
आया काल उलट गई मोटर, वक्स दवा से भरी रही। ६।

हा हा ! कितनी और सुनाऊँ, दुनिया की है अजव गति।
'चन्दन' आना ही जाना है, फर्क नहीं हैं पाव रत्ती ॥
नेक कमाई की है जिसने, उसकी ही वस खरी रही। ७।

॥ इजाजत दे माता ॥

जम्वू-इजाजत दे माता, लेसूं संजम भार ॥ टेर ॥
माता-इस्यों कांई दुख व्याप्यो, जम्वू राजकुंवार ॥ टेर ॥

जम्वू-भगवान् सुधर्मा स्वामी, आया वाग मांय जी ॥
माता-धन्य अहो भाग्य जो, कीनों पावन आय जी।
जम्वू-सुन के शुभागमन, गयो दरश तांयजी।
माता-धन्य ऐसे लाल को जो, धर्म को दिपायजी।
जम्वू-सुना वहां धर्म प्रचार ॥ इजाजत। १ ॥

माता-चित्त क्यों उदास, जम्वू ! कहो समझाय जी।
जम्वू-सुनके उपदेश माता ! वैराग्य मन भायजी।
माता-ऐसो कांई वोले, क्यों ? चित्त को दुखायजी।
जम्वू-झूठा है ससार माता ! संगी कोई नायजी।
माता-ओं काई करियो, विचार ? ॥ इसो कांई १ ॥

जम्वू-ममता को छोड के, आज्ञा देवो मायजी।
माता-इस्यो कांई दियो ज्ञान, गयो भरमांयजी।

जम्बू-वितराग वाणी, सुनी संजम मन भायजी।
माता-छोटा सू मोटो कियो, क्यों अब छिटकायजी।
जम्बू-है मतलब का संसार ॥ इजाजत ॥ ३ ॥

माता-राज पाट धन धाम, कमी कोई नायजी।
जम्बू-है सब बेकार, माता संग चले नायजी।
माता-संग आठ नार थारे, महलां के मांयजी।
जम्बू-दियो ज्ञान एक रात, दीनी समझायजी।
माता-संजम को छोड़, विचार ॥ इसो कांई····! ॥ ४ ॥

जम्बू-निश्चय लीनी धार, माता! संजम की मन मांयजी।
माता-एकाएकी लाल, बेटा ! छोड़ कठे जायजी।
जम्बू-छोड़ मोह जाल, किणरा बेटा किणरी मायजी।
माता-राज सुख भोग पीछे, लीजो संजम जायजी।
जम्बू-नहीं इण बातों में सार ॥ इजाजत....! ॥ ५ ॥

माता-संजम खांडे की धार, कहूं समझायजी।
जम्बू-आज्ञा देवो प्रेम से, तो मुश्किल कुछ नायजी।
माता-पञ्च महाव्रत पालणो, चलणो जीव बचायजी।
जम्बू-पांचों सुख समान, माता लेस्यु निभायजी।
माता-मैं भी हूं तैयार ॥ इसो कांई····! ॥ ६ ॥

जम्बू-पांच सो अरु सताईस, संग लागे आयजी।
माता-पिता पुत्र मांय संग-आठों नर धायजी।
जम्बू-संसार असार जाण, लीनी दीक्षा जायजी।

माता-"जीतमल" धन्य जम्बू, धन्य थांरी मांयजी ।
जम्बू-समझ झूठा संसार, लीनो संयम भार ॥७॥

॥ इण कालरो भरोसो भाई रे॥

इण काल रो भरोसो भाई रे कोई नहीं,
ओ किण विरिया माहे आवे रे ।

बाल जवान गिणे नहीं,
ओ सर्व भणी गटकावे रे ॥१॥

बाप दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावे रे ।
तो पिण घेंटा जीव ने, धर्म री वात न सुहावे रे ॥२॥

महेल मन्दिर ने मालिया, नदीय निवाण ने नालो रे ।
स्वर्गने मृत्यु पाताल में, कठियन छोड़े कालो रे ॥३॥

घर नायक जाणी करी, रिस्या करी मन गमती रे ।
काल अचानक ले चल्यौ, चौक्या रह गई झिलती रे ॥४॥

रोगी उपचारण कारणे, वैद विचक्षण आवे रे ।
रोगी ने ताजो करे, आपरी खवर न पावे रे ॥५॥

सुंदर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो रे ।
पाळ्या ढोलिए प्रेम सूं, जठे आण ने पहुँचो कालो रे ॥६॥

राज करे रलियामणो, इन्द्र अनूपम दिसे रे ।
बैरी पकड़ पछाड़ियो, टांग पकड़ने घीसे रे ॥७॥

वल्लभ बालक देखने, माडी मोटी आसो रे ।
छिनक मांहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो रे ॥८॥

नार निरखने परणीयो, अपछर रे उणियारे रे ।
सुवे उठ चलतो रह्यो, आ उभी हेला मारे रे ॥६॥

चेजा रे चित्त चुंप सूं, करी इमारत मोटी रे ।
पावडिए चढ़तो पडयो, खाय न सकियो रोटी रे ॥१०॥

सुरनर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहै निशंको रे ।
मुनिवर काल ने जीतिया, जिण दिया मुक्त मांहै डंको रे ॥११॥

किशनगढ़ माहे सिडमठे, आया सेखे कालो रे ।
रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो रे ॥१२॥

॥ इम समकित मन थिर करो ॥

इम समकित मन थिर करो, पालो निर अतिचार ।
मनुष्य जन्म छै दोयलो, भमतां जगत मझार ॥१॥

नर भव आर्य कुल तिहां, सुणवी जिनवर वाण ।
होय यथारथ सरदना, चउ अंग दुर्लभ जान ॥२॥

आरम्भ परिग्रह दोयए, तेइस विषय कषाय ।
जब तक पतला ना पड़े, नहिं समकित आय ॥३॥

आत्म १ लोक २ कर्म ३ क्रिया ४ शुद्ध वाद है चार ।
चितवतां समकित लहे, जीव जगत मंझार ॥४॥

जीव अमर शाश्वतो, तीन रत्न स्वभाव।
पर संयोगे उपजे, तस विषय कषाय। ५।

आतम सम छहकाय है, दुःख निरभिलाष।
परलोके परवश जायवो, जिन आगम साख। ६

संपति विपति सुखी-दुःखी, मूढ चतुर सुजान।
नाटक कर्मों का जानजो, जग नाना विधान। ७।

विन कीधा लागे नहीं, कीधा कर्मज होय।
कर्म कमाया आपणा, ते थी सुख दुःख होय। ८।

जीव अजीव बेहु मिल्या, खीर नीर ने न्याय।
आश्रव गुण के कारणे, ते थी बन्धन थाय। ९।

आश्रव हेतु है बन्धनो, शुभा शुभ दोय भेद।
कर्म थी पुण्य ने पाप है, मोक्ष तेहुनो छेद। १०।

संवर रोके आवतां, क्षीण तप ते होय।
तेहनो नाम छे निर्जरा, मोक्ष कारण दोय। ११।

पहलो त्रिक मन धारिये, ज्ञेय बीजी हेय।
तीजी उपादेय जानिये, इम समकित सेय। १२।

उपशम जेह कषाय नो, तेहनो शम अभिधान।
मोक्ष मार्ग नी चाहना सो सम्वेग प्रधान। १३।

होय उदास विषय में, जाणजो निर्वेद।
पर दुःख देख दुखी दया, ओ छे चौथो भेद। १४।

इह परलोक छता पणो, होवे आस्तिक भाव।
कृत कर्मों ना फल सहे, होवे पुण्य ने पाप। १५ ।

तर्क अगोचर सरधवो, द्रव्य धर्म अधर्म।
कोई प्रतीतें युक्ति, सु, पुण्य पाप से कर्म। १६ ।

तप चरित्र ने रोकवो, कीजे तस अभिलास।
श्रद्धा प्रतीति रुचि तिहु, जिन आगम साख। १७ ।

पथ १ धर्म २ जिय ३ साधु ४ है, सिद्ध ५ क्षत्र ६ जान।
एह यथार्थ जाणिये, संज्ञा दस विधि मान। १८ ।

जाति स्मृति अवधि आदिसो, उपजे बोध निसर्ग।
छद्मस्थ जिन उपदेश सो, पावे भविजन वर्ग। १६ ।

आदेश गुरु मुख सुन लहे, आणा रुचि ३ या होय।
पढ़तां सूत्र थी उपजे, सुत्र रुचि ४ सोय। २० ।

तेल सलिल के न्याय से, बोध बीज को साह।
ते तुम जांणो बीज रुचि ५; भाखे जिनवर नाह। २१ ।

अर्थ विचारे सुत्र के, अभिगम रुचि ६ सो जान।
सब गुण पर्यव भाव नय, इम विस्तारे ७ प्रमान। २२ ।

क्रिया रुचि ८ क्रिया विषे, उद्यम करता होई।
चारित्र में उद्यम किया, धर्म रुचि ६ हैं सोई। २३ ।

जाने कुदंसण ना ग्रहो, हंस सम प्रवीण।
संक्षेप रुचि १० सो जानिये, भाखे बुद्धि अहीन। २४ ।

चार अनंतानु वधिया, मिथ्या मोहनी मीस।
ए सब समकित को हणे, भाख्यो श्री जगदीश। २५।

देसे हणे जे मोहने, उपसम समकित जान।
क्षय उपसम इनको कह्यो, मिश्र उदय प्रमाण। २६।

उपसम क्षय छे सात नो, क्षय उपसम भेद।
चार अनंतानुबंधिया, निश्चय छे इह छेद। २७।

दर्शन एक दुहून को, क्षय उपसम शेष।
समकित मोहनी उपशमे, नियमा तिहुं लेख। २८।

वेदक में नियमा उदय, होई समकित मोह।
शेष छह प्रकृति उपशमे, अथवा पावे शोह। २९।

चार कषाय क्षय हुवे, दस दो उपशाम।
अथवा मीसा उपसमे पाँच पावे विराम। ३०।

ए नव विधि समकित कह्यो, जेह थी शिव सुख थाय।
क्षय १ उपसम २ दो भेद छे, ये ही चार थाय। ३१।

शंका १ कंखा २ कर रहित, वितिगिच्छा ३ तिहां नाय।
दिठ्ठी अमूढ ४ थिरीकरण ५, जिनमत के माय। ३२।

धर्म विषे उच्छाहना, तस उववूह ६ नाम।
वात्सल्य ७ प्रभावना, ८ ये आचार ना ठाम। ३३।

शंका संशय उपजे, सब देशी होई।
सर्वथो अनाचार देश थी, अतिचार है सोइ। ३४।

धर्म करतां मन धरे, देवादिक नी भीति।
अथवा लज्जा लोकनी, ये छे शंका रीति। ३५।

कंखा परमत वांछना, सब देशे होइ।
सर्व थी अनाचार देश था, अतिचार छे सोइ। ३६।

सहाय वांछे धर्म में, नर सुर थी कोय।
लब्ध्यादिक वांछा करे, ए पण कंखा जोय। ३७।

तप चारित्र ना फल विषे वितिगिच्छा संदेह।
साधु उपधि मलिन लखि, दूगंछा छे एह। ३८।

संसार कारज साधवा, परजुंजे धर्म।
सभी अतिचार उपजे, सम मोहनी कर्म। ३९।

पासत्थादि कुदर्शनी, जेह शिथिलाचार।
निन्हव जेय असाधु छै, एहनो परिहार। ४०।

इह प्रशंसे संथवे, अतिचार छे पंच।
समदृष्टि तुम जानजो, मत सेवजो रंच। ४१।

क्षण क्षण क्रोध करे, धर अति दीरघ रोष।
इह पर जगत सम्बन्धना कारण तप पोष। ४२।

निमिति करी अजीविका, एह थी असुरज थाय।
चार पदे संमोह छे, ते थी समकित जाय। ४३।

उन्मार्ग नी देशनां, पंथ विघ्न सुजान ।
गृही भाव विषय तरणा, काम भोग निदान ॥४४॥

अरिहन्त धर्म तथा गुरू, संघ अवर्णवाद ।
एह थी किल्विषता लहे, मिथ्या मद उत्पाद ॥४५॥

अपना गुरण पर अवगुरण, भूति कोतुकाकार ।
अभियोगी सुर जे हुवे, ते चार प्रकार ॥४६॥

कंदर्प की विकथा करे, भण्ड चेष्टा जान ।
चपलाई परिहास छै, ते थी कंदर्पी थान ॥४७॥

आरम्भ परिग्रह मोट को, पंचेद्रिय नी घात ।
निंद्य आहार नरक तरणा, हेतु चारे बात ॥४८॥

माया करे तस गोपवे, कूड़ा देवे आल ।
कूड़ा मापा तोल तो, तिर्यंच बंधे काल ॥४९॥

चारित्र दर्शन ज्ञान का, कीजिये अभ्यास ।
संगत कीजे साधुनी, जे रे जगथी उदास ॥५०॥

भ्रष्ट कुदर्शन की तजो, संगत यह व्यवहार ।
समकित ना तुम जाणजो, इम चार प्रकार ॥५१॥

अन्य मती तस देवता, चैत्य वंदे नांहि ।
राजा गण सुर गुरु वृती, सुबल छड़ी मांहि ॥५२॥

न्याय करे न्याय भाषा ही, न्याय की पक्षपात ।
न्याय विचारे मन धरे, लज्जा नीति की वात ॥५३॥

जाको वल्लभ न्याय है, न्याय ही को आचार।
न्याय ही सो सबही करे, वृति अथवा व्यवहार ।५४।

नौ तत्व जान १ सहाय न वांछे, डिगे नहीं देव अदेव डिगाये।
३ दोष विना धरे दर्शन ४ को जिन, सर्व अर्थ कर समझाये ।५५।

धर्म के राग रंग्यो हिरदे ६ अति. धर्म कहे आपस में मिलाये ७।
निर्मल चित ८ अभंग दुवार ९ अंते उर नाहि पर गृह जाये १० ।५६।

पोषध छह तिथि को करे ११ प्रतिलाभे शुद्ध साध १२।
ऐसे समदृष्टि तथा, श्रावक हैं आराध ।५७।

॥ इस घर से नाता तोड़ ॥

(तर्ज : जब तुम्ही चले परदेश)

इस घर से नाता तोड़, चली तूं छोड़।
भूल मत जाना, वहां जाकर यश कमाना। टेर।

सासू से कभी न लड़ना तूं, मुंह चढ़ा मौन मत रहना तूं।
है सामायिक अनमोल, तूं कर हर्षाना । वहां ।१।

ससुरे का मान सदा रखना, पतिदेव का नित्य विनय करना।
दासीवत रह कर, उनका हुक्म उठाना। वहां। २।

अभिमान न दिल में लाना तूं, सबको साता उपजाना तूं।
नोकर चाकर पर नहीं तूं, आंख दिखाना। वहां ।३।

हे शांति ! शांति से तूं रहना, नहीं कभी क्रोध आने देना।
आगे पीछे की सोच के, कदम उठाना । वहां । ४।

वहां जाकर नहीं लजाना तूं, कुल के नहीं दाग लगाना तूं ।
बस इसीलिये है, वार वार समझाना ।। वहां । ५ ।

मां वाप ने उनको जितलाया, रहना तूं धर्म पर सिखलाया ।
कहे 'नाथुराम' मुनि कर्तव्य सदा निभाना ।। वहां । ६ ।

।। इण शीलव्रत रो लावो जग में ।।

इण शील व्रत रो लावो जग में, सतियां ले गई रे । टेर ।

ब्राह्मी सुन्दरी दोनु बहना, दोनो ही अखंड कंवारी रे ।
आदिनाथ घर संयम लीनो, पहुँची मोक्ष मुजारी रे । इण० १ ।

चंदन वाला चोहटे बिकती, धन्ना सेठ घर लाया रे ।
महावीर ने आहार बेरायो, फिर वेरागण बनगई रे । इण० २ ।

गुफा माहे सिंह धडुक्यो, वन में हनुमत जायो रे ।
सती अंजना कष्ट सहयो, पर शील निभायो रे । इण० ३ ।

रामचन्द्र बनवास सिधाया, सीता ने रावण ले गयो रे ।
धीज करी सति संयम लीनो, अग्नि पानी हो गयो रे । इण० ४ ।

सती सुभद्रा कांटों काड्यो, सासू कलंक लगायो रे ।
काचा ताणा नीर निकाल्यो, खुल गई चंपा पोला रे । इण०५ ।

धात्री खण्ड का राय पद्मोत्तर, ले गया द्रौपदी नारी रे ।
रंग में राची शील में सांची, पांच पांडव की नारी रे । इण० ६ ।

नेम कंवर तोरण पर आया, राजुल लारे ले गया रे।

पशुवां की पुकार सुणी ने, चढ़ गया मोक्ष मुजारो रे। इण० ७।

कष्ट पड़्या सती शीलजो राख्यो, नाम अमर वो कर गई रे। इण० ८।

।। इम झूरे देवकी राणी ।।

इम झूरे देवकी राणी, या तो पुत्र बिना बिलखाणी रे। टेर।

मैं तो सातों नन्दन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे। १।

घर पालणो नहीं बंधायो, नहीं मधुर हालरियो गायो रे। २।

घुघरा चुखनी ना बसाई, झूंमर पिण नाहिं बंधाइ रे। ३।

नहीं गहणा कपड़ा पहिराया, नहीं झगल्या टोपी सिवाया रे। ४।

नहीं काजल आंख लगायो, नहीं स्नान करी ने जीमायो रे। ५।

नहीं गले दामणा दीधा, वलि चांद सूरज नहीं कीधा रे। ६।

नहीं स्तन पान करायो, रूठा ने नहीं मनायो रे। ७।

मै तो कड़िया नाहि उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे। ८।

घू घू कही नाहिं डरायो, नहीं गुद गुल्या से हंसायो रे। ९।

नहीं मुख पे चूम्बां दीधा, नहीं हरष बारणा लीधा रे। १०।

नहीं चक्री भँवरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद कसाया रे। ११।

मैं जन्म तणा दुख देख्या, गया निर्फल जन्म अलेख्या रे। १२।

मै पुरा पुण्य नही कीधा, तिण थी सुत विछड़ा लीधा रे। १३ ।

गले बे हाथ नजर है धरती, आँखे आँसू भर झूरती रे। १४ ।

पग वन्दन कृष्ण पधारे, माजी ने उदास निहारे रे। १५ ।

कहै अमीरिख किम दुख पावो, माताजी मुझ फरमावो रे। १६ ।

॥ उठ भोर भई टुक जाग सही ॥

उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु ।
अब नींद अविद्या त्याग सही, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। १ ।

जग जाग उठा तूं सोता है, अनमोल समय यह खोता है।
तूं काहे प्रमादी होता है, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। २ ।

ये समय नहीं है सोने का, है वक्त पाप मल धोने का।
अरु सावधान चित्त होने का, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। ३ ।

तूं कौन कहां से आया है, अब गमन कहां मन लाया है।
टुक सोच ये अवसर पाया है, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। ४ ।

रे चेतन चतुर हिसाव लगा, क्या खाया खरचा लाभ हुआ।
निज ज्ञान जमा तूं सम्भाल लिया, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। ५ ।

गति चार चौरासीं लाख रूला, ये कठिन २ शिव राह मिला।
अब भूल कुमार्ग विषे मत जा भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु। ६ ।

॥ उसी को मिलता है निर्वाण ॥

(तर्ज—कितना बदल गया इन्सान)

सम्यग् ज्ञानी, सम्यग् दर्शी सम्यग् संयमवान,
उसी को मिलता है निर्वाण ।
शास्त्र शास्त्र में स्थान स्थान पर बोल गये भगवान,
उसी को मिलता है निर्वाण ॥ टेर ॥

जीव तत्त्व है, जड़ से निराला, पुण्य शुभ्र है पाप है काला ।
संवर बांध है आश्रव नाला, बंध बध निर्जरा उजाला ॥
मोक्ष मुक्ति है, यों जो हो इन, नव तत्त्वों का ज्ञान । उसी को ।१।

देव वही जो अरिहंत हो, गुरु वही जो निरग्रन्थ हो ।
धर्म वही जो दयापूर्ण हो, शास्त्र वही जो जिन भाषित हो ।
जिस प्राणी की नस नस में, यों अटल भरी श्रद्धान । उसी को ।२।

पंच महाव्रत को स्वीकारे, या अणुव्रत ही अंगीकारे ।
जैसी शक्ति वैसा धारे, पर प्रमाद को दूर निवारे ।
सिद्ध साक्षी से निरतिचार जो, पाले प्रत्याख्यान । उसी को ।३।
केवल कहते 'पारस' सुन रे, सच्ची सीख हृदय में धर-रे ।
ज्ञाता दृष्टा व्रतधर बन रे, जिससे तेरा नर भव सुधरे ।
पूर्व पुण्य से तुझे मिला यह, मानव जन्म महान । उसी को ।४।

।। एक सौ आठ बार परमेष्ठी ।।

(तर्ज : कांहै मचावे शोर)

एक सौ आठ वार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।टेर।।
अरिहन्त कर्म शत्रु विजेता, त्रिजग पूजित तीर्थ प्रणेता ।
न राग-द्वेष विकार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।१।।

सिद्धों के सब कर्म खपे हैं, सारे कारज सिद्ध हुए हैं ।
ज्योति में ज्योति अपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।२।।

आचार्य पंचाचार पलाते, संघ शिरोमणि संघ दिपाते ।
सकल संघ रखवार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।३।।

उपाध्याय अध्ययन कराते, भ्रांति मिटाते ज्ञान वढ़ाते ।
द्वादशांग आधार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।४।।

साधु आत्मा अपनी साधे, महाव्रत समि त गुप्ति आराधे ।
त्याग दिया संसार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।५।।

पांच नमन सब पाप प्रणाशक, उत्तम मंगल विघ्न विनाशक ।
भव-भव शांति अपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।६।।

हममें भी तुम से गुण जागे, हम भी परमेष्ठी पद पावें ।
'पारस' हो भवपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।७।।

।। एक हाथ जीत है ।

(तर्ज : छुप छुप खड़े हो जरूर कोई बात है)

नर तन पाया, खुले शिव सुख द्वार है ।
एक हाथ जीत है, एक हाथ हार है ।टेर।

ममता बढ़ायेगा, मैल बढ़ता जायगा,
समता धारेगा त्यों ही, सच्चा सुख पायेगा-२
विषय नरक है, शील स्वर्ग सार है। एक। १।

क्रोध जगावेगा, जन्म बढ़ावेगा,
क्षमा को धारेगा त्यों ही, शीघ्र घटावेगा-२
सरलता में सार है, अभिमान भार है। एक। २।

हिंसा से तो जन्म, मरण दुःख पायेगा,
अहिंसा से आत्मा को, अमर बनायेगा-२
सत्य ही में सदा सुख, असत्य में ख्वार है। एक। ३।

राग और द्वेष, दो ही शत्रु कठोर है,
समभाव प्रेम पर ती, इनका नहीं जोर है-२
कलह में खार है, संप मांही सार है। एक। ४।

'जीत' अब तो जीत, केवल नाम से क्या जीत है,
तन, धन, जन, सब, स्वार्थ के मीत है-२
धर्म से प्रीत कर, निश्चय बेड़ा पार है। एक। ५।

।। ऐवंता मुनिवर नाव तिराई ।।

ऐवंता मुनिवर, नाव तिराई वहता नीर में।टेर।
पोलासपुरी नगरी को राजा, विजय सेन भूपाल।
श्री देवी के अंग उपना, ऐवंता कुमार। १।

बेले बेले करे पारणो, गणधर पदवी पाया।
महावीरजी की आज्ञा लेकर, गौतम गोचरी आयाजी। २।

खेल रहा था खेल कंवरजी, देखा गौतम आता।
घर २ मांहि फिरो हिंडता, पूछे इसरी वांताजी। ३।

असनादिक लेने के काजे, निर्दोषन हम बहरां।
उंगली पकड़ कुवर ऐवंता, लायो गौतम लारजी। ४।

माता देखी कहे पुन्यवंता, भली जहाज घर आणी।
हर्ष भाव धर निज हाथन से, वहराया अन्न पाणीजी। ५।

लारे लारे चल्या कंवरजी, भेट्या मोटा भाग।
भगवंता की वाणी सुनने, उपना मन वैरागजी। ६।

घर आवी माता सूं बोले, अनुमति की अरदास।
वात सुनी माता पुत्र की, मन में आई हांसजी। ७।

तू क्या जाने साधुपना में, बाल अवस्था थारी।
ऐसो उत्तर दियो कंवरजी, मात कहे बलिहारी। ८।

मोछव करीने संजम लीनो, हुआ बाल अणगार।
भगवंता का चरण भेटिया, धन ज्यांरा अवतारजी। ९।

वरसा काल वरस्या पीछे, मुनिवर ठंडिले जावे।
पाल बांध पानी में पातरा, नाव जान तिरावेजी।१०।

नाव तिरे म्हारी नाव तिरे यों, मुख से शब्द उचारे।
साधा के मन शंका उपनो, किरिया लागे थांरेजी।११।

भगवंत भाखे सब साधा से, भक्ति करो तेह दिल।
हीला निन्दा मती करो कोई, चरम शरीरी जीवजी।१२।

शासन पति का वचन सुनो ने, सबही शीश चढ़ाया।
ऐवंता की हुण्डी सिकरी, आगम मांहि गायाजी।१३।

संवत् उन्नोसे साल छेयालिस, भिल्लाड़ा सेखे काल।
'रतनचन्द्रजी' गुरू प्रसादे, गाई हीरालालजी।१४।

।। ओ मिनख जमारो पाय ।।

ओ मिनख जमारो पाय, लावो मै लेसांजी मैं लेसां। **टेर**।
मैं भी आवां थे भी आवो, धर्म ध्यान का झुण्ड जमावो।
धर्म जगत में सार, लावो मैं लेसांजो।१।

या तो म्हारी है पुन्यवानी,
सत् गुरू मिलिया कैसा ज्ञानी,
यारी आज्ञा ने सिर धार लावो मैं लेसांजी।२।

अनुकम्पा दिल में लावांला,
दुखियाने सूखी बनावांला,
वनपाया को यो सार, लावो मैं लेसांजी।३।

निंदा विकथा चुगली चोरी,
कीरण है जग में आ फोरी,
दुरगुण ने दूर निवार, लावो मैं लेसांजी।४।

दौलत दिल आनन्द आवेला,
संसार सुखी वन जावेला,
वरतेला जै जै कार, लावो मैं लेसांजी, मैं लेसांजी।५।

।। ओम शान्ति शान्ति शान्ति ।।

ओम शांति शांति शांति, सब मिल शांति कहो ।

विश्वसेन अचिरा के नन्दन, सुमिरिन है सब दुःख निकंदन ।
अहो रात्रि वंदन हो, सब मिल शांति कहो ।।ओम।।१।।

भीतर शांति बाहिर शांति, तुझमें शांति मुझमें शांति ।
सब में शांति बसाओ, सब मिल शांति कहो ।।ओम।।२।।

विषय कषाय को दूर निवारो, काम क्रोध से करो किनारो ।
शान्ति साधना यों हो, सब मिल शान्ति कहो ।।ओम।।३।।

शान्ति नाम जो जपते भाई, मन विशुद्ध हिय धीरज लाई ।
अतुल शान्ति उन्हें हो, सब मिल शान्ति कहो ।।ओम।।४।।

प्रातः समय जो धर्म स्थान में, शान्ति पाठ करते मृदु स्वर में ।
उनको दुःख नहीं हो, सब मिल शान्ति कहो ।।ओम।।५।।

शान्ति प्रभु सम समदर्शी हो, करे विश्व हित जो शक्ति हो ।
'गज मुनि' सदा विजय हो, सब मिल शांति कहो ।।ओम।।६।।

।। क्या तन माँजता रे ।।

क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना । टेर ।
माटी ओढ़न माटी पेरन, माटी का सिरहाना ।
माटी का तो महल बनाया, जिसमें भमर लुभाना । १ ।

माटी मांही जीव लुभाया, ज्यों दीवा में बाती।
बसती नगरी छोड़ चलेगा, कोई न होगा साथी। २।

धन भी जायगा तन भी जायगा, जावे मुल मुल खासा।
लाख मोहर की सूरत जायगा, जंगल होगा वासा। ३।

दस भी जीना बीस भी जीना, जीना वरस पचासा।
अंत काल का क्या विश्वासा, पण मरने की आसा। ४।

दस भी जोड़िया बीस भी जोड़िया, जोड़िया लाख पचासा।
अरब खरब बहुतेरा जोड़िया, संग चले नहीं मासा। ५।

दमड़ी सेती महल बनाया, तू जाने घर मेरा।
पकड़ काल जब झपट देयगा, होगा वन में डेरा। ६।

कंठी डोरा मोती पेरया, पेरी रेशम चोली।
कंदोरो सोनो को पेरयो, लेगा अन्त में खोली। ७।

।। कमला कर रहो लीला लहर ।।

कमला कर रही लीला लहर, प्रभु जब आये गर्भ के मांय।
आये गर्भ के मांय, जिनन्द जब आये गर्भ के मांय।१।

गर्भ प्रभावे धन्न धान्य, दोपद चौपद के मांय।
वृद्धि देख कर नाम कुवंर का, दीया श्री वर्द्धमान।२।

उष्ण ऋतु के प्रथम माह, अरु पक्ष दूसरे मांय।
त्रयोदशी को प्रभुजी जन्मे, शुभघड़ी पल मांय।३।

इन्द्र हुकुम से कुबेर देव ने, जृंभक लिया बुलाय।
हिरण्य सुवर्ण मणि माणक, सिद्धार्थ घर वर्षाय।४।

रत्न जटित दागिने आदि, और वस्त्र कई प्रकार।
बीज फूल फल द्रव्य सुगन्धित, पंच वर्ण दर्शाय।५।

साडा बार क्रोड़ वसुन्धरा, कहा लग कहु बयान।
तीर्थङ्कर की अजब छटा को, देख सभी हुलसाय।६।

आसन कम्पत छपन कुंवारी, हिल मिल सब ही आय।
शुचि कर्म कर मंगल गावे, निज २ देश रहाय।७।

शकेन्द्र भी शीघ्र आय, चरणों में शीश झुकाय।
पांच रूप कर शीघ्र प्रभु को, गिरी मेरू ले जाय।८।

एक इन्द्र उठावे लाल को, दूजा छत्र धराय।
तीजा चोथा चामर वींजते, मुख २ किरती गाय।९।

एक इन्द्र ले छड़ी हस्त में, प्रभुजी के आगे जाय।
सुरनर दिल नहीं हर्ष समावे, विध २ मंगल गाय।१०।

॥ कर्मों को दोष नहीं ॥

(तर्ज—गर्भी)

मैं पूरण पापी जीव, पाप का भागे।
कर्मों को दोष नहीं, दोष सभी है मांगे। टेर।

मैं बांध्या कर्म सो, उदय होन की रीती।
नहीं छोडे मूल और व्याज करे फजीती।
हूं हँस हँस लायो, कर्मों से कर्ज उधारो। कर्मों १।

जो पीवे भंग तो, लहर अवश्य ही आवे ।
जो करे चोरी तो, सजा निश्चय ही पावे ।
मेरी पापातम को, लाख लाख धिक्कारो । कर्मों । २ ।

केई भवों का लेणा, इत आई आगे ।
कर्मों का कर्ता जीव, अवे कहां भागे ।
हुं दुःख ही दुःख में, खोयो मिनख जमारो । कर्मों । ३

होणा सो तो हुआ, मीन नहीं मेखो ।
अरिहंत देव अब दया, दीन को देखो ।
श्रमण हजारीमल को, कर्ज उतारो । कर्मों । ४ ।

।। कपट मत कीजो रे ।।

कपट मत कीजे रे, २ थांने न्याय वात कहूं, सो सुन लीजो रे ।
कपट करो सीता को रावण, ले गयो लंका मांही रे ।
काम कछु न सर्यो जिसने, अपकीरति पाई रे । १ ।

तीजे अंग के चोथे ठाणे, फरमान जिनवर को रे ।
माया गूढ़ माया से आयुष, बांधे तिर्यञ्च को रे । २ ।

मल्लि जिन पूरव भव में, तपस्या में कपट कमायो रे ।
जयन्त विमान से चवी वेद, स्त्री को पायो रे । ३ ।

कपट करी कुड माप तोल कर, मन में अति सुख पावे रे ।
पावे सजा सरकार बीच, जब वो पछतावे रे । ४ ।

नर से नारी होय कपट से, नारी नपुंसक थावे रे।
गौतम पृच्छा मांही साफ, ज्ञानी फरमावे रे।५।

कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, कपट बुरो जग मांही रे।
उगणीसे अस्सी में जोड़, अजमेर बनाई रे।६।

॥ करम न छूटे रे प्राणिया ।

नाम ऐला पुत्र जाणिये, 'धनदत्त' सेठ नो पूत।
नटवी देखी ने मोहियो, नहीं लखियो घर नो सूत।१।

करम न छूटे रे प्राणिया, पूरव नेह विकार।
निज कुल छांडी रे नट थयो, न आणी शरम लिगार।२।

एक पुर आव्यो रे नाचवा, ऊँचो बांस विशेष।
तिहां राय आव्यो रे जोयवा, मिलिया लोक अनेक।३।

दाय पग पेहरी रे पावड़ी, बांस चढ्यो गज गेल।
निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवा रे खेल।४।

ढोल बजावे रे नाटवी, गावे किन्नर साद।
पांय घूंघरा घम घमें, गाजे अम्बर नाद।५।

तब राजिंद मन चिंतवे, लुभव्यो नटवी रे साथ।
जो नट पड़े रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ।६।

दान न आपे रे भूपति, नट जाणि नृप वात।
'हूँ' धन वंछू रे रायनों, राय वंछे मुज घात।७।

तब तिहां मुनिवर पेखिया, धन धन साधु निराग।
धग धग भिख्यारी जीव ने, इम पाम्यो वैराग। ८।

संवर भावे रे केवली, थयो करम खपाय।
केवल महिमा रे सुर करे, 'लब्ध विजय' गुण गाय। ९।

॥ कर्म गति भारी रे ॥

कर्म गति भारी रे २ नहीं टले कभी, सुणजो नर नारी रे। टेर।

कर्म रेख पर मेख धरे नहीं, देख कोई बलकारी रे।
शाह को रंक, रंक को करदे, छत्रधारी रे। १।

राजाराम को राज तिलक, मिलने की हो रही त्यारी रे।
कर्मों ने ऐसे करी भेजे, विपिन मझारी रे। २।

शीलवती थी सीता माता, जनक राज दुलारी रे।
कर्मों ने बनवास दिया, फिरे मारी मारी रे। ३।

सत्यधारी हरिशचन्द्र राजा ने, वेची तारा नारी रे।
आप रहे नित भंगी के घर, भरते वारी रे। ४।

सती अंजना को पिहर में, राखी नहीं लिगारी रे।
हनुमान सा पुत्र हुवा, जिनके बलकारी रे। ५।

खंदक जैसे मुनिराज की, देखो खाल उतारी रे।
गज सुखमाल सहा खीरा, समता उर धारी रे। ६।

।। करलो सामायिक रो साधन ।।

करलो सामायिक रो साधन, जीवन उज्जवल होवेला । टेर ।

तन का मैल हटाने खातिर, नितप्रति न्हावेला ।
मन पर मल चहू ओर जमा है, कैसे धोवेला । १ ।

बाल्यकाल में जीवन देखो, दोष न पावेला ।
मोह माया का संग कियां से, दाग लगावेला । २ ।

ज्ञान गंग ने क्रिया घुलाई, जो कोई धोवेला ।
काम क्रोध मद-लोभ दाग को, दूर हटावेला । ३ ।

सत्संगत और शान्त स्थान में, दोष बचावेला ।
फिर सामायिक साधन करने, शुद्धि मिलावेला । ४ ।

दोय घड़ी निज-रूप रमणकर, जग विसरावेला ।
धर्म—ध्यान में लीन होय, चेतन सुख पावेला । ५ ।

सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला ।
निज सुधार से देश जाति, सुधरी हो जावेला । ६ ।

गिरत गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला ।
करत करत अभ्यास मोह का, जोर मिटावेला । ७ ।

।। कभी भोगों से इस दिल को ।।

कभी भोगों से इस दिल को, सबर हरगिज नहीं आता ।
शहनशाह जो बने क्यों नी, सबर हरगिज नहीं आता । टेर ।

चाहे हो महल रत्नों का, सजी हो सेज फूलों की।
अप्सरा भी अजब सुन्दर, सबर हरगिज नहीं आता। १।

होके चक्री भले राजा, रखा सर ताज भारत का।
चले भी हुक्म लाखों पे, सबर हरगिज नहीं आता। २।

सजी पोशाक लगा इत्तर, बैठ कुर्सी पे सुन्दर संग।
गले हो हार मोत्यों का, सबर हरगिज नहीं आता। ४।

दूल्हा दुल्हिन के संग में, मिलाके दस्त आरस में।
घूमे कल्प वृक्ष की छाया, सबर हरगिज नहीं आता। ४।

त्रिखंडी नाथ भी कहला, हो मंडलिक राज्य अधिकारी।
स्वर्ग के भोग भो भोगे, सबर हरगिज नहीं आता। ५।

जवाहिर काम भोगों से, गया कोई न हो तरपत।
निजातम ज्ञान के प्यारों, सबर हरगिज नहीं आता। ६।

॥ कष्ट से मिनखा देह पाई ॥

कष्ट से मिनखा देह पाई, बेग प्रभु सुमरो रे भाई। टेर।

दुःख चोरासी में पायो, गति चारों ही भटकायो।
भटक के गर्भ मांय आयो, जीव तब अति ही दुःख पायो॥

।दोहा। उपर पग तले शीश है, रयो अंग लपटाय।
तामे दुख अपार है, कैसे वरणवे जाय।
शीश को चुटयो हो खाई। कष्ट॥ ? ॥

पवन तिहां लेस नहीं आवे, पीड़ा तस अगनी समथावे ।
अरज करतां से बतलावे, जीव प्रभु अति ही दुःख पावे ॥

। दोहा । अब के अवसर जीवतो, निकलूं गर्भ के बार ।
अष्ट पहर तुमही को सुमरूं, बिसरूं नहीं लगार ॥
वेग तुम काढ़ीसो सांई ।।२॥

कोल कर बाहर तूं आयो, आवतां प्रभुजी विसरायो ।
भयो जननी के मन भायो, तात सुणताई सुख पायो ॥

। दोहा । मात पिता परिवार ने, बहुत भयो आनन्द ।
बाजा गाजा बजे बहुत सा, नेको नेक चुकंत ।
ढूंढ ले भुवा चल आई ।।३॥

खेलन को वालक संग धावे, गरभ को सोच नहीं आवे ।
अवस्था तरुण होन आवे, अकल कुछ मन मा उपजावे ॥

। दोहा । मात पिता परिवार ने, गल मां घाल्यो फंद ।
अष्ट पहर तिरिया संग लागो, ज्ञान विसर गयो अंध ॥
बंध वे छूटन का नांहि ।।४॥

जवानी अद छक भी आई, फिरन तिरया के मन भाई ।
रह्यो सुन्दर गल लिपटाई, सुन्दर चोरी कर छिटकाई ॥

। दोहा । जुवानी का जोर मां, गिणतो किसी की नाय ।
अपनी को छिटकाय के, वो पर तिरिया के जाय ॥
धिरक नर तेरी चतुराई ।।५॥

मगन हो मन ही मन मांहि, जगत मा मां समान नाहीं ।
पागड़ी बांधत है डांई, निरख तो चालत है छांई ॥

। दोहा । जैसे मोती ओस का, तैसो है संसार ।
वीणसत वार जरा नहीं लागे, अंत करो निराधार ॥
जवानी ठहरन की नांई ॥६॥

अवस्था वृद्ध होन आई, हुक्म नहीं चाले घर मांहि ।
पड़यो पोलिमा विरलाई, माल सब आने घर लाई ॥

। दोहा । निज सुन्दर व्हाली हूती, सो ही टल टल जाय ।
सुख दुःख की पूछे नहीं, पड्यो पड्यो बोरलाय ॥
मौत अब आणे की नांई ॥७॥

बांध सांकल में ले जाई, चोर हाजिर रहे घर मांई ।
घरमराय बोले दुःख पाई, दुष्ट को नांखो नरक मांई ॥

। दोहा । नाखो कुंभीपाक में, उपर मुदगर मार ।
डंड ही डड मूढ़ सिर कूटो, यही देत है त्रास ॥
साय कोई करने को नांई ॥८॥

जीव फिर चौरासी जावे, देह घर घर के दुख पावे ।
भजन से सब दुःख टल जावे, संत जन सारा ही गावे ॥

। दोहा । संवत उगनीसो तीस मां, पोष वदी शुभ मास ।
शहर जावरे करी लावणी, पामे हरस हुलास ॥
श्रावकों सुणजो सब भाई ॥९॥

॥ काली ओ राणी सफल कियो ॥

काली ओ राणी, सफल कियो अवतार।
थे तो पामी छै, भलोदधि पार हो ॥टेर॥

कोणिक राय नी छोटी हो माता।
श्रेणिक नृप की नार।
वीर जिनन्द की वाणी सुनी ने,
लीनो संयम धार हो ॥१॥

चन्दनबाला जी जैसी मिली हो,
गुराणी के नित २ नमी चरणार।
विनय करी ने भणी अंग इग्यारे,
तेहनी निर्मल बुद्धि अपार हो ॥२॥

सुमति गुप्ति शुद्ध संयम पालत,
चढ़ी हो प्रणाम की धार।
आज्ञा लेइने सती निज गुरूणी की,
मांडी है तपस्या सार हो ॥३॥

शरीर शक्ति जाणी सती ने,
आराध्यो रत्नावली तपनो हार।
चार लड़ी सम्पूर्ण कीनी,
तेतो आठ में अंग अधिकार हो ॥४॥

पांच वर्ष तीन मास दो दिन,
कम लागो इतनो काल।

धन्य महासती तप आराध्यो,
तेहने वन्दना छै बारम्बार हो ॥५॥

आठ वर्ष कुल संजम पाल्यो,
कर्म किया सब छार।
जन्म जरा और मरण मिटायो,
पहुँची मोक्ष मुझार हो ॥६॥

"मुनि नन्दलाल" तणा शिष्य गायो,
शहर विलाड़ा मुझार।
ऐसी सती का सुमिरन सेती,
मुझ वरते मंगलाचार हो ॥७॥

॥ कांई रे गुमान करे अपणो ॥

(तर्ज – कांई रे मिजाज करे रसिया)

कांई रे गुमान करे अपणो, मान करेगो गुमान करेगो,
तो नीची गति माये जाय पड़ेगो ॥ कां ॥ टेर ॥

जोवन वय में तूं आंधी चाले,
तो दोय दोय छोगा उपर राले ॥ कां ॥ १ ॥

जोबन देखि ने जोम करे छै,
तो रूप देखि ने गर्व धरे छै ॥ कां ॥ २ ॥

धन देखीने मन में फूले छै,
तो मोह नदी रे मांहे झूले छै ॥ कां ॥ ३ ॥

इन्द्र नरेन्द्र ने चकरवर्ती,
ते पिण छोड़ चल्या सहु धरती।। कां ॥ ४ ॥

छप्पन क्रोड को नाथ कहातो,
ते पिण मूवो कौशांबी जातो ॥ कां ॥ ५ ॥

नहीं मिल्यो पाणी पावण वालो,
तो तुम गर्व धरी किम चालो ॥ कां ॥ ६ ॥

चौथी चक्री सन्त कुमारो,
जिण कियो रूपतणो अहंकारो ॥ कां ॥ ७ ॥

सोले रोग थया तत्कालो,
तो देख शरीर चिंते भूपालो ॥ कां ॥ ८ ॥

काची काया ने काची माया,
तो काचा हो सहू धंधा बनाया । कां ॥ ९ ॥

कुण जाणे मौत किसी विध आसी,
ओ घर छोड़ किसे घर जासी ॥ कां ॥ १० ॥

रामचन्द्र कहे गर्व न कीजे,
तो पर भव सेती डरतो रहीजे ॥ कां ॥ ११ ॥

॥ काया काची रे कर धर्म ॥

(तर्ज – वाह २ धुनसो वाजे रे)

काया काची रे, कर धर्म ध्यान मैं कहूं छूं सांची रे ॥टेर॥

देखी सुन्दर काया काची, इसमें तू रह्यो राची रे।
भीतर तो भंगार भरा है, लीजे जांची रे ॥ काया ॥ १ ॥

इस काया का लाड़ लड़ावें, मल मल स्नान करावे रे।
निरखे कांच में पेच झुका, पर नारी ताके रे॥ २॥

अतर फुलेल गुलाब रो फेरी, मुंछा वट लगावे रे।
केसर चंदन इतर लगा, मेला में जावे रे॥ ३॥

कंठी डोरा गोप गला में, काना मोती सोहे रे।
तन की हालत देख रीझ कर, मन में मोहे रे॥ ४॥

सियाला मैं सीरा वदाम का, गरमी में भाग ठंडाई रे।
चौमासा में माल मिठाई, खावे वागा जाई रे॥ ५॥

इष्ठ कंठ रतन करंडिया, जिम रखे शीत लग जावे रे।
चाहो जितना करो जापता, नहीं रहावे रे॥ ६॥

सनत कुमार चक्रवर्ती की, देखो देह पलटावे रे।
काया के वस वन काहे को, कष्ट उठावे रे॥ ७॥

इस काया का क्या विश्वासा, पाणी बीच पताशा रे।
होली जैसे देवे फूंक, जावे जव सांसा रे॥ ८॥

उत्तम नर की काया पाई, फेर मिले नहीं पाछी रे।
दया दान तप करनी करले, याही आछी रे॥ ९॥

उनीसे बहोतर बसंत पंचमी, बालोतरा के माई रे।
गुरू प्रसादे चौथमल, यह जोड़ बनाई रे॥१०॥

॥ कितना बदल गया इन्सान ॥

देख तेरे संसार की हालत, क्या हो गई भगवान।
कितना बदल गया इन्सान।
सूरज न बदला चाँद न बदला, ना बदला रे आसमान।
कितना बदल गया इन्सान ॥टेर॥

आया समय बडा बेढंगा, आज आदमी बना लफँगा।
कहीं पे झगड़ा कहीं पे दंगा, नाच रहा नर होकर नंगा।
छल और कपट के हाथों अपना, बेच रहा ईमान ॥ १ ॥

राम के भक्त रहीम के बंदे रचते आज फरेब के फंदे।
कितने है मक्कार ये अन्धे, देख लिये इनके भी धन्धे।
इन्हीं की काली करतूतों से, हुआ यह मुल्क मसान ॥ २ ॥

जो हम आपस में न झगड़ते, क्यों बने ये खेल विगड़ते।
काहे लाखों घर ये उजड़ते, क्यों ये बच्चे मां से बिछुड़ते।
फूट फूट क्यों रोते प्यारे बापू के ये प्राण ॥ ३ ॥

॥ कुमति संग छोड़ो ॥

(तर्ज—हो थांने जाणो २ जाणो जरूरी)

कुमति संग छोड़ो, छोड़ो छोड़ो छोड़ो छोड़ो रे।
सुमति संग जोड़ो, जोड़ो जोड़ो जोड़ो जोड़ो रे ॥
मानुष को भव दुर्लभ पायो, देव करे तेहनी आश।
मांग्यो मिले नहीं, मोल मिले नहीं, मिले तो करिये तलाश हो ॥१॥

रतन जड़ित की सुवर्ण चर्वी, चूल्हे दीनी चढ़ाय।
चन्दन वाले मांही खल रांधे, एहवो तू मत थाय हो ॥ २ ॥

करजदार पहले होई बैठो, फिर लावे करज उधार।
चुकाया बिन सूत्र सम्भालो, नहीं होगा छुटकार हो ॥ ३ ॥

जन जन सेती वैर वसावे, होय रह्यो अल मस्त।
पीपल पान ज्यों भान संध्या को, आखिर होवे अस्त हो ॥ ४ ॥

अब के जोग मिल्यो मत चूको, याद करोला फेर।
मुनि नन्दलाल तथा शिष्य गावे, जोड़ करी अजमेर हो ॥ ५ ॥

॥ कुण्डन पुरी में घर घर यशगान है ॥

(तर्ज—छुप २ खड़े हो जरूर)

कुण्डनपुरी में घर घर यशगान है,
जन्म कल्याण प्रभु जन्म कल्याण है।
होते ही जन्म सारी पाप नीति सो गई,
सारे ही संसार में शांति हो गई।
महापुरुषों की यही पक्की पहिचान है ॥ १ ॥

जन्म कल्याण की किर्ती जो छा गई,
देखने हजारों देव देवियां भी आगई।
तेरा तेज देख फिका हो गये विमान ॥ २ ॥

शंका ने घर देव दिल मे जमा लिया,
सारा सुमेरू अंगुठे से ही हिला दिया।
बल देख नाम दिया वीर भगवान है ॥ ३ ॥

साधकों में साधु कहलाये संसार में,
वाधकों को बन्ध किये अहिंसा के तार में।
पार कर पर घर पाये निर्वाण है ॥ ४ ॥

॥ कैसे कैसे श्री महावीर जिनके मुनिवर ॥

(तर्ज : जाओ जाओ ऐ साधु मेरे)

कैसे कैसे श्री महावीर जिन के, मुनिवर हुए महान् ॥ ध्रुव ॥

स्कंदक ने मिथ्या भव भ्रामक सन्यासी पन डारा।
जैन मार्ग में रंग गये ऐसे, फिर पीछे न निहारा। कैसे २....॥१॥

हितशिक्षा पर गोशालक ने, तेजू लेश्या डाली।
धन्य क्षमा दोनों मुनियों की, मृत्यु तक भी निभाली ।। कैसे....२ ॥२।

हाथी भव की करूणा सुनकर, बह गई आँसू धारा।
तज दो नयन मेघ ने सारा, देह विनय पर वारा ॥ कैसे....२ ॥३॥

घातक अनपढ़ अर्जुन मन में, ऐसी समता लाए।
छह महिनों में कर्म क्षय कर, अविचल शिव पद पाए ।। कैसे....२ ॥४॥

बालक एवन्ता ने मुनि बन, ऐसी करणी ठाई।
द्रव्य भाव दोनों ही नैय्या, अपनी पार लगाई ।। कैसे....३ ॥५॥

भोगी धन्ना ने दीक्षित बन, देह सुखाया सारा।
स्वयं वीर ने करी प्रशंसा, सर्व श्रेष्ठ अणगारा ।। कैसे....२ ॥६॥

सुपात्र दान दे मुनि सुबाहु ने, सुख विपाक फल पाया।
'पारस' ने यों अणगारों का, स्तुति मंगल गाया ।। कैसे....२॥७॥

॥ क्रोध मत कीजो रे ॥

(तर्ज—वाह २ धुनसो वाजे रे)

क्रोध मत कीजोरे, २ इण न्याय सुजान, क्षमा कर लीजो रे ॥
परदेशी नृप को रानी विष, मिश्रित आहार जिमायो रे ।
सवर करी सम भाव परो, सुर लोक सिधायो रे ॥ १ ॥

गज सुखमाल मुनिशमशाने, नेम ध्यान को लीनो रे ।
सिर पर आग सही, सोमिल पर कोप न कीनो रे ॥ २ ॥

खन्दक मुनि की खाल उतारन, भूप हुकम फरमायो रे ।
सञ्चित वेर चुकाय आप, मुक्ति पद पायो रे ॥ ३ ॥

कामदेवजो श्रावक अरण, उपसर्ग से चलिया नांही रे ।
दृढताई सुर देख गयो, अपराध खमाई रे ॥ ४ ॥

मेतारज मुनि गुणी आप, शुद्ध संजम में चित्त राख्यो रे ।
दया काज मर मिट्या, कुकट को नाम न दाख्यो रे ॥ ५ ॥

वीर प्रभु सुर नर तिर्यञ्च का, सह्या परषीह भारी रे ।
मेरु जिम रह्या अचल आप, समता दिल धारी रे ॥ ६ ॥

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, यही सिखामण खासा रे ।
उगणीसे अस्सी के साल, अजमेर चौमासा रे ॥ ७ ॥

॥ खबर नहीं है जग में पल की रे ॥

खबर नहीं या जग में पल की रे, खबर नहीं या जग में पल की ।
सुकृत करना हो सो करले, कुण जाणे कल की ॥टेक॥

या दोस्ती है जगत वास की, काया मंडल की । काया ।
श्वास उसास समरले साहिब, आयु घंटे पल की ॥ १ ॥

तारा मंडल रवि चन्द्रमा, सब है चलने की । सब ।
दिवस चार का चमत्कार जु, बिजली आभे की ॥ २ ॥

कूड़ कपट कर माया जोड़ी, करी बात छल की । करी ।
पाप पोटली बांधी सिर पर, कैसे हो हलकी ॥३॥

या जग है स्वपने की माया, जैसे बून्द जल की । जैसे ।
विणसतां तो वार न लागे, दुनियां जाय खल की ॥४॥

मात तात त्रिया सुत बंधव, सब जग मतलब की । सब ।
काया माया नार हवेली, ए तेरी कब की ॥५॥

मन मावत तन चंचल हस्थि, मस्ती है बल की । मस्ती ।
सद्गुरु अंकुश धरो शीश पर, चल मारग सत की ॥६॥

जब लग हंसा रहे देह में, खुशियां मंगल की । खुशियां ।
हंसा छोड़ चाल्या जब देही, मटिया जंगल की ॥७॥

पर उपकार समो नहीं सुकृत, घर समता सुख की । घर ।
पाप नहीं कर पापी पीड़न, हर हिंसा दुख की ॥८॥

कोई गोरा काला पीला, नयने निरखन की ।नयने ।
ए देखी मत राचो प्राणी, रचना पुद्गल की ॥६॥

अनुभव ज्ञान आत्मा खूबी, कर बातां घर की । कर ।
अमर पद अरिहंत कूं ध्याया, पदवी अविचल की ॥१०॥

दया धरम जिनेश्वर समरण, ए वातां सत की। ए वांता।
राग द्वेष उपजे नहीं जिनकूं, विनती अखपत को ॥११।

॥ खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा ॥

खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा जाय,
थांरी आज जयन्ती मनाऊंजी ओ।

चरण में ले लो मांने पार लगा दो,
मैं थांरा ही गुण गावां जी ओ ॥१॥

कुन्डलपुर में जन्मिया प्रभुजी,
मात तात हुलसाया जी ओ ॥२॥

चेत सुदि तेरस ने प्रभुजी,
सब जग खुशियां मनावे जी ओ ॥३॥

तीस वर्ष आयु में प्रभुजी,
राज पाट सब त्याग्या जी ओ ॥४॥

खुदरा करम काटण ने प्रभुजी,
जंगल में ध्यान लगाया जी ओ ॥५॥

बारे बरस बाद केवल ज्ञानी हुआ जी ओ,
अंतरयामी हुआ प्रभुजी तीन लोक पहचानिया जी ओ ॥६॥

तीस बरस लग घूम घूम कर,
जिनवाणी वरसाई जी ओ।

पावापुरी तो हो गई पवित्र,
प्रभुजी मोक्ष सिद्धाया जी ओ ।।७।।

याद रे बेगा अशोक मुनि की मति जाइजो ।।८।।

पुष्कर पुकारे आपरे आगे,
मानेई पार लगाईजो जी ओ ।खम्मा।।६।।

।। ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना ।।

ज्ञानबिन कभी नहीं तिरना, करो तुम अच्छी तरह निरना ।।

ज्ञान दया का मूल रूल यह, फरमाया वीतराग ।
ज्ञान बिना सोहे नहीं, ज्यूं हंस सभा में, काग ।। १ ।।

गृहस्थ धर्म और मुनि धर्म ये, दोनों ज्ञान आधार ।
ज्ञान बिना संसार का सरे, चले नहीं व्यवहार ।। २ ।।

पहिले सीखते ज्ञान गुरू से, देखो सूत्र का न्याय ।
फिर शक्ति अनुसार तपस्या, करते वो मुनिराय ।। ३ ।।

विद्या है धन मित्र सभा में, आदर देवे भूप ।
विद्या बिन नर पशु सरीखा, फक्त मनुष्य का रूप ।। ४ ।।

ज्ञानी रहे पाप से बच कर, ज्ञान पढ़ो दिन रैन ।
मेरे गुरू नन्दलाल मुनि को, यही हमेशा केन ।। ५ ।।

।। गुरू देव तुम्हें नमस्कार बार बार है ।।

गुरूदेव तुम्हें नमस्कार बार बार है ।
श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है ।। टेर ।।

अज्ञानतम हटाके, ज्ञान ज्योति जगादी।
आत्मज्ञान में, अखण्ड दृष्टि लगादी।
उपदेश सदाचार सकल, शास्त्र सार हैं॥ १॥

विधियुक्त सिर झुका के, कर रहे है वंदना।
अब हो रही मंगल मयी, सद्भाव स्पंदना।
माधुर्य से मिटा रही, मन का विकार है॥ २॥

यह मनोरथ नित्य रहे, संत चरण में।
अन्तिम समय समाधि मरण, चार शरण में।
यह "सूर्य चन्द्र" मोक्ष मार्ग में विहार है॥ ३॥

॥ गुरू देव मेरे सच्चे ॥

गुरू देव मेरे सच्चे, क्रिया में सबसे ऊंचे।
ज्ञान ध्यान में रत रहते हैं, करते नहीं प्रपंचे॥ १॥

मेरे गुरू स्थानक वासी, जैन मुनि अरु सतियां।
पंच महा व्रत को शुद्ध पाले, पाले सुमति गुप्तियां॥ २॥

जैन मुनि हिंसा नहीं करते, बोल बोलते सच्चे।
बिना दिया ये कभी न, लेते, ब्रह्मचर्य के पक्के॥ ३॥

पैसा कोड़ी को नहीं रखते, हैं ममता के कच्चे।
अपना बोझा खुद उठाते, पैदल ही ये चलते॥ ४॥

क्रोध तो ये अभी न करते, मान के बहुत ही कच्चे।
सरल तरल व निर्लोभी, ये महावीर के बच्चे॥ ५॥

ज्ञान दान देते रहते हैं, अभयदानी ये पक्के।
इनके सम दानी नहीं जग में, ये दानी हैं सच्चे ॥ ६ ॥

जड़ पूजा को ये नहीं माने, गुण पूजा बतलाते।
जीवादि नव तत्वों का, सच्चा स्वरूप बतलाते ॥ ७ ॥

धर्माचरण के लिये कभी ये, मिथ्या रास नहीं रचते।
नर नारी सब को ही ये, मुक्ति गामी बतलाते ॥ ८ ॥

'भंवरलाल' के गुरू, बचाने में ही धर्म बताते।
जो मरते प्राणी को बचाते, वे ही सद्गति पाते ॥ ९ ॥

॥ चालो शिवपुर रेल खड़ी ॥

चालो शिवपुर रेल खड़ी रे तैयारी, हां हां हाजर रे तैयारी ॥टेर॥

सीधी सड़क चाली शिवपुर को, देव मनुष्य दो आडा।
जहाँ जावे वहां ही ले जावे, पवन पंतग चली रेल गाड़ी ॥१॥

सत्तावन संवर का डिब्बा, बोलो अमृत वाणी।
सतरह सयंम माल भरियो है, बारह व्रत की झड़ी रे किवाड़ी ॥२॥

तीन योग का चौकी पहरा, चार कषाय कटारी।
अठारा स्टेशन लगिया, श्वासो की मील लगाई ॥३॥

रात दिवस दोय इंजन जुतिया, उमर अग्नि लगाई।
कर्म कोयला मांथी झोंको, चरण करण की कुंजी लगाई ॥४॥

ब्रह्म ज्योति की चिराग लगाई, नहीं पवन संचाना।
केवल ज्ञान केवल दर्शन, क्षायिक समकित ज्योति उजवारी ॥५॥

दया धर्म का टिकट कटाया, सतगुरू जी उपकारी।
कोई एक उत्तम पास कटावे, मोक्ष केलाश की एश है भारी ॥ ६ ॥

शील संयम की सीटी लगाई, आगे होत हुशियारी।
पंच महाव्रत चोखा पालो, खर्ची ले लोनी खर्च विचारी ॥ ७ ॥

राग द्वेष दोय चोर लुटेरा, करत बिखेरा भारी।
सरकारी में धाड़ो पाड़े, चेतन बाबू खड़ा अगाड़ी पिछाड़ी ॥ ८ ॥

नाड़ी तार जबावी पक्का, आगे होत होशियारी।
सावद्य के संग तूं तो सूतो, चेतरे मूर्ख होत खरावी ॥ ९ ॥

दर्शन को दूरवीन लगाई, जल थल दोय सिपाही।
प्रभु नाम की तोप चलाई, मोह मिथ्यात्व को दूर भगाई ॥१०॥

धर्मी धर्मी गया मोक्ष में, पापी पाप संवारी।
मोह नींद में सूतो मूरख, चूको स्टेशन रहियो नरक मंझारी ॥११॥

आओ भाई करो विछायत, वैठन की चवि न्यारी।
कहत 'जड़ाव' जयपुर मांही, भव्य जीवों थें राखो हुशियारी ॥१२॥

॥ चार दिनों की जिन्दगानी ॥

(तर्ज—घर आया मेरा परदेशी)

जीवन सफल बना प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ टेर ॥

भटकत भटकत आया है, मुश्किल नर तन पाया है।
कुछ तो सोच समझ प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ १ ॥

जग ये मुसाफिर खाना है, सब कुछ छोड़ के जाना है।
गफलत मतकर नादानी, चार दिनों......................॥ २ ॥

मुट्ठी बांध के आया है, सुकृत का फल पाया है।
खाली हाथ न जा प्राणी, चार दिनों......................॥ ३ ॥

माता-पिता भगनि भ्राता, मरते को नहीं रख पाता।
मूरख मन अपना जानी, चार दिनों......................॥ ४ ॥

धन दौलत सब सपना है, किया धर्म जो अपना है।
कर कर कर कुछ तो प्राणी, चार दिनों......................॥ ५ ॥

चार कोष जब जाता है, खर्ची ख्याल में लाता है।
पर भव दूर घणा प्राणी, चार दिनों......................॥ ६ ॥

करना करना बस करता है, काम भोग चित्त धरता है।
अजब लगन तेरी जानी, चार दिनों......................॥ ७ ॥

सुनकर के मत रह जाना, कुछ निश्चय करके जाना।
'घन्न' वक्त फिर नहीं आनी, चार दिनों......................॥ ८ ॥

॥ चेतन रे तूं ले जग बीच भलाई ॥

(तर्ज—भलाई ले ले पर दाखला)

चेतन रे तूं ले जग बीच भलाई, एहवो जोग मिले कब आई। टेर।

पुण्य प्रभावे सब ही संपति, पायो नर भव मांहो।
कुछ सुकरत का काम बने तो, कर तेरी समर्थाई ॥ चे० १ ॥

कृष्ण नरेशर पड़ो बजायो, नगरी द्वारका मांही ।
उत्तम जन सुण संयम लीनो, देखो ज्ञाता मांही ।। चे० २ ।।

चरण तले सुसल्या ने राख्यो, हस्ती का भव मांही ।
शुभ परिणाम संसार घटायो, किनी जबर कमाई ।। चे० ३ ।।

नेम प्रभु ने वंदन जातां, गोविंद मार्ग मांही ।
ईटां को पूंज देख वुढा को, फेरा दिया मिटाई ।। चे० ४ ।।

भव सागर तिर जारे भोला, सतगुरु देत चेताई ।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे, पारसोली के मांही ।। चे० ५ ।।

।। चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे ।।

चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे, तू तो नाहक कर्म बंधावे ।टेर।

जो जो भगवंत भाव देखिया, सो सो ही वरतावे ।
घटे बढ़े नहीं रंच मात्र जामें, काहे कूं मन डुलावे ।। १ ।।

चिन्ता अग्नि जलत शरीरा, वुद्धि वल विणसावे ।
शौकातुर बीते दिन रैणी, धर्म ध्यान घट जावे ।। २ ।।

सुख से निन्द्रा रात न आवे, अन्न उदक नहीं भावे ।
पहरण ओढ़न चित नहीं चावे तो राग रंग नहीं सुहावे ।। ३ ।।

सुख नहीं रेयो तो दुख किम रेसी, ये भी तो गुजरावे ।
कर्म बांध्या सो तो भुगत्याई सरसी, क्यों आतम ने दंडावे ।।४।।

बिन भुगतीया कबहु नहीं छूटे, अशुभ उदय जब आवे ।
साहूकार सिरोमणी सोही, हँस हँस करज चुकावे ॥ ५ ॥

प्रभु समरण और तपस्या करता, दुष्कृत रज झड़ जावे ।
'जेठ' कहे समतारस पीता, तुरत ही आनन्द आवे ॥ ६ ॥

॥ चेतन रे या कर्मन की गत ॥

चेतन रे या कर्मन की गति न्यारी, कर सुकृत एम विचारी ॥

रावण राय त्रिखंड को नायक, ले गयो राम की नारी ।
लक्ष्मण हाथे परभव पहुंचो, जाने दुनिया सारी ॥ १ ॥

अयोध्या नगरी को हरिश्चन्द्र राजा, तारादे तस नारी ।
माथे पुरी लेय हाट में कियों, कुंवर रोहित दास लारी ॥ २ ॥

कृष्ण नरेश्वर त्रिखंड भुगता, यादव कुल अवतारी ।
अन्त समय जाय मुआ अकेला, बन कोशम्बी मंझारो । ३ ॥

कुण्डरीक राय वैराग्य धरीने, लीनो संजम भारी ।
कायर होय पीछा घर मांही आया, पहुंचे नरक मंझारी ॥ ४ ॥

चन्दनराय मलयागिरी रानी, पुत्र सायर नीर भारी ।
कर्म जोगे बिछुड़ों पड़यो जाके, पुण्य से सम्पत्ति पाया सारी ॥ ५ ॥

'खूबचन्द' कहे या कर्मों की रचना, सुण लीजो नर नारी ।
इम जाणी ने धर्म आराधी, सुख मिले आगे त्यारी ॥ ६ ॥

॥ चेतन चेतो रे ॥

चेतन चेतो रे, दस बोल जीव ने दुर्लभ मिलिया रे ॥ टेर ॥

चार गति में गेंद दड़ी ज्यूं, गोता बहुला खाया रे।
दुर्लभ लादो मनुष्य जमारो, गुरू समझाया रे ॥ चेतन० १ ॥

स्वार्थ केरी यारी प्यारी, सब ही के मन भावे रे।
निज करतब तेरे कर्म कमाई, संगज आवे रे ॥ चेतन० २ ॥

आरम्भ परिग्रह मांहि सूतो, सुध निज गुण को भूल्यो रे।
तन-धन जीवन मांहि राच्यो, गर्व में भूल्यो रे ॥ चेतन० ३ ॥

घेवर चोरिया घर का खाया, कुटाणो कंदोई रे।
आपरा बांध्या आप भोगवे, इम ल्यों जोई रे ॥ चेतन० ४ ॥

धर्म जहाज निरजाम गुरू चढ़, आया सुकरत जोगे रे।
अविचल सुख की सेल करावे, फिर क्यों चूके रे ॥ चेतन० ५ ॥

जंबूजी तो विश्व वंदिता, छती रिद्ध छिटकाई रे।
करणी कर गजसुकमाल, मुनिश्वर मुक्ति पाई रे ॥ चेतन० ६ ॥

काम भोग पुद्गल विनाशे, महता भाव मिटावे रे।
मगन कहे धन महंत पुरुष ने, महिमा गावे रे ॥ चेतन० ६ ॥

॥ छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल ॥

छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल, छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल।
जीणथी बन्दे कर्म निमाल ॥ छोड़ो ॥ टेर ॥

मातादि सहु जाणे तू तोय।
पण सज्जन थारा नहीं कोय ॥ छोड़ो ॥ १ ॥

जो व्याधी से पीड़ित होय।
तिणथी तुझने मुकावे न कोय ॥ छोड़ो ॥ २ ॥

मैं एनो ए मारा होय।
इम जाणी जीव मूर्छित होय ॥ छोड़ो ॥ ३ ॥

॥ जब तेरी डोली निकाली जायेगी ॥

(तर्ज—चन्द रोज)

जब तेरी डोली निकाली जायगी,
बिन मुहरत के उठाली जायगी ॥ टेर ॥

उन हकीमों से यों कहदो बोलकर,
करते थे दावा किताबें खोलकर।
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥

जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी ॥ २ ॥

होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,
कैसे मुकरोगे वहां पर तुम जनाब।
जब बही तेरी निकाली जायगी ॥ ३ ॥

ए मुसाफिर क्यों पसरता है यहां,
है किराये पर मिला तुझको मकां।
कोठड़ी खाली कराली जायगी ॥ ४ ॥

क्यों गुलों पर हो रही बुल बुल निसां,
है खड़ा पीछे व माली खबरदार।
मार कर गोली गिरादी जायगी ॥ ५ ॥

चेत भय्यालाल अब जिनवर भजो,
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो।
तो आत्मा परमात्मा बन जायगी ॥ ६ ॥

॥ जब हम ही छोड़ संसार ॥

जब हम ही छोड़ संसार,
सकल परिवार बने अनगारा, वो दिन है धन्य हमारा ॥ टेर ॥

आरम्भ परिग्रह है जो इतने,
जिसमें हम फंस रहे हैं कितने।
जिस दिन पायेंगे, इससे ही छुटकारा ॥ १ ॥

दुनियां यह सारी झूठी है,
भ्रमकारक पोली मुट्ठी है।
तन धन योवन है, इन्द्रजाल अनुहारा ॥ २ ॥

ये मात पिता पुनि नन्दन है,
स्त्री का जो मोह बन्धन है।
जिस दिन टूटेगा, ये ही जाल पसारा ॥ ३ ॥

खाने से न तृप्ति हो पाई,
चीजें तो हमने सब खाई।
तृप्ति होगी, जब कर देंगे संथारा ॥ ४ ॥

ये तीन मनोरथ हैं प्यारे,
हर रोज हृदय से ही धारे।
श्रावक लोगों का, यह है नेम इसारा ॥ ५ ॥

॥ जम्बू कैयो मानले रे जाया ॥

राज गृहीना वासियाजी, 'जंबू' नाम कंवार।
'ऋषभदत्त' रा डीकराजी, 'भद्रा' ज्यांरी माय।
जंबू कह्यो मान ले जाया, मत ले संजम भार ॥ १ ॥

सुधर्मा स्वामी पधारियाजी, राजगृही रे मांय।
'कोणक' वंदन चालियोजी, जंबू वंदन जाय ॥ जंबू ॥ २ ॥

भगवंत वाणी वागरोजी, वरसै अमृतधार।
वाणी सुणी वैरागियाजी, जाण्यो अथिर संसार ॥ जंबू ॥३॥

घर आया माता कनेजी, विनवे वारंवार।
अनुमत दीजो मोरी मातजी, माता लेसूं संजम भार।
माता मोरी सांभलो, जननी लेसूं संजम भार ॥ जंबू ॥४॥

ये आठूं ही कामणी जंबू, अपछर रे उणीहार।
परणी ने किम परिहरो, ज्यांरो किम निकले जमार ॥जंबू॥५॥

ये आठूं ही कामणी जंबू, तुझ बिना बिलखो थाय।
रमिया ठमिया सूं नीसरे, ज्यांरा वदन कमल विलखाय ॥जंबू ।६॥

मतहीणों कोई मानवी माता, मिथ्या मत भरपूर।
रूप रमणी सूं राचियां ज्यांरा, नहीं हुवे दुरगत दूर ॥जंबू॥७॥

पाल पोस मोटो कियो जंबू, ईम किम दो छिटकाय।
माता पिता मेले झूरता थांने, दया नहीं आवे दिल मांय ॥मां.॥८॥

एक लोटो पानी पियो माता, माय ने बाप अनेक।
सगलांरी दया पालसुं माता, आणी ने चित्त विवेक ॥मां.॥६॥

ज्युं आंधारे लाकड़ी जंबू, तूं म्हारे प्राण आधार।
तुझ बिना म्हारे जग सूनौ, जाया जननी जीतब राख ॥जंबू॥१०॥

रतन जडत रो पींजरों माता, सूओ जाणे फंद।
काम भोग संसारना माता, ज्ञानी बताया झूठा फंद ॥ मा.मो. ॥११॥

पंच महाव्रत पालणा जंबू, पाँचु ही मेरु समान।
दोष वयालीस टालना जंबू, लेणो सूझतो आहार ॥जँबू॥१२॥

पंच महाव्रत पालसूं माता, पांचु ही सुख समान:
दोष वयालोस टालसूं माता, लेसूं सूझतो आहार ॥माता॥१३॥

संजम मारग दोहिलो जंबू, चलणो खांडेरी धार।
नदी किनारे रूंखड़ो जंबू, जद तद होय विनाश ॥जंबू॥१४॥

चांद बिना किसो चांदणो जंबू, तारा बिना किसी रात।
वीर बिना किसी बेनड़ी जंबू, झुरसी वार तिवार ॥जंबू॥१५॥

दीपक बिना मन्दिर सूनो जंवू, पुत्र बिना परिवार।
कंत विना किसी कामनी जवू, झूरसो बारू मास ॥जवू॥१६॥

मात पिता मेलो मिल्यो, माता मिल्यो अनंती वार।
तारण समरथ कोई नहीं माता, पुत्र पिता परिवार ॥माता॥१७॥

मोह मतकर मोरी मातजी, माता मोह किया बंधे कर्म।
हाल हूलर कई करो माता, करजो जिनजीरो धर्म ॥माता॥१८॥

ये आठूं ही कामणी जंवू, सुख विलसो ससार।
दिन पाछा पड़ियां पछे, थे तो लिजो संजम भार ॥जंवू॥१६॥

ए आठूं ही कामनी माता, समझाई एकण रात।
जिनजीरो धर्म पिछाणियो माता, संजम लेसी म्हारे साथ ॥मा॥२०॥

माता पिता ने तारिया जंवू, तारी छै आठूं ही नार।
सासु सुसरा ने तारिया जंवू, पांच से प्रभव परिवार।
जंवू भलो चेतियो जाया, लीनो संजय भार ॥ २१ ॥

पांच से सत्ताइस जणा सूं, जंवू लीनो संजम भार।
इग्यारे जीव मुगते गया साधु, बाकी स्वर्ग मंझार ॥जंबू॥ २२ ॥

॥ जय अरिहंताण ॥

(तर्ज : आरती)

जय अरिहंताणं, स्वामी जय अरिहंताणं।

भाव भक्ति से नित्य, प्रति, प्रणमूं सिद्धाणं ॥
जय अरिहंताणं ॥ टेर ॥

दर्शन ज्ञान अनन्ता शक्ति के धारी, स्वामी ।
यथा स्यात चारित्र है, कर्म शत्रुहारी ॥ १ ॥

है सर्वज्ञ सर्वदर्शी बल, सुख अनन्त पाये, स्वामी ।
अगुरु लघु अमूरत, अव्यय कहलाये ॥ जय ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं, छत्तीस गुण पालक, स्वामी ।
जैनधर्म के नेता, संघ के संचालक ॥ जय ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं, चरण करण ज्ञाता, स्वामी ।
अङ्ग उपांग पढ़ाते, ज्ञान दान दाता ॥ जय ॥ ४ ॥

नमो लोएसव्वसाहूणं ममता मदहारी, स्वामी ।
सत्य अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य धारी ॥ जय ॥ ५ ॥

"चौथमल" कहे शुद्ध मन जो नर ध्यान धरे, स्वामी ।
पावन पंच-परमेष्ठी, मंगलाचार करे ॥ जय ॥ ६ ॥

॥ जय जय जय भगवान ॥

जय जय जय भगवान् ।

अजर अमर अखिलेश निरंजन, जयति सिद्ध भगवान् ॥टेर॥

अगम अगोचर तू अविनाशी. निराकार निर्भय सुख राशी ।
निर्विकल्प निर्लेप निरामय, निष्कलंक निष्काम ।। ज० १।।

कर्म न काया मोह न माया, भूख न तिरषा रंक न राया ।
एक स्वरूप अरूप अगुरुलघु, निर्मल ज्योति महान् ।।२।।

हे अनन्त हे अन्तर्यामी, अष्ट गुणों के धारक स्वामी ।
तुम विन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम ।।३।।

गुरु निर्ग्रंथों ने समझाया, सच्चा प्रभु का रूप बताया ।
तुझमें मुझमें भेद न पाऊं, ऐसा दो वरदान ।।४।।

"सूर्यभानु" है शरण तिहारी, प्रभु मेरी करना रखवारी ।
अब तुम में ही मिल जाऊं मैं, ऐसा हो संधान ।।५।।

।। जय-जय नमिराज ऋषि ।।

जय नमिराज ऋषि, जय 'कंकण' बुद्ध ऋषि !
अमर तुम्हारे उत्तर, जैसे सूर्य-शशि, जय-जय नमिराज ऋषि ।।ध्रुव।।

जाति स्मरण हुआ जब, राज्य ऋद्धि नाशे ।
सब छिटका कर तत्क्षण, दीक्षा उर धारी ।।१।। जय जय नमि....

शक्र इन्द्र तब पूछे. विप्र रुप धर कर ।
दृढ़ वैरागी नमिऋषि, देते यों उत्तर ।। २ ।। जय जय नमि....

'दीक्षा' नहीं दुःखकारी, स्वारथ दुःखकारी ।
स्वारथ कारण रोती, यह मिथिला सारी ॥ ३ ॥ जय जय नमि····

ममता बन्धन तोड़ा, वह सुख से जीता ।
जग के दुःख संकट से, वह न दुःखी होता ॥ ४ ॥ जय जय नमि····

जिनपुरी मुक्ति पाने, हेतु युद्ध करना ।
नश्वर जड़ नगरी की, क्या रक्षा करना ? ॥ ५ ॥ जय जय नमि····

आत्मा का घर ऊपर, मुझे वहां जाना ।
जो नास्तिक है उसने, यहां पर घर माना ॥ ६ ॥ जय जय नमि····

राजनीति है दूषित, कर्म बहुत बंधते ।
सच्चे दण्डित होते, झूठे बच जाते ॥ ७ ॥ जय जय नमि····

बाह्य युद्ध का कर्त्ता, झूठा सुख पाता ।
आत्म युद्ध कर्त्ता ही, सच्चा सुख पाता ॥ ८ ॥ जय जय नमि····

लाख-लाख प्रति मास भी, हो कोई गौ दाता !
उससे भी मुनि श्रेष्ठ है, अभय-दान दाता ॥ ९ ॥ जय जय नमि····

नवकार सी जिनमत की, है जैसे पूनम ।
मास खमण परमत का, नहीं अमावस सम ॥१०॥ जय जय नमि····

मेरु समान असंख्य भी, स्वर्ण सिद्धि पावे ।
पर नभ सम तृष्णा का, अन्त नहीं आवे ॥११॥ जय जय नमि····

'नारी' काँटा विष है, और महा-नागिन ।
चाह मात्र भी उसकी, महा दुर्गति कारण ॥१२॥ जय जय नमि····

ऐसे उत्तर सुन कर, 'शक्र' प्रसन्न हुए।
सच्चा रूप प्रगट कर, नत-मस्तक हुए ॥१३॥ जय जय नमि····

फिर निज मुख से उनकी, करी बहुत कीर्त्ति।
धन वैराग्य आपका, पाओगे सिद्धि ॥१४॥ जय जय नमि····

उत्तम करणी करके, उत्तम गति पाए।
"पारस" तूं भी यों बन, नीरज हो जाए ॥१५॥ जय जय नमि····

॥ जय बोलो महावीर स्वामी की ॥

जय बोलो महावीर स्वामी की।
घट घट के अंतरयामी की ॥टेर॥

जिस जगती का उद्धार किया।
जो आया शरण वह पार किया।
जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की ॥१॥

जो पाप मिटाने आया था।
जिस भारत आन जगाया था।
उन त्रिशला नंदन ज्ञानी की ॥२॥

हो लाख वार प्रणाम तुम्हें।
हे वीर प्रभु भगवान तुम्हें।
मुनि दर्शन मुक्ति गामी की ॥३॥

।। जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु ।।

जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु ।
जग नायक सुख दायक, अति गंभीर प्रभु ।। जय २ ।। टेर ।।

कुण्डलपुर में जन्मे, त्रिशला के जाए ।। स्वामी ।।
पिता सिद्धार्थ राजा, सुर नर हर्षाए ।। जय ।। १ ।।

दीनानाथ दयानिधि, है मंगलकारी ।। स्वामी ।।
जगहित संयम धारा, प्रभु पर उपकारी ।। जय ।। २ ।।

पापाचार मिटाया, सत्पथ दिखलाया ।। स्वामी ।।
दया धर्म का झण्डा, जग में लहराया ।। जय ।। ३ ।।

अर्जुनमाली गौतम, श्री चन्दनबाला ।। स्वामी ।।
पार जगत से बेड़ा, इनका कर डाला ।। जय ।। ४ ।।

पावन नाम तुम्हारा, जगतारण हारा ।। स्वामी ।।
निश दिन जो नर ध्यावें, कष्ट मिटे सारा ।। जय ।। ५ ।।

करुणासागर तेरी, महिमा है न्यारी ।। स्वामी ।।
ज्ञान मुनि गुण गावे, चरणन बलिहारी ।। जय ।। ६ ।।

।। जाने जाने यह कौन जगत में ।।

जाने जाने यह कौन जगत में, कल होने की बात ।टेर।
ज्योतिषी ने लग्न देख कर, निज कन्या परनाई ।
जाते सासरे विधवा हो गई है भावी कौन मिटाई ।। १ ।।

वशिष्ठ ऋषि कहे लग्न बता, कल राम राज्य हो जावे ।
उसी समय वनवास हुआ है, रामायण बतलावे ॥ २ ॥

राजमती हर्ष धर बोली, वरूं नेम पटनार ।
कुंवारी रह कर बनीं साध्वी, भावों के अनुसार ॥ ३ ॥

खण्ड सांतवा साधन धाया, संभूम चक्री राया ।
होनी को क्या उसको मालुम, दरीया बीच समाया ॥ ४ ॥

कल यह होगा, कल यह होगा, क्यों तूं मिथ्या तांने ।
कल की होनी का तो योंही, पूरन ज्ञानी जाने ॥ ५ ॥

सोलह वर्षों तक जीऊंगा, वीर स्वयं उच्चारा ।
रखो दृढ़ विश्वास उसी पर, है वह तारण हारा ॥ ६ ॥

धर्म काज कल करना चाहो, करो आज ही भाया ।
पाव पलक की खबर नहीं है, चोथमल जितलाया ॥ ७ ॥

॥ जिनन्द मोहे दीठा हो सुपना सार ॥

दशवां स्वर्ग थकी चव्याजी, चौवीसवाँ जिनराय ।

चवदह सुपना देखियाजी, त्रिशला देवीजी माय ॥
जिनन्द मोहे दीठाहो सुपना सार ॥ टेर ॥

पहले गयवर देखियो जी, सुंडा दण्ड प्रचण्ड ।
दूजे वृषभज देखियो जी, धवला धोरी सण्ड ॥ १ ॥

तीजे सिंह सुलक्षणों जी, करतो मुख बगास।
चौथे लक्ष्मी देवता जी, कर रया लीला विलास ॥ २ ॥

पंचवरण फूला तणीजी, माला देखि सुवास।
छठे चन्द्र उजासियोजी, अमीय झरे आकाश ॥ ३ ॥

दिनकर उगो तेज सूंजो, किरणां झांके झमाल।
फरकंती देखी ध्वजा जी, ऊँची अति असराल ॥ ४ ॥

कुंभ कलस रतना जड़योजी, उदक भरयों सुविशाल।
कमल फूला को ढांकणो जी, नवमें स्वप्ने रसाल ॥ ५ ॥

पद्म सरोवर जल भरयोजी, कमला करी सोभाय।
देवदेवी रंग में रमेजी, देख्या आवे दाय ॥ ६ ॥

क्षीर समुंद्र चारों दिशा जी, जेनो मीठो नीर।
दूध जैसो पानी भरयोंजी, कठिन पावणों तीर ॥ ७ ॥

मोत्यां केरा झूमकाजी, देख्या देव विमान।
देव देवी कोतुक करेजी, आवंता असमान ॥ ८ ॥

रत्ना की राशी निरमली जी, देख्या स्वप्न उदार।
स्वप्नो देख्यो तेरमो जी, हिवड़े हर्ष अपार ॥ ९ ॥

ज्वाला देखी दीपती जी, अग्नि शिखा बहु तेज।
इतरे जागया पदमनी जी, धर स्वप्ना से हेज ॥१०॥

गजगति चाल्या मलकताजी, आया राजन पास।
भद्रासन आसन दियो जी, पूछे राय हुल्लास ॥११॥

कहो किन कारण आवियाजी, कहो थांरा मन की बात ।
चवदे स्वप्ना देखियाजी, अर्थ कहो साक्षात् ॥१२॥

स्वप्ना सुनी राय हर्षिया जी, कीनों स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर तुम जनमसीजी, तीन लोक ना नाथ ॥१३॥

प्रभाते पंडित तेड़िया जी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर चक्रवर्ती हुसीजी, तीन लोक में सार ॥१४॥

पंडितां ने बहु धन दियो जी, वस्तर के फूल माल ।
गर्भ मास पूरा थया जद, जनम्या है पुण्यवंत बाल ॥१५ ।

चौसठ इन्द्र आवियाजी, छप्पन दिशां कवार ।
अशुचि कर्म निवारने जी, गावे मंगलाचार ॥१६॥

प्रतिबिम्ब घर में धरयो जी, माता जी नें विश्वास ।
शक्र इन्द्र लीधा हाथ में जी, पंचरूप प्रकाश ॥१७॥

मेरु शिखर न्हवराविया जी, तेहनो बहु विस्तार ।
इन्द्रादिक सुर नाचिया जी, नाची अप्सरा नार ॥१८॥

अठाई महोत्सव सुर करेजी, दीप नन्दीश्वर जाय ।
गुण गावे प्रभूजी तणांजी, हिवड़े हर्ष न माय ॥१९॥

परभाते सुपना जो भणेजी, भणतां आनन्द थाय ।
रोग शोक दूरा टलेजी, अशुभ कर्म सब जाय ॥२०॥

॥ जिन फरमायो रे २ ॥

जिन फरमायो रे २ यह गुपत पाप नहीं, छिपे छिपायो रे ॥टेर॥
बोयो बीज खेत में पूछा, नाम नहीं बतलावे रे ।
कण बारने निकले तब, चौड़े दर्शावे रे ॥ १ ॥

घास फूस को ढेर करीने, भीतर आग छिपावे रे।
मशक मशक बलती जलती, वह बाहिर आवे रे ॥ २ ॥

आम पाल में दिया कहाँ तक, छिपा छिपा कर रखसी रे।
पाक गया तव हाथों हाथ, हटियों पर बिकसी रे ॥ ३ ॥

लस्सण आदिक बांट मसाला, स्वाद करन मन ठानी रे।
गुप चुप दियो बघार, रहे नहीं बदबू छानी रे ॥ ४ ॥

या विध जुल्मी जुल्म करीते, खूब किया मन मीठा रे।
गुरू नन्दलाल कहे वह आखिर, पड़सी फीटा रे ॥ ५ ॥

॥ जिन जी पहला ऋषभदेव ॥

जिनजी पहला ऋषभदेवजी वान्दसांजी,
जिनजी दूजा अजितनाथ देव, पक्खी रा खमत खामणा जी।
जिनजी तीजा संभवनाथ वान्दसांजी,
जिनजी चोथा अभिनन्दन देव, पक्खी रा खमत खामणाजी।
जिनजी पन्द्रह दिनारो पाप आलोवियोजी,
श्रावक शुद्ध मन लिया रे खमाय ॥ पक्खीरा ॥ १ ॥

जिनजी पांचमा, सुमतिनाथ वान्दसांजी,
जिनजी छट्ठा पदम प्रभु देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी सातमा सुपार्श्वनाथ वान्दसांजी,
जिनजी आठमा चन्दा प्रभु देव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ २ ॥

जिनजी नवमा सुविधिनाथ वांदसांजी,
जिनजी दशमां शीतलनाथ देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी इग्यारमा श्रेयांस वान्दसांजी,
जिनजी बारमा वासुपुज्य देव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ ३ ॥

जिनजी तेरमा विमलनाथ वान्दसांजी,
जिनजी चवदमा अनन्त नाथ देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी पंद्रमा धरमनाथ वान्दसांजी,
जिनजी सोलमा शान्तिनाथ देव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ ४ ॥

जिनजी सतरमां कुंथुनाथ वान्दसांजी,
जिनजी अठरमा अरनाथ देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी उगणिसमा मल्लिनाथ वान्दसाजी,
जिनजी वीसमां मुनि सुव्रत देव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ ५ ॥

जिनजी इक्कीसमा नमिनाथ वान्दसांजी,
जिनजी बावीसमा रिष्टनेमी देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी तेइसमा पारसनाथ वान्दसांजी,
जिनजी चोविसमा महावीर देव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ ६ ॥

जिनजी इग्यारा ही गणधर वान्दसांजी,
जिनजी वीस विहरमान देव ॥ पक्खी ॥
जिनजी अनंत चोवीसी ने वान्दसांजी,
जिनजी तीरण तारण गुरुदेव ॥ पक्खी ॥ जिनजी ॥ ७ ॥

।। जिसने रागद्वेष कामादिक जीते ।।

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसीमें लीन रहो ।। १ ।।

विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्यभाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।। २ ।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूं।
परधन वनिता पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूं ।। ३ ।।

अहंकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षा भाव धरूं।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं ।। ४ ।।

मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी प्ररणति हो जावे ।। ५ ।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होउं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥ ६ ॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज हो आ जावे।
अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥ ७ ॥

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥ ८ ॥

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावे।
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुष्य जन्म फल सब पावे ॥ ९ ॥

इति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोगमरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैले सर्वहित किया करे ॥ १० ॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब युग वीर हृदय से, देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करे॥ ११॥

॥ जीवड़ला जग में कौन धरणी ॥

(तर्ज : वटाऊ आयो लेवा ने)

योतो स्वार्थ को सारो है संसार, जीवड़ला जग में कौन धरणी ।टेर।

जिण बालक ने गोद खिलावे, लाड लडावे मात।
बापूजी भी मोह में फसिया, पाप कमावे दिन रात ॥जीव॥ १ ॥

आई मूंछा कुरण ने पूंछा, दूजी मिल गई नार।
माया का भूखा पापीड़ा, जिन्दा ने देवे लड़ लड़ मार ॥जीव॥ २ ॥

बाल पणां में साथ खेलिया, जामण जाया बीर।
एक पलक दूरा नहीं रहता, भाई की भाई चढ़तो भीड़ ॥जीव॥३॥

कनक कामनी के संग लागया, भूल गया वा बात।
आज कचैड़्या जोर जमावे, भाई की भाई करतो घात ॥जीव॥ ४ ॥

प्राणां सूं प्यारी ही ज्यांरे, राणी पिंगला एक।
महावत पर हो गई दीवानी, त्रिया चरित्र लेवो देख ॥जीव॥ ५ ॥

देख अमर फल आंख खुल गई, मानी गुरु की सीख।
राजा भरतरी जोग रमायो, घर घर में मांगो जाके भीख ॥जीव॥६॥

महल छोड़ कर भी दमयन्ती, आई पति के साथ।
सुख दुःख की परवा नहीं कीनी, वन में विताया दिन रात ॥जीव॥७॥

विकट वनी में आया दोनों, जद कियो एक अकाज।
निद्रा में जद सोई अकेली, छोड़ गयो रे नल राज ॥जीव॥८॥

स्वार्थ वश कैकेयी भी रुठी, राम गया वनवास।
स्वार्थ वश सीता ने लायो, रावण को हुयो रे विनाश ॥जीव॥९॥

स्वार्थ हो तो सब वण जावे, भाई वहन परिवार।
वरना सब दूरा रह जावे, मरता की पूछे नहीं सार ॥जीव॥१०॥

धाय खिलावे ज्यूं वालक ने, तूं कर जग से प्यार।
अन्तर "जीत" रहीजे न्यारो, मोह मत करजे रे गिवार ॥जीव॥११॥

॥ जीवन अपना, ये सफल बनाना ॥

(तर्ज : नित्य उठके सजन)

मानव करले भजन, पाया मनुष्य जन्म, फिर नहीं आना।
जीवन अपना सफल वनाना ॥ टेर ॥

समझो दुनियां सराय का मेला,
फक्त जावे तूं यहां से अकेला।
जगत झूठा सभी, गौर करना कभी, जितलाना ॥ १ ॥

सार येही है दौलत का पाना,
दीन दुखियों का दुःख मिटाना।
जरा करले मनन, दुर्लभ पाया यह तन, समझाना ॥ २ ॥

किसको कहता है मेरा ये मेरा,
यहाँ पे कोई सज्जन नहीं तेरा ।
जग ये स्वार्थ भरा, मान मेरा खरा, आजमाना ॥ ३ ॥

नाथुराम मुनि पद गावे,
धर्म क्रियाँ सदा सुख पावे ।
किया सादड़ी चौमास, रहे चारों ही मास, ध्यान में लाना ॥ ४ ॥

॥ जीवन सफल बनाना ॥

जीवन सफल बनाना, बनाना प्रभु वीर जिनराज जी ॥ टेर ॥

मन मन्दिर में घुप अन्धेरा,
ज्ञान की ज्योति जगाना, जगाना प्रभु ॥ १ ॥

धधक रहा है द्वेष दावानल,
प्रेम पयोधि बहाना, बहाना प्रभु ॥ २ ॥

बीच भँवर में नैया फंसी है,
झट पट पार लगाना, लगाना प्रभु ॥ ३ ॥

न्याय मार्ग का पक्ष न छोड़ूं,
चाहे दुश्मन हो सारा जमाना, जमाना प्रभु ॥ ४ ॥

प्राणी मात्र को सुख उपजाऊं,
चाहूं न चित्त दुखाना, दुखाना प्रभु ॥ ५ ॥

मैं भी तुमसा जिन बन जाऊं,
परदा दुई का हटाना, हटाना प्रभु ॥ ६ ॥

अमर निरन्तर आगे बढ़ूँ मैं,
कर्त्तव्य वीर बनाना, बनाना प्रभु ॥ ७ ॥

॥ जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी ॥

जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी, इम रुलियो संसार ॥टेर॥

मोह मिथ्यात्व की नींद में जीवा, सूतो काल अनन्त ।
भव भव मांहे तू भटकियो, जीवा ते साम्भल विरतन्त ॥ १ ॥

ऐसा अनन्ता जिन हुवा जीवा, उत्कृष्टो ज्ञान अगाध ।
इण भव थी लेखो लियो जीवा, कुण बतावे थांरी आद ॥ २ ॥

पृथ्वी पाणी अग्नि में जीवा, चौथी वायु काय ।
एक एक काया मध्ये जीवा, काल असंख्यातो जाय ॥ ३ ॥

पंचमी काय वनस्पती जीवा, साधारण प्रत्येक ।
साधारण में तूं बस्यो जीवा, ते सांभल सु विवेक ॥ ४ ॥

सुई अग्र निगोद में जीवा, प्रतर असंख्याता जाण ।
असंख्याती श्रेणी एक प्रतर में जीवा, इम गोला असंख्या प्रमाण ॥५॥

एक एक गोला मध्ये जीवा, शरीर असंख्याता जाण ।
एक एक शरीर में जीवा, जीव अनन्ता प्रमाण ॥ ६ ॥

तेमाँ थी अनादि जीवड़ा जीवा, मोक्ष जावे दगचाल ।
एक शरीर खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनन्त काल ॥ ७ ॥

एक एक अभवी संगे जीवा, भवी अनंता होय।
वली विशेषे जानिये जीवा, जन्म मरण तू जोय ॥ ८ ॥

दोय घड़ी काची मध्ये जीवा, पैसठ सहस सौ पांच।
छत्तीस अधिका जाणिजो जीवा, ए कर्मानी खाच ॥ ९ ॥

छेदन भेदन वेदना जीवा, नरक सही बहुवार।
तिण सेती निगोद में जीवा, अनंत गुणी विचार ॥१०॥

एकेन्द्री मांहे थी निकल्यो जीवा, इन्द्री पाम्यो दोय।
तब पुण्याई तांहरी जीवा, तेह थी अनंती होय ॥११॥

इम ते चोइन्द्री जीव माँ जीवा, बे बे लाख ये जात।
दुःख दीठा संसार में जीवा, सुणतां अचरज बात ॥१२॥

जलचर थलचर खेचरे जीवा, उरपर भुजपर जात।
शीत ताप तृषा सही जीवा, दुःख सह्या दिन रात ॥१३॥

इम भमन्तो जीवड़ो जीवा, पाम्यो नर भवसार।
गर्भवास में दुःख सह्या जीवा, ते जाणे करतार ॥१४॥

मस्तक तो हेठो हुवे जीवा, उपर रहे बेहु पाय।
आंख्यां आड़ो बेहु मुष्ठी रे जीवा, इम रह्यो भिष्टा घर मांय ॥१५॥

बाप वीर्य माता रुधिर रो जीवा, इसड़ो लियो थे आहार।
भूल गयो जनम्या पछे जीवा, सेव्या करे अतिचार ॥१६॥

कोड़ ऊँट सूई लाल करे जीवा, चांपे रूं रूं मांय।
अष्ट गुणी हुए वेदना जीवा, गरभा वास रे माय ॥१७॥

जन्मतां हुवे कोड़ गुणी जीवाँ, मरतां कोड़ा कोड़ ।
जन्म-मरणरी जीवड़ा जीवा, जाणजो मोटी खोड़ ॥१८॥

देश अनारज उपनो जीवा, इन्द्री हीणी होय ।
आऊखो ओछो हुवे जीवा, धर्म किसी विध होय ॥१९॥

कदाचित नरभव पामीयो जीवा, उत्तम कुल अवतार ।
देह निरोगी पायने जीवा, यूं ही खोयो जमवार ॥२०॥

ठग फांसीगर चोरटा जीवा, धीवर कसाइ री न्यात ।
उपजी ने मुई जिसी जीवां, ऐसो न रही कोई जात ॥२१॥

चवदेई राजलोक में जीवा, जन्म मरण री जोड़ ।
खाली वालाग्र मात्र ए जीवा, एसी न रही कोई ठोड़ ॥२२॥

ए ही जीव राजा हुवो जीवा, हस्ती बांध्या बार ।
कवहिक करमां वशे जीवा, मिले न अन्न उधार ॥२३॥

इम संसार भमतो थको जीवा, पाम्यो समकित सार ।
आदरी ने छिटका दीवी जीवा, गयो जमारो हार ॥२४॥

खोटा देवज सरधिया जीवा, लागो कुगुरु टेर ।
खोटो धर्मज आदरी जीवा, कीधा चहुं गति फेर ॥२५॥

कवहिक तूं नरके गयो जीवा, कवहि हुवो तूं देव ।
पुन्य पापना फली थकी जीवा, लागी मिथ्यातनी टेव ॥२६॥

ओघा ने वली मुखपति जीवा, मेरु जेवड़ी लीध ।
एक ही समकित बिना जीवा, कारज नहीं हुवो सिद्ध ॥२७॥

चार ज्ञान तणा धणी जीवा, नरक सातमी जाय ।
चवदे पूरव नो भण्यो जीवा, पड़े निगोद रे माय ।।२८।।

भगवन्तो नो धर्म पाल्यां पछे जीवा, करणी न जावे फोक ।
कदाचित पड़वाई हुवे जीवा, अर्ध पुदगल मांही मोक्ष ।।२६।।

सूक्ष्म ने बादर पणे जीवा, भेली वर्गणा सात ।
एक पुदगल परावर्त नो जीवा, भीणी घणी छे वात ।।३०।।

अनन्ता जीव मुक्त गया जीवा, टाली आतम दोष ।
नहीं गया नहीं जावसी जीवा, एक निगोदना मोक्ष ।।३१।।

पाप आलोई आपणा जीवा, अव्रत नाला रोक ।
तेह थी देवलोक जावसी जीवा, पनरे भव माहि मोक्ष ।।३२।।

एहवा भाव सुणी करी जीवा, सरधा आणो नाय ।
जिम आयो तिमहिज गयो जीवा, लख चौरासी मांय ।।३३।।

कोई उत्तम नर चिंतवे जीवा, जाणे अथिर संसार ।
सांचो मारग सरधी ने जीवा, इण सूं राखो प्रेम ।
कोड़ कल्याण छे तेहनो जीवा, ऋषि जयमल जो कहे एम ।।३४।।

।। जैनों सब मिलकर ।।

(तर्ज : वो दिन धन होसो)

पालो दृढ़ आचार, जैनों ! सब मिलकर ।। ध्रु व ।।
प्रातःकाल सदा उठ जाओ, अपने निज स्थानक में आवो ।
आलस दूर निवार, जैनों सब...।।१।।

संतो को पंचांग नमाओ, देव धर्म को मन में ध्याओ।
जपो मन्त्र नवकार, जैनों सब....॥२॥

सामायिक का लाभ उठाओ, प्रभु प्रार्थना विधि से गावो।
करो मधुर उच्चार, जैनों सब....॥३॥

नित नियम चौदह चितारो, व्रत पच्चखाण नया कुछ धारो।
रोको आश्रव द्वार, जैनों सब....॥४॥

करो मनोरथ त्रय का चिन्तन, अरु विश्राम चार का सुमिरन।
भावों भावना बार, जैनों सब....॥५॥

सुनो सदा मुनियों का भाषण, पूछो प्रश्न करो हल धारण।
सीखो ज्ञान अपार, जैनों सब....॥६॥

छाने विना न पानी पीयो, अशुद्ध भोजन कभी न खाओ।
पालो नित चोविहार, जैनों सब....॥७॥

अष्टम पाक्षिक पौषध धारो, प्रतिक्रमण कर दोष निवारो।
प्रायश्चित लो धार, जैनों सब....॥८॥

सोते समय करो संथारा, आयुष्य का रक्खो आगारा।
उठने पर लो पार, जैनों सब....॥९॥

महा मन्त्र को कभी न भूलो, हर कामों में पहले बोलो।
अथवा लोगस्स चार, जैनों सब....॥१०॥

जैन धर्म पर रक्खो श्रद्धा, करो न झूठी परमत निन्दा।
रहो सदा हुशियार, जैनों सब....॥११॥

रहो परस्पर हिलमिल जुलकर, कलंक निन्दा चुगली तजकर।
करो संघ जयकार, जैनों सब....॥१२॥

जो जिन धर्म लजावे कोई, उनको साथ न देना कोई।
करदो वहिष्कार, जैनों सब....॥१३॥

सात व्यसन को दूर निवारो, बारह श्रावक व्रत स्वीकारो।
लो इक्कीस गुणधार, जैनों सब....॥१४॥

जीवन जीवो ऐसा सुन्दर, लगें सभी को प्यारा सुखकर।
'पारस' करे पुकार, जैनों सब....॥१५॥

॥ जो आनन्द मंगल चावो रे मनावो महावीर ॥

जो आनन्द मंगल चावो रे, मनावो महावीर ॥टेर॥

प्रभु त्रिशलाजी के जाया, है कंचन वरणी काया।
जांके चरणे शीश नमावो रे, मनावो महावीर ॥१॥

प्रभु अनन्त ज्ञान गुणधारी, है सूरत मोहन गारी।
जांका दर्शन कर सुख पावोरे ॥ म० ॥२॥

प्रभु जी की मीठी वाणी, है अनन्त सुखों की दाणी।
थे धार धार तिर जावो रे ॥ म० ॥३॥

जांके शिष्य बड़ा है नामी सदा सेवो गौतम स्वामी।
जो रिद्ध सिद्ध थें पावो रे ॥ म० ॥४॥

थांरा सर्व विघन टल जावे, मनवांछित सुख प्रकटावे ।
फिर आवागमन मिटावो रे ।। म० ।।५।।

ये साल गुणयासी भाई, देवास शहर के मांई ।
कहे "चौथमल" गुण गावो रे ।। म० ।।६।।

।। जो भगवती त्रिशला तनय ।।

जो भगवती त्रिशला तनय, सिद्धार्थ कुल के भान है ।
लिया जन्म क्षत्रिय कुण्ड में, प्रियनाम श्री वर्धमान है ।
जो स्वर्ण वर्ण प्रलंवभुज, सरसिज नयन अभिराम है ।
करूणा सदन मर्दन मदन, आनंदमय गुणवाम है ।
जो अनन्त ज्ञानी है प्रभु, और अनंत शक्तिमान है ।
किस मुख से गुण वर्णन करूं, मेरी तो एक जवान है ।
योगेन्द्र मुनि चिन्तन निरत, जिनको कि आठों याम है ।
उन वर्धमान जिनेश को, मेरे अनेक प्रणाम है ।

।। झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।

झण्डा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगारा ।।टेर।।

ऋषभदेव ने इसको रोपा, भरत चक्रवर्ती को सौंपा ।
उसने इसका किया पसारा ।। १ ।।

महावीर ने इसे उठाया, भारत को संदेश सुनाया ।
धर्म अहिंसा जग हितकारा ।। २ ।।

गौतम गणधर ने अपनाया, अनेकान्त जग को समझाया ।
स्याद्वाद करके विस्तारा ॥ ३ ॥

हुआ कुमार पाल भूपाला, जैन धर्म को जिसने पाला ।
इस झण्डे का लिया सहारा ॥ ४ ॥

आज इसे मुनियों ने संभाला, भारत में कर दिया उजाला ।
यही करेगा देश सुधारा ॥ ५ ॥

स्याद्वाद और दया धर्म की, दुनियां प्यासी इसी मर्म की ।
इसमें तत्व भरा है सारा ॥ ६ ॥

हम सब मिल करके सेवेंगे, नहीं जरा नमने देवेंगे ।
चाहे हो बलिदान हमारा ॥ ७ ॥

॥ तजो निशि भोजन दुःखदाई ॥

सुगुरु की सीख सुनो भाई ! तजो निशि भोजन दुःखदाई ॥ टेर ॥

प्रकट ओगुण अनेक यामें, कहां लो कह कर दर्शावें ।
तदपि दिग्दर्शन करवावें, श्रवण कर भव्य बोध पावे ॥

दोहा—लिखा चरक में रात्रि को, हृदय कमल संकुचाय ।
अतः रात्रि भोजन करने से, अजीर्णाश वढ़ि जाय ॥
सहे जासे नर कठिनाई ॥ १ ॥

भक्ष्य में मर्कटिका आवे, खाय सो कोढ़ी हो जावे ।
जलोदर जूंवां से थावे, मरणपर्यन्त कष्ट पावे ॥

दोहा—वमन करावे मक्षिका, केश करे स्वर भंग।
पित्ती निकले सर्वअंग में, कीड़ी के प्रसंग ॥
नष्ट हो जावे चतुराई ॥ २ ॥

दृष्टि तीखी दिन दिन माहीं, जीव सूक्षम दीखे नाहीं।
दीखे वह रात्रि में कैसे, करो बुध जन विचार ऐसे ॥

दोहा—निशि में मत भोजन करो, ऋषि कथन मन लाय।
कर्मपुराण खोल कर मित्रों, मुनि नखी अध्याय ॥
प्रेम से पढ़लो चित्त लाई ॥ ३ ॥

रात्रि में फिरे और खावें, मनुज वे निशिचर कहलावे।
निशाचर रावण के भाई, नहीं रघुवर के अनुयाई ॥

दोहा—रामायण की उक्ति से, होय सिद्ध यह बात।
यों जानी श्री रामचन्द्र के, बनो भक्त सब भ्रात ॥
त्याग रावण से मित्राई ॥ ४ ॥

रात्रि का भोजन तज दीजे, मनुज अवतार सफल कीजे।
क्षणिक सुख में न चित्त देवो, सुगुरु की सीख मान लीजे ॥

दोहा—मास एक में होय है, पाक्षिक व्रत फल सार।
निशि भोजन के त्याग किये से, यह निश्चय अवधार ॥
कहे मुनि माधव समझाई ॥ ५ ॥

॥ तन कोई छूता नहीं ॥

तन कोई छूता नहीं, चेतन निकल जाने के बाद।
फैंक देते फूल को, खुशबू निकल जाने के बाद ॥ १ ॥

आज जो करते किलोलें, खेलते हैं साथ में।
कल डरेंगे देख कर तन, निर्जीव हो जाने के बाद ॥२॥

बोलते जब तक सगे, हैं चार पैसे पास में।
नाम भी पूछे नहीं, पैसा निकल जाने के बाद ॥३॥

स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत उठ गई।
भूल जाता मां को बच्चा, पर निकल जाने के बाद ॥४॥

इस अस्थिर संसार में, तू क्यो घमण्डी हो रहा।
देख फिर पछतायगा, समय निकल जाने के बाद ॥५॥

कैसे सुखिया होयेगा, जो नहीं करता धर्म।
नरक में जाना पड़ेगा, पुण्य निकल जाने के बाद ॥६॥

॥ तप बड़ो रे संसार में ॥

तप बड़ो रे संसार में, जीवा उज्जल थावे रे।
कर्म रूप ईंधन जले, शिव रमणी सिधावे रे ॥टेर॥

तप सूं रूप पावे घणो, पावे सुर अवतारो रे।
रिद्ध सिद्ध सुख संपदा, पामे लील भंडारो रे ॥१॥

तप सूं रोग दूरा टले, विघ्न सहू मिट जावे रे।
तप सू देवता सेवा करे, वलि लक्ष्मी घर आवे रे ॥२॥

खरो खजानो तप माल रो, कोइक पुण्यवंत पावे रे।
दुर्गति जाता ने पाले सही, शिव रमणी सिधावे रे ॥३॥

राजा आदर देवे घणो, ज्यारो सगला नर धीरो रे।
लोक भाषा ऐसी कहे, ज्यारो तपस्या में सीरो रे॥ ४॥

पोते जो तपस्या करे, ज्यारी आन वहु माने रे।
सेवक आन लोपे नहीं, आवागमन सूं छूटे रे॥ ५॥

अज्ञान पणे जो तपस्या करे, तो भी निष्फल नहीं जावे रे।
ज्ञान सहित तपस्या करे, वे तो शिव रमणी सिधावे रे॥ ६॥

करतां एक नवकारसी, सो वरस नरका सूं छूटे रे।
इस पच्छखान में नफो घणो, जन्म मरण सूं छूटे रे॥ ७॥

तपस्या कीधी महावीरजी, कर्मा ना दल काटिया रे।
धन्ना मुनिश्वर तप तपियो, स्वार्थ सिद्ध जाय लागा रे॥ ८॥

वेले वेले कियो पारणो, गणधर गौतम स्वामी रे।
खंधक मुनि तप तपियो, हुया मुगत का गामी रे॥ ९॥

अर्जुन माली तप तपियो, मुनिवर मेघ कुमारो रे।
परदेशी राजा तपस्या करी, पाया अमर विमानो रे॥१०॥

आठ राणी श्री कृष्ण की, ब्राह्मी चन्दनवाला रे।
तेइस श्रेणिक नी सुन्दरी, काटिया कर्म ना जाला रे॥११॥

तोड़िया कर्म चण्डाल ने रे, काया सूं तपस्या करी करी रे।
आसौज त्रेपन चौमासो रे, जेठ मुनि कहे तप सारो रे॥१२॥

।। तारो तारो तारो निज आत्मा ।।

तारो, तारो, तारो निज आत्मा ने तारो रे।
मिनख जमारो आयो हाथ में ।।टेर।।

हिंसा झूठ चोरी जारी लोभ लालच छोड़ो रे।
मनड़ा ने मोड़ो माया मोह सूं ।।तारो।। १ ।।

वैर जहर झगड़ा राड़ आपसी मिटाओ रे।
जिन गुण गावो चित्त चावसूं ।।तारो।। २ ।।

ध्यान जिन राज में थें स्नेह लगाओ रे।
लाभ कमावो सत संग सूं ।।तारो।। ३ ।।

मीठा मीठा ज्ञान ध्यान आतम में रमावो रे।
सटके सीधावो शिव लोक में ।।तारो।। ४ ।।

ज्ञानी बण मायली आखियां सू जोवो रे।
सोवो मती भव नींद में ।।तारो।। ५ ।।

जागण रो मोको आयो, सुगुरु जगावे रे।
धर्म सुणावे जिन राजरो ।।तारो।। ६ ।।

।। तुम माल खरीदो ।।

त्रिशला नन्दन की खुली दुकानजी, तुम माल खरीदो ।। टेर ।।

सूत्र रूप भरी बहु पेटो, मुनि वर बने बजाजी ।
वजेह २ का माल देखलो, कर अपना मन राजी जी ।। १ ।।

जिनवाणी को गज है सांचो, जरा फरक मतजान ।
नाप नाप ने देवे संत गुरु, मत करो खेंचा तानजी ॥ २ ॥

जोव दया की मलमल भारी, शुद्ध मन मशरू लीजे ।
डबल जीण समता तणो सरे, चावे सो कह दीजेजी ॥ ३ ॥

तपस्या को बन्दागार भारी, साडी ले संतोष ।
ऐसा कर व्यापार जिनोंसे, चेतन पावे मोक्षजी ॥ ४ ॥

खुशी होवे तो सौदा लेना, नहीं जबरी का काम ।
मन माने सो माल ले जावो, मैं नहीं मांगां दामजी ॥ ५ ॥

माल बिकेछे थोड़ी जिणसें, खरच पूरो नहीं चाले ।
आवेगा कोई उत्तम प्राणी, माल हमारे पल्लेजी ॥ ६ ॥

माल बिकेतो रहनो होसी, सुनजो भवियन बात ।
भरिया खजाना कदियन खूटे, सत गुरु दीना हाथजी ॥ ७ ॥

उन्नीसे छतीस साल में, अम्वाले चोमास ।
'करण मुनि' उपदेश सुनाया, मोक्ष जाने की आसजी ॥ ८ ॥

॥ तुम हो तीन जगत के स्वामी ॥

तुम हो तीन जगत के स्वामी, तुम हो घट २ अन्तर्यामी ।
अर्हन् ! चौवीसी भगवान, विनय से बार २ वंदामी ॥ टेर ॥
ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्म, सुपाशा २ ।
चन्द्र, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासु, विमल, शिववासा २ ।
मुझ में बहुत भरी है खामी, करदो मुझको सत्पथगामी ॥ १ ॥

अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, सुव्रत, नमि नेमा २ ।
पारस, महावीर, ग्यारा गणधर, वीस विहर जिन खेमा २ ।
कहता 'पारस' चरणे नामी, करना कृपा कृपानिधानी ॥ २ ॥

॥ तूं धन तूं धन तूं धन तूं धन ॥

तूं धन तूं धन तूं धन तूं धन, शांति जिनेश्वर स्वामी ।
मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सर्व भणी सुख गामी ॥ १ ॥

अवतरीया अचरा दे उदरे, माता साता पामी ।
शांति शांति जगत बरताई, सर्व कहे सिर नामी ॥ २ ॥

तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ हरामी ।
कंचन डार काच चित्त देवे, वांकी बुद्धि में खामी ॥ ३ ॥

अलख निरंजन मुनिमन रंजन, भय भंजन विसरामी ।
शिव दायक लायक गुण गायक, वायक है शिव गामी ॥ ४ ॥

'रतनचंद' प्रभु कछुअन मांगे, सुन तुं अंतर यामी ।
तुम रहवन की ठौर वतादो, तो हुं सहु भर पामी ॥ ५ ॥

॥ तूं ही तूं ही प्रभु, मेरा मन मांही बसियो ॥

तूं ही तूं ही प्रभु, मेरे मन मांही बसियो ।
मन मांही बसियो, दिल मांही धसियो ॥ तूं ही ॥ टेर ॥

उठत बैठत सोवत जागत,
नाम तिहारो उर बिच फसियो ॥ १ ॥

तुम सम दूजो देव न दीसे,
केवल ज्ञान कला गुरा रसियो ।। २ ।।

ध्यान दिलूं दी भक्ति भाव सूं,
तुम पद सेवत पातक नसियो ।। ३ ।।

पदम कमल सम गुण मकरंद रस,
मोरो मन मधु पीवण तसियो ।। ४ ।।

सुविधि नाथ जिन सुध बुध वगसो,
"सुजान" तुम गुरा प्रेम हुलसियो ।। ५ ।।

।। तेरो महिमा बड़ी महान ।।

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत क्या....)

वर्द्धमान श्री महावीर को, मेरा हो प्रणाम,
तेरी महिमा बड़ी अपार, तेरी....

करुणासागर दीनदयालु, तारा सकल जहान,
तेरी महिमा बड़ी महान, तेरी....।।टेर।।

पिता सिद्धार्थ त्रिशला जाया,
घर-घर में आनन्द था छाया,
देव-देवियां मंगल गाया, धर्म का तू अवतार कहाया ।
कुण्डलपुर में जन्म लिया था, वीर प्रभु भगवान ।।तेरी....।।१।।

दीन-दुःखी का तू रखवाला, तूने तारी चन्दनवाला,
फेरी जिसने तेरी माला, उसका संकट तूने टाला।
चण्डकोशिया जैसे तारे, वड़े-वड़े शैतान ।।तेरी....।। २ ।।

यज्ञवलि को दूर हटाया, दया-धर्म का नाद वजाया,
छूग्राछूत, का भूत भगाया, मानवता का मान वढ़ाया।
ज्ञानमुनि जिनधर्म का जग में, खिला खूब उद्यान ।।तेरी....।।३।।

।। थें दीक्षा ले लो ।।

थें दीक्षा ले लो, दीक्षा लेवण में भारी मोज है ।। टेर ।।
दीक्षा लीधी ग्रादिनाथ प्रभु, भरताधिप महाराज।
नेमनाथ राजुल दीक्षा ले, पायो शिवपुर राज जी ।। १ ।।

ग्रंजुन माली सो हत्यारो, दीक्षा ले शिव पायो।
वीर प्रभु रा चरण शरण में, जीवन सफल बनायो जी ।। २ ।।

नहीं कमाणो, नहीं कजाणो, नहीं बोरणो व्याज।
कोर्ट कचेड़ी में नहीं जाणो, नहीं गमाणी लाज जी ।।३।।

नहीं पोवणो, नहीं पीसणो, नहीं लावणो नाज।
चिंता शोक न मन में लाणो, कर नहीं देणो राज जी ।।४।।

नहीं रोवणो नहीं घोवणो, नहीं कराणो काज।
सदा ग्रात्म साधन में रहणो, पाणो निज गुण राज जी ।।५।।

ज्ञान ध्यान रो माल कमाणो, निर्दूषण ग्रन्न लेणों।
सत्य शील ने मित्र बणाणो, शुद्ध रूप ने पाणो जी ।।६।।

।। दया करने में जिया लगाया करो ।।

दया करने में जिया लगाया करो ।।टेर।।

बोलो तो पहले मन मांही सोचो,
नहीं दूजे के दिल को दुखाया करो ।। दया० १ ।।

चलो तो पहले भूमि को देखो,
छोटे मोटे जीवों को बचाया करो ।। दया० २ ।।

जो धन माल पास में होवे,
गरीबों को मदद दिलाया करो ।। दया० ३ ।।

जो धन माल पास में न होवे,
दूजे के धन पे मत ललचाया करो ।। दया० ४ ।।

चारों ही आहार रात न खावो,
ऐसी बातों को दिल में जमाया करो ।। दया० ५ ।।

"चौथमल" कहे आठों पहर में,
दो घड़ी-प्रभुजी को ध्याया करो ।। दया० ६ ।।

।। दया को लेवे दिल में धार ।।

(तर्ज : म्हारा श्याम करेला अवधार घनश्याम री महिमा अपार)

दया को लेवे दिल में धार, वो भव सिन्धु तिरे ।। टेर ।।
दया धर्म सब में परधान, सब मजहब करते फरमान ।
देखो सूत्र दरम्यान, वो भव सिन्धु तिरे ।। १ ।।

देखो नेमनाथ भगवान, त्यागी राजुल महा गुणवान।
पशुओं पे करूणा आन, वो भव सिन्धु तिरे ॥ २ ॥

धर्म रुचि तपसी अणगार, कीड़ियां को दया दिल धार।
कडवा तूम्बा को कीनो आहार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ३ ॥

मेघरथ राजा हुवा भूपाल, शरण परे वो रख्यो दयाल।
कीनो है काम कमाल, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ४ ॥

फेर हुवा शिवी राजन, कवूतर की वचाई जान।
है विष्णु में लिखा वयान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ५ ॥

नवी मुहम्मद हुआ हजूर, तन को देना किया मंजूर।
फाक़ता पै कीनी दया पूर, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ६ ॥

दया हीन मत तजो तमाम, सव मजहव में वही निकाम।
मानो यह सच्चा कलाम, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ७ ॥

वैठ दया की जहाज मंझार, भव सिन्धु दे पार उतार।
यही है तप जप सार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ८ ॥

'चोथमल' कहे सुनो सुजान, दया धर्म महा सुख की खान।
यही है वीर फ़रमान, वो भव सिन्धु तीरे ॥ ९ ॥

॥ दया पालो बुधजन प्राणी ॥

(तर्ज़ : नेमजी की जान वणी भारी)

दया पालो वुधजन प्राणी, स्वर्ग अपवर्ग सुख दानी ॥ टेर ॥

दया से दुःख दरिद्र जावे, अचिंती कमला घर आवे।
सुयश कीरति दहु दिशि छावे, इन्द्र अहमिंदर पद पावे।
दोहा—अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, विन उपाय सुख भोग।
टले विघन विन जतन हो सरे, सफल होय उद्योग।।
वात यह गुरु मुख से जानी २ ।। १ ।।

दया में धर्म जगत माने, भेद को विरला हो जाने।
जीव की जाति न पहिचाने, वृथा ही पक्षपात ठाने।।
दोहा—पचेन्द्रिय अरु तीन वल, आयु सास उसास।
इन दश प्राण परापतन के को, उपजावे नहीं त्रास।।
दया इसको कहते ज्ञानी ।। २ ।।

जीव को जीतव ही प्यारो, न तन से हो न चहें न्यारो।
दुखी से दुखी होय भारो, मरण तोहु लागे खारो।।
दोहा—सुरपति को तो स्वर्ग में, कृमि को वीट मंझार।
जीतव आशा मरण भय, है निश्चय इक सार।।
दुहन को ये आगम वाणी ।। ३ ।।

प्रथम तो प्रिय धन सब ही को लगे धन से सुत अति नीको।
पुत्र से वल्लभ तन जानो, अंग से अधिक इंद्रि मानो।
दोहा—नयन आदि इन्द्रीन से, अधिक पियारे प्राण।
या कारण तुम मति करो, कोई पर प्राणों की हान।।
वुरी जग में वेईमानी ।। ४ ।।

चहो जो भव-दधि से तिरना, तो प्रतिदिन दया धरम करना।
यही मुनि 'माधव' की शिक्षा, करो सब जीवन की रक्षा।।

दोहा—वसु रस निधि शशि साल में, रच्यो छंद सुखकंद ।
गुजरांवाले नगर के सरे, सुनो भविकजन वृंद ॥
जैन मत जग में लाशानी ॥ ५ ॥

॥ दया बिन बावरिया ॥

(तर्ज :—पछी बावरिया)

दया बिन बावरिया, हीरा जन्म गंमावे । टेर ।

कोमलता का भाव न मन में, फिर क्या सुन्दरता से तन में ।
जीवन विष वरसाये ॥ दया० १ ॥

दीन दुःखी को सेवा करले, पाप कालिमा अपनी हरले ।
तिऊ जग मंगल गाये ॥ दया० २ ॥

धन लक्ष्मी का गर्व न करना, आखिर को सब तज कर मरना ।
परहित क्यों न लुटाये ॥ दया० ३ ॥

यह जीवन है एक कहानी, पाप पुण्य है शेष निशानी ।
"अमर" सत्य समझाये ॥ दया० ४ ॥

॥ दीनकाय षट कहे ॥

राग—(पुत्री वेच धन खावे, हाय कैसे माँ-बाप)

दीन काय षट कहे, सुनो जगनाथ ! पुकार ॥ टेर ॥
प्रभो ! तुम तो मुक्ति सिधारो, अब हमरो कौन सहारो ।
बतावो जगदाधार ॥ १ ॥

गति-शक्ति विकल तन पायो, कछु जोर चले न चलायो।
अपाहिज हम दुःख टार ॥ २ ॥

दीसे नहीं कोई सहाई, सब जग हमरो दुःखदाई।
कहाँ जावें किरतार ॥ ३ ॥

'को' धन 'को' सुख के तांई, 'को' धर्म हेत अन्याई।
करे हमारो संहार ॥ ४ ॥

प्रभु पर्व दिवस जब आवे, तब भी नहीं करुणा लावे।
करे हम घात अपार ॥ ५ ॥

प्रभु तुम भय जरा न लावे, हिंसा में धर्म बतावे।
कुयुक्ति लगा लवार ॥ ६ ॥

सुनी विनय वीर प्रभु बोले, तुम दिये संतन के खोले।
सरावग साखीदार ॥ ७ ॥

जो मुनि श्रावक फिर जावे, तो कहाँ पे न्याय करावे।
बतावो नाथ विचार ॥ ८ ॥

जो साधु साध कहाई, करे धर्म में तुम वध धाई।
तिन्हों को नरक तैयार ॥ ९ ॥

सुन वीर प्रभु की वाणी, षट काय कहे हर्षानी।
'धन्य तुमरो अवतार' ॥ १० ॥

श्री सुगुरु 'मगन' मुनि ध्याई, 'माधव' कहे वीर बताई।
'दया पालो, नरनार' ॥ ११ ॥

।। दुःख है ज्ञान की खान ।।

दुःख हैं ज्ञान की खान, मनवा दुःख है ज्ञान की खान ।
दुःख में ज्ञान ध्यान बहु उपजे, सुख में करत प्रयाण ।। टेर ।।

दुःख ही शिक्षक है इस जग में, प्रभु का शुभ वरदान ।
अति उत्तम यह पाठ पढ़ावे, छूट जाय सब बान ।। १ ।।

जिसने जग में दुःख नहीं देखा, वह कैसा इन्सान ।
उन्नत पद पर कबहुं न पहुँचे, दुनियां के दरम्यान ।। २ ।

ज्यों ज्यों स्वर्ण अग्नि में डाले, रूप धरे छविमान ।
तैसे ही दुःख की अग्नि में, तप कर हो मति मान ।। ३ ।।

कौन बिगाना कौन है अपना, दुःख में पड़त पिछान ।
दुनियां के कसने को कसौटी, खोने का अभिमान ।। ४ ।।

।। दुनियां एक बाजार है ।।

(तर्ज :—जिया बे करार है)

दुनियां एक बाजार है, सौदे सब तैयार है ।
जी चाहे सो लीजिये, नहीं इन्कार है ।। ध्रुव ।।

दुनियां के बाज़ार में प्यारे, लाखों लोग ठगाए जी ।
ऐसी वस्तु लेना मित्र तूं, यहां वहाँ सुख पाएजी ।। १ ।।

लिया किसी ने रत्न जवाहर, किसी ने सोना चांदी जी ।
किसी ने मादक वस्तु जहर में, पूंजी सभी गुमा दी जी ।। २ ।।

राम ने अपना जन्म सफल कर, जग में नाम कमाया जी।
जीवन रत्न के बदले मुरख, रावण अपयश पायाजी ॥ ३ ॥

शेर शिवा राणा प्रताप ने, शौर्य तेज अपनाया जी।
पन्ना ने स्वामी भक्ति में, प्यारा लाल कटाया जी ॥ ४ ॥

शूल भी है फूल भी है, दुनियां एक बगीचा जी।
'केवल' आनन्द पाया जिसने, पुण्य का पौधा सींचा जी ॥ ५ ॥

॥ दुनियां की झूंठो प्रीत ॥

मैंने अच्छी तरह से जानी रे, दुनियां की झूंठी प्रीत।
है श्वास जहां लग आशा रे, दुनियां की झूंठो प्रीत ॥ टेर ॥

ये मात पिता सुत भ्राता, मतलब का है सब नाता।
बिन मतलब दूरा जाता रे ॥ दु० ॥ १ ॥

लाखों का माल कमाया, पापों का घड़ा भराया।
तैने सुन्दर महल चुनाया रे ॥ दु० ॥ २ ॥

उम्दा पोशाक सजावे, तूं इत्तर फुलेल लगावे।
सब तेरा हुक्म उठावे रे ॥ दु० ॥ ३ ॥

कानों में मोटा मोती, तेरी जगमग जगमग ज्योति।
केई स्त्रियां मोहित होती रे ॥ दु० ॥ ४ ॥

फूलों से सेज बिछावे, पद्मण से प्रीत लगावे।
वां पूरो प्रेम जणावे रे ॥ दु० ॥ ५ ॥

जब अन्तकाल आ जावे, भूमि पर तुझे सुलावे।
सब सुन्दर वस्त्र हटावे ।। दु० ।। ६ ।।

तूं कहता धन घर मेरा, अब हुआ लदावु डेरा।
चले पुण्य पाप संग तेरा रे ।। दु० ।। ७ ।।

सब छोड़ी काण मुलाजा, मिलो मुख मुख धन सब खाजा।
तेरा करके मृत्यु काजा रे ।। दु० ।। ८ ।।

फिर उसी सेज के मांई, पर पुरुष को लेत बुलाई।
फिर तुझको दे बिसराई रे ।। दु० ।। ९ ।।

राजा परदेशी की प्यारी, थी सुरीकांता नारी।
दिया पति को मारा रे ।। दु० ।।१०।।

गुरु प्रसादे 'चौथमल' गावे, सच्चा उपदेश सुनावे।
कर धर्म ध्यान सुख पावे रे ।। दु० ।।११।।

साल गुणयासी खासा, किया उज्जैन चौमासा।
लिया लूणमन्डी में वासा रे ।। दु० ।।१२।।

।। दुनिया दुःख कारी ।।

दुनियां दुःख कारी, तूं छोड़ सके तो छोड़, दुनियां दुखकारी ।।टेर।।

पाप अठारा करना पड़ता, भार कर्म का बढ़ता जाता।
कर्म बन्ध की ठोर ।। १ ।।

पेट पापियो खूब सतावे, देश दिशावर में भटकावे।
करनी रे दौड़ा दौड ॥ २ ॥

कोइक घर में पुत्र कंस सा, कोइक घर में नार कर्कशा।
नित की माथा फोड़ ॥ ३ ॥

कोइक घर में सासू लड़ती, नगद भोजायां झगड़ा करती।
बोले कड़वा बोल ॥ ४ ॥

घर में बेटा, पोता, पोती, दादी रसोई न्यारी करती।
दादो चलियो छोड़ ॥ ५ ॥

कोइक घर में नौ दस बेटा, परण्या न्यारा हो गया मोटा।
बुढ़ो कमावे दौड़ ॥ ६ ॥

लड़की मोटी वर नहीं मिलियो, कोइक ने वर खोटो मिलियो।
गयो दिसावर छोड़ ॥ ७ ॥

घणी बेटियां दुखड़ो मोटो, इज्जत रखणी धन रो टोटो।
पुत्र मिलियो दिल तोड़ ॥ ८ ॥

मन रो चायो कुछ नहीं होवे, जो नहीं चावो वो झट होवे।
जग में मोटी खोड़ ॥ ९ ॥

तन में, मन में लगी बिमारी, रोग शोक में दुखियो भारी।
जीव झुरे चहुं ठोर ॥ १० ॥

जन्म मरण का दुःख अनन्ता, दुखड़ा जैसे सुई चुभन्ता।
साडा तीन करोड़ ॥११॥

गर्भवास में ऊंधो लटक्यो, नौ महिना गू-मूत में लपट्यो।
रेयो अंग सिकोड़ ॥१२॥

नरक गति का दुःख अनन्ता, छेदन भेदन खूब करन्ता।
मच रही दौड़ा दौड़ ॥१३॥

तिर्यन्च गति का दुःख अपारा, मरता डरता भगे बिचारा।
दुःख री मोटी ठोड़ ॥१४॥

जो सुख चाहो दुनियां छोड़ो, संयम से तुम नाता जोड़ो।
पाप कर्म सब छोड़ ॥१५॥

॥ दुनिया पइसे री पुजारी ॥

दुनियां पइसे री पुजारी, पूजा करते नर और नारी।
जग में पाप कमावे भारी रे, माया पइसे की ॥ १ ॥

पइसे बिन माता मुख मोड़े, पिता देख कर्म ने फोड़े।
घर में झगड़ो टंटो होवे, माया पइसे की ॥ २ ॥

पइसो मां बापां ने प्यारो, नहीं तो लागे बेटो खारो।
उणने करदे घर सूं न्यारो, माया पइसे की ॥ ३ ॥

पइसो पास में परनि राजी, नहीं तो ताना देवे न्यारी।
केवे पीयर में सुख भारी, माया पइसे की ॥ ४ ॥

पइसो परदेशां ले जावे, नहीं तो गलियां गोता खावे ।
उणने पागल के वतलावे रे, माया पइसे की ॥ ५ ॥

पइसो छप्पन भोग वनावे, नहीं तो भूखा ही सो जावे ।
उणने कोई नहीं जगावे, माया पइसे की ॥ ६ ॥

पइसो वूढ़ा ने परणावे, पइसो कन्या ने विकवावे ।
नहीं तो क्वांरो ही मर जावे, माया पइसे की ॥ ७ ॥

पइसा सूं नर पूज्यो जावे, नहीं तो याद कभी नहीं आवे ।
उणने सगलो जग ठुकरावे, माया पइसे की ॥ ८ ॥

॥ दुनियां में कौन हमारा ॥

(तर्ज : जव तुम्हीं चले परदेश)

तूं भूल के अपने आप, रहा कर पाप, ओ चेतन प्यारा ।
दुनियां में कौन हमारा ॥ टेर ॥

जव मौत शीष पर आवेगी, कोई चीज साथ नहीं जावेगी ।
माँ वाप भाई न देगा कोई सहारा ॥ १ ॥

ये जितने रिश्ते नाते हैं, वस मरघट तक ही जाते हैं ।
पर हंस अकेला करता, कूच किनारा ॥ २ ॥

वस धर्म ध्यान संग जावेगा, जो शान्ति सुख पहुंचावेगा ।
ले जैन धर्म की शरण मिले, शिव द्वारा ॥ ३ ॥

नित वीतराग गुण गाया कर, निज जीवन सफल बनाया कर ।
मोह माया है जग "चन्दन" झूठ पसारा ॥ ४ ॥

॥ दुनियां में देखो, कैसे कैसे पापाचार होते ॥

दुनियां में देखो, कैसे कैसे, पापाचार होते ॥ टेर ॥

भाई से भाई, बेटा बाप से लड़ाई लड़ने ।
देखो जी नालायक लड़के ॥
कोर्टों में जाकर लाखो रुपयों को बर्बाद करते ॥ १ ॥

अच्छे घरों के लड़के, बढ़िया सी वो ब्राण्डी पीते ।
होकर बेहोश देखो, नालियों में खाते गोते ॥ २ ॥

बूढ़े मां बाप को सताते हैं नालायक लड़के ।
देखो जी नालायक लड़के ।
घर की सुशीला नारी छोड़, वे वैश्या को सेते ॥ ३ ॥

भूखे, अनाथ, विधवा, लाखों फिरते मारे मारे ।
सन्डे मुसन्डे पन्डे, हलवा पुड़ी खाकर सोते ॥ ४ ॥

भोली विधवाओं को, फुसलाते हैं चालाक बाबू ।
शादी का नाम लेकर बीज दुराचार का बोते ॥ ५ ॥

॥ देखो रे आदेश्वर बाबा ॥

देखो रे आदेश्वर बाबा, कैसा ध्यान लगाया है ॥ टेर ॥
नाभी राय के पुत्र कहीजे, मां मरु देवी जाया है ॥ देखो ॥ १ ॥

कर ऊपर कर भविक विराजे, आसन दृढ़ जमाया है ।
केवल ज्ञान उपाय जिनेश्वर, शिवरमणी को ध्याया है ।।देखो।।१।।

सुरनर जिनकी भक्ति करत है, जिनवर सुं लिवलाया है ।
सेवा कियां मिले सुख संपत, सब जीवन सुख पाया है ।।देखो।।२।।

देवी देव मिले बहुतेरे, भविजन मंगल गाया है ।
तीन लोक में महिमा प्रभु की 'चन्द्रकुशल' गुण गाया है ।।देखो।।४।।

।। देखो विषयों ने मणिरथ भूप को ।।

(तर्ज : ऋषभ कन्हैया लाला)

देखो विषयों ने मणिरथ भूप, को नीचा दिखलाया ।
आया न कुछ भी उसके हाथ, आखिर में पछताया ।। टेर ।।

छोटे भाई की नारी, मेणरया पे नीत विगाड़ी ।
करने को अपनी रानी, दुष्ट ने प्रपन्च रचाया ।।देखो।।१।।

करके कपट मिलने काज, रजनी में वो आया ।
लीने भाई के प्यारे प्राण, नहीं वह करुणा लाया ।।देखो।।२।।

महलों में जाते उसको, आनकर, विषधर ने खाया ।
मरके पहुंचा है नरक द्वार, करणी का फल पाया ।।देखो।।३।।

गुरु प्रसादे "चौथमल", मुनि ने समझाया ।
धन्य पुरुष वही काम के, वश में नहीं आया ।।देखो।।४।।

॥ देव गुरू धर्म तत्व ॥

(तर्ज : चुप-चुप खड़े हो)

देव गुरू धर्म तत्व, तीन ये महान् है।
इन्हें पहिचाने वह, सच्चा बुद्धिमान है ॥ टेर ॥

करुणा के मेघ-वीर, अमृत वहा गये,
सर्व जग जीव हित, देशना सुना गये, जी २
तू भी मिठा घूंट पीले, जीवन रसाल है ॥ १ ॥

वीर पुत्र महामुनि, करमों से भूंझते,
भौतिक सुखों को छोड़, आत्म सुख ढूंढते जी, २
षट्काय प्रतिपाल गुण के निधान हैं ॥ २ ॥

सम्यक्त्व मूल धर्म, वीर ने बताया है,
तेरी पुण्यवानी महा, जो कि हाथ आया है जी, २
प्रेम से जो पाले वह, पावे निर्वाण है ॥ ३ ॥

तत्व क्या है ? रत्न हैं ये. मूल्य न अंकात है,
संकट में सुख में ये, जन्म जन्म साथ हैं जी, २
केवल यों "पारस" को देत ज्ञान दान है ॥ ४ ॥

॥ दे मस्त फकीरी वह मुझको ॥

दे मस्त फकीरी वह मुझको, साहों की भी परवाह न हो।
मैं खुद न किसी का शाह बनूं, मेरा भी कोई शाह न हो ॥टेर॥

दुनियां दौलत में मस्त रहे, मैं मस्त रहूँ तुझको पाकर ।
मै रहूं अकिन्चन सा बनकर, पर कण भर मन में चाह न हो ॥१॥

पर पीड़ा मेटूं जी भर, पर निज पीड़ा न रुला पाये ।
पर सुख को अपना सुख समझूं, सुखिया से मन में डाह न हो ॥२॥

पर घर में पाऊं पूजा, और स्व घर में अपमान मिले ।
दोनों में ही मुस्कान रहे, मन के भीतर भी आह न हो ॥३॥

सब रंग रहे इस जीवन में, पर पाप न मन में आ पावें ।
जीवन वन का वनचर बनकर, घूमें मन पर गुमराह न हो ॥ ४ ॥

॥ दृढ़ वक्षस्थल भुज दण्ड सबल ॥

(तर्ज : दिल लुटने वाले जादूगर....)

दृढ़ वक्षस्थल भुज दण्ड सबल, और कंचन जैसी काया है ।
आंखों में चमक चेहरे पर दमक, यह ब्रह्मचर्य की माया है ॥

जो इसके महत्व को भूल गया, वो भूल गया सुख की गलियां ।
योवन बसन्त से पहले ही, मुर्झी उसकी जीवन कलियां ॥
आँखों के नीचे गड्ढे है, गड्ढे में काली छाया है ॥ १ ॥

उमंग रहे उल्लास रहे, निर्भयता शान्ति साथ रहे ।
प्रातः के सुरभित फूलों सा, मुख खिला खिला दिन रात रहे ।
तन मन आनन्द हर्षित उसके, जिसने इसको अपनाया है ॥ २ ॥

हीरा हो लेकिन कांति न हो, दीपक हो लेकिन तेज न हो।
मोती हो लेकिन आव न हो, साथी हो लेकिन मेल नहीं ।।
दो कोड़ी उसकी कीमत है, जिसने यह लाल लुटाया है ।। ३ ।।

सभ्यता संस्कृति का भूषण, गुण रत्नों का आगर है यह।
अहिंसा और सत्य का साथी है, तप जप का श्रृंगार है यह ।।
'केवल मुनि' सारे व्रतों में, ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ बताया है ।।४।।

।। धन्य जो पाले नर नारी ।।

(लावनी-अष्टपदी)

ब्रह्म व्रत दिव्र शिव सुखकारी, धन्य जो पाले नर नारी ।। टेर ।।

शीलसे सुख सम्पति पावे, विघन भय दूर ही टल जावे।
सुजश कीरति दहु दिश छावे, देवपति पग वंदन आवे ।।
दोहा—जो शुद्ध मन वच कायसे, पाले शील रसाल।
सो कान्हड़ कठिारे के सम, पावे मंगल माल ।।
हाल ताको कहूं विस्तारी ।। ध० ।। १ ।।

अयोध्या नगरी मंझारो, नृपति कीरतिधर सुख कारी।
निर्धन पे मन मोहनगारो, बसे तिहां कान्हड़ कठियारो ।।
दोहा—भवजीवों के भाग्य से, साधु तने परिवार।
गाम नगरपुर विचरत आया, चउ नाणी अनगार ।।
धर्म उपदेश दियो भारी ।। ध० ।। २ ।।

श्रवण कर भविजन सुख पायो, भाग्यवश कान्हड तिहां आयो।
सुगुरू दर्शन कर हरपायो, नियम लो मुनिवर फरमायो।

दोहा—कान्हड़ कहे द्यो मों भनी, शील वरतनो आंन।
पूनम के दिन पर नारी को, कीनों मैं पचखान॥
आज से साख गुरू थारी ॥ घ० ॥ ३ ॥

नियम ले वंदन कर भावे, धाम निज आयो चित चावे।
विपिन से दारू भार चावे, नगर में वेचे अरू खावे॥

दोहा—यों अनुक्रम करतां थकां, आयो वरपा काल।
घोर घोर घन वरषन लागो, नदी बहे असराल॥
विहग बोलें बोली प्यारी॥ घ० ॥ ४ ॥

कान्ह रज्जू कुटार झोली, ओढ सिर पे कामल काली।
चल्यो वन काटन तरु-डाली, धरणि पे हो रही हरियाली॥

दोहा—विषम नदी इकवाट में, पेख विलख मुख कान।
वैठ तटिनी तट पर सोचे, व्यर्थ भयो हैरान॥
करम गति टले नहीं टारी॥ घ० ॥ ५ ॥

कान्ह फिर साहस दिल धर के, लियो इक लक्कड़ जल तरके।
तास के खंड खंड करके, बांध लई भौली मन भरके॥

दोहा—आयो नगर बाजार में. वेचन के हित कान।
तिन अवसर तिन नगर में, श्रीपति सेठ सुजान॥
बसै शुद्ध बारह व्रत-धारी॥ घ० ॥ ६ ॥

सेठ को चंपक अनुचरजी, गयो बाजार हरष धरजी।
मिल्यो कठियारो कान्हड़जी, मोल ले भार चल्यो धरजी॥

दोहा—चोखो चंदन बावनो, महके गंध महान।
तदपि काठके मोल कान्ह ने, बेच्यो बिन पहचान ॥
सेठ लखि बोल्यो सुविचारी ॥ ध० ॥ ७ ॥

कहो तुम चंपक परकासी, मुल्य मौलीनों स्यूं थासी।
टका दो लीजै सुखराशी, दाम ले परो घरे जासी ॥
दोहा—कान्हड़ कठियारा प्रते, सेठ कह्यो समझाय।
दिया सुनैया भार प्रमाणे, कान्हड़ हरषित थाय ॥
अमित तन छाई हुंसियारी ॥ ध० ॥ ८ ॥

अंग में फूल्यो नहीं मावे, द्रव्य ले निज घर को जावे।
एक वेश्या लखि ललचावे, द्रव्य से अनरथ हो आवे ॥
दोहा—गणिका बैठी गोख में, नट विट लंपट साथ।
कान्हड़ लखि रसिया हंस बोले, यो आयो तुम नाथ ॥
करेगी क्यों हमसे यारी ॥ ध० ॥ ९ ॥

श्रवण कर वचन क्रोध खाके, वेग वेश्या के ढिंक जाके।
दियो सब धन अमरस पाके, गये रसिया मुख बिलखाके ॥
दोहा—देख द्रव्य गणिका उठी, आई सनमुख धाय।
आगे आवो प्राणेसरजी, धन तुम तुमरी माय ॥
विहंसी गलबैय्यां डारी ॥ ध० ॥ १० ॥

नायका नापित तेडायो, क्षौर अरु उवटन करवायो।
सुगंधित जल से न्हवरायो, कान्ह मन परमानंद पायो ॥

दोहा—पट भूषण पहिरायके, भोजन सरस जिमाय ।
दे ताम्बूल प्रेम अति पोख्यो, हाव भाव दरसाय ।।
चढी ले जाय चित्रसारी ।। ध० ।। ११ ।।

सहेली सगरी वुलवाई, आप शृंगारित हो आई ।
रागनी नाटक कर गाई, केल कौशलता दिखलाई ।।
दोहा—काम लता मन मोहिनी, अद्भुत रूपा रेल ।
शुची होय सरमति तस आगे, कंचन की सो वेल ।।
कमल नयनी कामनगारी ।। ध० ।। १२ ।।

कान्ह के वदन मदन छायो, करण रति वेश्या से चायो ।
एतले शशिधर दरसायो, इंदु लखि नियम याद आयो ।।
दोहा—पूनम के दिन मैं कियो, परनारी परिहार ।
अवसर आये कदियन लोपूं, गुरु वचन की कार ।।
त्याग तोड़यां होसो ख्वारी ।। ध० ।। १३ ।।

दिसाको मिस वनाय सटक्यो, घनो ही वेश्याने हटक्यो ।
दियो वेश्या को वेश पटक्यो, मध्य बाजारे जा खटक्यो ।।
दोहा—निज पट ओढ़ी सोगयो, सूनी देखी हाट ।
विलख वदन कोश्या कान्हड़ की, ऊभी जोवे वाट ।।
हाथ ले कंचन की झारी ।। ध० ।। १४ ।।

भयो परभात निशा वीती, कान्ह आयो न जुड़ी प्रीती ।
हती वेश्या के ये रीती, मुफ्त धन पर को नां छूती ।।

दोहा—नियम आपनो पालवा, ले गणिका सब लार।
कान्हड़ त्याग्यो ते धन जइने, मेल्यो नृप दरवार ॥
विनय कर वात कही सारी ॥ ध० ॥ १५ ॥

वात सुन नृप विस्मय आन्यो, केम वह पुरुष जाय जान्यो।
करण निर्णय दिल में ठान्यो, वुलायो अनुचर मन मान्यो ॥
दोहा—पुर में पडह पिटावियो, सुन लीजो सहु कोय।
कामलता के घर धन तज के, भाग गयो जे होय।
प्रगट सो होवे इनवारी ॥ ध० ॥ १६ ॥

आय तब कान्हड़ कठियारो, कहे यह द्रव्य छै म्हारो।
अहो अनुचर मति किलकारो, वात मोरी यह अवधारो ॥
दोहा—किंकर कर पकड़ीकरी, ले गयो नरपति पास।
कान्हड़ से नृप यों पूछयो, एतो धन तुम पास ॥
केम आयो बादल फाड़ी ॥ ध० ॥ १७ ॥

कहे तव कान्हड़ कर जोरी, विनय भूपति सुनिये मोरी।
श्री पति सेठ धरम धोरी, दियो तिन धन मोय भर झोरी ॥
दोहा—ते धन वेश्या को दियो, मैं मन आनी मान।
पूरण शशि लखि मिस कर नाठ्यो, पाल्यो में पचखान ॥
वुलाओ श्रीपति व्योपारी ॥ ध० ॥ १८ ॥

नृपति से श्रीपति यों भासे, नियम मैं लियो गुरु पासे।
ठगूं ना मैं परधन तासे, करूं सब कारज करुणा से ॥

दोहा—चंदन भारी वेचवा, कान्हड़ आयो स्वाम।
चंदन सम कँचन मैं दीनो, राखन व्रत अभिराम॥
भई वेश्या भी इकरारी॥ ध०॥ १६॥

बात सुन सब धन भूधवने, दियो कान्हड़ को हरप धरने।
प्रशंसा कीनो सब जनने, एतले वन पालक पभने॥
दोहा—ज्ञानी गुरु समोसर्‌या, चालो वंदन राज।
प्रमुदित हो राजा गयो, मुनि वंदन के काज॥
साथ ले सारा सरदारी॥ ध०॥ २०॥

करे नृप परसन पग लागी, कौन! चारों में सौभागी।
कहे मुनि चारों ही त्यागी, अधिक है कान्ह धरम रागी॥
दोहा—साधरमी लखि कान्ह को, दियो सचिव पद सार।
कान्हड़ राज ऋद्धि सुख भोगी, लीनो संजम भार॥
भयो सुर एका भव तारी॥ ध०॥ २१॥

एम जानी बुधजन प्राणी, तजो धन दारा दुःख दानी।
शील व्रत पालो मन आनी, वृथा मत खोवो जिंदगानी॥
दोहा—कान्हड़ मुनिगण गावतां, सुख सम्पति सरसाय।
सुगुरु मगन पद कज सुपसाये, 'माधव' मुनि गुण गाय॥
कहे त्यागी को वलिहारी॥ ध०॥ २२॥

॥ धन्ना मुनि धन मानव भव पायो॥

धन्ना मुनि धन मानव भव पायो, श्री मुख यूं फरमायो॥ टेर॥

श्रेणिक पूछे वीरजी भाखे, उत्तम मुनिवर सारा।
रज में तज में तरतम जोगे अधिक धन्ना अणगारो ।। धन्ना ।।१।।

श्रेणिक राजा आतम हित काजा, धन्ना मुनि पे आवे।
शीश नमावे मुख गुण गावे, जोता त्रिपति न थावे ।। धन्ना ।।२।।

नार बत्तीस अप्सरा सरीखी, धन बत्तीसे क्रोडो।
संसार ने पूठ दी मुनिवरजी, शिवपुर सामा दोड़ो ।। धन्ना ।।३।।

निरंतर तप बेले-बेले, पारणो उछीत आहारो।
समण वणिमग कोई न वंछे, किम तुम कंठ उतारो ।। धन्ना ।।४।।

वार इक्कीस जल मांही धोई, ते अन्न खाइ जल पीयो।
ऐसो तप सुणी उर कंपे, धन धन थारो जीयो ।। धन्ना ।।५।।

चौदह हजार मुनिवर मांही, आपने वीर वखाण्या।
दर्शन आपको पुन्यवत पावे, मैं पिण आज पिछाण्या ।। धन्ना ।।६।।

नव मासे सुध संयम पाली, सर्वार्थ सिद्ध जावे।
रामचन्द्र कहे ऐसे मुनिवर, क्यों नहीं मुक्ति सिधावें ।। धन्ना ।।७।।

।। धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसो ।।

धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े वसो, प्यारो प्राण समान।
कबहूं न विसरूं हो चितारूं नहीं, सदा अखंडित ध्यान ।। १ ।।

ज्युं पनिहारी हो कुम्भ न विसरे, नटवो वरत निदान।
पलक न विसरे हो पदमनी पियुभणी, चकवो न विसरे रे भान ।।२।।

ज्युं लोभी मन धन की लालसा, भोगी के मन भोग।
रोगी के मन माने औषधो, जोगी के मन जोग ॥ ३ ॥

इण पर लागी हो पूरण प्रीतड़ी, जाव जीव परियन्त।
भव-भव चाहूं हो न पड़े आँतरो, भय भंजन भगवंत ॥ ४ ॥

काम-क्रोध मद मत्सर लोभथी, कपटो कुटिल कठोर।
इत्यादिक अवगुण कर हूं भरयो, उदय कर्म के जोर ॥ ५ ॥

तेज प्रताप तुम्हारो प्रगटे, मुज हिवड़ा में आय।
तो हूं आतम निज गुण संभालने, अनन्त बली कहवाय ॥ ६ ॥

'भानु' नृप 'सुव्रता जननी तणो, अंगजात अभिराम।
'विनयचन्द' ने वल्लभ तूं प्रभु, सुध चेतन गुण धाम ॥ ७ ॥

॥ धन्य अर्जुन मुनिवर ॥

(तर्ज : चम्पक सेठ की)

धन्य अर्जुन मुनिवर, दीक्षा लेई ने चाल्या गोचरी ॥ टेर ॥

पूछा वीर से कहो करूं क्या, देओ राह बताय।
जिम सुख होवे तिम करो सरे, यों वीर दियो फरमाय ॥ १ ॥

तहत् उच्चारो वन्दन कीनो, मन में सोचे जाय।
बेले बेले करूं तपस्या, देऊं कर्म खपाय ॥ २ ॥

राजगृही नगरी के अन्दर, लोग रहे घबराय।
मुनि वेप में आता देखी, और अचम्भो पाय ॥ ३ ॥

मुखपति मुख पे रजो हरण, कर जोरी घर २ जाय।
लेता देख्या भोजन पारणे, लोग क्रोध में आय ॥ ४ ॥

मारे ताड़े गाली सुनावे, भोजन मिलता नाय।
दिये परिषह जनता ने तब, समता भाव रहाय ॥ ५ ॥

मुनिवर सोचे अनर्थ कीनो, कुटुम्ब मार अपार।
दिये न वैसे दुःख उन्होंने, क्षमा हृदय में धार ॥ ६ ॥

हुए न हुए पूर्ण पारणे, वर्ष यों अर्ध बिताय।
वीर गुण करते धिक्क आत्मा, केवल उपन्यो आय ॥ ७ ॥

धन्य २ है वीर प्रभू को, अर्जुन दीनों तार।
गुरू प्रसादे "सागर" वन्दन, करता बारम्बार ॥ ८ ॥

॥ धर्म बिना धूल जमारो रे ॥

सुगुरू की सीख मन धारो रे, धर्म बिना धूल जमारो रे ॥ टेर ॥

अनादि काल थी आत्मा रे, पा रही कष्ट कलेश।
कोई सुकरत योग से रे, उपजाई पुन्य की रेस।
यो मिल गयो नर अवतारो रे ॥ धर्म बिना ॥१॥

ऊँचे कुल में उपन्यो रे, उत्तम वस्तु संयोग।
जिनकी आशा करे देवता रे, वो मिल गयो तुझे योग।
जीती बाजी अब क्यों हारे रे ॥ धर्म बिना ॥ २ ॥

सात पीढ़ी कीनी नहीं रे, ऊंची हवेली झुकाय।
गज घोड़ा रथ पालकी रे, बागां में बंगला सजाय।
कियो तेने जगत पसारो रे॥ धर्म बिना ॥ ३ ॥

लाखां को धन भेलो कियो रे, तो नहीं चाले साथ।
इतो विचार हुयो नहीं रे, छोड़ गयो म्हारो बाप।
कोड़ी नहीं ले गयो लारो रे॥ धर्म बिना ॥ ४ ॥

कुटुम्ब पोषण कारणे रे, अनर्थ करसी अपार।
यमद्वारे जासी एकलो, कोई नहीं भागीदार।
करे तूं क्यों कर्मों को भारो रे॥ धर्म बिना ॥ ५ ॥

कूड़ कपट करतो सदा रे, पग पग बोलतो झूंठ।
ममता कर कर मर रह्यो रे, पुन्य गयो सब खूट।
प्रकट भयो पाप सितारो रे॥ धर्म बिना ॥ ६ ॥

नाटक गंजी का ख्याल में रे, आधी रात बिताय।
दुर्बुद्धि का गुलाम ने रे, धर्म कर्म नहीं सुहाय।
वृथा गयो जन्म तुमारो रे॥ धर्म बिना ॥ ७ ॥

साधुजी सूत्र वांचतां रे, टालो देवे जाय।
शर्मा शर्मी आ गयो तो, झुक झुक झोला खाय।
छाया तेरे आंख अंधारो रे॥ धर्म बिना ॥ ८ ॥

भाग्य बिना मिलसी नहीं रे, सतगुरू को सहवास।
पुन्य उदय उस क्षेत्र का रे, झड़ियां लगे चारों मास।
समझ हित बात विचारो रे॥ धर्म बिना ॥ ९ ॥

जनम सुधारण कारणे रे, सतगुरु देवे सीख।
उलटो जचे थांरे कर्म सूं रे, दुर्गति दिसे नज़दीक।
नहीं कोई दोष हमारो रे ॥ धर्म बिना ॥ १० ॥

चौमासो कीधो खेतिये रे, तेरानवे की साल।
मेवाड़ी मुनि कहे बन्धुओं रे, इण पर कियो ख्याल।
तो होवेगा जल्दी सुधारो रे ॥ धर्म बिना ॥ ११ ॥

॥ धीरे धीरे अपने को गुणवान करलो ॥

अवगुण छोड़ों गुणों का अब ज्ञान करलो।
धीरे धीरे अपने को गुणवान करलो ॥ टेर ॥

एक दिन में गुणी न बना जाता।
बीज बोते ही फल, कब लग जाता।
धीरता का सुधारस पान करलो धीरे। धीरे……॥ १ ॥

संग छोड़ो जो दुर्गुण सिखलाते।
सीधे रास्ते से सबको भटकाते।
गुण अवगुण की अब पहिचान करलो। धीरे धीरे……॥ २ ॥

आप सुधरे तो जग सुधरा करता।
दीप खुद हो प्रकाशित तम हरता।
दोष हो तुम औरो को दोषोमान कर दो ॥ धीरे धीरे……॥ ३ ॥

गहरे उतरोगे, मोती पावोगे।
तट से कंकर उठा घर लावोगे।
बुद्ध हो तुम औरों को बुद्धिमान करलो ॥ धीरे धीरे....॥ ४ ॥

॥ नमन श्रमण भगवान ॥

(तर्ज:—सुनो-सुनो ऐ दुनियां वालों बापू....)

नमन श्रमण भगवान् ज्ञात-सुत, महावीर स्वामी को।
त्रिशला जननी सिद्ध जनक, देवाधिदेव नामी को ॥ टेर ॥

जिनके जन्म समय में नारक, भी अपना दुख भूले।
दिव्य सौख्य तज सब सुरपति भी, धर्म भाव में भूले ॥
जन्म पूर्व ही वृद्धि कारक, वर्धमान नामी को....॥नमन.॥ १ ॥

जग ममता तज कर्म क्षय हित, जिनने संयम धारा।
तोड़ दिये घनघाति बन्धन, दीर्घ उग्र तप द्वारा ॥
हुए स्वयं सम्बुद्ध केवली, श्री सन्मति नामी को....। नमन.॥ २ ॥

नव तत्त्व और षडद्रव्य आदि, त्रिविधि श्रुत धर्म प्ररूपा।
अनगार और आगार द्विविध यों, चारित्र धर्म निरूपा ॥
करी चतुर्विधसंघ प्रतिष्ठा, जैन संघ स्वामी को....॥नमन.॥ ३ ॥

द्वितीय देशना में ही लखकर, अतिशय अपरंपार।
गौतमादि ने शीश झुका, सर्वज्ञ तुम्हें स्वीकारा ॥
हु सभी ग्यारह ही गणधर, भवि जन अभिरामी को....॥नमन.।४।ए

वैदिक बौद्धादिक धर्मों का, मिथ्यापन समझाया।
जैनधर्म ही सत्य अनुत्तर, अद्वितीय बतलाया ॥
गौशालक से सहे परीषह, धन्य क्षमाधामी को....॥नमन.॥ ५ ॥

धन्ना जैसे श्रमण तुम्हारे, श्रमणी चन्दनबाला।
शंख पुष्कली से श्रावक, श्राविका जयन्ति वाला।
श्रेणिक रेवति लाखों ने ही, धारा शुभ कामी को ...॥नमन.॥ ६ ॥

दीपावलि को दीप अलौकिक, तुम लोकाग्र पधारे।
अब आगम ही हैं अवलम्बन, भवदधि तारन हारे ॥
'पारस' मन वच तन से चाहे, मिलूं मोक्षगामी को....॥नमन.॥७॥

॥ नमो सिद्ध निरंजन ॥

तुम तरण तारण दुःख निवारण, भविक जीव आराधनं।
श्री नाभि नंदन जगत वन्दन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं।
ध्यान रूप अनोप उपम, नमो० ॥ २ ॥

गगन मंडल मुक्ति पदवी, सर्व उर्द्ध निवासनं।
ज्ञान ज्योति अनंत राजे, नमो० ॥ ३ ॥

अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुषं।
नाम गोत्र निरंतराय, नमो० ॥ ४ ॥

विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं।
राग द्वेष विमर्द अंकुर, नमो० ॥ ५ ॥

विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समिरितं।
योगोना अति गम्य रूपं, नमो० ॥ ६ ॥

योग ने समोसरण मुद्रा, परिपर्ल्यंकासनं।
सर्व दिसे तेज रूपं, नमो० ॥ ७ ॥

जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासनं।
चंद्र पे परमानन्द रुपं, नमो० ॥ ८ ॥

स्व समय समकित दृष्टि जिनको, सोय योगी अयोगिकं।
देखतामां लीन होवे, नमो० ॥ ९ ॥

तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा, भेद पंचदशादिकं।
सर्व कर्म विमुक्त चेतन, नमो० ॥ १० ॥

चंद्र सूर्य दीप मणि की, ज्योति येन उलंघितं।
ते ज्योति थी अपरम ज्योति, नमो० ॥ ११ ॥

एक मांहि अनेक राजे, अनेक मांहि एककं।
एक अनेक की नाहि संख्या, नमो० ॥ १२ ॥

अजर अमर अलक्ष अनंतर, निराकार निरंजनं।
परि ब्रह्म अनत दनर्श, नमो० ॥ १३ ॥

अतुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे निरंतरं।
धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन, नमो० ॥ १४ ॥

ध्यान धूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनं।
क्षमा जाप संतोष सेवा, पूजो देव निरंजनं, नमो० ॥ १५ ॥

तुम मुक्तिदाता, कर्मघाता, दीन जाणि दया करो।
॥ सिद्धार्थ नन्दन जग वन्दन, महावीर जिनेश्वरं, नमो० ॥ १६ ॥

॥ नर नारायरण बन जायेगा ॥

नर नारायण बन जाएगा, जो आत्म ज्योति जगायेगा।
नर नारायण······ ॥ टेर ॥

पापों के बन्धन टूटेंगे, विषयों के नाते छूटेंगे।
जो सोया सिंह जगाएगा, नर नारायण·······॥१॥

घट में बैठा एक ईश्वर है, जाने माने ज्ञानेश्वर हैं।
सब जन्म मरण मिट जाएगा, नर नारायण·······॥२॥

बादल के पीछे दिनकर हैं, कर्मों के पीछे ईश्वर है।
जो सर्व ही ज्योति जगाएगा, नर नारायण·······॥३॥

गुरु के चरणो में जाकर के।
श्रद्धा के कुसुम चढा करके।
मुनि कुमुद जो आनन्द पाएगा।
नर नारायण बन जाएगा ॥४॥

॥ नर कर उस दिन की याद ॥

नर कर उस दिन को याद, कि जिस दिन चल, चल, चल होगी ॥टेर॥

तूं जोड़-जोड़ कर धरे वस्तु, कोई नहीं तेरी होगी।
॥ जब आये यम के दूत, नगर में खलबल खल होगी ॥ नर ॥१॥

सब भरे रहे भण्डार, नार तेरी संगी नहीं होगी।
काठी के लिये दो बांस, ओढ़ने को मल मल होगी ॥ नर ॥२॥

ले जायेंगे शमशान, चिता सोने के लिये होगी।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जल जल कर होगी ॥नर॥३॥

तू भली बुरी जो करे, पूछ तेरी परभव में होगी।
यूं कहता है भूदेव, कर्म गति पल पल पल होगी ॥ नर ॥४॥

॥ नव घाटी मांहे भटकत आयो ॥

(तर्ज : खेलन दो गिणगोर, भंवर)

नव घाटी मांहे भटकत आयो, पाम्यो नर भव सार।
जेहने वंछे देवता, जीवा ते किम जावो हार ॥

ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो हार।
दुर्लभ तो मानव भव पायों, ते किम जावो हार ॥ १ ॥

धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल।
मोह माया मांह भूल रह्या, जीवा नहीं लीवी सुरत संभाल।
नहिं लीवी सुरत संभाल, जीवाजी नही लीवी सुरत संभाल ॥२॥

काया तो थांरी कारमी दीसे, दीसे जिन धर्म सार।
आऊखो जाता वार न लागे, चेतो क्यूं नी गंवार ॥
चेतो क्यों नहीं गवार, जीवाजी चेतो क्यूं नी गंवार ॥ ३ ॥

यौवन वय माहे धंदो लागो, लागो हैं रमणी रे लार।
धन कमायने दौलत जोड़ी, नहीं कीनो धर्म लिगार ॥
नहीं कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहीं कीनो धर्म लिगार ॥ ४ ॥

जरा आवेने यौवन जावे, जावे इन्द्रिय विकार।
धर्म किया विन हाथ घसोला, परभव खासो मार॥
परभव खासो मार, जीवाजी, परभव खासो मार ॥ ५ ॥

हाथों में कड़ा ने कानों में मोती, गले सोवन की माल।
धर्म किया विन एह जीवाजी, अभरण छे सहू भार ॥
अभरण छे सहु भार, जीवाजी अभरण छे सहू भार ॥ ६ ॥

ए जग है सब स्वार्थ केरा, तेरो नहीं रे लिगार।
वार वार सतगुरू समझावे, ल्यो तुम संजम भार ॥
ल्यो तुम संजम भार, जीवाजी ल्यो तुम संयम भार ॥ ७ ॥

संजम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान।
निरमल हुइने मोक्ष सिधाओ, ओ छे सांचो ज्ञान ॥
ओ छे सांचो ज्ञान, जीवाजी ओ छे सांचो ज्ञान ॥ ८ ॥

संवत अठारे ने बरस गुण्यासी 'हरकेन सिंघजी' उल्लास।
चेत बदी सातम सायपुर में, कीनो ज्ञान प्रकाश।
कीनो ज्ञान प्रकाश जीवाजी, कीनो ज्ञान प्रकाश ॥ ९ ॥

॥ नवकार मन्त्र है महामन्त्र ॥

नवकार मन्त्र है महामन्त्र, इस मन्त्र की महिमा भारी है।
आगम में कथी गुरुवर से सुनी, अनुभव में जिसे उतारी है ॥टेर॥

अरिहंताणं पद पहिला है, अरि आरति दूर भगाता है।
सिद्धाणं सुमिरण करने से, मन इच्छित सिद्धि पाता है।
आयरियाणं तो अष्टसिद्धि, और नवनिधि के भण्डारी हैं ॥ १ ॥

उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है।
सव्वसाहुणं सबसुखदाता, तनमन को स्वस्थ बनाता है।
पद पांच के सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बिमारी है ॥ २ ॥

श्री पाल सुदर्शन मेणरया, जिसने भी जपा आनंद पाया।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया।
मन नंदन वन में रमण करे, यह ऐसा मंगलकारी है ॥ ३ ॥

नित्य नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहिनाती।
अशोक मुक्ति जय विजय मिले, शांति प्रसन्नता बढ़ जाती।
सन्मान मिले सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है ॥ ४ ॥

॥ नरतन का चोला पाया है ॥

(तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर)

॥ नरतन का चोला पाया है, इन्सान नहीं बन पाया है।
काया के संग माया है, माया में तू भरमाया है ॥ नर ॥ टेर ॥

माया और लोभ की जोड़ी है, समता इसके संग दौड़ी है।
तृष्णा की सफर यह चौड़ी है, नहीं पार किसी ने पाया है ॥ १ ॥

नर नर को देखकर जलना है, पैरों तले उसे कुचलता है।
ईर्षा से खून उबलता है, अभिमान का पर्दा छाया है॥ २॥

खान पान मन माना है, भोगों में हुवा दिवाना है।
विषयों में आनन्द माना है, नहीं चैन किसी ने पाया है॥ ३॥

क्रोध से तेरा ज्ञान घटा, स्वार्थ से तो सम्मान हटा।
कपट से तुझे लगा बट्टा, यों मुफ्त में माल गंवाया है॥ ४॥

तन से किसका है घाव भरा, धन से किसका उपकार करा।
मन से तो सोच विचार जरा, अनमोल, समय यह पाया है॥ ५॥

संत संगत में जो आता है, वह ज्ञान की ज्योति जगाता है।
'अनराज' प्रभु गुण गाता है, इन्सान वही कहलाया है॥ ६॥

॥ नहीं बचा सकेगा परमात्मा ॥

(तर्ज—जरा सामने तो आ ओ छलिये)

जरा कर्म देख कर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है॥टेर॥

बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छींका लगा दिया खाने को,
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं दाने को।
इस युग के प्रथम अवतार हैं, बिन भोग्यां न छूटे लार है॥नहीं॥१॥

त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में, दास के कानों में शीशा डला,
कर्म निकाचित बांधा वीर भी तीर्थङ्कर थे पर नां टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार है, दिये कानों में कीले डार है॥नहीं॥२॥

सौतेली मां बन सौक के सुत सिर, बाटिया चढ़ा के प्राण हरा,
निन्नाणु लाख भवों के बाद में, गजसुखमाल बन कर्ज भरा।
चढ़ा सोमिल को क्रोध अपार है, डाले सिरपे धधकते अंगार है।नहीं।३।

किसी को मारे किसी को लूटे, काम करे अन्याई का,
जैसा करेगा वैसा भरेगा, लेखा है राई राई का।
नहीं छोटे बड़े की दरकार है, चाहे करले तू जतन हजार है ।।नहीं।४।

पग पग पे सयम रख तू वचन पे, बोले तो बोल भलाई का,
धर्म से प्रीतकर कर्मों को 'जीत' कर, बन जा पथिक शिव राही का।
ये दुःख सुख भरा संसार है, यहां कर्मों का ही व्यापार है ।।नहीं।।५।।

।। नित्य शाम को जीवन खाता ।।

(तर्ज : कितना बदल गया इन्सान)

नित्य शाम को जीवन खाता, खोलो करो विचार।
श्रावक यह तेरा आचार।
मोक्ष मार्ग में चरण बढ़ाये, कितने दो या चार।
करले बारम्बार विचार ।। टेर ।।

जो शुभ निश्चय किये सवेरे, कितने पूर्ण हुवे वे तेरे।
विघ्न देख कर घबराया, या डट कर रहा तैयार ।। करले ।। १ ।।

कितने कार्य किये पुण्यों के, कितने कार्य किये पापों के।
देख तोल कर पुण्य पाप का, किधर है कितना भार ।। करले ।। २ ।।

कितने अवगुण त्यागे तूंने, कितने सद्गुण धारे तूंने ।
तूं तूं मैं मैं व्यर्थ लगा कर, अथया की तकरार ।। करले ।। ३ ।।

कितना संग किया गुणियों का, कितना लाभ लिया मुनियों का ।
यां खेल तमाशे ठठे हसी में मस्त रहा बेकार ।। करले ।। ४ ।।

मानव जीवन सफल बनाले, इस नर तन से लाभ उठाले ।
लक्ष चौरासी योनी में यह, मिले न बारम्बार ।। करले ।। ५ ।।

संवर करले तप आदरले, पुण्य कमाले पाप नसाले ।
केवल कहते 'पारस' सुन रे, यह जीवन है दिन चार ।। करले ।। ६ ।।

।। निठ मनुष्य भव पायो रे ।।

निठ मनुष्य भव पायो रे ।
जरा करले कमाई ।। टेर ।।

करले कमाई, सुण मेरे भाई ।
हाथ में हीरो आयो रे ।। जरा ।। १ ।।

लम्बो आऊखो पुरण इन्द्री ।
शरीर नीरोगो पायो रे ।। जरा ।। २ ।।

दौलत तेरे काम न आवे ।
काया को देख लुभायो रे ।। जरा ।। ३ ।।

सत संगत को भूल न जाओ ।
धर्म अमोलक पायो रे ।। जरा ।। ४ ।।

न्त समागमें, मिलिया है साधु।
अनुभव प्याला पिलाया रे ॥ ज़रा ॥ ५ ॥

सुन्दर काया देख लुभायो
वृथा ही जन्म गवांयो रे ॥ ज़रा ॥ ६ ॥

दीनन के हित कोड़ी न खर्ची
अपनो ही पेट भरायो रे ॥ ज़रा ॥ ७ ॥

श्रमणोपासक एह पद मिलियो
'प्रेम' मस्त होय गायो रे, ज़रा करले कमाई ॥ ८ ॥

॥ नेमजी की जान वणी भारी ॥

(तर्ज़ : दया पालो बुध जन प्राणी)

नेमजी की जान वणी भारी, देखण को आवे नर नारी ॥ टेर ॥

हींसता घोड़ा रथ हाथी, मनुष्य की गिणती नहीं आती ।
ऊंट पे ध्वजा जो फर्राती, धमक से धरती थर्राती ॥
दोहा—समुद्र विजयजी का लाडला, नेम कुवरजी नाम ।
राजुल दे को आये परणवा, उग्रसेन घर धाम ॥
प्रसन्न भई नगरी सर्व सारी ॥ १ ॥

कसुंबल वागा अति भारी, कान कुंडल की छवि न्यारी ।
कीलंगी तुर्रा सुखकारी, माल मोतियन की गल डारी ॥
दोहा—काने कुंडल झिगमिगे, शीश मुकुट सुखकार ।

कोटि भानू की बनी ओपमा, शोभा अधिक अपार ॥
बाज रया बाजा टक भारी ॥ २ ॥

छूट रही हुक्का सरणाई, ब्याह में आये बड़े भाई।
झरीखें राजलदे आई, जान को देखत सुख पाई॥

दोहा—उग्रसेनजी देख के, मन में कियो विचार।
बहुत जीव को करी एकठा, बाड़ो भरयो तिवार।
करी जब भोजन की त्यारी ॥ ३ ॥

नेमजी तोरण पर आये, पशु सब मिल कर कुरांये।
नेमजी वचन यूं फुरमाये, पशु ये काहे को लाये॥

दोहा—यांको भोजन होवसी, जान वास्ते त्यार।
एह वचन सुण नेमजी, थरथर कंपी काय।
भावे से चढ़ गये गिरनारी ॥ ४ ॥

पीछे से राजुलदे आई, हाथ जब पकड़यो छिन मांई।
कहां तूं जावे मोरी जाई, और वर हेरु सुखदाई॥

दोहा—मेरे तो वर एक ही, हो गये नेम कुमार।
और भुवन में वर नहीं चाहे, करो क्रोड़ उपचार॥
झूरती छोड़ी मां प्यारी ॥ ५ ॥

सहेल्यां सब ही समझावे, दाय नहीं राजुल ते आवे।
जगत सब झूठो दर्शावे, मेरे मन नेमकुंवर भावे॥

दोहा—तोड्या कांकण डोंड़ा, तोड्यो नवसर हार।
काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥
करी अब संयम की त्यारी ॥ ६ ॥

तज्या सब सोले सिणगारा, आभूषण रत्न जड़ित सारा।
लगे मोय सब ही सुख खारा, छोड़ कर चाली परिवारा ॥

दोहा—मात पिता परिवार को, तजतां न लागी वार।
रहनेमी समझाय के, जाय चढ़ी गिरनार ॥
दीक्षा फिर राजुल ने धारी ॥ ७ ॥

दया दिल पशुअन की आई, त्याग जब किनो छिन मांही।
नेमजिन गिरनारे जाई, पशु के बंधन छुड़वाई ॥

दोहा—नेम राजुल गिरनार पे, कीनो अविचल ध्यान।
"नवलमल" यह करी लावणी, उपनो केवल ज्ञान ॥
जिनों की किरिया वुद्ध सारी ॥ ८ ॥

॥ प्यारे त्यागी बनो ॥

(तर्ज : तुमको लाखों प्रणाम....)

शिव सुख पाना हो, तो प्यारे त्यागी बनो....।

त्याग बिना कोई मोक्ष न पावे, त्याग कियां पातक रुक जावे।
पद निरंजन पाना हो, तो त्यागी बनो.... ॥

त्यागी को सुर नर नमते हैं, धरते चरण विघ्न टलते हैं।
गर्भ बीच नहीं आना हो, तो त्यागी बनो........॥

चक्रवर्ती की रिद्धि भारी, त्याग सामने तुच्छ है सारी।
आत्म उच्च बनाना हो, तो त्यागी बनो........॥

जहां वैराग्य त्याग वहीं पावे, शूरवीर नर पार लगावे।
जग से मोह हटाना हो, तो त्यागी बनो........॥

दो हजार दो नीमच आया, गुरु प्रसादे 'चौथमल' गाया।
कर्म क्षपाना हो, तो प्यारे त्यागी बनो........॥

॥ प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही ॥

(प्रभु का ध्यान)

प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही,
इन पापों का दूर हटा तो सही ॥ टेर ॥

सो रहा किस नींद में, जिसका न तुझको ज्ञान है।
आया था यहां पर किसलिये, क्या कर रहा नादान है ॥
ऐसी निद्रा को बेग उड़ा तो सही ॥ १ ॥

चार दिन की चांदनी है, फिर अंधेरी आयेगी।
साथ कुछ चलता नहीं, दौलत पड़ी रह जायेगी ॥
ऐसी ममता को दूर हटातो सही ॥ २ ॥

मतलब के साथी है सभी, नहीं साथ तेरे जायेंगे ।
जब मोत तेरी आयगी, जंगल में धर कर आयेंगे ॥
जिन धर्म से प्रेम बढ़ा तो सही ॥ ३ ॥

फिक्र को अब त्याग दे, दिल को लगाले ज्ञान में ।
आनन्द चित्त हो जाएगा, ऐसा मजा है ध्यान में ॥
शिव रमणी से नेह लगा तो सही ॥ ४ ॥

हंस का कहना यही, नित पाप से डरते रहो ।
चलते रहो शुभ मार्ग में, उपकार भी करते रहो ॥
ऐसी बातों को दिल में जमा तो सही ॥ ५ ॥

॥ पद्म–प्रभु पावन नाम तिहारो ॥

(तर्ज—श्याम कैसे गज को बन्द छुड़ायो)

पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो, पतित उद्धारन हारो ॥ टेर ॥

जदपि धीवर भील कसाई, अति पापिष्ट जमारो ।
तदपि जीव हिंसा तज प्रभु भज, पावे भवदधि पारो ॥ १ ॥

गौ ब्राह्मण प्रमदा बालक की, मोटी हत्या चारो ।
तेहनो करणहार प्रभु भजने, होत हत्या सूं न्यारो ॥ २ ॥

वैश्या चुगल छिनाल जुवारी, चोर महा बटमारो ।
जो इत्यादि भजे प्रभु तोने, तो निवृते संसारो ॥ ३ ॥

पाप पराल को पुंज बन्यो अति, मानो मेरु अकारो ।
ते तुम नाम हुताशन सेती, सहजे प्रज्वलत सारो ।। ४ ।।

परम धर्म को मरम महारस, सो तुम नाम उचारो ।
या सम मन्त्र नहीं कोई दूजो, त्रिभुवन मोहनगारो ।।

तो सुमरण बिन इण कलयुग में, अवर न कोई आधारो ।
मैं वारी जाऊं तो सुमरण पर, दिन दिन प्रीत वधारो ।। ६ ।।

"सुषमा राणी" को अगजात तू "श्रीधर" राय कुमारो ।
"विनयचन्द" कहे नाथ निरंजन, जीवन प्राण हमारो ।। ७ ।।

।। परमेष्टी नवकार भविक जन नित्य जपिये ।।

(तर्ज—पंजाबी)

परमेष्टी नवकार भविक जन, नित्य जपिये ।। टेर ।।

अरिहन्त प्रभु केवल ज्ञानी, अनुपम मोक्ष सुखों के दानी ।
चौतिस अतिशय पैंतिस वाणी, करूणा के भंडार ।। भ. ।। १ ।।

दूजे सिद्ध प्रभु को ध्याओ, सच्चिदानन्द सदा सुख पाओ ।
अपना येही लक्ष बनाओ, टले कर्म परिवार ।। भ. ।। २ ।।

तीजे आचार्य गुण गाओ, ज्ञान दर्श चारित्र पाओ ।
जो आज्ञा निज शीश चढ़ाओ, शासन के श्रृंगार ।। भ. ।। ३ ।।

उपाध्याय श्री ज्ञान के दाता, प्रवचन सार शास्त्र के ज्ञाता ।
हृदय में प्रकाश बढ़ाता, ज्ञान नेत्र दातार ।। भ. ।। ४ ।।

पंचम पद सेवों सुख कारी, मुनिवर पांच महाव्रत धारी।
दे उपदेश सदा सुख कारी, सम दम खम चित्त धार॥ भ.॥ ५॥

सेठ सुदर्शन मन्त्र प्रभावे, सूली का सिंहासन थावे।
भूपति चरणन में शिर नावे, सब बोलें जय कार॥ भ.। ६॥

अग्नि कुंड जब सन्मुख आया, जगदम्बा सीता ने ध्याया।
सुर ने तेऊ नीर बनाया, मेटा दुःख अपार॥ भ.॥ ७॥

शत्रु जन मित्र बन जावें, विषमस्थल सम मार्ग पावे।
आपत्ति सब दूर नसावे, मंत्र श्री नवकार॥ भ.॥ ८॥

॥ पर्यूषण पर्व आज आया ॥

पर्यूषण पर्व आज आया, के सज्जनों पर्व आज आया,
के मित्रों, पर्व आज आया।
सब जीवों की करो दया यह संदेशा लाया॥ टेर॥

आठों दिन तुम प्रेम धरी ने, वांयां और भाया।
खूब करो धर्म ध्यान खास, सदगुरु ने फरमाया॥ १॥

त्योहार सिरोमणि यही जगत में, तज दीजे प्रमाद।
देव गुरु व धर्म अराधो, अनुभव रस आस्वाद॥ २॥

ज्ञान दर्शन चारित्र पोसवा, पोसा करो जरुर।
षट आवश्यक संवर समाई, करे पाप को दूर॥ ३॥

रात्री भोजन और नसा सब, छोड़ो विणज व्योपार।
हरी लीलोती मित्थात्व त्यागी, शील रतन लो धार ।। ४ ।।

उत्तम करणी कीजे पूण्य से, मनुष्य जन्म पाया।
बेला तेला करो पंचोला, पच्छखो अठायां ।। ५ ।।

रतलाम शहर में पुज्य समीपे, चौमासा ठाया।
साल पिच्चासी सभा बीच में, 'चौथमल' गाया ।। ६ ।।

।। पल २ बीते उमरिया ।।

(तर्ज : रुमझूम वरसे बादरवा 'रतन')

पल पल बीते उमरिया, मस्त जवानी जाये।
प्रभु गीत गाले गाले, प्रभु गीत गाले ।। टेर ।।

प्यारा प्यारा बचपन पीछे, खो गया-खो गया।
यौवन पाके तू मतवाला, हो गया-हो गया ।।
बार बार नहीं पावे रे-गंगा बहती है प्यारे, मौका है न्हाले गाले । १।।

कैसे कैसे बांके जग में, हो गये-हो गये।
खेल खेलकर अन्त जमीं, पर सो गये-सो गये।
कोई अमर नहीं आया रे-पंछी ये फूल रंगीले मुर्झाने वाले गाले ।।२।।

तेरे घर में माल मसाले, होते हैं-होते हैं।
भूख के मारे कई बिचारे, रोते हैं-रोते हैं ।।

उनकी कौन खबर ले रे, जिनके नहीं तन पर कपड़े।
रोटियों के लाले गाले ॥ ४ ॥

गोरा गोरा देख वदन क्यूं, फूला है – फूला है।
चार दिनों की जिन्दगानी पर, भूला है – भूला है॥
जीवन सफल बनाले रे, 'केवल मुनि' समझाये।
ओ जाने वाले गाले ॥ ४ ॥

॥ पानी के झाग ज्यूं जाय रही जिन्दगानी ॥

ये सुपना सम संसार, समझ रे प्राणी २।
पानी के झाग ज्यूं जाय रही जिन्दगानी ॥ टे ॥

मैं सूता था भर नींद, के सुपना आया।
सुपना में देखी अजब तरह की माया।
जब आंख खुली तब कोई नजर नहीं आया।
ये इन्द्रजाल सम देख जगत की माया।
जो करे जगत में मान सो ही अज्ञानी ॥पानी०॥१॥

यह घर तरुवर सम पक्षी कुटुम्ब ये भाई।
ये रात लिये विश्राम मिले सब आई।
फिर फजर हुवा से सब पक्षी उड़ जावे।
ज्युं आयु भुगत्यां कुटुम्ब लोग खिर जावे।
जद क्यूं करना अभिमान समझ रे प्राणी ॥ पानी० ॥ २ ॥

तेरे हुए अनंता तात अनंता माई।
ज्यों एक जन्म का दूध बूंद लो भाई।
तो सागर भरे अपार पार है नाहीं।
जद क्यु करना दिल समझ, मान मन मांही।
अब सुख चाहो तो सुणो भव्य जिनवानी ।।पानी०।। ३ ।।

तज क्रोध मान और दिल से झूठ अन्याई।
पर निंदा त्यागो छोड़ो मान बड़ाई।
यूं 'सुगनमल' की सीख, वरो शिव रानी ।।पानी०।। ४ ।।

।। पाप से बोत जीव राजी ।।

(तर्जः— नेमजी की जान वणी भारी)

पाप से बोत जीव राजी, खेल रयो कुमति संग बाजी।
होय रयो ममता को मांजी, सुमत की सेज नहीं साजी।
दोहा-मिथ्या मत में भूल तो, लगा कुगुरु का कान।
भव भव में भटकावसी, थारे खुली दुर्गति की खान।
अंधेरो ज्ञान बिना, तेरो ज्ञान अख्यारत धर्म बिना।
तेरो धर्म अख्यारत मरम बिना, प्राणी नहीं पावे भवपार।
गुरु के हुक्म बिना ।। १ ।।

जीव तूं पुदगल को रसियो, जगत जंजाल में फसियो।
कर्म को काट नहीं घसियो, धर्म से दूर जाय वसियो।
दोहा—माया माया कर रयो, पच रयो, दिन ने रात।
कोड़ी कोड़ी जोड़ ने तूं, भेलो किनो धन ।। अंधेरो ।। २ ।।

काया तेरी बोत बनी चंगो, पलक में घीसता भंगो ।
धर्म बिना देह तेरी नगी, विपत में कौन होय सगी ।
दोहा–जप तप किरिया बायरो, खावे ताजा माल ।
करम उदय जब होवसी, थांरा नरक होय हवाल ।।अन्धेरो।।३।।

भटकतो तिरिया के तांई, पुत्र परिवार और भाई ।
खावण में सब भेला थासी, विपत में कौन सग आसी ।
दोहा–थारा किया तूं भोगवे, मत कर आरत ध्यान ।
अवसर पर चेत्यो नहीं, थारो गयो हियेरो ज्ञान ।।अन्धेरो।।४।।

जुल्म तेंने बोत किया भाई, जरासी जिन्दगी तांई ।
अबे तु चेतरे गेला, देत है सत गुरुजी हेला ।
दोहा–उगनिसे इकावने, फागुन होली चौमास ।
जयपुर में 'जड़ावजी' कांई, करी लावणी तास ।।अन्धेरो।।५।।

।। पाक्षिक सम्बन्धी सुश्रावक करो ।।

पाक्षिक सम्बन्धी सुश्रावक, करो क्षमापना रे ।। टेर ।।

ऋषभ अजित संभव सुखदाई, अभिनन्दन प्रभु त्रिभुवन राई ।
सुमति पद्मप्रभु हरे, दुःख त्रय तापना रे ।। १ ।।

श्री सुपार्श्व चन्द्र प्रभ ध्यावो, सुविधि शीतल श्रयांस मनावो ।
वासूपूज्य के चरणन में, चित्त स्थापना रे ।। २ ।।

विमल अनन्त धर्म पद दूजो, शान्ति नाथ सो देव न दूजो ।
कुंथु और अर को जाप, करे क्षय पापना रे ।। ३ ।।

मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी, श्री नमि नेम पार्श्व शिवगामी।
है अगणित फल महावीर, जिन जापना रे ॥ ४ ॥

विहर मान प्रभु वीस जिनेशा, पुंडरीक सौ आदि गणेशा।
सब मुनिराज महोदय, दिव शिव आपना रे ॥ ५ ॥

प्रेम युक्त सब क्षमो क्षमाओ, पारस्परिक विरोध मिटाओ।
मैत्री भाव बढाय, कर्म वन कापना रे ॥ ६ ॥

'माधव' मुनि मन मोद बढा के, उत्तम क्षमा भाव मन लाके।
भव्यों भक्ति से सब हिल मिल, छंद अलापना रे ॥ ७ ॥

॥ पामर प्राणी चेते तो चेताऊं ॥

पामर प्राणी चेते तो, चेताऊं तोने रे ॥ टेर ॥

माखी होय मध कीधूं, न खायूं न दान दीधूं।
ओ लुटन हारे लूट लीधूं रे ॥ पामर प्राणी० ॥ १ ॥

थारे हाथ भव रासी, तेतलुं तो थारो थासी।
बीजो तो बीजे ने जासी रे ॥ पामर प्राणी० ॥ २ ॥

सहूकारी में थूं सवायूं, लखपति थूं लखायूं।
कहे साचो शुं कमायो रे ॥ पामर प्राणी० ॥ ३ ॥

देवमान देह दीधी, तेहनी न किमत कीधी।
मणो साठे मसी लीधी रे ॥ पामर प्राणी० ॥ ४ ॥

मनना विचार थारा, मनमां रहीजे न्यारा ।
फरे थी न आवे वारो रे ।। पामर प्राणी० ।। ५ ।।

निकले शरीर मांथी, पछे तु मालक नथी ।
ओ 'दलपती' दीनो कथी रे ।। पामर प्राणी० ।। ६ ।।

।। पार्श्वनाथ सहाइ जाके ।।

पार्श्वनाथ सहाइ जाके, कमी रहे नहीं कांई ।। पा० ।।
वन में मगल रण में रक्षा, अग्नि होत सितलाई ।। १ ।।

जहां जहाँ जाऊं तहां तहां आदर, आनन्द रंग वधाई ।
कहा करे द्वेषी जन कोई, वाल न वांको थाई ।। २ ।।

भजन करे सो नवनिधि पावे, विष अमृत हो जाई ।
'रूपचन्द' प्रभु के गुण गावे, जन्म जन्म सुखदाई ।। ३ ।।

।। पाय नर भव की जिन्दगानी ।।

(तर्जः— नेमजी की जान)

पाय नर भव की जिन्दगानी, समझ अब भज अरिहंत प्राणी ।।टेर।।

विश्व में तूं फिरता आया, जाग अब स्वमती रे भाया ।
नरक बिच तेने दुःख पाया, गोता वैतरणी में खाया ।
दोहा—वृक्ष सांमली बीच में, तीक्षण कंठ बनाय ।
पकड़ देव यम डाल दिया, तुझ सकल वीधानी काय ।
तुरतही खेच लिया ताणी ।। १ ।।

यम पशुवां का रुप कर के, पक्षी बिच्छु अहि अजगर के।
खाया तुझे चटका देकर के, सहा दुःख जब पल सागर के।
दोहा—नरक पाल तुज नरक में, मथियो जमी पर डाल।
दया रहित मुदगल से तेरां, किया हाल बेहाल।
कौन गिनते राजा रानी ॥ २ ॥

करी जीव घात झूंठ बोला, किया कूडा मापा तोला :
गमन परनार संग डोला, पाप अपना पर सिर ढ़ोला।
दोहा- मरम उघाड़िया पारका, कूड साख चितलाय।
सतपुरुषां की करी बुराई, मगन होय मन माय।
करे यमराज न्याय छानी ॥ ३ ॥

मांस का आहार किया चुपचाप, स्वाद करके पिया शराब।
आज मेहमान पधारे आप, आड़ा नहीं आवे मां और बाप।
दोहा—जैसा कर्म यहां पर करे, वैसा सब जितलाय।
लोहादिक कर गरम-गरम, यम तुझको दिया पिलाय।
शास्त्र में फरमा गये ज्ञानी ॥ ४ ॥

योनी तिर्यञ्च की तू पाया, पशु और पक्षी कहलाया।
विषम सम जगह जन्म पाया पिया जल मिला वही खाया।
दोहा—झाड़ खाड़ बिल्ल पहाड़ में. खोखल माला माय।
शीत उषण का सहा महा दुःख, कहां तक कहूं दर्शाय।
ऊपर से बरस रहा पाणी ॥ ५ ॥

कभी तूं अग्नि में जलियो, कभी तूं पाणी में गलियो।
कभी तूं घाणी में पिलियो, कभी तूं माटी में मिलियो।
दोहा—पशु हुवा बन्धन पड़ा, पक्षी पींजरा मांय।
कहो कुटुम्बी गये कहां जब, हुआ कर्म का न्याय।
वक्त पर कहां चुगा पाणी ॥ ६ ॥

किसी ने तेरा सींग तोड़ा, किसी ने नाक कान फोड़ा।
किसी ने तेरा पूंछ मोड़ा, किसी ने हल रथ में जोड़ा।
दोहा—चाम रोम नख कारणे, दुषह किया तुझ मार।
सेक भूंज तल खा गये तुझ, ना कोई सुनी पुकार।
जरा तो सोच रे अभिमानी ॥ ७ ॥

कभी हुआ मानस कुजाता, हीन और दीन अनाथा।
दुःख में गुजरा दिन राता, कौन पूछे दुःख की वातां।
दोहा—रेवा काजे घर नही, तन ढ़ाकण पट नाय।
मालिक की गाली सुनी, मौन रखी मन मांय।
कहो ये है किनसे छानी ॥ ८ ॥

गर्भ का दुःख तेने पाया, अधो सिर रहा तु लटकाया।
सवा नव मास स्थान ठाया, मूत्र मल से तन लिपटाया।
दोहा—माता किया विलाप जब, किया काट कर वार।
पूरब जन्म के पाप हैं भारी, ऐसा दिया करार।
बात यह तेने भी जानी ॥ ६ ॥

कभी पाया सुर अवतारा, हुआ तू नर तप करनारा।
कंद्रपी किंकर पद धारा, सूत्र में देख हाल सारा।
दोहा—किलविषी हुआ देवता, नहीं ऊँच स्थान।
उत्तम सुर मिला नहीं, कहां तक करूं बयान।
छोड़ दे सब खेंचातानी ॥१०॥

कथन यह शास्त्र से कीना, चतुर सुन हिये मनन करना।
चारों भवसागर से तरना, दया और सत्य का लो शरना।
दोहा—मेरे गुरु नन्दलालजी, शिक्षा दी मुझ सार।
चतुर्मास अलवर में करके, आये जयपुर चार।
बनो तुम मित्र अभयदानी ॥११॥

॥ पीछे पछतायगो ॥

(तर्ज : छुप छुप खड़े हो)

नर तन महान है, व्यर्था जो गमायेगो।
पीछे पछतायेगो जो, पीछे पछतायेगो ॥ टेर ॥

आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल चंगी मीली काया है,
वीर वाणी, त्यागी गुरु, अवसर पाया है।
मोह की नींद में, सुतो जो रह जायगो ॥ पीछे ॥ १ ॥

खान, पान, राग, रंग, मिला कई वारी है।
विषय औ वासना ये जंग की बीमारी है।
इनके लिये जो, यदि ललचायेगो ॥ पीछे ॥ २ ॥

मात पिता वन्धु, साथ नहीं जायगा,
भला वुरा किया, फल तू ही पायगा।
अपनी व्यथा फिर, किसको सुनायेगो ।। पीछे ।। ३ ।।

क्रोध मान लोभ ओ, निंदा मत किजीये।
झूठ चोरी परिग्रह की, मर्यादा कीजिये।
सत गुरु सीख ध्यान, में जो नहीं लायेगो ।। पीछे ।। ४ ।।

वचपन वीत गया, जवानी भी जाती है।
गई वक्त 'अनराज', फिर नहीं आती है।
सुकृत की पूंजी संग, जो न ले जायेगो ।। पीछे ।। ५ ।।

।। पुण्य की महिमा सब गावे ।।

(तर्ज : नेमजी की जान)

पुण्य की महिमा सव गावे, पुण्य से वंछित फल पावे।
पुण्य से मनुष जनम पावे, पुण्य से उत्तम कुल पावे।
दोहा—पुण्य उदय सदगुरु मिले, मिले सूत्र के वेन।
जीवादिक नवतत्व पिछाने, खुले जिगर के नैन।
पुण्य से धर्म हाथ आवे ।। १ ।।

पुण्य से नरेन्द्र पद पावे, पुण्य से सुरेन्द्र पद पावे।
पुण्य से अति आदर पावे, पुण्य से विन श्रम धन आवे।
दोहा विपिन पहाड़ जल अगन में, मिले पुण्य से साज।
दसो दिशा नर जिन के मुख से, जिसकी सुने आवाज।
पुण्य से सरस शब्द पावे ।। २ ।।

पुण्य से सुर आते दौड़ी, हुकम में रहते कर जोड़ी।
पुण्य से टले विघ्न कोड़ी, पुण्य से देते बन्धन तोड़ी।

दोहा—मेरे गुरु नन्दलालजी, कहते साफ सुनाय।
रामपुरा में जोड़ बनाई, सबके पुण्य सहाय।
सज्जन सुनके यकीन लावे ॥ ३ ॥

॥ पुद्गल दे दे धक्का ॥

पुद्गल देदे धक्का तेने मुझको, खूब रुलायारे ॥ टेर ॥

षट द्रव्यन में तू अरु मैं ही, दोनु हैं बलवान।
तैने मुजको ऐसा बनाया, भूल गया स्वभान ॥ पुद्गल ॥ १ ॥

यद्यपि मैं हूँ सिद्ध सरूपी, तव अचेतन भाव।
तुझ जड़ संग मैं ऐसा फंसिया, खोया चेतन भान ॥ पुद्गल ॥ २ ॥

ज्ञानावरणी से ज्ञान घटायो, दरशनकु दरशन से।
वेदनी ने सुख दुःख दीना, आपा लुट्या मोहनी से ॥ पुद्गल ॥ ३ ॥

आयुष भवमें थिर कर राख्यो, नाम रच्यो बहुरंग।
गोत्र उपज्यो ऊंच नीच कुल, अंतराय वे ढंग ॥ पुद्गल ॥ ४ ॥

इन अष्टनकी गेल में रे, नित्य रह्यो भरमाय।
निज आनंद को छोड़ केरे, परमें रह्यो फंसाय ॥ पुद्गल ॥ ५ ॥

तेरे संग में चतुर गतिमें, कीना भव विशेष।
इस जगत के रंग मंच पर, धरे बहुत से भेष ॥ पुद्गल ॥ ६ ॥

इम भटकत संसार में रे पायो नर भव सार।
शुभ कर्म परसाद सेरे, बोल मिले छ चार ।। पुद्गल ।। ७ ।।

अबतो म्हारो आपो जाण्यो, चेतन गुण निधान।
तुझसे त्यागूं प्रीतड़ी तो, पाऊं पद निरवाण ।। पुद्गल ।। ८ ।।

फूल अतर घी दूध में रे, तिल में तेल समान।
मैं ज्ञायक हूं भावको रे, केवल मेरो ज्ञान ।। पुद्गल ।। ९ ।।

ज्ञानामृत को पीकर केरे, श्रद्धा लेसूं धार।
चरित्र से रोकूं आवता रे, तपसे पूर्व संहार ।। पुद्गल ।।१०।।

अष्ट अस्सी वर्ष संवत्सरीरे, जयपुर शहर सोभाय।
मूलचन्द' की यही भावना, रहियो सदा उरमाय ।। पुद्गल ।।११।।

।। पैसो प्यारो रे ।।

पैसो प्यारो रे, दुनिया ने लागे मोहन गारो रे ।। टेर ।।

पैसा से नर प्यारो लागे, जो काजल से कारो रे।
अजब चीज दुनियां में पैसो, कहे जग सारो रे ।। पैसो ।। १ ।।

पैसा खातिर परमेश्वर की, सौ-सौ सौगन्ध खावे रे।
प्राण प्यारी ने छोड़ पुरुष, परदेश सिधावे रे ।। पैसो ।। २ ।।

पैसा से दुनियां दे आदर, आगे आप पधारो रे।
निर्धन ऊबो टुक २ जोवे, लागे खारो रे ।। पैसो ।। ३ ।।

पैसा आगे पतो न लागे, जो परमेश्वर आवे रे।
महादेव ने पार्वती आ, बाहर कढ़ावे रे ॥ पैसो ॥ ४ ॥

काणा, खोड़ा, लूला ने ओ, पैसो तो परनावे रे।
विन पैसा से छैल-छबीलो, नार न पावे रे ॥ पैसो ॥ ५ ॥

पैसा ने जो धूल बरोबर, समझे वो नर ज्ञानी रे।
'नाथु मुनि' शिष्य चौथमल कहे, भविहित आणी रे ॥ पैसो ॥ ६ ॥

॥ प्रदेशी मानवी रे ॥

प्रदेशी मानवी रे, अरे तू इधर उधर क्या जोता ॥ टेर ॥

मेरा मेरा कहे तू मुंह से, कहने से क्या होता।
बिन स्वारथ के कोई न तेरा, पुत्र नार क्या पोता ॥ १ ॥

घर धन्धा में लदा फिरे ज्यों, परजापत का खोता।
ठाठ पड़ा रेगा पृथ्वी पर, कुटुम्ब रहेगा रोता ॥ २ ॥

तन मन्दिर को छोड जायगा, ज्यों पिजरे का तोता।
खड़े रहेंगे मित्र देखते, आप खायगा गोता ॥ ३ ॥

हुआ उजेला जाग नींद से, बहुत वक्त का सोता।
सच्चा मोती छोड़ दिवाने, झूंठा पोत क्यों पोता ॥ ४ ॥

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, वाणी सुन ले श्रोता।
नैया पार लगे एक क्षण में, सब कारज सिद्ध होता ॥ ५ ॥

॥ प्रभाते सु थवानु छे ॥

प्रभाते सु थवानु छे, प्रभु बिन कौन जाणे छे।
विचारो मा वृथा स्याने, मनुष्यो मोज माणे छे ॥ टेर ॥

चणेला रात्री ए किल्ला, प्रभाते ते पड़ेला छे।
फलों ताजा भरीया रात्रे, सवारे ते सड़ेला छे ॥ प्रभाते ॥ १ ॥

प्रभाते राम ने गादी, अयोध्या नी हती देवी।
अहो वदलाई रात्रीए, मती कैकेयी तणी केवी ॥ प्रभाते ॥ २ ॥

करियु जे राम ने नक्की, उठी वन मां जावा नु छे।
न जाणियो जानकी नाथ, प्रभाते सु थवानु छे ॥ प्रभाते ॥ ३ ॥

जगत की नाट्य साला मां, अजाइब रात्री ना पर्दा।
प्रभात ते उपड़ता तो, नवा देखाय जोवामा ॥ प्रभाते ॥ ४ ॥

सुता परीयंक (पीलंग) माँ रात्रे, सवारे ते शमशाने छे।
हता हंसता अरे रात्रे, रूदन करता सवारे छे ॥ प्रभाते ॥ ५ ॥

॥ प्रभु भज, प्रभु भज, प्रभु भज प्राणीड़ा ॥

प्रभु भज, प्रभु भज, प्रभु भज प्राणीड़ा, एक दिन पिंजरा पड़ जासी।
करना होय सो करले रे प्राणी, फेर करण ने कव आसी ॥ टेर ॥

वन की वकरी वन में रहती, आयो कसाईड़ो लेजासी।
छोकी २ पत्तियां चुगले वकरड़ी, फेर चुगण ने कव आसी ॥ १ ॥

लकड़ी काटतां लकड़ी बोली, तूं ही खातीड़ा म्हारो संग साथी ।
छोकी छोकी लकड़ी काटले खातीड़ा, एक दिन म्हारे संग जल जासी।२।
माटी खोदंता माटी बोली, तूं ही रे कुम्हार म्हारो संग साथी ।
छोकी २ माटी खोदले कुम्हारड़ा, एक दिन माटी में मिल जासी ॥३॥
कलियां तोड़ता कलियां बोली, तू ही मालीड़ा म्हारो संग साथी ।
छोकी २ कलियां तोड़ले मालीड़ा, एक दिन मारे ज्युं खिरजासी ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधों, अपनी करणी आप जासी ।
प्रभु नाम को सुमरण करले, कट जावे जम की फांसी ॥ ५ ॥

॥ प्रभु भजन तूं करले प्राणी ॥

(तर्ज :—भला घरां परनाई मोरा बालम-मारवाड़ी)

प्रभू भजन तूं करले रे प्राणी, भव भव सूं तिर जावेला ।
नहीं रे भजेला बड़ो दुःख पावेला, सीधो नरक में जावेला ॥ टेर ॥

ओ जग है मुसाफिर खानो, कोई नहीं टिक पाया ।
जो भी भजेगा सुखी हुवेला, नाम अमर कर जावेला ।
बातां मारे लम्बी चौड़ी, करे एक नहीं पूरी रे ।
नहीं रे भजेला ॥ १ ॥

केड़ो जमानो आयो रे लोगां, पापी रोब जमावे ।

चोर बाजारी रिश्वतखोरी, नित नया सांग रचावे ।
समझदार हे तो समझावां,कोई समझावा इन मनड़ाने ।
नहीं रे भजेला ॥ २ ॥

सुणोरे भाया वातां मांणी, भजन करो थें क्यूं नहीं ।
थे नहीं मानो वाता मांणी, दुःख पावेला भारी ।
स्वाध्याय मण्डल रो केणो है, भजन प्रभूरा करलो रे ।
नहीं रे भजेला ॥ ३ ॥

॥ प्रणमूं वासुपूज्य जिन नायक ॥

(तर्ज :— तेरी फूलसी देह पलक में पलटे)

प्रणमूं वासुपूज्य जिन नायक, सदा सहायक तूं मेरो ।
विषमी वाट घाट भयथानक, परमेश्वर शरनो तेरो ॥ १ ॥

खलदल प्रबल दुष्ट अति दारुण, जो चौ तरफ दिये घेरो ।
तो पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी, अरियन होय प्रगटे चेरो ॥ २ ॥

विकट पहाड़ उजाड़ वीचा ले, चोर कुपात्र करे हेरो ।
तिण विरियां करिये तो सुमरण, कोई न छीन सके डेरो ॥ ३ ॥

राजा बादशाह जो कोई कोपे, अति तकरार करे छेरो ।
तदपि तूं अनुकूल हुए तो, छिन में छूट जाय केरो ॥ ४ ॥

राक्षस भूत पिशाच डाकिनी, साकिनी भय न आवे नेरो।
दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागे, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो ।। ५ ।।

विस्फोटक कुष्टादिक संकट, रोग असाध्य मिटे सगरो।
विष प्यालो अमृत होय प्रगमें, जो विश्वास जिनन्द केरो ।। ६ ।।

मात जया "वसु नृप" के नन्दन, तत्व यथारत बुध फेरो।
बेकर जोरि "विनयचन्द" विनवे, वेग मिटे मुझ भव फेरो ।। ७ ।।

।। प्राणो परदेशो २ अमर दुनियां में कहो कुण रेसा रे ।।

प्राणो परदेशी २ अमर दुनियां में, कहो कुण रेसो रे ।। टेर ।।
मोटा पंथ संत फरमावे, तू क्यों रेयो बेसी रे ।। १ ।।

मारग मांही विलम रयो, थारी बुद्धि कैसी रे।
सुन्दरी का रंग रूप में मोयो, भोग गवेषी रे ।। २ ।।

उदे अस्त तक राज्य करतां, ऋद्धि इन्दर जैसी रे।
बादल ज्यूं बिरलाय गया, तूं कहां तक रेसी रे ।। ३ ।।

पुण्य से छत्रपति हुवो मोटो, हाथी घोड़ा मवेशी रे।
आगे सुख मिल जावे, तूं कर करणी ऐसी रे ।। ४ ।।

माल खजाना धर्या रहेगा, कुण लेजावा देसी रे।
अन्त समय तन का भूषण, उतार लेसी रे ।। ५ ।।

परभव में जासी रे पापी, जम हाथां थारी पेसी रे।
नर्क कुंड में कर्म फल तूं, कैसे सेसी रे ।। ६ ।।

गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, या वाणी उपदेशी रे।
वे ही तिरे जो जिन प्रभुजी को, शरणो लेसी रे ॥ ७ ॥

॥ प्रातः उठ चौबीस जिनंद को ॥

प्रातः उठ चौबीस जिनद को, सुमिरण कीजे भाव धरी ॥ टेर ॥

रिषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति कुमति सब दूर हरी।
पद्म सुपास चन्दा प्रभु ध्यावो, पुष्प दंत हण्या कर्म अरी ॥ १ ॥

शीतल जिन श्रेयांस वासु पूज्य, विमल २ बुध देत खरी।
अनंत धर्म श्री शान्ति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ २ ॥

कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत जी, नमी नेमी शिव रमणी वरी।
पार्श्वनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लही भव ओघ तरी ॥ ३ ॥

तुम सम नहीं कोई तारक दूजो, इम निश्चय मन मांहीं धरी।
त्रिलोक रिख कहै जिम तिम, करिने मुक्ति श्री दो मेहर करी ॥ ४ ॥

॥ प्रातः उठ श्री शांति जिनंद को ॥

प्रातः ऊठ श्री शांति जिनंद को, सुमिरन कीजे घड़ी घडी ॥ टेर ॥
संकट कोटि कष्ट भवसंचित, तो ध्यावे मन भाव धरी ॥ १ ॥

जन्मत पाए जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाध्य मरी।
घट घट अंदर आनन्द प्रकट्यो, हुलषियो हिवड़ो हरष भरी ॥ २ ॥

आपद व्यंत्र विसम भय भाजे, जैसे पेखत मृग हरी।
एकण चित्ते शुद्ध मन ध्याता, प्रकटे परिचय परम-सिरी ॥३॥

गये विलाय भरम के बादल, परमारथ पद पवन करी।
अवर देव एरंड कुरा रोपे, जो निज मन्दिर केल फली ।। ४ ।।

प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तासूं करिए कर्म अरी।
'रतनचंद' शीतलता व्यापी, पातक लाय कषाय टरी।

।। प्रेमी बनकर प्रेम से ।।

प्रेमी बन कर प्रेम से, जिनवर के गुरा गाया कर।
मन मंदिर में गाफिले, झाडू रोज लगाया कर ।। टेर ।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा।
प्रातःकाल उठ प्रेम से, सत्संगत में आया कर ।। १ ।।

नरतन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, मिलता जब तक मेल नही।
नरतन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर ।। २ ।।

भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तेने रोटी खाई क्या।
दुखिया पास पड़ा है तेरे, तेने मौज उड़ाई क्या।
सबसे पहिले पूछ कर, भोजन तू फिर खाया कर ।। ३ ।।

देख दया उस वीर प्रभु की, जिन शासन का ज्ञान दिया।
जरा सोचले अपने मन में, कितनों का कल्याण किया।
सब कामों को छोड़ कर, उसको ही तू ध्याया कर ।। ४ ।।

॥ फकीरा निरभय पड़ा निरमोय ॥

फकीरा निर्भय पड़ा निरमोय, लोक लाज दीवी खोय ॥ टेर ॥

अंवर ओढ़ण धरण विछावण, बीच मसाणे में सोय ।
भूत प्रेत की परवाह नाहीं, जीवत मुर्दा होय ॥ फकीरा ॥ १ ॥

दीसत मूर्दा हे चेतनसा, जाण सके नहीं कोय ।
उनकी रे गति तो वोही जाणे, नहीं हंसे नहीं रोय ॥फकीरा॥२॥

आवत जावत श्वास ले झकोला, हर दम हिरदा ने धोय ।
कूड़ कपट का दाग रे मेटिया, करम रहा नहीं कोय ॥फकीरा॥३॥

पार ब्रह्म सद् गुरू प्रसादे, संशय रहा नहीं कोय ।
गोपेश्वर अजनेश्वर शरणे, सुरत सोहं में पोय ॥फकीरा॥४॥

॥ फेरो एक माला ॥

सुवह और शाम की,
प्रभुजी के नाम की,
फेरो एक माला,
हो हो फेरो एक माला ॥

सकल सार नवकार मन्त्र है, परमेष्ठी की माला ।
नरकादिक दुर्गति का सचमुच, जड़ देती है ताला ।
कर्मों का जाला, मिटे तत्काला ॥ फेरो एक माला ॥ १ ॥

सुदर्शन और सीताजी ने, फेरी थी यह माला।
शूली का सिंहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला।
शील जिसने पाला, सच्चा है रखवाला।। फेरो एक माला।।२।।

सुमिरण करके श्रीमती ने, नाग उठाया काला।
महा भयंकर विषधर था, वह बनी फूल की माला।
धर्म का प्याला, पियो प्यारेलाला ।। फेरो एक माला ।।३।।

द्रौपदी का चीर वढ़ाया, दुःशासन मद गाला।
मैना सुन्दरी श्रीपाल का, जीवन बना विशाला।
सुभद्रा ने बोला, चम्पा द्वार खोला ।। फेरो एक माला ।।४।।

राजदुलारी बाल कुमारी, देखो चन्दन बाला।
महा भयंकर कष्ट उठाया, सिर मूंडा था मूला।
तपस्या का तेला, सब दुख ठेला ।। फेरो एक माला ।।५।।

समय बीतता जाये मित्रों, जीवन सफल बनालो।
सद्‌गुरु के चरणों में आ, परमेष्ठी ध्यान लगालो।
गुण गावे भोला, हरि ऋषि बोला ।। फेरो एक माला ।।६।।

।। फैसन छोड़ दो ।।

फैशन छोड़ दो, फैशन में पूरा फोड़ा पड़सी रे ।। टेर ।।

मूंछारा मरदां थे थांरी, मूंछा कठे गमाइरे,
सुता वैठा आ कांई थारे, मन में आई रे ।। फैशन ।। १ ।।

कोट पेन्ट और टोप लगाकर, हिन्दू धर्म डुबायो रे,
धोती की एक लांग खोलकर, धर्म गमायो रे ।। फेशन ।। २ ।।

घर में तो भोजन नहीं भावे, आही आदत खोटी रे,
होटल में जाकर तूं खावे, डब्बल रोटी रे ।। फैशन ।। ३ ।।

मां बाप को काण कायदो, ऊँचो मेल्यो खुंटया रे,
सीगरेटा मुंडा में राखे, भाग फूटा रे ।। फैशन ।। ४ ।।

गिरदानो तो नहीं सुहावे, बड़ो अचम्भो आवे रे,
हेयर कटिंग में जाकर बाबू, बाल कटावे रे ।। फैशन ।। ५ ।।

बायां में फेशन ऐडी सुं, चोटो तांई चढ़गी रे,
फेशन बुरी बलाय हाय, भारत में बसगी रे ।। फैशन ।। ६ ।।

मुनियां का व्याख्यान भी अब, फैशन दार बणग्या रे,
फैशनियां श्रोता लोगां के, मन मांही रमग्या रे ।।फैशन।। ७ ।।

ओघा और मुखपति मांहे, बेरण जाकर बसगी रे,
खादीरा कपड़ां में भी पीण, फैशन घसगी रे, ।। फैशन ।। ८ ।।

सादगी सुं जीवन बितावे, तो सुधरे जिंदगानी रे,
फैशन छोड़ सादगी धारो, के जिनवाणी रे ।। फैशन ।। ९ ।।

।। बहु पुन्य केरा पुंज थी ।।

बहु पुन्य केरा पुंज थी, शुभ देह मानव नो मल्यो ।
तो भरे भव चक्र नो, आंटो नहीं एके टल्यो ।

सुख प्राप्त करतां सुख टले छे, लेश ए लक्षे लहो।
क्षण क्षण भयंकर भाव मरणे, कां अहो राची रहो ॥ १ ॥

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, सुं वध्युं ते तो कहो ?
सुंकुटुम्ब के परिवार थी, वधवा पणुं ए नहीं गहो।
वधवा पणु संसार नुं, नरदेह ने हारी जवो।
एनो विचार नहीं अहो हो, एक पण तम ने हवो ॥ २ ॥

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमें त्यांथी मले।
ए दिव्य शक्तिमान जेथी, जंजीरे थी निकले।
पर वस्तुमां नहीं मुजनो, एनी दया मुजने रही।
ए त्यागवा सिद्धांत पश्चात, दुःख ते सुख ही नहीं ॥ ३ ॥

हुँ कोण छुं, क्यांथी थयो, शुं स्वरूप छे म्हारूं खरूं।
कोन संबघे वलगणा छै ? राखूं केए परहरुं ?
एना विचार विवेक पूर्वक, शांत भावे जो कर्या।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान ना, सिद्धांत तत्व अनुभव्या ॥ ४ ॥

दे प्राप्त करवां वचन कोनूं, सत्य केवल मानवूं।
निर्दोष नर नु कथन मानो, तेह जेणे अनुभव्यूं।
रे आत्म तारो, आत्म तारो, शीघ्र एने ओलखो।
सर्वात्ममां समदृष्टि हो, आ वचन ने हृदये लखो ॥ ५ ॥

॥ बेर बेर नहीं आवे अवसर ॥

बेर बेर नहीं आवे अवसर, बेर बेर नहीं आवे रे।
जहां जावे त्यां करना भलाई, जन्म २ सुख पावे रे ॥ १ ॥

तन धन योवन सब ही झूठों, प्राण पलक में जावे रे।
तन छूटे धन कौन काम को, काहे को कृपण कहावे रे ।।वेर।।२।।

जांके हिरदे सांच बसत है, वांको झूठ न भावे रे।
आनन्द घन प्रभु चलत पंथ पे,सुमर-सुमर सुख पावे रे ।।वेर।।३।।

।। भगवान महावीर के वो भक्त कहाते ।।

भगवान महावीर के, वो भक्त कहाते।
करे जान को कुर्बान, दया धर्म दिपाते ।। टेर ।।

हँस २ के आपदाओं का, जो करते सामना।
इस लोक की परलोक की, नहीं दिल में कामना।
करते हैं इकरार, उसे पूर्ण निभाते ।। भगवान् ।। १ ।।

जिनराज अरिहंत, को ही देव मानते।
मंत्रों में सर्व श्रेष्ट नवकार जानते।
भेरू भवानी पीर को, नहीं शीश झुकात ।।भगवान्।।२।।

रहते सदा जो कनक कामिनी से दूर है।
वेराग्य त्याग से करे कर्म चूर है।
ऐसे गुरु की शरण में, सब पाप नसाते ।।भगवान्।।३।।

है धर्म सत्य जिसमें, दया दान की मानता।
सम्यक्त्व ज्ञान युक्त क्रिया, भाव की प्रधानता।
पाखण्ड के परपंच में, हरगिज न फंसाते ।।भगवान्।।४।।

इतिहास कामदेव का रग २ में भरा हो।
फिर तत्व क्रिया का ज्ञान पूर्ण करा हो।
हां धर्म के उत्थान में, तन धन को लुटाते ॥भगवान॥५॥

है वर्धमान शहर वीर वर्धमान का।
श्री संघ लाभ ले रहा ज्ञान ध्यान का।
कहता है मुनि कृष्ण, मुझे वीर सुहाते ॥भगवान॥६॥

॥ भगवान् मुझे सुशीला विद्यावती बनाना ॥

भगवान मुझे सुशीला, विद्यावती बनाना।
दोनों कुल की शोभा, लज्जावती बनाना ॥ टेर ॥

बनवास में पति का, जिसने न साथ छोड़ा।
सत शील की विधाता, सीता सती बनाना ॥ १ ॥

छोड़ा न शील हरगिज, संकट, सहे हजारों।
अंजना सुभद्रा अथवा, तारामती बनाना ॥ २ ॥

कुष्ठि पति को पाकर, सेवा से मुँह न मोड़ा।
वह धर्म कर्म ज्ञाता, मैना सती बनाना ॥ ३ ॥

शिव रामवेश धरके. जिसकी करी परीक्षा।
सम्यक्त्व से डिगी ना, वैसी सती बनाना ॥ ४ ॥

॥ भज मन भक्ति युक्त भगवान् ॥

भज मन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या जिन्दगानी का ॥ टेर ॥

चंचल अमल कमल दल ऊपर, ज्यों कण पानी का ।
जान तरल त्यों तन क्षण भंगुर, जग में प्राणी का ॥ १ ॥

शरद जरद वुद वुद सम जाहिर, जोर जवानी का ।
मत कर गर्व गुमान मान, कहना गुरु ज्ञानी का ॥ २ ॥

था जग में कहो कौन दैत्य, दस मुख की शानी का ।
बता पता है कहां उसी, रावण अभिमानी का ॥ ३ ॥

उदय अस्त लौ राज हुआ था, पति इन्द्राणी का ।
बना तदपि रहा लोभ तोय हा, कोड़ी काणी का ॥ ४ ॥

है दुर्गति दातार प्रेम, दूजी दिल जानी का ।
को नहीं पाया क्लेश प्रेम कर, त्रिया विरानी का ॥ ५ ॥

क्या विश्वास स्वास का पुनि इस, दुनियां फानी का ।
ले ले सम्बल संग नहीं, घर आगे नानी का ॥ ६ ॥

जयपुर का श्री संघ रसिक है, श्री जिनवानी का ।
माधव मुनि कहे कथन मान मन, सुमति सयानी का ॥ ७ ॥

॥ भज मानव अरिन्ताणं ॥

भज मानव अरिहन्ताणं, सिद्धाणं अरिहन्ताणं ।
भज मानव अरिहन्ताणं, सिद्धाणं अरिहन्ताणं ॥ टेर ॥

पाप कर्म से डरो, सत्य कर्म कुछ करो ।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभू का भजो रे मनवा ।भज मानव।१।

भज करके सेठ सुदर्शन, जो न अपने पथ से डिगा है।
शूली के बदले लोगों, सिंहासन उसको मिला है।।
वही काम तुम करो, सत्य कर्म कुछ करो।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभु का भजो रे।।मनवा।।२।।

पावन यह मंत्र जपे जो, पावन फल हैं वो पाता।
माया का बन्धन टूटे, मुक्ति फल हैं वो पाता।।
वही काम तुम करो, सत्य कर्म कुछ करो।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभु का भजो रे।।मनवा।।३।।

बस एक यह बात पते की, स्वाध्याय मण्डल है कहता।
तन मन न्यौछावर करके, प्रभु का जो सुमिरन करता।।
ज्ञान से मन को भरो, सत्य कर्म कुछ करो।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभु का भजो रे।।मनवा।।४।।

।। भर योवन में पाल्यो शील ।।

श्री विजय कंवर और विजया कंवरी नारी।
भर यौवन में पाल्यो शील के ममता मारी।। टेर।।

ये कच्छ देश और कसूंबी नामा नगरी।
जहां बाग बगीचा शहर की शोभा सगरी।

ये धन्ना नामा सेठ रास हैं धनरी।
श्री विजय कवर के धर्म करणरी लगरी।
पुण्यवन्त मिली है विजया कंवरी नारी ॥ भर ॥१॥

सोले करके सिंगा पिऊ घर जाती।
गहणा पहिर्या है खूब घूंघर घमकाती।
बालम से सुन्दर प्रेम धरी बतलाती।
कामी की छाती थर्र–थर्र थर्राती।
हित करके बोले विजय कंवर सुन प्यारी ॥भर॥२॥

क्यों मदन दीपन हो ऐसी बातां करती।
मैं कृष्ण पक्ष का त्याग लिया मुनिवर थी।
यों सुनके सुन्दर बोली नयना झरती।
करें बेन भाई ज्यों मित्र, बातां इकराती ॥भर॥३॥

श्री विमल केवली वखान इनका कीधा।
जिनदास सु श्रावक सुनकर आया सीधा।
कर भाव मुनि का दर्शन हिरदा भीजा।
अरु खूब हुआ मन खुश के अमृत पीआ।
तब मात पिता ने सुनी हुई बात जारी ॥भर॥४॥

यों सकल जगत जाण्यो कुंवर कुंवरी को।
घर प्रच्छन्न पणे में शील पाल रजनी को।
जाने जगत सब फंद जान सब फीको।

करके आज्ञा पंथ लियो मुनिजी को ।
जाने शुद्ध पाल के शील आतमा तारी ।। भर. ।। ५ ।।

।। भाया प्रभु भजले रे भाया ।।

(तर्ज—मारवाड़ी पल्लो लटके)

प्रभु भजले रे भाया प्रभु भजले ।
जरासो केणो मारो मानले, तूं प्रभु भजले ।। टेर ।।

मोह माया में भूम रयो तूं, कर रयो थारी म्हारी ।
ज्ञान धर्म की बातां केवे, लागे थांने खारी रे ।।भाया प्रभु।।१।।

मुठ्ठी बांधियों आयो रे जग में, हाथ पसारियो जासी ।
दया धर्म की करले कमाई, आहीज आडी आसी रे ।।भाया प्रभु।।२।।

जवानी री अकड़ाई में टेड़ो टेड़ो चाले ।
पर थने नहीं इतरी मालूम, कांई होसी काले रे ।।भाया प्रभु ।।३।।

छोटी मोटी बणी रे हवेलियां, अठे पड़ी रह जासी ।
दो गज कफन रो टुकड़ो आखिर, थारो साथ निभासी रे ।।भाया।।४।।

तू है पावणो भूल मतीना, चार दिना रो भाई ।
काल काकाजी आवेला थारो, कंठ पकड़ ले जासी रे ।।भाया।।५।।

बाल मंडल केवे रे भायला, यों मौको नहीं आसी ।
प्रभु भजन नहीं कियो वांवला, फिर पीछे पछतासी रे ।।भाया।।६।।

।। भाव भीनी वन्दना ।।

भाव भीनी वन्दना, भगवान चरणों में चढ़ायें।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय, रूप अपना आप पायें ।। टेर ।।

ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उरवरामें, लक्ष तरूवर लहलहाये ।। १ ।।

सत्य में आस्था अटल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्धकर आत्मानुशासन, विजय का संगान गायें ।। २ ।।

विन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी है।
छिन्नकर सब ग्रन्थियों को, सुप्त मानस को जगायें ।। ३ ।।

धर्म है समता हमारा, कर्म समता मय हमारा।
साम्य योगी वन हृदय से, श्रोत समता का वहायें ।। ४ ।।

।। भारत के जैन वीरों ने क्या नाम कमाया ।।

भारत के जैन वीरों ने, क्या नाम कमाया।
वलिदान हुए पैर न, पीछे को हटाया, वीरत्व दिखायो ।।टेर।।

मिट्टी की पाल वांध, सर पे आग लगाई।
गजसुखमाल ने क्षमा की, झलक खूब दिखाई।
दी प्राणों की आहुति, न दुश्मन को दवाया ।। १ ।।

खन्धक के शिष्य पांचसौ, घानी में पिल गये।
जी जान अपनी धर्म पर, कुर्बान कर गये।
उफ तक न किया, खून का दरिया जो वहाया ।। २ ।।

खंधक ने अपने वदन की, थी खाल खिचाई।
मेघरथ ने कबूतर की, थी जान बचाई।
मेतार्य ने बलिदान दे, कुर्कट को वचाया ॥ ३ ॥

यों जैन वीर लाखों ही, भारत में हुए हैं।
वे धर्म के ऊपर सदा, बलिदान हुए हैं।
"मोहन" मुनि जिन धर्म का, डंका है बजाया ॥ ४ ॥

॥ भूल्यो मन, भमरा कांई भमे ॥

भूल्यो मन भमरा कांई भमे, भमतो दिन ने रात।
माया रो लोभी प्राणियो, मरने दुरगति जाय ॥ भूल्यो ॥१॥

कुंभ काया रे काची कारमी, तिणरा करो रे जतन।
कोई साथे चाले नहीं, निर्मल राखो मन ॥ भूल्यो ॥२॥

किनरा छोरू किनरा वाछरू, किनरा मायने बाप।
ओ प्राणी जासी एकलो, साथे पुण्य ने पाप ॥ भूल्यो ॥३॥

आशा रे अम्बर जेवड़ी, मरणो पगल्या रे हेट।
धन संचय करी कांई करो, कर दो जिन जी रे भेंट ॥भूल्यो॥४॥

मूर्ख कहे धन म्हायरो, वो धन खर्चे न खाय।
वस्त्र बिना जाय पोढ़ियो, लखपति लकड़ा रे मांय ॥ भूल्यो ॥५॥

लखपति छत्रपति सब गया, गया लाख वे लाख।
गर्व करता गोखां वेसुता, जारी जलबल हो गई राख ॥ ६ ॥

ऊंचा जी महल चुनाविया, करतां होड़ाजी होड़ ।
चिट्ठी पहुंची राम री, गया पलक में छोड़ ।। भूल्यो ।। ७ ।।

उलटी नदी रे मारग चालनो, जानो पेली रे पार ।
आगे नहीं हट वाणियां, खर्ची ले लो रे लार ।। भूल्यो ।। ८ ।।

खावे पीवे खर्चे घणो, जपे नहीं नवकार ।
दान शील तप भावना, जग मांहि ए तंत सार ।। भूल्यो ।। ९।।

भवसागर जल दुःख भर्यो, जेनो छेह न पार ।
बीच में छे अंतर घणो, कर्म वायु नो झवकार ।। भूल्यो ।।१०।।

जे घर नोबत बाजती, होता छत्तीस राग ।
ते मन्दिर खाली पड्या, बैठवा लाग्या रे काग ।। भूल्यो ।।११।।

परदेशी परदेश में, किण सु करे रे स्नेह ।
आयो रे कागद उठ चालियो, आंधी गिने नहीं मेह ।। भूल्यो ।।१२।।

धन्धो करीने धन जोड़ियो, लाखां ऊपर करोड़ ।
मरती रे वेला मानवी, लेसी कंदोरो तोड ।। भूल्यो ।।१३।।

कोई कहे चालिओ के चालसी, कोई कहे चालन हार ।
रात दिवस खोवे घणी, रक्खे नहीं लगार ।। भूल्यो ।।१४।।

जिन विना एक घडी सुधि, सरतो नहीं रे लगार ।
सौ सौ वर्षो गुजरिया, सुध नहीं रे लगार ।। भूल्यो ।।१५।।

सोवन गढ़ लंका पति, तेमा रावननाथ ।
अंत समय उठ चालीया, नहीं काई ले गया साथ ।। भूल्यो ।।१६।।

ममन सेठ धन जोड़ियो, जोड़ियो छप्पन जी क्रोड़ ।
खायो पियो खरच्यो नहीं, गयो जी माथो फोड़ ।। भूल्यो ।। १७ ।।

धरती अखण्ड कुमारियां, वर केतलायी जवान ।
मेरी मेरी कर मर गया, हिन्दू मुसलमान ।। भूल्यो ।। १८ ।।

भीम कहे सुनो भाईयों, सुनजो सगला लोग ।
अठेऊं उठ चालनो, नहीं कोई राखन जोग ।। भूल्यो ।। १९

जीवड़ो जातो इम कहे, नहीं कछु दीनो रे साथ ।
लाडू दिया दोय चूरने, फूटी हांडी रे साथ ।। भूल्यो ।। २० ।।

मुनिवर कहे भाई सांभलो, लो कोई आया रे साथ ।
धर्म नो लाभ लई लो, लेखो साहिब रे हाथ ।। भूल्यो ।। २१ ।।

।। भोला मूल मतीना जा जे रे ।।

(तर्ज : ढोला ढोल मजीरा....)

भोला भूल मतीन जा जे रे ।
मद भरियो जोवनियो थारो, ढ़लतो लाजे रे ।।ध्रुव।।

नोच ठिकाणे ऊपज्यो रे, कियो सूघला आहार ।
हाड़ मांस रा डील रो थूं, करतो रहे सिणगार ।। १ ।।

गोरी गोरी चामड़ी रे, थारा मन में एँठ ।
पतो नहीं है थोड़ा दिन में, व्हेला अगनी भेंट ।। २ ।।

तरह तरह सिणगार करे तूं, धोवे साफ शरीर।
ऐंठ बजारां निकले ज्यूं, सब से बड़ो अमीर ॥ ३ ॥

थोड़ा दिन रो पावणी या, जोवन री झलकार।
इण में आंधो व्हे जासी तो, जासी जमारो हार ॥ ४ ॥

जीव देह दोई भिन्न है रे, कर आतम रो ज्ञान।
देह नष्ट हो जावसी फिर, क्यों करता अभिमान ॥५॥

सत गुरु रो शरणो पकड़ रे, सीख हिया में मान।
सांची साँची 'कुमुद' कहे तूं, भजले रे भगवान ॥ ६ ॥

॥ मत खाओ लीलोती, बदलो नहीं छूटे पर भोगवे ॥

(तर्ज : तुम माल खरीदो)

मत खाओ लीलोती, बदलो नहीं छूटे पर भोगवे ॥ टेर ॥

कांदा, लसण, गाजर, मूला, जमीकन्द की जात।
जीव अनन्ता कह्या जिनवरजी, मत करजो कोई घात जी ॥ १ ॥

बोर अभक्ष कह्या वेदक में, और लटां पड़ जावे।
लगे मांस का दोष जिसी में, जाणत फिर हम खावें जी ॥ २ ॥

खरबूजा ने और काकड़ी, दाड़म नींबू मांय।
बीज घणा अरु लटां उपजे, अनदेख्या मत खाय जी ॥ ३ ॥

तोरु, भींडी, गोभी, नागर, बेल पत्ता बहु खाया।
तृपत नहीं होवे जिवड़ो सरे, श्री जिनवर फरमाया जी ॥ ४ ॥

बिन मर्यादा रस्ते चलतो, खेत देख वलि जावे ।
खेती वालो जंग मचावे, ले सोटा धमकावे जी ।। ५ ।।

धोला दिन का धाड़ो पाड़े, रात पड़यां फिर जावे ।
राज कचेरी जाय पुकारे, अन्यायी बाजे जी ।। ६ ।।

सुन उपदेश राखो मन दृढ़ता, धारो व्रत अरु नेम ।
अभयदान वान हो सुधरो, राखो धर्म सूं प्रेम जी ।। ७ ।।

उगणीस सतंतर खण्डवा, संतोक मुनि उपकार ।
मुनि मोतीलाल कहे हरि खाने का, त्याग करो नरनार ।। ८ ।।

।। मत जावो म्हारा महावीर स्वामी ।।

आ रो-रो चन्दना पुकारेजी, मत जाओ म्हारा महावीर स्वामी ।।टेर।।

मैं अबला कर्मा री मारी २, दर-दर ठोकर खाई रे ।। मत० ।।१।।

मैं भी तो थी राजदुलारी २, सरे बाजार बिकानी र ।। मत० ।।२।।

धन्य घड़ी धन्य भाग्य है म्हारे २, आप पधारिया आंगणिये ।।३।।

उड़द बाकला हाजिर २, आहार करो म्हारा स्वामीजी ।।४।।

चम्पा लुटगी मैं बिकियोड़ी २, कौन सुणेला म्हारी वातड़ली ।।५।।

।। मत भूलो कदा ।।

मत भूलो कदा रे, मत भूलो कदा ।
वीर प्रभु के गुण गावो सदा ।। टेर ।।

जो जो भाव प्रभु प्रगट कीया।
गणधर सूत्रों में गूंथ लिया ।। १ ।।

प्रभुजी की वाणी को आज आधार।
सुन सुन सफल करो अवतार ।। २ ।।

जल से न्हाया तन मैल हटे।
प्रभुजी की वाणी से पाप कटे ।। ३ ।।

तुरत फुरत सब विपत टले।
जिहां तिहां वांछित आश फले ।। ४ ।।

"मुनि नन्दलालजी" हुक्म दियो।
जद रावल पिंडी चौमासो कियो ।। ५ ।।

।। मत लेवो नाम संयम को पिया ।।

जम्बू कुंवर के आगे पदमन, अरज करत जोड़ीकर कर।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे छाती म्हाकी थर थर ।।टेर।।

श्री सुधर्मास्वामी की वाणी सुन, वैराग्य जीगर में छाया है।
आ घर आज्ञा मांगी कुंवर, माताजी मुर्छा खाया है।
जगत जाल और काम भोग, पापों से दिल घबराया है।
ऐसे वचन मत काढ़ो कुंवरजी, होश में आ फरमाया है।
कहो किसका आधार हमें, यूं कहती माता आंसू भर भर।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे म्हाकी छाती थर थर ।।१।।

जरा तो दिल में ख्याल करो, संयम मारग को कठिन जानो ।
खांडे की धार सूई की अणी है, स्वाद नही इसमें मानो ।
धन घणा उत्तम कुल परणियां, इन ऊपर तो दया आनो ।
भूल चूक मत लेवो नाम, माता का पुत्र से फरमानो ।
मानो कहन-मेरे लाल, गुणिजन सब आधर है तुम पर २ ।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे छाती मांकी थर थर ॥२॥

॥ मन मोयो रे तुंगियापुर नगर सुहावणो ॥

मन मोयो रे तुंगियापुर नगर सुहावणो रे ॥ टेर ॥

इण नगरी में बाजा वाजिया रे,
इण नगरी में आया साध रे ॥ मन० ॥ १ ॥

मासखमण रो मुनि रे पारणो रे,
आया छे 'बलभद्र' मुनिराय रे ॥ मन० ॥ २ ॥

इण नगरी में लेसां गोचरी रे,
इण नगरी में लेसां आहार रे ॥ मन० ॥ ३ ॥

'कूंवा' रे कांटे कामण संचरी रे,
लारे रोवतड़ो नानो बाल रे ॥ मन० ॥ ४ ॥

रूप सरूपे मुनिवर फूटरा रे,
दीसे छे इंद्र तणे उनिहार रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

चुकल्या रे बदले बालक फांसियो रे,
दीनो छे कूवा में उसेर रे ॥ मन० ॥ ६ ॥

धिक धिक हो जो म्हारा रूप ने रे,
धिक धिक इन संसार ने रे।। मन० ॥ ७ ॥

इण नगरी में नहीं लेसां गोचरी रे,
इण नगरी में नहीं लेसां आहार रे ॥ मन० ॥ ८ ॥

वन में तो मुनिवर पाछा संचर्या रे,
बैठा छै, तरुवर केरी छाय रे ॥ मन० ॥ ९ ॥

वन में तो भावे मृगलो भावना रे,
आवे छै मुनिवर केरे पास रे ॥ मन० ॥१०॥

वन में तो फाड़े खाती लाकड़ा रे,
खातण लावे छे उणरे भात रे, ॥ मन० ॥११॥

दोष 'बयाँलीस' मुनिवर टालता रे,
लीनो छे सूझतो आहार रे ॥ मन० ॥१२॥

वन में तो बाज्यो बेरी वायरो रे,
टूटी है चंपा केरी डाल रे ॥ मन० ॥१३॥

खाती मुनिवर ने तीजो मिरगलो रे,
पहुंचा पंचम देवलोक रे ॥ मन० ॥१४॥

॥ मन रे तूं तो बड़ा हरामी ॥

मन रे तूं तो बड़ा हरामी,
आत्म ध्यान सुधा रस छोड़ी, बन विषयन को कामी ॥ टेर ॥

मेरी आज्ञा रंच न माने, करतो जगत गुलामी ।
फिर तो भटकत नश्वर जग में, तज कर अन्तर्यामी ।।मन रे।।१।।

जिसका कहावे उसीको लजावे, ये तुझ में बड़ी खामी ।
ऋषि मुनि भी तुझसे हारे, तूं है निर्लज नामी ।। मन रे।।२।।

ज्ञान ध्यान शास्त्र रूचे नहीं, लम्पटी विषयी कामी ।
मैं तुझे बार बार समझाऊं, समझे नहीं रे हरामी ।। मन रे।।३।।

समझा कुटिलता तेरी अब मैं, में हूं तेरा स्वामी ।
भ्रमण तज रमण कर प्रभु में, बनजा अब निष्कामी ।।मन रे।।४।।

संत सती के सद्गुण में रम, मिटे सकल बदनामी ।
'केवल मुनी' कहे प्रपंच छोड़ सब, बनजा शिवपथ गामी ।।मन रे।।५।।

।। मनवा कभी न हो दिलगीर ।।

(तर्ज : दुःख है ज्ञान की खान मनुआ)

कभी न हो दिलगीर मनवा, कभी न हो दिलगीर ।। टेर ।।
सुख दुःख है जीवन का साथी, कभी भीर कभी चीर ।।मनवा।।

सत्यवादी हरिश्चद्र कहायो, पृथ्वी पति अमीर ।
दिन पलट्या जद दुनियां पलटी, भरयो नीच घर नीर ।। १ ।।

राजपाट धन-धाम हार गयो, जूआ में नल वीर ।
महाराया जो काल कहायो, बण गयो आज फकीर ।। २ ।।

तीन खण्ड का नाथ कृष्ण जी, पुरुषोत्तम बल वीर ।
वन वन भटक्या अन्त समय में, रयो न जल में सीर ।। ३ ।।

रावण सरीखा लंका खोई, धूजी कस शमसीर ।
सन्मुख लखता गोपीयन लूटी, वही अर्जुन वही तीर ।। ४ ।।

बड़ा बड़ारी या गत होवे, सम्भल देख पर पीर ।
तन कपड़ो वैरी हो जावे, जब पलटे तकदीर ।। ५ ।।

प्राण पियारी नर न पूछे, काहे होत अधीर ।
पुत्र कहे नहीं पिता हमारा, बहन कहे नहीं वीर ।। ६ ।।

होनहार होकर ही रहवे, टले न कर्म लकीर ।
कायर बन क्यों हिम्मत खोवे, काहे बहावे नीर ।। ७ ।।

सुख नहीं रयो तो दुःख क्यों रहसी, होसी अंत अखीर ।
हिम्मत राख संभल बढ़ आगे, धारण कर मन धीर ।। ८ ।।

एक दिन 'जीत' अवश्य वो आसी, चढ़ भक्तां री भीर ।
देरी है अन्धेर नहीं है, प्रभु गुण गा नर वीर ।। ९ ।।

।। मनवा छोड़ रे पर उपदेश ।।

(तर्ज : बटाऊ आयो लेवाने)

मनवा छोड़ रे पर उपदेश, जगाले पहली आत्मा ।। टेर ।।

तूं समझे सारी दुनियां में, मैं हूँ अकलमंद ।
चऊदे पूर्व ज्ञान का धारी, तोड़ न सक्या भव फंद ।।जगाले ।।

तू समझे पूंजीपति होकर, लेस्यु धाक जमाय।
चऊदे रतन नव निध का स्वामी, चक्री गया रे नरकाँ मांय ।।ज।।२।।

तूं समझे ऊमर हैं लम्बो, फेर भजालां राम।
प्रात:काल घूड़लाँ पर घूम्यां, चिता पर सूता देख्या शाम ।।ज।।३।।

तूं समझे ऊपर रहूं मीठो, अन्दर हूं हुशियार।
बगुला भक्ति जो करसी तो, कैसे पावेलो निस्तार ।।जगाले।।४।।

तूं जाणे छिपछिप कर बांधू, कोई न देखणहार।
कर्म उदय में जब आ जावे, रोयाँ भी छोड़े नहीं लार ।।जगाले।।५।।

जाण रयी दुनियां सब खासी, मैं भोगूला कर्म।
फिर भी कर रयो पाप कमाई, लोग दिखाऊ करे धर्म ।।जगाले।।६।।

मन विपरीत जरा हो जावे, झट आ जावे रोष।
पर निंदाकर पाप क्यों बांधे, क्यों नहीं देखे खुद का दोष ।।जगाले।।७।।

देश धर्म और जाति न्याति, के कदे न आयो काम।
मनमानी कर धाक जमाई, दूजा ने करियो बदनाम ।।जगाले।।८।।

बोलण की चतुराई राखो, वाह वाह पर रयो फूल।
भाषा पर अंकुश नहीं ज्यांरे, जाण पण के मांही धूल ।।जगाले।।९।।

निश्चय समझ और सांच मान, नहीं टले कर्म का लेख।
बड़ी बड़ी हस्तियां विर लागी, लेख के लागी नहीं मेख ।।जगाले।।१०।।

नरभव बाजी लगी दांव पर, करले धर्म से प्रीत।
कोरा नाम पर मत गर्वाजे, निश्चय में पाजे अबके 'जीत' ।।जगाले।।११।।

।। मनवा नाय विचारी रे ।।

मनवा नाय विचारो रे, लोभी नाय विचारी रे।
थांरी मांरी करतां, ऊमर वीतो सारी रे ।।टेर।।

गर्भवास मैं कोल करियो थे, प्रभुजी से भारी रे।
अब मने बाहर काढ़ो, करसु भक्ति थारो रे ।।मनवा।।१।।

वालपना में गोद खिलायो, माता थांरी रे।
भर जोबन में काम सतावे, त्रिया प्यारी रे ।।मनवा।।२।।

वृद्ध हुयो जद यूँ उठ वोली, घर की नारी रे।
कब बुढ़ो मर जावे तो छूटे, गेल हमारी रे ।।मनवा।।३।।

यो संसार स्वप्न की माया, झूंठी सारी रे।
भजणो हो तो भजले भाई, मरजी थारी रे ।।मनवा।।४।।

।। मनवा माटी की या काया ।।

(तर्ज—भजले वीर प्रभु का नाम)

मनवा, माटी की या काया, आखिर माटी में मिल जासी ।।टेर।।

हिंसा बढ़ाकर, जीव दु:खाकर, जोड़े धन को राशी।
काना की कुडक्यां तक वेटो, गांठ बांध ले आसी ।।मनवा।।

फूलां को सैया भी चुभती, वा देह मित्र उठासी।
नीचे लकड़ा ऊपर लकड़ा, चुन चुन चिता वणासी ।।मनवा।।

ज्यांरे मोह में हुयो दिवानो, वे या प्रीत निभासी।
प्राण प्यारो वेटो ही पहलो, थांरे आग लगासी । मनवा।।

फूंक दिया केई फूंक रयो है, फेर केई फुंक्यासी ।
पण या भी रखजे याद एक दिन, तूं भी वठे ही जासी ।।मनवा।।

माटी बण माटी में मिलियो, फेर बण्यो वणजासी ।
जब तक है माटी सुं 'ममता' मिटे न यम की की फांसी ।।मनवा।।

काला का धोला हो गया, क्यों और करावे हांसी ।
जन्म मरण का बंध बढ़या तो, जनम जनम पछतासी ।।मनवा।।

काल अनन्ता चक्कर खायो, फिरयो लाख चोरासी ।
पण अबके तो वण जा 'जीतमल', अजर अमर अविनाशी ।।मनवा।।

।। मनाऊं मैं तो श्री अरिहन्त महन्त ।।

मनाऊँ मैं वो श्री अरिहंत, महन्त ।। टेर ।।

तरू अशोक जाको अवलोकत, शोक समूह नाशन्त ।
सुर कृत बाणबरण के नभ से, अचित सुमन बरसन्त ।।म० १।।

अर्धमागधी वाणी जांकी, योजन इक पर्यन्त ।
सुनत अमर नर पशु हिलमिल के, समझ सुबोध लहन्त ।।म० २।।

मुनि मन समचित चमर अमर गण, प्रमुदित व्है ढारन्त ।
स्फटिक रत्न के सिंहासन पर, त्रिजगत पति राजन्त ।।म० ३।।

प्रभावलय तम प्रलय करन हित, दिनकर सम दमकन्त ।
पृष्ट भाग रहि प्रभुजी के सो, प्रबल प्रकाश करन्त ।।म० ४।।

गगन मांहि घन गर्जारव सम, दुंदुभि नाद वजन्त ।
तीन छत्र शिर सोहे ताके, तूं त्रिभुवन को कन्त ॥म०५॥

तव सुमिरे सुख सम्पति पावे, नर सुर पय प्रणमन्त ।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर प्रकटे, तेरो जो जाप जपंत ॥म०६॥

'माधव' मुनि कर जोड़ विनवें, विनय सुनो भगवन्त ।
ऋषि वृद्धि, वुद्धि वैभव देवो, अरु सुख सादि अनन्त ॥म०७॥

॥ मनुष्यो क्यों मुझे जवरन ॥

मनुष्यों क्यों मुझे जवरन, अपन जैसा बनाते हो ।
नमस्ते हैं तुम्हें, तुम तो मेरी प्रभुता घटाते हो ॥१॥

पिता हूँ विश्व का फिर भी, समझते बाल नन्हा सा ।
लिटा कर पालकी में लोरियां, दे दे सुलाते हो ॥२॥

नहीं लगती मुझे सर्दी, नहीं लगती मुझे गर्मी ।
उढ़ाते क्यों दुशाले और, पंखे क्यों डुलाते हो ॥३॥

स्वयं मैं शुद्ध निर्मल हूँ, तथा औरों को करता हूँ ।
समझ का फेर है प्रति दिन, किसे मल मल नहलाते हो ॥४॥

भला मुझ निर्विकारी का, विवाह क्या रंग लायेगा ।
बिछा कर पुण्य शैया प्रेम, से किसको सुलाते हो ॥५॥

नहीं मैं हूं तुम्हारे मिष्ट, मोहन भोग का भूखा ।
वृथा ही नाम ले मेरा, स्वयं मौजें उड़ात हो ॥६॥

दया करके मुझे नीचे, गिराना छोड़ दो भक्तों।
'अमर' मम तुल्य बनकर क्यों, न मेरे पास आते हो ॥७॥

॥ मनोरथ तीन उत्तम ॥

मनोरथ तीन उत्तम ये, जिनेश्वर ! नित्य भाता हूँ,
कृपा की आश रखता हूँ, सफल हो शीघ्र चाहता हूँ ॥टेर॥

परिग्रह पाप का दलदल, फँसा हूँ फँसता जाता हूँ,
घट थोड़ा-बहुत प्रतिदिन, बड़ा ही कष्ट पाता हूँ ॥१॥

प्रमादी गृहस्थ जीवन है, अधूरो धर्म करणी है,
बनूंगा कब मुनि मुझ में, हो ऐसी शक्ति चाहता हूँ ॥२॥

मोक्ष की है लगन पूरी, न कोई अन्य आशा है,
देह छूटे समाधि से, अन्त शुभभाव चाहता हूँ ॥३॥

दीन हूँ दीनता करता, देवता ! दान तूं करना,
मनोरथ पूर्ण सब करना, चरण तेरे पकड़ता हूँ ॥४॥

कहे "पारस" सुनो केवल, विरुद अपना निभाना तुम,
कहूँ अब और आगे क्या ! न खोजे शब्द पाता हूँ ॥५॥

॥ महावीर के हम सिपाही बनेंगे ॥

महावीर के हम, सिपाही बनेंगे।
जो रक्खा कदम, न वो पीछे धरेंगे ॥टेर॥

सिखा देंगे दुनियां को, शांती से रहना ।
अहिंसा की बिजली नसों में भरेंगे ॥१॥

लगावेंगे मरहम, जो होवेंगे जखमी ।
सुखी करके जग को, स्वयं दुःख सहेंगे ॥२॥

कहीं जुल्म दुनियां में, रहने न देंगे ।
अगर सर कटेगा, खुशी से मरेंगे ॥३॥

न घुड़दौड़ में जग, के पीछे रहेंगे ।
कसेंगे कमर, और आगे बढ़ेंगे ॥४॥

अहिंसा के सेवक हैं, हम वीर सच्चे ।
धर्म युद्ध में हम, खुशी से लड़ेंगे ॥५॥

हमें राम सुख दुःख की, परवाह नहीं है ।
अहिंसा का झण्डा, फहरा के रहेंगे ॥६॥

॥ महावीर स्वामी नैया लगादो मेरी पार ॥

महावीर स्वामी नैया लगादो मेरी पार ।
हो वर्द्धमान स्वामी नैया लगादो मेरी पार ॥टेर॥

यह भव जल अथाग भरयो है ।
सिर्फ आप तणो आधार, हो महावीर ॥ १ ॥

कुटुम्ब कबीलो मतलब को गरजी ।
बिन मतलब नहीं पूछे सार, हो महावीर ॥ २ ॥

जो प्राणी जग जाल में फंसियो।
वह खावेगा यम की मार, हो महावीर० ॥३॥

तन धन यौवन विद्युत सा झलका।
जाता न लागे वार, हो महावीर० ॥४॥

इम जानी तुम शरण गहूं छूं।
प्रभुजी है तारण हार, हो महावीर० ॥५॥

आश लगी को पूरण करिये।
या जन्म मरण नीवार, हो महावीर० ॥६॥

मुनि 'चौथमल' की अर्ज सुनीजो।
त्रिशला रानी के कुमार हो महावीर० ॥७॥

॥ महावीर कहा जाए ॥

(तर्ज :—मार दिया जाय)

वीर कहा जाए, महावीर कहा जाए।
बोल प्रभु नाम तेरा पाप धोया जाए।
नाम लिया जाय, या ध्यान किया जाए। बोल प्रभु........॥टेर॥

राज ताज को ठोकर लगाई।
जिन्दगानी त्याग में ही बिताई।
नाग जहरी से डंक खा करके।
डंक खा, दूध की धार बहाई।
धीर कहा जाए, गम्भीर कहा जाए॥ बोल प्रभु.......॥१॥

एक ग्वाले ने सख्ती दिखाई।
खीर पांवों पे जिसने पकाई।
उस ग्वाले पे हां, गऊ आं वाले पे हां।
उस ग्वाले पे हां, कोप दृष्टि जरा भी न दिखलाई।
शूरवीर कहा जाए, क्षमाशील कहा जाय ॥ बोल प्रभु....॥२॥

पत चन्दना की जिसने बचाई।
हथकड़ियों भी कंगन बनाई।
उस की जंजीरें हां, उसकी जंजीरें हां।
उसकी जंजीरे, फौरन ही कटवाई।
'सीता' गुण गाए और जय जय बुलाए ॥ बोल प्रभु....॥३॥

॥ मां बाप का छोड़ दुलार ॥

मां बाप का छोड़ दुलार, भाई का प्यार।
लाडली जाओ, अपना घर स्वर्ग बनाओ ॥टेर॥

जो दुखता, आता रोना है, घर से जा रहा खिलौना है।
मेरी बिटिया मत रोओ, चुप हो जाओ ॥१॥

कन्या पर धन कहलाती है, ससुराल एक दिन जाती है।
आनन्द निकेतन की, कोकिल बन जाओ ॥२॥

जितना ही दूर स्वजन जाता, स्नेह सूत्र भी उतना बढ़ जाता है।
राजी बेटी पिहर की, याद भुलाओ ॥३॥

सब से अच्छा व्यवहार रहे, सम्मान रहे सत्कार रहे ।
जो शिक्षा देवे प्रेम से, शीश चढ़ाओ ।। ४ ।।

प्रतिदिन नवकार मंत्र पढ़ना, इस पे ही दृढ़ निश्चय रहना ।
प्रभु भजन किये बिन कभी, न भोजन खाओ ।। ५ ।।

मत करना अपनी मनमानी, बन कर रहना घर की रानी ।
पति सेवा में सीता, मैना बन जाओ ।। ६ ।।

सखियों से नणद जेठानी से, सासु या देवरानी से ।
मत करो लड़ाई चुगली, कभी न खाओ ।। ७ ।।

जाति का मान बढ़ाकर के, स्वदेश की आन बचा करके ।
भारतमाता की वीर, पुत्री कहलाओ ।। ८ ।।

नन्दन सोहाग का खिला रहे, चन्दा से मंगल मिला रहे ।
'केवल मुनि' फूलो फलो, शान्ति सुख पाओ ।। ९ ।।

।। मान करना नहीं ।।

(तर्ज : छोड़ बाबुल का घर)

स्वप्न संसार है, जीना दिन चार है ।
मान करना नहीं २ ।।ध्रुव ।।

फूल फूला कि भंवरे भी, आने लगे ।
लूटने के लिए, गीत गाने लगे ।
फूल था भूल में, मिल गया धूल में ।। मान ।। १ ।।

रूप यौवन की संध्या में, लुट जायगा,
और यौवन नशा है, उतर जायगा।
इनमें मतवाला न बन, मेरे भोले सजन ॥ मान ॥ २ ॥

आज शादी करी, कल को तल्लाक दी,
लक्ष्मी तितली सी है, यह नहीं एक की।
कहां चक्री का धन, कहां चवदे रतन ॥ मान ॥ ३ ॥

सर सराता फुव्वारे का, जल जो चढ़ा,
मैंने देखा कि वो, सर के बल गिर पड़ा।
नेचर देती है दण्ड, रहा किसका घमण्ड ॥ मान ॥ ४ ॥

धर्म करणी किए बिन, पछताओगे,
अच्छे काम करोगे तो, सुख पाओगे।
कहता 'केवल मुनि' शिक्षा मानो गुणी ॥ मान ॥ ५ ॥

॥ मान मत करजो ॥

मान मत करजो रे २ श्री वीर प्रभु शास्तर में वरज्यो रे।
तन को मान घणो मन मां हो, नव-नव नखरा करतो रे।
काल बली से जोर न चाले, घणो अकड़तो रे ॥१॥

जो नर धन को मान कियो वह, धन खोई ने बैठो रे।
आरम्भ कर कर कर्म बांध, वह नर्क में पैठो रे ॥२॥

जीवन में रंग रातो मातो, ऊंची रखतो आंखियारे।
वृद्ध भयो तब परवश पड़ियो, उड़े न माखियां रे ॥३॥

विद्या बहुत पढ्यो मन चाही, बुद्धि को विस्तारो रे।
दया धर्म बिन करया गयो, यों ही, हार जमारो रे ॥४॥

तीन पांच मद मैं सुद भूल्यो, सत्संगत से दूरो रे।
मातंग कुल में जन्म ले ही, हो गयो भड सुरो रे ॥५॥

नीठ नीठ मानव भव पायो, निर अभिमानी रहिजो रे।
कहे 'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य, शिवपुर लीजो रे ॥६॥

॥ मानो सतगुरु की सीख ॥

क का कर अरिहंत को ध्यान, ख खा खोटा तज अभिमान।
ग गा गुरु अपना पहिचान,
घ घा घट अंतर में जोय, के आखिर जावणा रे ॥
मानो सदगुरु की तुम सीख, हिये में धारणा रे।
सुणिये नित्य ऊठ आप वखाण, मोक्ष पद पावणा रे ॥मानो १॥

च च् चा चेतो रे भव प्राणी, छ छ् छा छोड़ो मत जिनवाणी।
ज ज् जा जैन की आ ही निशांणी।
झ झा झूठ कवहु मत बोल, चाहे दुख पावणा रे ॥ मानो २ ॥

ट टा टहल संतो की कीजे, ठ ठा ठाली दुःख मत दीजे।
ड डा डर पर भव को कीजे,
ढ ढा ढील करो मत भाई, फेर पछतावणा रे ॥ मानो ३ ॥

त ता तूं क्या लेकर आया, थ था स्थिर नहीं रहसी काया।
द दा दूर हटा दे माया। ध धा धारो समकित रत्न।
सिद्ध गति पावणा रे ।मानो ४ ।

प पा पाप कूं पीछे हटावो, फ फा फेर नहीं पछतावो ।
व वा वचनो को खूव निभावो, भ भा भक्ति विना हरगिज ही ।
फल नहीं पावणा रे ।। मानो ५ ।।

य या याद करो भगवंत को, ल ला लोभ करो मत धन को ।
व वा विनय करो सद्गुरु को, लाभ उठावणा रे ।। मानो ६ ।।

श शा शास्त्र सुणो तुम सारो, ष षा षट् दर्शन को धारो ।
स सा समकित हिये विचारो, ह हा हंसराज का केना ।
हिरदे धारणां रे ।। मानो ७ ।।

।। मोठे-मीठे काम भोग में फंसना मत ।।

मीठे–मोठे काम कोग में, फंसना मत देवाणु पिया ।
वहुत वहुत कड़वे फल पीछे, होते है देवाणु पिया ··· ।।टेर।।

जो वीणा के मधुर स्वर में, मुग्ध हरिण हो जाता है ।।
फंस जाता वह व्याघ्र जाल में, चर्म उधेड़ा जाता है ।
तुझको प्रिय संगीत है कितना, कर चिन्तन देवाणु पिया ।।१।।

जो ज्योति के स्वर्ण दृश्य में, मुग्ध पंतगा होता हैं ।
जल जाता वह अग्निचिता में, तड़फ तड़फ कर मरता हैं ।
तुझको प्रिय नाटक है कितना, कर मन्थन देवाणुपिया ।। २ ।।

जो केतकी को सुरभि गंध में, मुग्ध सर्प हो जाता है ।
पीटा जाता लठ पत्थर से, वुरी तरह मर जाता हैं ।
तुझको प्रिय तैलादिक कितने, करो ध्यान देवाणुपिया ।।३।।

जो पाकर एक मांस खण्ड को, मच्छ मुग्ध हो जाता हैं।
छिद जाता वह तीक्षण शस्त्र से, फिर चूल्हे पर पकता हैं।
तुझको प्रिय भोजन है कितना, करो मनन देवाणुपिया ।। ४ ।।

जो पानी के शीत स्पर्श में, मोहित भैंसा होता हैं।
खिच जाता वह मगर आंत से, दाढ़ बीच में आता हैं।
तुझको प्रिय प्रसाद है कितना, कर विचार देवाणुपिया ।। ५ ।।

जो हथिनी के काम भोग में, मोहित हाथी होता हैं।
गिर जाता गहरे गड्ढे में, साकल में बंध जाता हैं।
तुझको प्रिय नारी हैं कितनी, पूर्ण सोच देवाणुपिया ।। ६ ।।

एक एक विषय गृद्धि-का, भी जब यह फल होता है।
जो सब में आसक्त बना वह, कितना कटु फल पाता हैं।
केवल कहते "पारस" सुनरे, हो विरक्त देवाणुपिया ।। ७ ।।

।। मुक्ति का मार्ग ज्ञानी देव फरमाया ।।

ये दान शील तप भाव सार बतलाया।
मुक्ति का मारग ज्ञानी देव फरमाया ।। टेर ।।

ये छः काया का जीव दया जो पारे।
वो अभय दान दातार जन्म सुधारे ।।

और देवे सुपात्र को दान पात्र अणगारे।
वो पावेगा बहु रिध भरया भंडारे ।।

दोहा—गवल्या का भव माय, दीनो दान चितलाय ।
शालिभद्र सुख पाय, भण्डार भरया ।

कुंवर सुबाहु सुं जान, हुआ रुप का निदान ।
पनरा भव के दरम्यान, कारज सिद्ध किया ।
जांने जिन मारग में, वहुत जोर लगाया ।। १ ।।
यो शील बड़ो संसार, करो कोई करणी ।
या नव वाड़ी निर्मल, चित्त शुद्ध धरणी ।
है विषय रूप नी लाय जगत से तरणी ।
केई डूब गया संसार नार संग वरणी ।।
दोहा—देखो जंबू कुंवर, परणया राते आठो नार ।
लारे लीदो परिवार, गुरू पासे जाई ।

सुभद्रा सीता नार, और घणा है संसार ।
पालो शील को आचार छती जोग वाई ।
यो अष्ट महा भय मिटे, शील सुखदाया ।।२।।

जो करे तपस्या, जोर जबर लगावे ।
करे कर्म को चूर, मोक्ष में जावे ।

कोई बेला तेला, मास खमण जो ठावे ।
सब वारा भेद के मांहि, गणित गिणावे ।

दोहा:—गोतम नामा अणगार, धन धन्नो अणगार ।
चाल्यो सुत्र में अधिकार, भांत भांत करी ।

पाले श्रावक आचार, पडिमा इग्यारह का धार।
गुणवंता नर नार, ही थें हरस धरो।
कई रिद्ध सिद्ध तपस्या से लब्धी पाया । ३ ।

जो भावे भावना चित्त, मन शुद्ध लाई ।
भावां से सिद्धी होवे, वस्तु के मांही ।

भावां से करणी करे तो, वो फल पावे ।
बिन भाव से करिया, कष्ट व्यर्था ही जावे ।।

दोहा:—भावे भरत महाराज, सारा आतम का काज ।
मरू देवी गज राज, चढ़ी मोक्ष गयी ।

ऐला पुत्र अणगार, प्रसनचन्द्र खेवा पार ।
भावा हुवा जै जैकार, अटल सुख लिया ।
हीरालाल कहे, ऐसी बात सुणो रे भाया ।।४।।

।। मुझ म्हेर करो चन्द्र प्रभु ।।

जय जय जगत सिरोमणी, हूं सेवक ने तूं धणी ।
अब तोसूं गाढी बणी, प्रभु आशा पूरो हम तणी ।।

मुझ म्हेर करो, चन्द्र प्रभु जग जीवन अन्तर्यामी ।।टेर।।
भव दुख हरो, सुणिये अरज हमारी हो त्रिभुवन स्वामी ।। १ ।।

"चन्द्रपुरी" नगरी हती, "महासेन" नामा नरपति ।
राणी "श्रीलखमा" सती, तस नन्दन तू चढ़तो रती ।। २ ।।

तूं सर्वज्ञ महाज्ञाता, आतम अनुभव को दाता ।
तो तूंठा लहिये साता, धन्य धन्य जग में तुम ध्याता ॥३॥

शिव सुख प्रार्थना करशूं, उज्जवल ध्यान हिये धरसूं ।
रसना तुम महिमा करसूं, प्रभु इन विध भवसागर तिरसूं ॥४॥

चन्द्र चकोरन के मन में, गाज आवाज होवे घन में ।
प्रिय अभिलाषा त्रियतन में, त्यूं वसियो मोरे चितवन में ॥५॥

जो सुनजर साहिव तेरी, तो मानो विनती मेरी ।
काटो करम भरम वेरी, प्रभु पुनरपि नहि परु भव फेरी ॥६॥

आतम-ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती लवलया लागी ।
अन्य देव भ्रमना भागी, "विनयचन्द" तिहारो अनुरागी ॥७॥

॥ मुनिराज सुनावे ॥

मुनिराज सुनावे, ओछी उमर में करणी कीजिये ।
सव छोड़ चलोगे, बोल भलाई लावो लीजिये ॥टेर॥

नर देह पाई करो भलाई, फिर अवसर नही आवे ।
पशु बराबर जानो उनको, नर-भव अफल गमावेजी ॥ मुनि १ ॥

जबर काम है मोह जाल को, खबर पड़े कछु नाय ।
इण कूं जीते सो सुख पावे, धर्म करो चित लायजी ॥ मुनि २ ॥

घर धंधा में पच रहयो सरे, मरणो जाणे नाय ।
वांधे सो ही भोगवे सरे, कर्म उदय जब आय जी ॥ मुनि ३ ॥

सतगुरु हेलो देवे लेलो, परभव खरची लार।
मनुष्य जन्म है मिलवो दुर्लभ, इन विध दिल में धार जी ।।मुनि४।।

कोई न थारो, तूं नहीं किणरो, कर रहयो मारो-मारो ।
आयो एकलो जासी एकलो, मन में करो विचार जी ।।मुनि५।।

जीणा थोड़ा जिनमें फोड़ा, दुःखड़ा को नहीं पार।
आयो मुट्ठी बांधने सजी, जासी हाथ पसार जी ।।मुनि६।।

चेत मास उगणीसे सतंतर, गढ़ जालोर मंजार।
संतोषचन्द्र महाराज प्रसादे, मोतीलाल सुखकार जी ।।मुनि७।।

।। मुसाफिर क्यों पड़ा सोया ।।

मुसाफिर क्यों पड़ा सोया, भरोसा है न इक पल का ।
दमादम बज रहा डंका, तमाशा है चलाचल का ।। टेर।।

सुबह जो तख्तशाही पर, बड़े सज घज के बैठे थे ।
दुपहरे वक्त में उनका, हुआ है वास जंगल का ।। मु० ।। १ ।।

कहां है राम और लक्ष्मण, कहां रावण से बलधारी ।
कहां हनुमान से योद्धा, पता जिनके न था वल का ।। मु० ।।

उन्हों को काल ने खाया, तुझे भी काल खायेगा ।
सफर सामान बढाना तूं, बना ले बोझ को हलका ।। मु० ।। ३ ।।

जरा सी जिन्दगी पर तूं, न इतना मान कर मूरख ।
यह जीवन चन्द दिन का है, कि जैसे वुदवुदा जल का ।।मु०।।४।।

सोहत मानले 'ज्योति', उमर पल में कम होती ।
जो करना आज ही करले, भरोसा कुछ न कर कलका ।।मु०।।५।।

।। मेरी क्या करेगा पालना ।।

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये)

ओ मगध देश के राजा, क्या मौत भी तेरे हाथ है ।
मेरी क्या करेगा पालना, तूं खुद ही हे राजन अनाथ है ।।टेर।।

माना कि तेरे हाथी है घोड़े, रंभा सी पटरानियां ।
लक्ष्मी का लाल है, राज्य विशाल है, वैभव में वीते जवानियां ।
पर एक सुनाऊं तुझे बात है,
जरा सुनना तूं ध्यान के साथ है ।। मेरी ।। १ ।।

धन का भण्डार था मेरे परिवार था, सेठ का लाल कहाता था,
भाइ वहन थे सब सुख चैन थे, पत्नि का प्यार भी पाता था ।
बीते आनन्द में, दिन रात हैं,
रहते मित्र भी हरदम साथ हैं ।। मेरी ।। २ ।।

एक दिवस हुई वेदना भारी, रोग ने आकर घेर लिया ।
भाग दौड़ मच गई, कतारें लग गई, वैद्यों ने आ उपचार किया ।
कोई अंग दबाते दिन रात हैं,
कोई देवों को जोड़ते हाथ हैं ।। मेरी ।। ३ ।।

धन भी धरा रहा, घर भी भरा रहा, मिटा सका नहीं रोग कोई ।
हाजर हजार थे, पर सब बेकार थे, दूर खड़ा रहा आया जोई ।

हुई चला चली की अब बात है,
छोड़ी आशा सभी ने एक साथ है ।। मेरी ।। ४ ।।

इतने ही में एक भावना जागी, प्रभु को मैंने याद किया,
रोग को निवारदे बिगड़ी को संवारदे, साथ में प्रण भी यह धार लिया ।
सब छोड़ूंगा जग का साथ है,
अब तूं ही प्रभु मम नाथ है ।। मेरी ।। ५ ।।

बिजली सी चमकी, रोग पै दमकी, वेदना सारी भाग गई ।
उसी क्षण छोड़ा, जगनेह तोड़ा, आत्मा मेरी जाग गई ।
जरा समझ भेद भरी बात हैं,
बोल कौन अनाथ सनाथ है ।। मेरी ।। ६ ।।

ज्ञान ज्योति जागी श्रेणिक सौभागी, समकित व्रत आराधलिया,
जीवों की दया धर, धर्म दलाली कर, गोत्र तीर्थंकर बांध लिया ।
मिले अनाथों जैसे गुरुनाथ हैं,
"जीत" जागना तेरे हाथ हैं ।। मेरी ।। ७ ।।

।। मेरे भैया की कहानी सुना दो मुझे ।।

(तर्ज : प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही)

मेरे भैया की कहानी, सुनादो मुझे ।
कर जोड़ कहूँ जिनराज तुझे ।। टेर ।।

सुन्दर सुकोमल सुज्ञ मेरा, प्राण प्यारा था वही ।
इस जीव के वह जीव था, इस प्राण के प्यारा वही ।
प्रभु उनका तो, जिक्र सुनादो मुझे ।। १ ।।

उस दुष्ट ने मुनिराज का, वहो खून प्रभुजी क्यों किया।
अपराध विन पापिष्ट ने, प्राण मुनि का हर लिया॥
उनका कुछ तो इशारा, वतादो मुझे॥ २॥

दिल हमारा ना लगे, प्रभु अर्ज यह सुन लीजिये।
कर कृपा उस दुष्ट का, अव नाम जाहिर कीजिये॥
स्वामी जरा इशारा, जतादो मुझे॥ ३॥

(भगवान् नेमीनाथ का ऊत्तर)

प्रभु फरमावे रे, श्रीकृष्णचन्द्र का भरम मिटावे रे।
द्वारामती को वासी राजा, है अवगुण को दरियो रे।
नीच नीच से नहीं करे कृत्य, जैसो करियो रे॥ १॥

यहां से तू घर जासी केशव, मारग में मिल जासी रे।
देख तुझे नीचे गिर जासी, वहीं मर जासी रे।
उसे जानजे अरि हमारा, ऐसी प्रभु प्रकाशी र॥ २॥

॥ मेरे गुरूवर जी ॥

मैंने लीना धार, मेरे गुरुवर जी।
हां मेरे प्राण आधार, मेरे गुरुवर जी॥ टेर॥

पांच महाव्रत पालन करते, पांच समिति धारण करते।
श्वेत वस्त्र के धार, मेरे गुरुवर जी........॥ १॥

मुख पर जो मुहपत्ति बांधे, खुले मुख से कभी न बोले ।
बोले बोल विचार, मेरे गुरुवर जी........॥ २ ॥

नीचे देखी दिन में चाले, पूंज पूंजकर रात में चाले ।
करे न रात विहार-मेरे गुरुवर जी........॥ ३ ॥

अपना बोझा, आप उठावे, गृहस्थों से नहीं काम करावे ।
पाले दृढ़ आचार-मेरे गुरुवर जी........॥ ४ ॥

साधु निमित किया नहीं लेते, धोवण पानी लेते रहते ।
लेते शुद्ध आहार - मेरे गुरुवर जी........॥ ५ ॥

जड़ पूजा को कभी न मानो, गुण पूजा को उत्तम जानो ।
कहते बात विचार - मेरे गुरुवर जी........॥ ६ ॥

नहीं किसी की हिंसा करना, प्राणि मात्र की रक्षा करना ।
शिक्षा दे हितकार - मेरे गुरुवर जी........॥ ७ ॥

छ:कायों की रक्षा करते, 'दयापालो' हरदम कहते ।
सच्चे श्री अणगार मेरे गुरुवर जी........॥

॥ मेरे अन्तर भया प्रकाश ॥

(तर्ज - दोरो जैन धर्म को मारग............)

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश ॥ टेर ॥

काल अनन्त रुला भव वन में, बंधा मोह की पाश ।
काम, क्रोध, मद, लोभ भाव से, बना जगत का दास ॥मेरे॥१॥

तन धन परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश ।
पुद्गल को अपना कर मैंने, किया स्वत्व का नाश ।।मेरे।।२।।

रोग शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास ।
सदा शान्तिमय मैं हूं मेरा, अचल रूप है खास ।।मेरे।।३।।

इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास ।
अस्थि-मांस मय अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास ।।मेरे।।४।।

मता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास ।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश ।।मेरे।।५।।

मोह मिथ्यात्व की गांठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश ।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश ।।मेरे।।६।।

।। मैं हूँ उस नगरी का भूप ।।

(तर्ज—दोरो जैन धर्म को मारग..........)

मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहां नहीं होती छाया धूप ।। टेर ।।

तारामंडल की न गति है, जहां न पहुँचे सूर ।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप ।। मैं ।।१।।

मैं नहीं श्याम गौर तन भी हूँ, मैं न सुरूप कुरूप ।
नहिं लम्बा, बौना भी मै हूँ, मेरा अविचल रूप ।। मैं ।।२।।

अस्थि मांस मज्जा नहीं मेरे, मै नहिं धातु रूप ।
हाथ, पैर, शिर आदि अंग में, मेरा नहीं स्वरूप ॥ मैं ॥३॥

दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप ।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप ॥ मैं ॥४॥

श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप ।
निराबाध सुख में झूलूं मैं, सद् चित् आनन्द रूप ॥ मैं ॥५॥

शक्ति का भण्डार भरा है, अमल अचल मम रूप ।
मेरी शक्ति के सन्मुख नहीं, देख सके अरि भूप ॥ मैं ॥६॥

मैं न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप ।
'गजेन्द्र' निज पद को पहचाने, सो भूपों का भूप ॥ मैं ॥७॥

॥ मैं तो उन्हीं संतों का हूं दास ॥

मैं तो उन्हीं सन्तों का हूं दास, जिन्होंने मन मार लिया ॥ टेर ॥

मन मारा और तन बस कीना, भ्रम किये सब दूर ।
बाहिर से वो दीसे नाहीं, भीतर से चमके थारे नूर ॥ १ ॥

काम क्रोध मद लोभ तजी ने, मेटी जग की त्रास ।
बलिहारी उन संतन की जो, प्रकट भये पर काज ॥ २ ॥

आपा मार जगत में बैठे, नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं, साधु कहो चाहे राम ॥ ३ ॥

रुखा सूखा भोजन खावे, षट रस व्यन्जन त्याग ।
नव वाड़ से ब्रह्मचर्य पाले, सांई कहे वैराग ॥ ४ ॥

स्यादवाद वाणी वरसावे, नहीं झगड़े का काम ।
तीर्थंकर के मार्ग चाले, साधु कहो वीतराग ॥ ५ ॥

आध्यात्मिक है जीवन जिनको, आत्म शुद्धि का ज्ञान ।
प्रपन्चों से दूर रहे रे, निशदिन ध्यावे शुभ ध्यान ॥ ६ ॥

पंच महाव्रत पाले स्वामी, समदृष्टि गुणवान ।
ऐसे गुरू के दर्शन 'माधव', पाये पद निर्वाण ॥ ७ ॥

॥ मैंने बहुत किये अपराध ॥

मैंने बहुत किये अपराध, नाथ मोहे कैसे तारोगे ।
कैसे तारोगे जिनन्द मोहे कैसे तारोगे ॥ मैंने ॥ टेर ॥

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन ।
सुमति पदम सुपास ।
चन्दा प्रभु जी ने सुविधि जिनेश्वर ।
शीतल दो शिववास ॥ मैंने ॥ १ ॥

श्री श्रेयांस वासु पुज्य शिवरूं।
विमल विमल मति वन्त।
अनन्त नाथ जी ने धर्म जिनेश्वर।
शान्ति करो श्री सन्त॥ मैंने ॥ २ ॥

कुंथु नाथ प्रभु करुणा के सागर।
अरनाथ जगदीश।
मल्लि नाथ जी ने मुनि सुव्रत जी।
नित्य नमाऊं शीश॥ मैंने ॥ ३ ॥

इकवीसवां नमिनाथ निरूपम।
रिष्ट नेमी जगधार।
तोरण से प्रभु पाछा फिरिया।
शिव रमणी भरतार॥ मैंने ॥ ४ ॥

पारस पारस सरिखा प्रभुजी।
नावारिस के नाथ।
वर्धमान शासन के स्वामी।
प्रणमूं जोड़ी हाथ॥ मैंने ॥ ५ ॥

तुम बिन पायो दुःख अनन्तो।
जनम मरण जंजाल।
त्रिलोक ऋषि कहे जिम तिम करी ने।
तारो दीन दयाल॥ मैंने ॥ ६ ॥

।। मोहे धर्म का रंग लगादे कोई ।।

मोहे धर्म का रंग लगादे कोई....।। टेर ।।

भव भव मांहि भटकत आया, नरभव सफल वनादे कोई ।। १ ।।

प्यासा पड़ा हूं कई भवों का, ज्ञान की घूंट पिलादे कोई ।। २ ।।

कैदी वना हूं कर्म कैद का, झटपट आके छुड़ादे कोई ।। ३ ।।

आतम ज्ञान को भूला हुआ हूँ, आतमा का भान करादे कोई ।। ४ ।।

अवगुण मेरे सारे मिटाकर, मिश्री सा मिठा वनादे कोई ।। ५ ।।

।। यदि भला किसी का कर न सको ।।

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

यदि भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना ।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना ।। ध्रुव ।।

यदि सत्य मधुर न बोल सको तो, झूठ कठिन भी मत बोलो ।
यदि मौन रखो सब से अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो ।
वोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना ।।१।।

यदि घर न किसी का बांध सको, तो झोंपड़ियां न जला देना ।
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो, नमक भी तो न लगा देना ।
यदि दीपक वन कर जल न सको तो, अंधकार भी मत वनना ।।२।।

यदि साधु व्रत नहीं ले सकते तो, श्रावक व्रत तो ले लेना ।
त्याग-वैराग्य में रत बन के, अव्रत का अघ तो धो देना ।
जगत मोहिनी अहि सम भीषण, इससे नित डरते रहना ।। ३ ।।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, कांटे बनकर न बिखर जाना ।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुखाना ना ।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बन कर भी मत मरना ।।४।

'मुनि पुष्प' अगर भगवान् नहीं तो, कम से कम इन्सान बनो ।
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो ।
यदि सदाचार अपना न सको तो, पापों में पग मत धरना ।।५।।

।। यहां के महल और मन्दिर ।।

यहां के महल और मन्दिर, न बिस्तर काम आयेंगे ।
ए मिस्टर ये मदर तेरी, न फादर काम आयेंगे ।। १ ।।

नहीं वहां काम आयेंगे, तेरे बंगले ये फुलवारी ।
नहीं वहां हीरा और मोती, जवाहिर काम आयेंगें ।। २ ।।

हजारों दोस्त हैं तो क्या, यहीं तक की मोहब्बत है ।
मिनिस्टर सारे भारत के, तेरे नहीं काम आयेंगे ।। ३ ।।

वहाँ पर लोक में नहीं काम, आते जज बैरिस्टर ।
कजा के सामने देखो, न लीडर काम आयेंगें ।। ४ ।।

आपको जानते सब हैं, मुलाकातें बहुत गहरी ।
सुपारस के वहां लेटर न, उनके काम आयेंगे ।। ५ ।।

सवारी वैठने की भी, वहां कुछ और ही होगी।
जहाजें रेल या साईकल, न मोटर काम आयेगी ॥ ६ ॥

॥ यदि आत्मोन्नति अभिलाषा हो तो ॥

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

यदि आत्मोन्नति अभिलाषा हो तो, सामायिक आराधन हो ॥ टेर ॥
यदि देह वढ़े, परिवार वढ़े, धन्य धान्य वढ़े, सुख भोग वढ़े।
इन से संसारोन्नति होती पर, आत्मा का उत्थान न हो ॥ १ ॥

संसार स्वर्ग सा देख चुके, साक्षात् स्वर्ग भी भोग चुके।
अब अमर मोक्ष सुख पाना हो तो, धर्म प्रति आकर्षण हो ॥ २ ॥

सब लोक में धर्म ही ऐसा है, जो आत्मोन्नति कर सकता।
यदि साधु धर्म सामर्थ्य नहीं तो, गृहस्थ धर्म अनुपालन हो ॥ ३ ॥

श्रावक के कुल बारह व्रत हैं, जिसमें सामायिक नववां है।
यदि पूरे वारह वन न सके तो, नववां व्रत ही धारण हो ॥ ४ ॥

हिंसा असत्य चोरी मैथुन, और परिग्रह ये दुर्गति कारण।
यदि जीवन भर छोड़ न पाओ तो, एक मुहूर्त निवारण हो ॥ ५ ॥

हिंसादिक पाप अठारह हैं, सावद्य योग कहलाते हैं।
सावद्य योग तज सवर धर, शुभ योगों का संचालन हो। ६ ॥

पाप न करना न कराना है, मन वचन काया शुद्ध रखना है।
जो करें, न उनका वचनों से या, [काया से अनुमोदन हो ॥ ७ ॥

प्रातःसंध्या सामायिक हो, व्याख्यान में भी सामायिक हो ।
कम से कम एक मुहूर्त समय का, नियम सदा ही धारण हो ॥८॥

सद् ज्ञान बढ़े श्रद्धान बढ़े, चारित्र बढ़े तप वीर्य बढ़े ।
स्वाध्याय प्रमुख तब ऐसी करो,जिससे सामायिक पावन हो ॥९॥

सामायिक सबका भय हरती, सबके प्रति अनुकम्पा भरती ।
उनतीस शेष घड़ियों में भी, अति तीव्र भाव से पाप न हो ॥१०॥

वे धन्य धन्य मुनि महासति हैं, जो याज्वजीवन दीक्षित हैं ।
यदि आजीवन दीक्षा न बने तो, एक घड़ी साधु पन हो ॥११॥

केवल कहते 'पारस' सुनरे, सब में सामायिक रस भर रे ।
जिससे सब गुण को रक्षक इस, सामायिक का संरक्षण हो ॥१२॥

॥ यह मीठा प्रेम का प्याला ॥

(तर्ज—पंजाबी हूण नाम जपन दो बेला)

यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला ।
यह सतसंग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला ॥ टेर ॥

प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला ।
प्रेम की फेरो माला, कोई फेरगा किस्मत वाला ॥ १ ॥

प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते, मनके कष्ट कभी नहीं टलते ।
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला ॥ २ ॥

प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म मरण का दुःख मिटावे ।
कटे कर्म जंजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला ॥ ३ ॥

प्रेमी सबके कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ावे ।
प्रेम में हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला ॥ ४ ॥

मुक्ति का सुख प्रेमी पावे, नर्कों में हरगिज नहीं जावे ।
प्रेम का भोजन आला, कोई करेगा किस्मत वाला ॥ ५ ॥

गुरु श्री पृथ्वीचन्दजी हमारे, अमृत प्रेम पिलाने वाले ।
प्रेम का पंथ निराला, कोई चलेगा किस्मत वाला ॥ ६ ॥

॥ ये कहानी महावीर भगवान की ॥

सारे जग में जगाई ज्योति ज्ञान की,
ये कहानी महावीर भगवान की ॥ टेर ॥

चैत सुदी तेरस आई, क्षत्रिय कुल में खुशियां छाई,
वहां जन्म लिया रे प्रभु वीर ने ॥ ये कहानी० ॥ १ ॥

सिद्धार्थ के दुलारे, माता त्रिशला के प्यारे ।
वर्द्धमान धराके वीर नाम का ॥ २ ॥

देव देवियां सब आई, मेरु शिखर पे जाई ।
करी नवन पूजा रे भगवान की ॥ ३ ॥

फिर ऐसी घड़ी आई, मन से ममता भुलाई ।
वे तो तोड़ दिया रे मोहा जाल को ॥ ४ ॥

सोये जग को जगाने, हिंसा पाप को मिटाने।
वे तो छोड़ दिया रे घर बार को ॥ ५ ॥

वन वन में फिरे, दया भाव धरे।
इन्हें ज्योति तो जगानी धर्म ध्यान की ॥ ६ ॥

ग्वाल बाल तंग कर, खीले ठोके कानों पर।
इन्हें खूब सताया जी जान से ॥ ७ ॥

सर्प चण्ड कोशिया ने, डस लिया आ जोश में।
पाया पाया रे अमृत, धैर्यवान से ॥ ८ ॥

सुनी चन्दना पुकार, किया आपने उद्धार।
उनपे कृपा तो भई रे, भगवान की ॥ ९ ॥

जग में पाप छाया घोर, हिंसा छाई चारों ओर।
यज्ञ वेदीका ढोंग रचा रहा ॥ १० ॥

भूले धर्म की वाणी, हो रही थी मन मानी।
बलिवेदी पर पशु काटे जा रहे ॥ ११ ॥

ऐसे समय को जान, दया करी प्रभु मान।
वे तो प्रथा रे हटाई, बलिदान की ॥ १२ ॥

बारह वर्ष घूम घूम, घोर तप किया खूब।
सारे कर्म खपाये, प्रभु वीर ने ॥ १३ ॥

था बैसाख का महिना, दिन सुद दसमी का।
केवल ज्ञान पायारे वर्द्धमान ने ॥ १४ ॥

देव दुंदुभी बजी, सब के मन में खुशी ।
तीन लोक की प्रभु ने पहिचान की ॥ १५ ॥

अन्त आया जान कर, गौतम गणधर से कह कर ।
प्रतिबोध करायो, महावीर ने ॥ १६ ॥

था कार्तिक महीना, दिन अमावसिया का ।
निर्वाण पायो रे प्रभु वीरने ॥ १७ ॥

॥ ये पर्व पर्यूषण आया ॥

(तर्ज—वीरा रमक झमक हुई आइजो)

ये पर्व पर्यूषण आया, सब जग में आनन्द छाया रे ॥ टेर ॥

यह विषय कषाय घटाने, यह आतम गुण विकसाने ।
जिनवाणी का बल लाया रे ॥ ये पर्व ॥ १ ॥

ये जीव रूले चहुँ गति में, ये पाप करण की रति में ।
निज गुण सम्पद को खोया रे ॥ ये पर्व ॥ २ ॥

तुम छोड़ प्रमाद मनाओ, नित धर्म ध्यान रम जाओ ।
लो भव भव दुःख मिटाया रे ॥ ये पर्व० ॥ ३ ॥

तप—जप से कर्म खपाओ, दे दान द्रव्य—फल पायो ।
ममता त्यागी सुख पाओ रे ॥ ये पर्व० ॥ ४ ॥

मूरख नर जन्म गमावे, निन्दा विकथा मन भावे ।
इनसे ही गोता खावे रे ॥ ये पर्व० ॥ ५ ॥

जो दान शील आराधे, तप द्वादश भेदे साधे।
शुद्ध मन जीवन सरसाया रे ।। ये पर्व० ।। ६ ।।

वेला तेला और अठायां, संवर पोषध करो भाया।
शुद्ध पालो शील सवाया रे ।। ये पर्व० ।। ७ ।।

तुम विषय कपट घटाओ, मन मलिन भाव मत लाओ।
निन्दा विकथा तज माया रे ।। ये पर्व० ।। ८ ।।

केई आलस में दिन खोवे, शतरंज तास या सोवे।
पिक्चर में समय गमावे रे ।। ये पर्व० ।। ९ ।।

संयम की शिक्षा लेना, जीवों की जयणा करना।
जो जैन धर्म थें पाया रे ।। ये पर्व० ।।१०।।

जन–जन का मन हरषाया, बालकगण भी हुलसाया।
आतम शुद्धि हित आया रे ।। ये पर्व० ।।११।।

समता से मन को जोड़ो, ममता का बन्धन तोड़ो।
है सार ज्ञान का पाया रे ।। ये पर्व० ।।१२।।

सुरपति भी स्वर्ग से आवे, हर्षित हो जिन गुण गावे।
जन जन को अभय दिलाया रे ।। ये पर्व० ।।१३।।

'गजमुनि' निजमन समझावे, यह सोई शक्ति जगावे।
अनुभव रस पान कराया रे ।। ये पर्व० ।।१४।।

।। रे चेतन पोते तूं पापी ।।

रे चेतन पोते तूं पापी, परना छिद्र चितारे तूं ।
निर्मल होय कर्म करदम सु, निज गुण अंबु नितारे तूं ।। टेर ।।

सम्यग् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तूं ।
नर्क निगोद थकी किम छूटे, अंतर शल न निवारे तूं ।। १ ।।

परमेश्वर साखी घट घट को, जांकी शरम न धारे तूं ।
कुम्भी पाप नरक में पड़सी, जो पर हियों न ठारे तूं ।। २ ।।

जिम तिम करने शोभा अपनी, या जग मांहि दिखावे तूं ।
प्रकट कहाय धर्म को धोरी, अन्तर भरयो विकारे तूं ।।३।।

पर निन्दा अघ पिंड भरीजे, आगम साख संभारे तूं ।
विनयचन्द कर आतम निंदा, भव भव दुष्कृत टाले तूं ।। ४ ।।

।। रे जीवा जिन धर्म कीजिये ।।

रे जीवा जिन धर्म कीजिये, धर्म है चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, यह जग में तंत सार । रे जीवा ।। १ ।।

वर्ष दिवस रे पारणे, आदेश्वरजी ने आहार ।
इखु रस प्रतिलाभियो, श्री श्रेयांस कुमार । रे जीवा ।। २ ।।

गज भव सुसलो राखियो, कीधी करुणा अपार ।
श्रेणिक नृप घर अवतारियो, अंगज मेघ कुमार । रे जीवा ।। ३ ।।

चम्पा पोल उगाड़िया, चालणी काढ्यो नीर ।
सती सुभद्रा यश लियो, ते तो शियल सुधीर । रे जीवा ॥ ४ ॥

तप करि काया सोसवी, अरस नीरस ले आहार ।
वीर जिनंद वखाणियाँ, धन धन्नो अणगार । रे जीवा ॥ ५ ॥

अनित्य भावना भावतां, धरता निर्मल ध्यान ।
भरत आरीसा रा भवन में, उपज्यो केवल ज्ञान । रे जीवा ॥६॥

यो धर्म सुर तरू समो, यह छे निश्चल छाय ।
समय सुन्द कहे सेवता, मोक्ष तणा फल पाय । रे जीवा ॥७॥

॥ रे माता क्षण लाखिणो रे जाय ॥

सुग्रीव नगर सुहावणो जी, राजा बलभद्र नाम ।
तस घर रानी मृगावती, तस नन्दन गुणधाम ।
रे माता क्षण, लाखिणि रे जाय ॥ १ ॥

एक दिन वेठा गोखड़े जी, राणियां रे परिवार पाय ।
शीश दांजे रवि तपे जी, दीठा तब अणगार ॥ २ ॥

मुनि देखी भव संचर्यो जी, मन वसियो रे वैराग ।
हर्ष धरी ने उठिया जी, लाग्या माताजी पाय रे ।
माता मांरी सांभलो, जननी लेमूं संयम भार ॥ ३ ॥

तूं सुख माल सुहामनो जी, भोगो संसार ना भोग ।
यौवन वय पाछी पड़े जद, आदरजो तुम जोग ।
रे जाया तुम बिन घड़ी रे छ मास ॥ ४ ॥

पाव पलक री खबर नहीं ए माता, करे काल की जी बात ।
काल अचानक आवसो जी माता, ज्यों तीतर पर बाज ।।माता५।।

रतन जड़त घर आंगनो जाया, सुन्दर अबला जी नार ।
मोटा कुल नी उपनो जी, किम छोड़ो निराधार ।।रे जाया६।।

बाजीगर बाजी रचे माता, खिण में खेरू जी थाय ।
ज्यूं संसार नी सम्पदा जी, देखतड़ा विरलाय ।।माता।।७।।

लग पथरणे पोढणो जी, तू भोगी रे रसाल ।
कनक कचोले जीमतो जी, कांचलड्यो में आहार ।।रे जाया८।।

सायर जल पीधा घणा जी, चूंग्या माता रा थान ।
तिरपत नहीं हुओ जीवड़ो जी, अधिक अरोग्या धान ।।माता९।।

चरित्र छे जाया दोहिलो जी, चरित्र खांडा की रे धार ।
बाईस परिषद दोहला जी, ओखद नहीं है लगार ।।रे जाया१०।।
चरित्र छे माता सोहिलो जी, चारित्र सुख की रे खान ।
चौदहई राज लोकना जी, फेरा टालन हार ।। माता११।।

सियाले सी लागसी जी, उनाले लू रे वाय ।
चौमासे मेला कापड़ा जी,ए दुःख सह्या किम जाय ।।रे जाया१२।।

वन में छे माता मृगलो जी, कुण करे उणरीजी सार ।
मृगला की परे विचरसु माता, एकलड़ो अणगार ।।माता१३।।

मात वचन ले निसर्या जी, मृगा पुत्र कुमार ।
पंच महाव्रत आदरया जी, लियो संजम भार ।।१४।।

एक मास की संहेलणाजी, ऊपनो केवल ज्ञान ।
तम खपाय मुक्ति गया, ज्या को नित्य प्रति लीजे नाम ॥रे१५॥

॥ रे अवधू निरपक्ष विरला कोई ॥

रे अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ रे.अ. ॥
समरस भाव भला चित्त ज्यांके, थाप उथापन होई ।
अविनासी के घर की बाता, जानेंगे नर सोई । रे अ १ ॥

निन्दा स्तुति श्रवण करीने, हर्ष शोक नहीं आणे ।
ते जग में जोगीसर पूरा, नित चढ़ते गुण ठाणे । रे अ २ ।

राव रंक में भेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे ।
नारी नागिण को नहीं परिचय, तो शिव मन्दिर देखे । रे अ ३ ।

चन्द्र समान सोम्यता ज्यां की, सायर जेम गम्भीरा ।
अप्रमते भारंड परे नित्य सुरगीरी सम सुचि धीरा । रे अ ४ ।

पकंज नाम घराय पंक से, रहत कमल जिम न्यारा ।
चिदानन्द इस्या जन उत्तम, सो साहिब का प्यारा । रे अवधू ।५।

॥ लाखों को पार लगाया है ॥

लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ।
पतितों को पकड़ उठाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने । टेर ।

लो मुक्ति अर्जुन पाता है, परदेशी भी तिर जाता है ।
पापों से उन्हें छुड़ाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥१॥

अधमों का भी उद्धार किया, भव भव का बँधन काट दिया ।
सिंहों को शांत बनाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने । लाखों ॥२॥

बन गये कई राजा साधु, संसार का वैभव ठुकरा कर ।
निर्वेद का पाठ पढ़ाया हैं, भगवान तुम्हारी वाणी ने । लाखों ॥३॥

'केवल मुनि' ज्ञान के दीप जगे, अज्ञान अन्धेरा बीत गया ।
मोह का पर्दा खिसकाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने । लाखों । ४॥

॥ लाखों व्यसनी मर गये ॥

लाखों व्यसनी मर गये, इस व्यसन के परसंग से ।
अय अजीजों बाज आओ, व्यसन के परसंग से ॥ टेर ॥

प्रथम जुवां है बुरा, इज्जत व धन रहता कहां ।
महाराज नल वन को गये, इस व्यसन के परसंग से ॥ १ ॥

मांस भक्षण जो करे, उसके दया रहती नहीं ।
मनु स्मृति में लिखा, कुव्यसन के परसंग से ॥ २ ॥

शराब यह खराब है, इन्सान को पागल करे ।
यादवों का क्या हुआ, इस व्यसन के परसंग से ॥ ३ ॥

रण्डी बाजी है मना, तुम से सुता उनके हुवे ।
दामाद की गिनती करे, कुव्यसन के परसंग से ॥ ४ ॥

जी सताना नहीं रवा, क्यों कत्ल कर कातिल बनें ।
दोजख का मिजमान हो, कुव्यसन के परसंग से ॥ ५ ॥

माल जो पर का चुरावे, यहां भी हाकिम दे सजा।
आराम वह पाता नहीं, इस व्यसन के परसंग से ॥ ६ ॥

मोहब्बत बुरी पर नार की, दिल में जरा तो गौर कर।
कुछ नफा मिलता नहीं, इस व्यसन के परसंग से ॥ ७ ॥

गांजा, चरस, चन्डू, अफीम और भांग तम्बाखू छोड़ दो।
'चौथमल' कहे नहीं भला, इस व्यसन के परसंग से ॥ ८ ॥

॥ ले संग खरची रे ॥

ले संग खरची रे, परभव की खरची, लीधाँ सरसी रे ॥ टेर ॥

कूड़ कपट से धन्धों करने, माल तिजोरी भगसी रे।
सुन्दर महल मालिया छोड़ो, जाणो पड़सी रे ॥ले संग ॥१॥

आगे धन्धो पाछे धन्धो, धन्धो कर कर मरसी रे।
धर्म बिना पर भव में आगे, फोड़ा पड़सी रे ॥ ले सँग ॥२॥

चार कोस ग्रामान्तर खातिर, खरची लेय निकलसी रे।
नया शहर है दूर नहीं मनिआडर मिलसी रे ॥ ले संग ॥३॥

योवन की थने छांक चढ़ी, बूढ़ापा आय उतरसी रे।
इस तन की तो होसी खाक, कहां तक तूं निरखसी रे ॥ले संग॥४॥

घर की नारी हांडी फोड़ने, पाछी घर में भड़सी रे।
जला मसाणा मांय थने, फिर कुटुम्ब बिछड़सी रे ॥ ले संग ॥५॥

लख चौरासी घाटी करड़ी, कैसे पार उतरसी रे।
रति सीख नहीं लागे थारी, छाती वजर सी रे ॥ ले संग ॥६॥

साल गुण्यासी हातोद गांव में जिनवाणी है वरसी रे।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, धरम सूं तिरसी रे।। ले संग ।।७।।

।। लोभ उलटी जे रे ।।

ललोभ उलटी जे रे २ जब भलो होय, कहुं सो सुन लीजे रे।
दो माशा सुवरण से अधिको, कम्पिल लोभ वढ़ायो रे।
लोभ थकी मन फिरियो जभी, केवल पद पायो रे।। १ ।।

जिनरख ने जिनपाल दोऊ, मिलके दीप सिधाया रे।
जहाज फटी समुद्र में जिनरिख, प्राण गमाया रे।। २ ।।

लोभ अपार कहयो जिनवर ज्यूं, गगन को अन्त न आवे रे।
धन्य मुनि जो लोभ त्याग, जग में जश पावे रे।। ३ ।।

कोई लोभ वश अकृत्य कर कर, मन मांही सुख पावे रे।
लोभ पाप को बाप साफ यों, सब जग गावे रे।। ४ ।।

क्रोध मान और माया लोभ, इन चारों का संग छोड़े रे।
वीतरागी हो कर्म वन्ध को, तांतो तोड़े रे।। ५ ।।

मेरे गुरु नन्दलाल कहे, सन्तोष सदा सुख दायी रे।
चातुर्मास अजमेर कियो, सित्तर दस मांही रे।। ६ ।।

।। वरदान मांगता हूं ।।

वरदान मांगता हूं, आगे मुझे वढ़ा दो।
शिव शिखर पे चढ़ा दो।। टेर ।।

अनुश्रोत की लहर में, दिन रात बह रहा हूँ ।
दे दिव्य दृष्टि भगवान्, प्रति श्रोत में लगा दो ॥ १ ॥

जिस तिमिर में निरन्तर, गुमराह हो रहा हूँ ।
आलोक भर हृदय में, रास्ता मुझे दिखा दो ॥ २ ॥

दिल में भरा गरल जो, उस को निकाल फेंकू ।
ओ धम देव ऐसा, अमृत मुझे पिला दो ॥ ३ ॥

जिस देह दुःख को लख कर, संसार कांपता है ।
उस को मैं सुख समझलू, ऐसी कला सिखा दो ॥ ४ ॥

अनुभव हृदय की वाणी, मैं और कुछ न चाहूँ ।
अपने स्वरूप में ही, तनमय मुझे बना दो ॥ ५ ॥

॥ वाट घणी दिन थोड़ो ॥

वाट घणी दिन थोड़ो, वटाऊ वीरा वाट घणी दिन थोड़ो ।
घर रयो दूर सूरज घर हाल्यो, दौड़ सके तो दोड़ो ॥ १ ॥
निरभे होय नगर जा पोच्या, अध बीच पड़सी थने फोड़ो ॥ २ ॥
होय हुसियार हिम्मत मत हारो, हाक धणे रो घोड़ो ॥ ३ ॥
'ओगड़' कहे रे गुरां के सरणे, मारग लख्यो मोड़ो ॥ ४ ॥

॥ विवेकी आत्मा रे ॥

विवेकी आत्मा रे, रे अरे तू अब तो निर्मल हो जा ।
गुरु सेवा की गंगा इन में, पाप मैल को धोजा ।
भारी हो रहा बहुत दिनों से, हलका करले बोजा ॥ १ ॥

ज्ञान रुप दर्पण के अन्दर, नित आतम को घोजा ।
वार वार सत गुरु समझावे, एव दोष सब खो जा ॥२॥

मुक्ति का मेवा चखे तो, ममता दही विलो जा ।
जो अब मौका चूक गया तो, खुले नर्क में रो जा ॥३॥

अमृत फल की इच्छा होय तो, बीज धर्म का बो जा ।
कर नेकी का काम वदी से, अब तो दूर चला जा ॥४॥

सत्य धर्म की सेज बिछी है, सोना हो तो सोजा ।
कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य, मिले मोक्ष की मोजां ॥५॥

॥ विजय कुमरनो चौढालियो ॥

आदिनाथ आदिश्वरो, सकल विदारण कर्म ।
उपकारी भवि तारवा, कह्यो चार प्रकारे धर्म ॥ १ ॥

दान शील तप भावना, इन विन मुक्ति न होय ।
तो पिण सब व्रत देखतां, शील समो नहीं कोय ॥ २ ॥

शील भागां भागा सबै, इम कहै श्री जगचन्द ।
शीलवन्त जे पुरुष ने, सेवे सुर नर वृन्द ॥ ३ ॥

यश कीर्ति फैले इला, जे ब्रह्म व्रत में लीन ।
जो सुख चावो जीवने, तो पालो शुद्ध मन शील ॥ ४ ॥

विजय कुमार विजयावली, शील पाल्यो खगधार ।
तेहतणा गुण वर्णवूं, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥

निसुणी करो सारी सभा, परनारी पचखांण।
पंचपर्व दिन आंखडी, करो यथा शक्ति प्रमांण ।। ६ ।।

यौवन वय छति योग में, नारि रहे जिण पास।
ब्रह्मचारी त्रिहुं योग सूं दुक्कर दुक्कर परकाश ।। ७ ।।

।। ढाल ।।

(तर्ज :—मेड़तिया भंवरजी रो करहलो ।। ए देशी ।।)

जम्बूद्वीपना भरत में, दक्षिण कच्छ देशो जी।
नगर कौशम्बी तेह में, अमरापुरी कहे सोहो जो।
शील तणी महिमा सुणो ।। १ ।।

धन्नाश्रो सेठ तिहां वसे, तिणरे विजय कुमारोजी।
रूप कला गुण आगलो, यौवन वय हुसियारो जी ।। शी० ।। २ ।।

तिण अवसर मुनि पोगुरया, सुमति गुप्ति प्रति पन्नोजी।
आप तिरे पर तारता, लोक कहे धन्न धन्नोजी ।। शी० ।। ३ ।।

लोक आया मुनि वांदवा, तिमहीं विजय कुमारोजी।
धर्म कथा मुनिवर कहे, ए संसार असारोजी ।। शी० ।। ४ ।।

जनम जरा दुख मरणनो, कहतां नहीं आवे पारोजी।
नर भव पामतां दोहिली, चेतो सहू नर नारोजी ।। शी० ।। ५ ।।

उत्कृष्टो बन्ध कर्मनो, विषय बीच विचारोजी।
नव लाख सन्नी मनुष्यनो, श्री जिन कह्यो है संहारोजी ।।शी०।।६।।

दु:ख अनेक इण जोग सूं, पर नारी दुख खानोजी ।
फल किंपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवानो जी ।। शी० ।।७।।

इम सुणि ने सहू थरहर्या, विजयकुमर जोड़ो हाथोजी ।
हे मुनि संयम लेइवा, हूँ समरथ नहीं किरपानाथोजी ।। शी० ।।८।।

जावजीव परनारना, माने मुनि पचखांणोजी ।
स्वदारा पिण जाणजो, कृष्ण पक्षनां त्यागो जी ।। शी० ।।९।।

दुष्कर काम कुवर कीयो, मुनिवर, कीध विहारो जी ।
रामचन्द्र कहे धन्य शील ने, जो पाले नर नारोजी ।। शी० ।१०।।

॥ दोहा ।

तिण नगरी मांहै वसै, अपर सेठ धनसार ।
विजयाकुमरी जेहने, अद्भूत रूप उदार ।। १ ।।

सयणी चतुरा वहुलजा, चौसठ कला भण्डार ।
भर योवन आई तदा, शादी विजयकुमार ।। २ ।।

आरण कारण सहुकरी, कियो व्याव तिण वार ।
जेहवी विजया सुन्दरी तेहवो विजय कुमार ।। ३ ।।

॥ ढाल ॥

२-मेंदुलाना गीतनी देशी ।। तर्ज-मोटी जुग में मोहनी ।।

सौले शृंगार सजी भला, काँई आई हो रंगमहल मंझार ।
नयन वयन प्रिय मोहनी, आय उभी हो जिहां विजय कुमार ।
सुणजो जी शीयल सुहावणो ।। १ ।।

कंत कहे भल आविया, दिन तीन हो नहीं आंवण काज।
स्यूं कारण कहे सुन्दरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ।।सु०।।२।।

कृष्ण पक्ष व्रत मैं लियो, इम सुणने हो आ थई रे उदास।
शुक्ल पक्ष व्रत मैं कियो, दूजो परणी हो ।।
मांडो घर वास ।।सु०।।३।।

विजयकुंवर कहे हे प्रिया, सेजे ढुलियो हो अनरथ को मूल।
आवजीव व्रत पालसां, नर मूरख हो रह्या छै भूल ।।सु०।।४।।

कहै प्यारी प्रीतम सुणोजी, किम रहसी हो आ छांनी बात।
प्रगट हुवां संयम लेसां, कांई लड़सां हो करमां रे साथ ।।सु०।।५।।

काम भोग बहु भोगव्या, केई वार हो कोई अनंत विचार।
तोई तृप्त न हुवो जीवड़ो, कांई बोले हो इम विजय कुमार ।।सु०।।६।।

करे समाई पोसा भेला, कांई सोवे हो एक सेज मंझार।
जो हुए भगिनी भ्रात नी, शील पाले हो खांडेरी धार ।।सु०।।७।।

मन वचन काया करी, नहीं व्यापे, हो कदी काम विकार।
सार धर्म जाणे जिन तणों, कांई बीजो हो सहू अथिर संसार ।।सु०।।८।।

नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे, काँई लेखे हो जेहनो अवतार।
राम कहे ढाल दूसरो, धन्य पाले हो जे नर ब्रह्मचार ।।सु०।।९।।

।। दोहा ।।

धर्म ध्यान करतां थकां, द्वादश वर्षज थाय।
किम कर बात प्रगट हुवे, ते सुणजो चितलाय ।। १ ।।

लक्ष्मी भाग्य ने रागता, दाता सूर सुवास।
एतां छांनां किम रहे, विद्वत् कवि प्रकाश ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

(तर्ज—जल्हानी देशे हो)

तिण अवसर तिण काले, दक्षिण देशे हो।
सुखकारी मुनिराज, उपकारी मुनिराज ॥ ति० ॥ मुनिंद ॥
विमल केवली नामे, मुनि शुभ वेशे हो ॥ सु० वि० मु० ॥ १ ॥

चम्पापुरी ना बाग मांहे ऊतरीया हो ॥ सु० चं० मु० ॥
बहु नर नारी मुनि वन्दन परवरीया हो॰ सु० ब० मु० ॥ २ ॥

ओ संसार असार मुनि दिखलावे हो ॥ सु० ओ० मु० ॥
तन धन यौवन जातां वार न लागे हो ॥ सु० त० मु० ॥ ३ ॥

मात पिता सुत भामनी संग न आवे हो ॥ सु० मा० मु० ॥
सहू संग छोड़ी चेतन पर भव जावे हो ॥ सु० स० मु० ॥ ४ ॥

विषय विकार प्रमादें नर भव हारे हो ॥ सु० वि० मु० ॥
मूरख चेतन रतन अमोलक डारे हो ॥ सु० मू० मु० ॥ ५ ॥

इत्यादिक मुनि धर्म देशनां दीधी हो ॥ सु० इ० मु० ॥
श्रोता श्रवणे अमृत रस कर पीधी हो ॥ सु० श्री० मु० ॥ ६ ॥

जिनदास श्रावक विनये शीश नमाइ हो ॥ सु० जि० सु० ॥
हे प्रभुजी मुज रयनि सुपनो आयो हो ॥ सु० हे० मु० ॥ ७ ॥

सहस्त्र चौरासी मास खमण मुनिराया हो ।। सु० स० मु० ।।
मैं प्रतिलाम्या निर्दोषण प्रभु आज हो ।। सु० मैं० मु० ।। ८ ।।

तेहनो स्यु' फल दाखो किरपा करने हो ।। सु० ते० मु० ।।
भाखे मुनिवर सेठ सुणो चित्त धरने हो ।। सु० भा० मु० ।। ९ ।।

नगर कौशंबी विजय कुवर गुणधारी हो ।। सु० न० मु० ।।
त्रिकर्ण योगे दंपति बाल ब्रह्मचारी हो ।। सु० त्रि० मु० ।। १० ।।

'राम' कहें धन्य शील पाले नर नारी हो ।। सु० रा० मु० ।।
धन धन जे नर तेहनी हूं बलिहारी हो ।। सु० ध० मु० ।। ११ ।।

।। दोहा ।।

इक सेज्या सोवे बेहूं, शुद्ध पालैं ब्रह्मचार ।
द्वादश वर्ष ज नीकल्या, धन तेहनो अवतार ।। १ ।।

चर्म शरीरी महा उत्तम, किया ज्ञानी गुणग्राम ।
सुणने सहु विषमय थया, सहु को कियो प्रणाम ।। २ ।।

जिनदास मन में चिंतवे, जाय करूं दरसन्न ।
तुम मिलिया संयम लेंवसी, मुनिवर कियो प्रसंग ।। ३ ।।

।। ढाल ।।

जिनदास मुनिवर वांदवा हो भवियण, नगर कौशांबी जाय ।
बहु परिवारे परिवरया हो ।। भ० ।। दरसन की मनमांय ।
धन धन जेहनें हो भवियण जे पाले ब्रह्मचार ।। १ ।।

नगर कौशांबी ना बाग में हो ॥ भ ॥ सेठजी डेरो करेह ।
विजयकुमार ना तात सूं हो ॥ भ ॥ मिलिया हर्ष धरेह ॥ध॥२॥

स्युं कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुजने राज ।
धर्म सगपण आविया हो ॥से॥ तुज सुत दर्शन काज ॥ध.॥३॥

बिमल केवली गुण कीया हो ॥ से. ॥ बाल ब्रह्मचारी तेह ।
तुज दर्शन मन में लगी हो ॥ से. ॥ ज्युं चातक कूं मेह ॥ध.॥४॥

सेठ सुणी अचरज थयो हो । से. ॥ लियो कुवर बुलाय ।
किसो भांत सोगन कीधा हो लालजी, स्यूं थांरे मन मांय ॥ध.॥५॥

कुमर कहे कर जोड़ ने हो ॥ से. ॥ मैं लीयो अभिग्रह धार ।
आज्ञा दीजे मुण भणी हो ॥ से. ॥ लेस्यूं संमय भार ॥ध.॥६॥

तात कहे नन्दन सुणो हो, लालजी, कठिन मुनि आचार ।
कर अग्रे कहो किम रहे हो ॥ ला. ॥ मेरु जितरो भार ॥ध.॥७॥

लाख प्रकारे नहीं रहूं हो ॥ से. ॥ संयम सुख दातार ।
वैरागी कहो किम रहे हो, कुवरजी लीधो संयम भार । ध.॥८॥

विजया कुवरी पिण लियो हो, ॥ भ. ॥ पाले शुध आचार ।
जप तप खप किया करी हो ॥ भ. ॥ पाम्या केवल सार ॥ध.॥९॥

कर्म खपाय मुक्ति गयो हो ॥ भ. ॥ प्रथम तीर्थंकर वार ।
ब्रह्मचारी विरला इसा हो ॥ भ. ॥ सुणजो सहू नरनार ॥ध.॥१०॥

उगणीसे दशे समे हो ॥ भ. ॥ नागोर सेखेकाल ।
फागण सुद पूनम दिने हो ॥ भ. ॥ जुक्त सूं जोड़ी ढाल ।ध.॥११॥

स्वामी वृद्धिचन्दजी रे प्रसाद सूं हो ।।भ.।। 'रामचन्द्र' कही जोड़ ।
ओछो अधिको जे हुवे हो ।।भ.।। मिथ्या दुःष्कृत मोय ।।ध.।।१२।।

।। कलश ।।

शीलवन्त प्रभूनी गादी, स्वमुख जिनवर भाखियो ।
शीलव्रत सम अवर जग में, नहीं पदारथ दाखियो ।
चौसठ सहस्त्र वरस सुर आयु पामें, लोक लज व्रत राखियो ।
दुर्धर व्रत जे सधर राखे, धन धन ए रस चाखियो ।। १ ।।

विजय सेठ सेठाणी विजया, जैसा विरला जगते में ।
धन धन मनुष्य जनम पायो, जाय विराज्या मुगत में ।
जेहतणां गुण मुक्ख गांता, जन्म सफलो होय हैं ।
गुणवन्तना गुण सुणत कानें, भव भव पातक खोय हैं ।।२।।

सुणवानों गुण एहि कहिए, कछुक हिरदे धारिये ।
लीधा व्रत में कायम रहिये, नर भव अफल न हारिये ।
ज्ञान वृद्धना चरण पकड़ो, अगाध भवो दधि तारिये ।
'रामचन्द' आनन्द धरनें, ज्ञानादिक विचारिये ।। ३ ।।

।। विरहमान बीस नमूं ।।

विरहमान बीस नमूं ।। टेर ।।
सीमंधर पहला नमूं, युग मिंदर देव ।
बाहुजी स्वामी तीसरा, सुबाहुजी री सेव ।। विह० १ ।।

सुजात स्वामी पांचमां, स्वयं प्रभुजी जाण ।
ऋषभानंदन सातमां, अनंतवीरजी वखाण ।। विह० २ ।।

सूर प्रभु नवमां नमूं, दशमां श्री रे विशाल ।
वज्राधर चन्द्रानन नमूं, हूँ नमूं त्रिकाल ।। विह० ३ ।।

चंद्र वाहु स्वामी तेरमां, चवदमां श्री रे भुजंग ।
ईश्वर नेमीश्वर नमूं, राता धरम-सुरंग ।। विह० ४ ।।

वीरसेण स्वामी सतरमां, महाभद्रजी जाण ।
देवायश उगणीसमां, अजितवीरजी वखाण ।। विह० ५ ।।

ए वीसे जिनराज जी, महा विदेह क्षेत्र मंझार ।
जयवंता विचरे सदा, वन्दु वारंवार ।। विह० ६ ।।

चोथो जी आरो शाश्वतो, जेठ रहे जिनराज ।
ऋषि अर्जुन इम विनवे, सारो आतम काज ।। विह० ७ ।।

।। विनय थकी सुख सम्पजे सुण ।।

(तर्ज :—जठे इसरजी पोढ़िया, रून झुनियो ले)

विनय थकी सुख संपजे सुण जीवड़ला ।
कांई विनय है, सुख नो मूल, सुण सुण जीवड़ला ।। टेर ।।

समझो विनय स्वरूप ने सुण जीवड़ला ।
कोई तज आचरण प्रतिकूल सुण २ जीवड़ला ।
अश्व गज नर नारी में सुण जीवड़ला ।
काई देव देवी लो जोय सुण २ जीवड़ला ।
विनय थकी सुख संपजे................॥ १ ॥

सुखीया ते हीज जाणिये सुण जीवड़ला ।
कोई विनय वंत जो होय सुण २ जीवड़ला ।
नात जात गच्छादि में सुण जीवड़ला ।
तिहां उन्नति नी आस ने सुण जीवड़ला ।
काई सज्जन करो किम् कोय, सुण सुण जीवड़ला ॥विनय॥२॥

॥ वीर जिनेश्वर सोई दुनियां ॥

वीर जिनेश्वर सोई, दुनिया जगाई तूने ।
ज्ञान की मधुर सुरीली, बंशी बजाई तूंने ॥१॥

भारत की नैया डोली, मृत्यु आ शिर पर बोली ।
स्वर्ग से आकर भगवन्, पार लगाई तूंने ॥२॥

पशुओं पं छुरियां चलती, रक्त की नदियां बहती ।
करुणा के सागर, करुणा गंगा बहाई तूंने ॥३॥

देवों की करना पूजा, बस काम था और न दूजा।
मानव की अटल प्रतिष्ठा, जग में जमाई तू ने ॥४॥

पंथों का झूठा झगड़ा, जनता का मानस बिगाड़।
भेद सहिष्णुता की रखी सच्चाई तू ने ॥५॥

पाप का पंक धोना, नर से नारायण होना।
"अमर" अमर पद की राह दिखाई तू ने ॥६॥

॥ वे गुरु मेरे उर बसो ॥

वे गुरु मेरे उर वसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरे पर तारता, ऐसे श्री मुनिराज ॥ टेर ॥

मोह महा रिपु जीतके, छोड़े सब घर बार।
होय मुनिश्वर वन वसे, आतम शुद्ध विचार ॥१॥

राग उरग वपु बिल घणा, भोज भुजंग समान।
कदली तरु संसार है, सब छोड़े इम जान ॥२॥

पंच महाव्रत आदरे, पांचों समिति समेत।
तीन गुप्ति गोपे सदा, अजर अमर पद हेत ॥३॥

धर्म धरे दस लक्षणे, भावे भावना बार।
सहे परीषह बीस दो, चरित्र रत्न भंडार ॥४॥

रत्न त्रय निज उर धरे, अरु निग्रंथ कहलाय।
जीते काम पिशाच को, स्वामी परम दयाल ॥५॥

ग्रीष्म ऋतु रवि तेज ते, सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तपे, दाझे नगन शरीर ।। ६ ।।

पावस रयणी डरावनी, बरसे जलधर धार ।
तरुतल निवसे साहसी, वाजे झंझा जी वाय ।। ७ ।।

शीत पड़े कपि मद गले, दाझे सब वन राय ।
ताल तरंगिनि तट विषे, ठाडे ध्यान लगाय ।। ८ ।।

इण विध दुर्धर तप तपे, तीनों काल मंझार ।
लग रहे सहज स्वरूप में, तन ते ममत्व निवार ।। ९ ।।

रंग महल में पोढ़ते, कोमल सेज बिछाय ।
ते कंकराली भूमि पे, सोवे संवर काय ।। १० ।।

गज चढ़ चलते गर्व ते, सेना सज चतुरंग ।
निरख निरख भू पग धरे, पाले करुणा जी अंग ।। ११ ।।

षट रस भोजन जीमते, सुवर्ण थाल मंझार ।
अवे सहूं छिटकाय ने, फासुक लेते जी आहार ।। १२ ।।

पूरब भोग न चिन्तवे, आगम वंछे जी नाय ।
चतुर गति दुःख ते डरे, सुरत लगी शिव माय ।। १३ ।।

वे गुरू चरण जहां धरे, जंगम तीरथ जेह ।
सो रज मम मस्तक चढो, भूधर मांगे जी एह ।। १४ ।।

।। वेला तो आई तोरण की ।।

अब तो घूडला पर घूमे थारो वींद, वेला तो आई तोरण की ।।टेर।।

चम चम चमके केश सुनहरा, इन्द्रिया छोड़ी कार ।
नेण न दीखे कान न सुने ना, मुखड़ा सूं पड़ रही लार ।। १ ।।

तड़ तड़ वोले तन की कड़िया, रग रग रोग अपार ।
थर थर धूजे अग आज तो, लकड़ी उठावे सारो भार ।। २ ।।

रंग महल में मौज मांडला, पड़या पोल में जाय ।
कोड़ी न छोड़ी पास में रे, अब कुण पूछे थांरी सार ।। ३ ।।

विषय भोग में इन्द्रियां पोखी, नहीं राखी प्रभु साख ।
जव हंसो उड़ जावसी रे, जल वल होसी सारो राख ।। ४ ।।

धर्म कर्म नहीं कीनो वन्दा, रख्यो वुढ़ापा तांय ।
मूरख सोचे काल की रे, पल में तो प्रलय हो जाय ।। ५ ।।

स्वास खांस और हाय हाय में, तप जप होवे नांय ।
मुख से प्रभु को नाम न निकले, मन की रह जासी मन मांय ।। ६ ।।

दान पुण्य का भाव हुआ तो, परवश हो गया आज ।
कलम चली जद कुछ नहीं कीनो, अब नहीं देवे कोई साज ।। ७ ।।

माया की मस्ती में भूल्यो, नहीं परख्यो संसार ।
खेत चिड़कला चुग गया रे, हाथां सु बाजी गयो हार ।। ८ ।।

लख चोरासी घूमता रे, नर तन लीनो जोय ।
बिजली के भलके मोतीड़ों, पोय सके तो लिजे पोय ।। ९ ।।

पाप पुण्य संग जासी थांरे, लें ले खर्ची लार।
चेत सके तो चेत दीवाना, अब तो पाहुणो दिन चार ॥१०॥

काल सिरहाणे घूम रयो ज्यूं, तोरण आयो बींद।
जाग जाग ओ 'जीत' कैसे, सूतो है सुख भर नींद ॥११॥

॥ वो दिन कब होसी ॥

(तर्ज:—कोरो काजलियो)

मैं करसूं धर्म विचार, वो दिन कब होसी।
म्हारो सफल होवे अवतार, वो दिन कब होसी ॥ टेर ॥

देवगुरु का भक्त कहावूं, पच्चखूं पाप अठार ॥ वो दिन. ॥१॥
सम्यक ज्ञान क्रिया का साधन, साधूं भलो प्रकार ॥ वो दिन. ॥२॥
मोह मत्सरता मन से मोडूं, कुमता को ललकार ॥ वो दिन. ॥३॥
देश जाति निज धर्म निभावन, झेलूं कष्ट अपार ॥ वो दिन. ॥४॥
हंस हंस कर बलिदान हो जावूं, पर न तजूं निज कार ॥ वो दिन. ॥५॥
मैत्री भाव बढ़ावूं सबसे, तज कर वैर विकार ॥ वो दिन. ॥६॥
आज्ञा धर्म आरधन करके, लूं नर भव को सार ॥ वो दिन. ॥७॥
भक्ति भाव बड़ों का रक्खूं, विनय धर्म उरधार ॥ वो दिन. ॥८॥
हिंसा झूंठ चोरी को त्यागूं, पालूं शुद्ध ब्रह्मचार ॥ वो दिन. ॥९॥
ममता तज समता भजूं, बनूं शुद्ध अणगार ॥ वो दिन. ॥१०॥
प्राण हमारा जब ही निकले रटतो मुख नवकार ॥ वो दिन. ॥११॥
फूले फले भावना मेरी, कृपा करो करतार ॥ वो दिन. ॥१२॥

पोष वदी एकम मादलिये, दोय हजार अठार ।। वो दिन. ।।१३।।
श्री जिनके चरणों में विनती करे 'मिश्री' अणगार ।।वो दिन. ।।१४।।

।। वो दिन धन्य होसी ।।

(तर्ज:—कोरो काजालियो)

वो दिन धन्य होमी, जद करस्यूं धर्म विचार ।। टेर ।।
एक जीव के कारणे, कियो आरम्भ वेशुमार ।। वो ।।
परिग्रह की सीमा नहीं, कोई दिन दिन बढ़े अपार ।। वो ।।
धर्म ध्यान निपजे नहीं, नहीं कीनो पर उपकार ।। वो ।।
आरम्भ परिग्रह छांड़ने, निवृत होसूं जिण वार ।। वो ।।
भव भव में भटकत फिरयो, कोई चोरासी मंझार ।। वो ।।
साधु या श्रावक पणो, नहीं कीनो अंगीकार ।। वो ।।
ब्रह्मचर्य व्रत पालसूं, कोई संयम सत्तरे प्रकार ।। वो ।।
पंच महाव्रत धार के, कोई बण सूं जद अणगार ।। वो ।।
अन्त, संथारो धार सूं अठ्ठारे पाप परिहार ।। वो ।।
अरिहंत, सिद्ध, साहू, केवली ए चारों शरणा धार ।। वो ।।
सब ही जीव खमाव सूं कोई खमसूं बारम्बार ।। वो ।।
शुद्ध भावे पण्डित मरण, कोई करस्यूं देह विसार ।। वो ।।
तीन मनोरथ ए कह्या, जो नित चिन्ते नरनार ।। वो ।।
इण भव पर भव जीव के, कोई खर्ची बांधे लार ।। वो ।।
"जीतमल" की विनती, कोई सुणजो जगदाधार ।। वो ।।
तीन मनोरथ पूरजो, म्हारे होसी मंगलाचार ।। वो ।।

।।वंदू इग्यारे गणधार ।।

श्री इन्द्रभुतीजीरो लीजे नाम तो मन वांछित सीझे काम ।
मोटा लब्धितणा भंडार, वंदू इग्यारे गणधार ।। १ ।।

अग्निभुती गौतमजी रा भाई, वीरजीने दीठा समता आई ।
ऋद्धि त्यागी लीयो संजमभार । वंदू.......।। २ ।।

वायुभुति मोटा मुनि राय, ऐ तीनोही सग्गा भ्रात ।
पांच पांच से निकलिया लार । वंदू.......।। ३ ।।

विगत स्वामी चौथा जाण, भजन किया होवे अमर विमाण ।
देवलोक मां सुखराझणकार । वंदू.......।। ४ ।।

स्वामी सुधर्मा वीरजीरे पाट, जन्म मरण सेवक रा काट ।
मुझने आपतणो आधार । वंदू.......।। ५ ।।

मंडी पुत्र ने मोरी पूत, मुक्ति जावणरा कर दिया सूत ।
त्रिविधे त्याग्या पाप अठार । वंदू.......।। ६ ।।

अकंपीत ने अचलभ्रात, वीरजीरे वचने रयाजरात ।
चउदे पूरवना भडार । वंदू.......।। ७ ।।

मेतारज ने श्री प्रभास, मोक्ष नगर में कर दिया वास ।
जपता होवे जै जै कार । वंदू.......।। ८ ।।

ए इग्यारे उत्तम जात, चम्मालोसे निकलीया साथ ।
ज्यां कर दीना खेवा पार । वंदू.......।। ९ ।।

इण नामे सहु आशा फले, दोपो दुश्मन दूरा टले ।
ऋद्ध सिद्ध पामे सुख सार । वंदू......॥ १० ॥

इणं नामे सब नाशे पाप, नित्यरो जपीये भवणीया जाय ।
चित चोखे हिरदा में धार । वंदू......॥ ११ ॥

सम्वत अठारे तयालोसे जाण, पूज्य जयमलजी री अमृत वाण ।
चौमासो स्तवन कियो पीपाड़ । वंदू ॥ १२ ॥

आसाढ़ सुद सातम रे दिन, गणधरजी ने गाया एक मन ।
आसकरणजी भणे अणगार । वंदू......॥ १३ ॥

॥ शान्ति जिनन्द जपता जाप लीला ॥

शान्ति जिनन्द जपता जाप, लीला लहर करावे ।
मुझ घर मंगलाचार, मारो मन हर्षावे ॥ टेर ॥

उठी प्रभाते जिनधर देव, जपते जे मन भावे ।
जपते ही आनन्द होय, ज्यों अमृत रस पावे ॥ शान्ति १ ॥

मान सरोवर जिनवर नाम, जिन गुणं कमल फुलावे ।
अक्षय सुख की लहर, मुझ मन भंवर भावे ॥ शान्ति २ ॥

शान्ति नाम मुझ आंगने में, आनन्द छावे ।
पग पग प्रगटे निधान, मेरी चिंता जावे ॥ शान्ति ३ ॥

शान्ति जिनन्द धर ध्यान, शिवपुर नगर सिधावे ।
अनन्त सुखों कीं लहर, ज्योति रुप सुहावे ॥ शान्ति ४ ॥

देश देश के भूप, अगते पाखी पलावे ।
दास नगर घासीलाल, दीवाली के दिन गावे ।। शान्ति ५ ।।

।। शीतल जिनवर करुं प्रणाम ।।

शीतल जिनवर करुं प्रणाम, सोलह सतियां का लेसूं नाम ।
ब्राह्मी चन्दना राजमती, द्रोपदी कौशल्या मृगावती ।।१।।

सुलसा सीता सुभद्रा जाण, शिवा कुन्ता शील गुण खान ।
नल घरणी दमयन्ती सती, चेलणा प्रभावती पद्मावती ।।२।।

शील गुणे सुहावे सिरी-ऋषभदेव नी धिया सुन्दरी ।
सोले सतियाँ शील गुण भरीं, भवियण प्रणमो भावे करी ।।३।।

ये सुमरयाँ सब संकट टले, मन चिंतत मनोरथ फले ।
इण नामे सब सीझे काज, लहिये मुक्ति पुरी नो राज ।।४।।

भूत प्रेत इण नामे टले, ऋद्धि सिद्धि घर आई मिले ।
इण नामे सहु होय जगीश, ए सतियां सुमरुं निश दीश ।।५।।

।। शील सुखदाई रे ।।

शील सुखदाई रे-२ कई पाल शील गया मुगत के मांही रे ।।टेर।।

राजमति संयम लेकर गई, गिरि गुफा के मांही रे ।
राख्यो शील मुनि को प्रति बोधी, मोक्ष सिधाई रे ।।शील. १।।

काम अंध रावण सीता को ले गयो लंका मांही रे ।
पूरण राख्यो शील लेई जस, सुर पद पाई रे । शील. २ ।

पद्मनाम नृप सुर साधन कर, द्रौपदी को मंगवाई रे।
चतुराई से राख्यो शील, हरि लायो जाई रे ॥शील. ३॥

सुभद्रा की सासु सिर पे, दोनों कलंक चढ़ाई रे।
दूर कियो सुर कलंक, जगत में सुयश पाई रे ॥शील. ४॥

दुरगति टले मिले सुख साता, इसमें संशय नाई रे।
मुनि नंदलाल तणा शिष्य, दिल्ली में जोड़ बनाई रे ॥शील. ५॥

॥ शुद्ध मन भावो रे ॥

शुद्ध मन भावो रे, या खास भावना मोक्ष ले जावे रे। टेर।

प्रथम भाणे बैठ भावना, श्रावक शुद्ध मन भावे रे।
चित्त-वित्त पातर सुध मिलिया, संसार घटावे रे ॥शुद्ध १॥

दान, शील, तप तीनों जानों, भाव बिना ये सूना रे।
दया बिना ज्युं मनुष जमारो, भात अलूणो रे ॥ शुद्ध २ ॥

स्वर्ग पाचवे गयो मृगलो, मुक्ति मरुदेवी जावे रे।
भाव बिना व्यापार बीच, कुण लाभ उठावे रे ॥शुद्ध ३॥

अनित्य भावना भाई भरतजी, अशरण अनाथी भाई रे।
संसार भावना शालिभद्रजी, एकांत नमिराई रे ॥शुद्ध ४॥

अन्य भावना मृगा पुत्रजी, अशुची सनत कुमारो रे।
समुद्र पाल आश्रव और संवर, हरिकेशी अणगारो रे ॥शुद्ध ५॥

अर्जुनमाली भाई निजरा, शिवराज लोक स्वरूप ताई रे।
बोधी दुलभ ऋषभदेव, के पुत्रा भाई रे ॥शुद्ध ६॥

धर्म रुचि महाराज भावना, धर्म तणी पहचानी रे ।
जीरण सेठ की महिमा, सुर नर मुनि बखाणो रे ।।शुद्ध. ८।।

उगणीसे चमोत्तर आखा तीज, कृष्ण गढ़ के माई रे ।
गुरू हीरालाल प्रसादे, चौथमल जोड़ बनाई रे ।।शुद्ध. ६ ।।

।। स्वाध्याय का आनन्द लेने दो ।।

स्वाध्याय का आनन्द लेने दो, मोहे ज्ञान की ज्योति जगाने दो ।।टेर।।

आचार्य हमारे है भारी, जन २ को हैं आनन्द कारी ।
नित मंगल दर्शन करने दो, स्वाध्याय का. ।। १ ।।

स्वाध्याय का मार्ग बताया है, जनता का मन हर्षाया है ।
सन्मति पथ को अपनाने दो ।। स्वाध्याय का. ।। २ ।।

स्वाध्याय अनन्तर तप भारी, महिमा जिसकी अपरम पारी ।
मोहे अनन्तर तप को करने दो ।। स्वाध्याय का. ।। ३ ।।

स्वाध्याय ज्ञान का साधन है, धारेगा वह ज्ञानी जन है ।
अन्धकार को दूर हटाने दो ।। स्वाध्याय का. ।। ४ ।।

स्वाध्यायी बन सेवा देवें, पर्यूषन का लावा लेवे ।
मोहे आठ दिवस तो जाने दो ।। स्वाध्याय का. ।। ५ ।।

आचार्य देव उपकार करो, स्वाध्यायियों को तैयार करो ।
जिन शासन शान बढाने को ।। स्वाध्याय का. ।। ६ ।।

आसोज सुदी बारस दिन है, स्वाध्याय शिविर अन्तिम दिन है ।
उसमें भगवन्ता शिक्षा दो ।। स्वाध्याय का. ।। ७ ।।

॥ स्वाध्याय करो ॥

घर ध्यान धरो, नर नारी वरों ।

स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो ॥

खाना हम नित ही खाते हैं, सोना भी नियमित चाहते हैं ।
अखबार रोज पढ़ जाते हैं, स्वाध्याय से क्यों घवराते हैं ।
इसका तो तनिक विचार करो ॥ स्वा. १ ॥

चंदा विन रजनी कारी है, जल के बिन सूखी क्यारी है ।
बिन ज्ञान के दशा हमारी है, ज्यों अंक विना बिन्द सारी है ।
जीवन का तनिक सुधार करो ॥ स्वा. २

वीर प्रभू की वाणी है, सर्व सुखों की खानी है ।
इसे पढनी और पढानी है, स्वाध्याय की यही निशानी है ।
घर घर इसका प्रचार करो ॥ स्वा. ३ ॥

सद ज्ञानाभ्यास बढाने से, श्रद्धा को शुद्ध जमाने से ।
चरित्र बल चमकाने से, अनराज त्रिवेणी नहाने से ।
भव भव के तुम संताप रहो ॥ स्वा. ४ ॥

॥ स्वाध्याय करो ॥

जिनराज भजो सव दोष तजो, अब सूत्रों का स्वाध्याय करो ।
मन के अज्ञान को दूर करो, स्वाध्याय करो २ ॥ टेर ॥

जिनराज की निर्दूषण वाणी, सब सन्तों ने उत्तम जानी ।
तत्वार्थ श्रवण कर ज्ञान करो, स्वाध्याय करो २ ॥ १ ॥

स्वाध्याय सुगुरु की वाणी है, स्वाध्याय ही आत्म कहानी है ।
स्वाध्याय से दूर प्रमाद करो, स्वाध्याय करो २ ॥ २ ॥

स्वाध्याय प्रभु के चरणों में, पहुंचाने का साधन जानो ।
स्वाध्याय मित्र, स्वाध्याय गुरु, स्वाध्याय करो २ ॥ ३ ॥

मत खेल, कूद, निद्रा, विकथा में, जीवन धन बर्बाद करो ।
सद्ग्रन्थ पढो, सतसंग करो, स्वाध्याय करो २ ॥ ४ ॥

मन-रजन नॉविल पढते हो, यात्रा विवरण भी सुनते हो ।
पर-निज स्वरूप ओलखने को, स्वाध्याय करो २ ॥ ५ ॥

स्वाध्याय विना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान विना ।
घर-घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो २ ॥ ६ ॥

जिन शासन की रक्षा करना, स्वाध्याय-प्रेम जन-मन भरना ।
"गजमुनि" के अनुभव कर देखा, स्वाध्याय करो २ ॥ ७ ॥

॥ सकल संसार को जानो ॥

सकल संसार को जानो, सराय जैसा उतारा है ।
मुसाफिर छोड़ दे गफलत, रेन भर का गुजारा है ॥ टेर ॥

थोड़ी सी जिन्दगी खातिर, बनाई बाग में कोठी ।
कोई पूछे तो कहे ऐसा, मकां यह तो हमारा है ॥ १ ॥

सर्जी पोशाक लगा इत्तर, बैठ बग्घी या मोटर में।
घूमता तू गरूरी से, कौल अपना विसारा है ॥ २ ॥

कमाने के लिये आया, सदर बाजार आलिम में।
तू लेटर बक्स को भरले, यहां व्यापार सारा है ॥ ३ ॥

हजारों बादशाह वजीर, सेठ सरदार आ आ के।
कम ज्यादा बसेरा ले, गये सब वेशुमारा है ॥ ४ ॥

सदा यहीं पै रहना हो, छावनी ऐसी छाई है।
मगर यहाँ कूंच का हरदम, साफ बजता नगारा है ॥ ५ ॥

कहां श्रेणिक नृप कौणिक, कहां है भूपति विक्रम।
बात है आज तक रोशन, किया जिसने सुधारा है ॥ ६ ॥

पर उपकार को करके, सखावत का मजा ले लो।
चौथमल मुनि कहे मित्रों, भला इसमें तुम्हारा है ॥ ७ ॥

॥ सच्चा भक्त बन जाऊं ॥

सच्चा भक्त बन जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ध्रुव ॥

क्रोध निकट नहीं आने देऊं, शस्त्र अचूक क्षमा का लेऊं।
दूर ही मार भगाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ १ ॥

सन्त गुणीजन सब मिल जावे, मद मत्सर नहीं मन में आवे।
सादर शीस झुकाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ २ ॥

सत्य शंख का नाद बजाके, उथल पुथल की क्रांति मचा के।
सोता जगत जगाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ३ ॥

न्याय मार्ग से मुख नहीं मोड़ूं, स्वीकृति प्रण को मै नहीं छोड़ूं ।
कर्त्तव्य पथ बलि जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ४ ॥

प्राणी मात्र को अपना भाई, मानूं सब को चाहूं भलाई ।
सेवा ही मंत्र बनाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ५ ॥

ऊंच नीच का भेद न मानूं, गुण पूजा का महत्व पिछानूं ।
व्यक्ति न व्योम चढ़ाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ६ ॥

करूणा निधि ! वर करुणा कीजे, आत्मिक बल कुछ ऐसा दीजे ।
"अमर" अमर हो जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ ७ ॥

॥ सत्संग में आइये जी ॥

(तर्ज—चुप चुप खडे हो)

प्यारे सजनों ज्ञान की गंगा में नाहिये ।
सत्संग में आइये जी, सत्संग में आइये ॥ टेर ॥

भव भव भटकत नर तन पाया ।
देव दुर्लभ यह अवसर आया ।
प्रमाद में समय व्यर्था न गमाईये ॥ सत्संग ॥ १ ॥

विषय वासना में नहीं लुभाना है ।
सप्त व्यसन का त्यागी वन जाना है ।
जीवन अपना पवित्र बनाइये ॥ सत्संग ॥ २ ॥

देव गुरू धर्म ये तत्व तीन सार है ।

इनको आराधे मोटे मिथ्या अंधकार है ।
सम्यक ज्ञान की ज्योति जगाईये ।। सत्संग ।। ३ ।।

जीवा-जीवा, पुण्य, पाप बंधमोक्ष जानलो ।
सवर आश्रव, निर्जरा, के भेद को पीछानलो ।
हेय, गेय, उपादेय, जान अपनाइये ।। सत्संग ।। ४ ।।

दान, शील, तप, भाव शुद्ध तुम भावना ।
भव भव संचित कर्म खपावना ।
भक्त उत्थान में चरण बढाइये ।। सत्संग ।। ५ ।।

बिती को बिसार अब आगे ध्यान दीजिये ।
पचं तज, पचं भज, पचं वस कीजिये ।
'अनराज' नरतन सफल बनाइये ।। सत्संग ।। ६ ।।

।। सब नर धारो रे यह क्षमा ।।

(तर्ज़ कोरो काजलियो)

सब नर धारो रे यह क्षमा मोक्ष दातार । टेर ।

महिमा उपसम को प्रभु, या वरनी सुत्र मंजार ।। १ ।।
जिन शासन को मूल है, है तप संयम को सार ।। २ ।।
कर कर के क्षमा कइ, तिर गए समुद्र संसार ।। ३ ।।
खदक मुनि क्षमा करी, जब लीनो खाल उतार ।। ४ ।।
धन्य धन्य मेतारज मुनि, जाने सह्यो परीसह अपार ।। ५ ।।
गज सुख मुनि खीरा धरीया,मुनि सही अगन की झाल ।। ६ ।।

सूरीकंथा निज कंथ ने, दिया जहर विस डार ।। ७ ।।

क्षमा करी ने सुर हुवो, यह पहले स्वर्ग मंझार ।। ८ ।।

चौथमल कहे क्षमा करो, हो जावो भव जल पार ।। ९ ।।

।। समझ मन मेरा रे ।।

समझ मन मेरा रे, समझ मन मेरा रे ।
थारो धारियो नहीं, पार पड़ेला रे ।। टेर ।।

तूं चाहें मैं बनूं, अरबपति, करके धन सब भेला रे ।
जगत सेठ की पदवी ले लूं, सबके पहला रे ।। १ ।।

हीरा पन्ना मणि माणिक का, पहनूँ कण्ठी भेला रे ।
मोटर बग्गी बीच बैठकर, करूं मैं सैलां रे ।। २ ।।

नित्य खाऊं मैं माल मसाला, नारंगी और केला रे ।
नया मूंग की खिचड़ी में, घी का रेला रे ।। ३ ।।

सोना में त्रिया को जड़ दूं, जब मन खूब भरेला रे ।
लेन देन मैं करूं विलायत, तब तुन्द भरेला रे ।। ४ ।।

पूर्व पुन्य थें नहीं कमाया, कैसे आश फलेला रे ।
'चौथमल' उपदेश सुनावे, दे दे हेला रे ।। ५ ।।

।। समझ अभिमानी रे ।।

समझ अभिमानी रे २ थारी नदी पूर ज्यों जाय जवानी रे ।। टेर ।।

मेला ख्याल में जीवन जावे, बागाँ में गोट बनावे रे।
सतन को सेवा में आवतां, काम बतावेरे ॥ १ ॥

करी कान संझा का भान ज्यों, डाभ अग्र को पानी रे।
विजली का भलका सी सम्पत्ति, वीर बखानी रे ॥ २ ॥

एक सरीखी टोली मिल, गप्पों में वक्त गमावे रे।
प्रभु भजन नित नेम करत तुझ, आलस आवे रे ॥ ३ ॥

टेडी पगड़ी टेंट घणी, नित नया करे सिणगारा रे।
धर्म बिना कई गया पशु, जिम हार जमारा रे ॥ ४ ॥

कोई जीव को मति सता तूं, प्याला प्रेम का पीजे रे।
दुर्लभ नर भव पाय सार, सत्संगत कीजे रे ॥ ५ ॥

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि तो, त्याग बात फरमाई रे।
जोड़ करी अजमेर पैष्ठ पन्द्रह के मांई रे ॥ ६ ॥

॥ समझो चेतनजी अपना रूप ॥

(तर्ज—गुरू देव हमारी करदो........)

समझो चेतनजी अपना रूप, यो अवसर मत हारो।

ज्ञान दरस-मय, रूप तिहारो, अस्थि-मांस मय, देह न थारो।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो ॥समझो॥ १ ।

पोपट ज्यूं पिंजर बंधायो, मोह कर्म वश स्वांग बनाओ ।
रूप धरे हैं अनपार, अब तो करो किनारो ।।समझो।। २ ।।

तन धन के नहीं, तुम हो स्वामी, ये सब पुद्गल पिंड हैं नामी ।
सत् चित् गुण भण्डार, तूं जग देखन हारो ।।समझो।। ३ ।।

भटकत भटकत नर तन पायो, पुण्य उदय सब योग सवायो ।
ज्ञान की ज्योति जगाय, भर्म तम दूर निवारो ।।समझो।। ४ ।।

पुण्य पाप का तूं है कर्त्ता, सुख दुख फल का भी तूं भोक्ता ।
तूं ही छेदनहार, ज्ञान से तत्व विचारो ।।समझो।। ५ ।।

कर्म काट कर मुक्ति मिलावे, चेतन निज पद को तब पावे ।
मुक्ति के मार्ग चार, जानकर दिल में धारो ।।समझो।। ६ ।।

सागर में जलधर समावे, त्यूं शिवपद में ज्योति मिलावे ।
होवे 'गज' उद्धार, अचल है निज अधिकारो ।।समझो।। ७ ।।

।। समरो मंत्र भलो नवकार ।।

समरो मंत्र भलो नवकार, ये छे चौदह पूर्व नो सार ।
एनी महिमा नो नहीं पार, एनो अर्थ अनन्त अपार समरो. ।।१।।

सुखमां समरो दुखमां समरो, समरो दिन ने रात ।
जीवता समरो मरता समरो, समरो सवु संगाथ ।।समरो.।।२।।

जोगी समरे भोगी समरे, समरे राजा रंक ।
देवो समरे दानव समरे, समरे सहु निशंक ।।समरो.।।३।।

अडसठ अक्षर ऐना जाणी, अडसठ तीर्थ सार ।
आठ संपदा थी परमाणो, अष्ट सिद्धि दातार ।।समरो.।।४।।

नवपद ऐना नवनिधी आपे, भव भवनों दुख कांपे ।
चंद्र स्वरथी हृदय ध्यावे, परमातम पद आपे ।।समरो.।।५।।

।। सदा सुख पावेला ।।

(तर्ज—रिषभजी मुंडे बोल)

सदा सुख पावेला २ जो अहंकार तज, विनय बढ़ावेला ।।सदा

अहंकार में अकड़ा जो जन, अपने को नहीं मानेला ।
ज्ञान-ध्यान-शिक्षा-सेवा, को लाभ न पावेला ।। १ ।।

विनयशील नित हंसते रहता, रूठे मित्र मनावेला ।
निज-पर के मन को हर्षित कर, प्रीत बढ़ावेला ।। २ ।।

विनय प्रेम से नरपुर में भी - सुरपुर सा रंग लावेला ।
उदासीन मुख की सूरत नहीं, नजर निहालेला ।। ३ ।।

विनय धर्म का मूल कहा है, इज्जत खूब मिलावेला ।
योग्य समझ स्वामी, गुरू-पालक मान दिलावेला ।। ४ ।।

पुत्र पिता से कुंजी पावे, शिष्य गुरू मन भावेला ।
विनयशील शासक जन को भी, खूब रिझावेला ।। ५ ।।

यत् किंचित् कर विनय-गुरू का, 'गजमुनि' मन हर्षावेला ।
अनुभव कर देखो जीवन, - गौरव बढ़ जावेला ॥ ६ ॥

॥ सामायिक साधन करलो ॥

(तर्ज—तेरा रूप अनुपम गिरधारी दर्शन की छटा निराली है)

जीवन उन्नत करना चाहो तो, सामायिक साधन करलो ।
आकुलता से बचना चाहो, तो.......सा० ॥ टेर ॥

तन धन परिजन सब सुपने हैं, नश्वर जग में नहीं अपने हैं ।
अविनाशी सद् गुण पाना हो, तो.......सा० ॥ १ ॥

चेतन निज घर को भूल रहा, पर धन माया में भूल रहा ।
सद्चिद् आनन्द को पाना हो, तो.......सा० ॥ २ ॥

विषयों में निज गुण मत भूलो, अत्र काम क्रोध में मत भूलो ।
समता के सर में नहाना हो, तो.......सा० ॥ ३ ॥

तन पुष्टि हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ ध्यान भला ।
आध्यात्मिक बल पाना चाहो, तो.......सा० ॥ ४ ॥

सब जग जीवों में बन्धु भाव, अपनालो तज के वैर भाव ।
सब जन के हित में सुख मानों, तो.......सा० ॥ ५ ॥

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो ।
संसार में पूजा पाना हो, तो सा०.......॥ ६ ॥

साधक सामायिक संघ बने, सब जन सुनीति के भक्त बने।
नर लोक में स्वर्ग बसाना हो, तो""""सा० ॥ ७ ॥

॥ साधना के उच्च शिखरों ॥

साधना के उच्च शिखरों, पर विजय अभियान हो अब ॥ टेर ॥

लक्ष पहला साधना है, सत्य की आराधना है।
रूढ़ चर्या की अपेक्षा, सत्य का सन्धान हो अब ॥ १ ॥

शैल से उन्नत बनें हम, सिन्धु से गहरे बनें हम।
सुर्य से गति प्रेरणालें, अविश्रम गति मान हों अब ॥ २ ॥

शास्त्र से आलोक पाये, हम न केवल गीत गायें।
पेठ कर गहरे समुन्दर, आत्म अनुसन्धान हो अब ॥ ३ ॥

शोध होती आत्म व्रत से, सबक ले पश्चिम जगत से।
भूल कर अस्तित्व अपना, हम स्वयं भगवान हों अब ॥ ४ ॥

प्रेम का हो दीप कर में, हो अटल विश्वास मन में।
जो छिपी है शक्तियां, उन से निकट पहिचान हो अब ॥ ५ ॥

॥ साता कीजो जी ॥

साता कीजो जी, श्री शांतिनाथ प्रभु, शिव सुख दीजो जी ।साता।टेर।

शांतिनाथ है नाम आपको, सबने साता कारीजी।
तीन भवन में चावां प्रभुजी, मृगी निवारी जी ॥ १ ॥

आप सरीखा देव जगत में, और नजर नहीं आवेजी।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मनभावेजी ॥ २ ॥

शांति जाप मन मांहि जपता, चाहे सो फल पावेजी ।
ताव तेजरो दुःख दारिद्र, सब टल जावेजी ॥ ३ ॥

विश्वसेन राजाजी के नंदन, अचलादे राणी जायाजी ।
चौथमल कहे गुरु प्रसादे, घणा सुहायाजी ॥ ४ ॥

॥ साधुजी ने वंदना ॥

साधुजी ने वंदना नित नित कीजे, प्रातः उगंते सूर रे प्राणी ।
नीच गति में ते नहीं जावे, पामे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी ॥ १ ॥

मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छह काया रा प्रतिपाल रे प्राणी ।
भ्रमर भिक्षा मुनि सुझती लेवे, दोष बयालीस टालरे प्राणी ॥ २ ॥

ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाने, दीधी संसार ने पूठरे प्राणी ।
एहवा पुरुषांनी सेवा करतां, आठूं कर्म जाय टूटरे प्राणी ॥ ३ ॥

एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान रा भण्डार रे प्राणी ।
एक एक मुनिवर वैयावच्चिया वैरागी,
जेहना गुणों नो नावे पार रे प्राणी ॥ ४ ॥

गुण सत्तावीस करीने दीपे, जित्या परीसह बावीस रे प्राणी ।
बावन तो अनाचारच टाले, तेने नमावु मारो शीश रे प्राणी ॥५॥

जहाज समान ते संत मुनिश्वर, भव्य जीव बेसे आय रे प्राणी ।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुँचाय रे प्राणी ॥६॥

साधु चरणे जीव साता रे पावे, पावे ते लील विलास रे प्राणी ।
जन्म जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी २ गर्भावास रे प्राणी ॥७॥

एक वचन जो श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी ।
नरक निगोद में ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी ।। ८ ।।

प्रात: उठी ने उत्तम प्राणी, सुणो साधों रो व्याख्यान रे प्राणी ।
यां पुरुषा री सेवा करता, पावे अमर विमान रे प्राणी ।। ९ ।।

संवत अठारे ने वर्ष अड़तीसे, बूसी गांव चौमास रे प्राणी ।
मुनि आसकरणजी इण पर जंपे,
हूँतो उत्तम साधारो दास रे प्राणी ।। १० ।।

।। साधु जैन का ।।

साधु जैन का मुखड़ा रे उपर, मुखपति बांधे रे ।। टेर ।।

पांच महाव्रत पाले मुनिश्वर, टाले दोषण सारा रे ।
सब जीवां ने साता कारी, गुरु हमारा रे ।।साधु०।। १ ।।

सियाला में ठण्ड पड़े पिण, धुनी नहीं धुकावे रे ।
कारण अग्नि जीवां ने वे, नहीं सतावे रे ।।साधु०।। २ ।।

उनाला में बींजना से, बायरो नहीं लेवे रे ।
वायु कायरा जीव वलि, मच्छर मरजावे रे ।।साधु०।। ३ ।।

हेटेतो आकाश उपर, पवन उपरे पाणी रे ।
पानी रे उपर है पृथ्वी, सांची मानी रे ।।साधु०।। ४ ।।

तुलसी के नहीं फेरा खावे, पत्तो पण नहीं तोड़े रे ।
गऊ बन्धन में पड़ियो पीछे, अन्न जल छोड़े रे ।।साधु०।। ५ ।।

रात पड़िया अन्न जल रो खेरो, मुंडा में नहीं नाखे रे।
सूई जतरो पण धातु, वे पास न राखे रे। साधु०॥ ६॥

लीलोतरी रे भेला साधु, भूल कभी नहीं होवे रे।
विषय वश होय नार के, सामा नहीं जोवे रे॥साधु०॥ ७॥

भांग तमाखु गांजा रे तो, नेड़ा वे नहीं जावे रे।
तन्दुरा परमुख कोई बाजा, नहीं बजावे रे॥साधु०॥ ८॥

पहर रात गया के पीछे, ध्यान व शयन लगावे रे।
पर गाय बजाय नहीं वे करने, रात जगावे रे। साधु ॥ ९॥

पग उरबाने चाले साधु, करडाई नहीं करता रे।
पर उपकर के कारण से, दुनियां में फिरता रे॥साधु०॥१०॥

हाथी घोड़ा रेल मोटर की, नहीं करे सवारी रे।
दूर-दूर देशावर देखे, पांव बिहारी रे॥साधु०॥११॥

बोली तो नहीं बोले ऐसी, खटके जैसे खारी रे।
अमृत बोली बोले माने, मोज मजारी रे॥साधु०॥१२॥

गृहस्थी के घर नेतियोड़ा, जीमन ने नहीं जावे रे।
रुखी सुखी लाय ने, स्थानक में खावे रे॥साधु०॥१३॥

होली चौमासो नानण में दोय ठाणा सु आया रे।
नाथु शिष्य चौथु पंचाणवे, तवन बनाया रे॥साधु०॥१४॥

साधु श्रावक करे प्रणाम ॥

जय जिनवर, जय तीर्थंकर जय, चौबीसी भगवान।
साधु-श्रावक करे प्रणाम २।

आप तिरे, औरों को तारे, भरत क्षेत्र भगवान।
साधु श्रावक करे प्रणाम २ ॥टेर॥

ऋषभ देवका कीर्तन करते, अजित नाथ को वन्दन करते।
संभवनाथ का नाम सुमरते, अभिनन्दन को चित्त में धरते।
जय सुमति, जय पद्म प्रभु जय, चौबीसी भगवान ॥साधु०॥ १ ॥

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते, चन्द्र प्रभु को वन्दन करते।
सुविधिनाथ का नाम सुमरते, शीतल प्रभु को चित्त में धरते।
जय श्रेयांस, जय वासुपूज्य जय, चौबीसी भगवान ॥साधु०॥ २ ॥

विमलनाथ का कीर्तन करते, अनन्त नाथ को वन्दन करते।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शान्तिनाथ को चित्त में धरते।
जय कुन्थु, जय अरनाथ जय, चौबीसी भगवान ॥साधु॥ ३ ॥

मल्लिनाथ का कीर्तन करते, मुनिसुव्रत को वन्दन करते।
नमिनाथ का नाम सुमरते, अरिष्ठ नेमि को चित्त में धरते।
जय पारस, जय महावीर जय, चौबीसी भगवान ॥साधु०॥ ४ ॥

अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते, विहरमान को वन्दन करते।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते।
केवल शिष्य विनय करता जय, चौबीसी भगवान ॥साधु०॥ ५ ॥

।। सांभल हो गौत्तम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो ।।

(तर्ज—सांभल हो प्राणी, वेलारा वाया मोती)

सांभल हो गौतम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो ।। टेर ।।

मोटा तो नगर होसी गामड़ा, गांवड़ा होसी रे मसान ।
ऊंचा तो कुलरा छोरा छोकरी, दीसेला दास समान ।। १

राजा तो होसी जम सारखा, लालची होसी प्रधान ।
ऊंचा तो कुलनी रे नारियां, लाज शरम देसी छोड़ ।। २ ।।

पुत्र पिता नो कहणो न पालसी, शिष्य गुरू अविनीत ।
ऊंचा कुलरी केई नारियां, दीसेला वैश्या समान ।। ३ ।।

मिथ्याती शूरा बहुल पुजावसी, एक धर्म तणो भेद ।
देव का दर्शन दुर्लभ पामसी, विद्या बहु जासी विच्छेद ।। ४ ।।

व्राह्मण तो होसी धन का लोभीया, हिंसा में कहसी बहुधर्म ।
केई मिथ्याती होसी मानवी, मुश्किल निकलेला ज्यांरा भ्रम ।। ५ ।।

वंश अनारज सुखिया होवसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक ।
काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक होसी थोक ।। ६ ।।

धरती में सरसाई थोड़ी होवसी, आउखो पावेला पूरो नाय ।
चौमासा लायक क्षेत्र साधुने, थोड़ा मिलेला भरत मांय ।।७ ।।

साधु श्रावक की पडिमा विच्छेद जावसी, शिष्य गुरुरा अविनीत ।
गुरु चेला ने थोड़ा पढ़ावसी, मुश्किल निभेली ज्यांरी प्रीत ।। ८ ।।

कुमाणस कलेशी घणा होवसी, अल्प होवसी न्यायवंत ।
हिन्दू राजा नीचा बाजसी, म्लेच्छ होवसी बलवंत ॥ ६ ॥

नीच कुलरा राजा बाजसी, करसी खोटा खोटा न्याय ।
ज्यारे घर में लोहो लाधसी, सो धनन्वत कहाय ॥ १० ॥

संवत उगणीसे वर्ष इकसठे, चित्तौड़गढ़ कियो चौमास ।
गुरु नन्दलाल तणे शिष्य जोड़िया, अल्प कियोरे समास ॥ ११ ॥

॥ साम्भल हो प्राणी बेला रा बाया हो मोती नीपजे ॥

साम्भल हो प्राणी, बेला रा बाया हो मोती नीपजे ॥ टेर ॥

पूरब पुन्य सु नर भव पामियो, उत्तम कुल अवतार ।
पूरी इन्द्री ने लम्बो आउखो, आरज खेतर मंझार ॥ १ ॥

भाख्यो छे जिनवर सूत्रां मायने, अवसर नहीं आसी बारंबार ।
रतन चिंतामणि नर भव पामियो, खरची लीजो रे पर भव लार ॥२॥

साधु समागम जिन धरम सांभली, सरधा सेंठी रे दिल में धार ।
अवसर चूक्यो रे फिर नहीं आवसी, कीजे भलाई पर उपकार ॥ ३ ॥

पंडित कहे तू सुण हे ब्राह्मणी, करू हुकारो जीणवार ।
ज्वार हांडी में जल्दी नेखीजे, थासे मुक्ताफल आनन्दकार ॥ ४ ॥

वात पड़ोसन सगली सांभली, ज्वार आच्छी कर चूला पास ।
कान दे बैठी सुने डोकरी मोती, होवण की मन में आस ॥ ५ ॥

करियो हुंकारो ब्राह्मण तिण समे, गाफिल में रह गई घर की नार ।
सुणतां हुंकारो पाड़ोसन कियो, निपज्या मोती फल आनंदकार ।।६।।

थोड़ासा मोती ले आई डोकरी, लीजे पंडितजी अनमोल ।
थांरे परसादे मोती निपज्या, ब्राह्मण किधो छै मन मां तोल ।। ७ ।।

इण दृष्टान्ते अवसर पायने, दीजे सुपातर मुनि ने दान ।
वहती लक्ष्मी रो लावो लीजिये, दिन २ संपति दूणी जाण ।। ८ ।।

संवत् उगणीसे छियन्तर समे, सतोष चन्द्रजी रे परसाद ।
भाव भरियो रे माह सुद दिने, मोतीलाल मुनि समभाय ।। ९ ।।

।। सांभल हो गौतम बीस बोलां ।।

सांभल हो गौतम, बीस बोलां से तीर्थंकर हुवे ।। टेर ।।

अरिहन्त सिद्ध सूत्र सिद्धांत को, गुणवंत गुरुजी चौथा जाण ।
स्थविर बहुसूत्रि तपसी तणा, करे स्तुती हित आन ।।सांभल।।१।।

बार-बार उपयोग देतां ज्ञान में, शुद्ध समकित लेवे पाल ।
विनय करे जो गुरू देव को, आवश्यक करे दोई काल ।।सांभल।।२।।

व्रत पचखान पाले निरमला, परमाद टाली ध्यावे शुभ ध्यान ।
तपस्या करे जो बारह प्रकार की, देवे अभय सुपात्र दान ।।सां.।।३।।

व्यावच करे घण कुल संघ की, सर्व जीवा ने सुख उपजाय ।
अपूर्व ज्ञान नित पढतो थको, सब की भक्ति करे चित लाय ।।सां ।४।।

जिन मार्ग में खूब दिपावतो, बांधे तीर्थंकर जी गोत ।
चारों ही संघ में होय शिरोमणि, तीनों ही लोक में करे उद्योत ।।सां।।५।।

संवत् उनीस चोरासी साल में, नाथ द्वारे सेखे काल ।
गुरू प्रसादे 'चोथमल' कहे, लागो है नवो यों साल ।।सांभल. ।।६।।

।। सांभल हो श्रोता सूरा ने लागे ।।

नगरी तो राजगिरी रा वासिया, सेठ धन्नोजी जग में सार ।
पूर्व पुण्याई बहुरिध पामिया, आठ नारियाँ रा भरतार ।
सांभल हो श्रोता सूरा ने, लागे वचन जो ताजणा ।
कायर ने लागे नहीं कोय, सांभल हो श्रोता ।। टेर ।।

एक दिन धन्नो जी बैठा पाटिये, स्नान करन तिण वार ।
आठों ही नारियां मिलकर प्रेमसूं कूढ़ रही है जल धार ।। १ ।।

सुभद्रा नारी हो चोथी तेहनी, मन में भई छे दिलगीर ।
आंसू तो निकले तेना नैन सूं, संयम लेवे है मुझ वीर ।। २ ।।

प्रेम धरी ने धनजी पूछियो, कामण क्यूं हुई हो उदास ।
शंका मत राखो मुझ आगले, कारण तो कहोनी विमास ।। ३ ।।

कामण कहे हो कन्ता म्हायरा, वीरा ने चढ़ियो वैराग ।
एक २ नारी नित की परिहरे, संजम लेने री दिल में लाग ।। ४ ।।

धनजी कहे ए भोली बावली, कायर दीसे छे थारो वीर ।
संयम लेनो रो दिल में धारियो, तो क्यांरी कर रह्या ढ़ील ।। ५ ।।

नारी कहे हो कन्ता मांयरा, मुख से बनावो फोकट बात ।
ए सुख छोड़ी ने बाजो शूरमा, जदइ जानूंगी सांची बात ॥ ६ ॥

तत्क्षण धन्नोजी उठकर बोलिया, कामण रहीजो मांसूं दूर ।
संयम लेवाला इण हीज अवसरे, जद ही बाजाला जग में सूर ॥ ७ ॥

वेकर जोड़ी ने सुन्दर विनवे, हाँसी के वश कह्या बोल ।
काचो की साची न कीजे साहिबा, हिवड़े त्रिमासी बायर खोल ॥८॥

संयम लेणो तो साहिब सोहिलो, ममता मारी ने समता धार ।
बाविस परीषह सहणा दोहिला, संजम खाँडे री छै धार ॥ ९ ॥

पांव उवराना पियुजी चालणो, दोरो छे पाद विहार ।
घर घर तो फिरनो साहिब गोचरी, नीरस मिलसी आहार ॥१०॥

सियाले में हो पियुजी सो पड़े, उनाले वाजे लुवा वाय ।
चौमासे में हो मैला कापड़ा, ओ दुःख थासु सह्यो नहीं जाय ॥११॥

उत्तर प्रत्युत्तर हुवा अति घणा, आया साला के भुवन उछाह ।
दोनो मिल साथे संयम आदरां, कायर उतरोनी नीचे आव ॥१२॥

साला बहनोई संयम आदरियो, वीर जिनन्दजी रे पास ।
शालिभद्रजी सर्वार्थ सिद्ध गया, धन्नाजी शिवपुर वास ॥१३॥

सम्वत् उगणीसे इकसठ साल में, कीनो गढ़ चित्तौड़ चौमास ।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावियो, वंछित फलेगी सब आस ॥१४॥

॥ सुकरत करले रे ॥

सुकरत करले रे माया का लोभी, संग चलेगा रे ॥ टेर ॥

ऐसो मनुष जमारो पाके, अब तो लावो लीजे रे।
कुटुम्ब कबीला धन दौलत में चित्त ना दीजे रे ॥ १ ॥

मंहगो कपड़ो कदियन पहरियो, दिन काढ़ियो कुकस खाई रे।
सोनो रूपो कदियन पेरियो, घर के मांई रे ॥ २ ॥

नहीं खावे नहीं खरचे मूरख, दान देता कर धूजे रे।
छाछ तणो पाती नहीं घाले, घर में गाया दूजे रे ॥ ३ ॥

धन के कारण देस परदेस में, धूप गिणे नहीं छाया रे।
करे नौकरी नर और नारी, जोड़े माया रे ॥ ४ ॥

तू जाणे धण लारे म्हारे, चलसी बांदो गांठा रे।
अंत समय हाथां की बीठो, लेगा काढ़ी रे ॥ ५ ॥

अण चिंत्या का सुणरे मुंजी, काल नगारा देगा रे।
कंठी डोरा मोरा थैलियां, सब धरो रहेगा रे ॥ ६ ॥

॥ सुख कारण भवियण ॥

सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार।
जिन शासन आगम, चौदह पूर्व नो सार ॥ १ ॥

इण मंत्र नी महिमा, कहेतां न लहिये पार।
सुर तरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥ २ ॥

सुर दानव मानव, सेवा करे कर जोड़।
भू मंडल विचरे, तारे भवियण कोड़ ॥ ३ ॥

सुर छन्दे विलसे, अतिशय जास अनन्त ।
पद पहले नमिये, अरिगंजन अरिहन्त ।। ४ ।।

जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भगवंत ।
पंचम गति पहुंचे, अष्ट करम करी अन्त ।। ५ ।

कल अकल स्वरूपी, पंचानन्तक देह ।
जिनवर पाय प्रणमुं, वीजे पद वली एह ।। ६ ।।

गच्छ भार धुरन्धर, सुन्दर शशिहर शोभ ।
करे सारण वारण, गुण छत्तीसे थोभ ।। ७ ।।

श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जिम गंभीर ।
तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर ।। ८ ।।

श्रुतधर गुण आगर, सूत्र भणावे सार ।
तप विधि संयोगे, भाखे अर्थ विचार ।। ९ ।।

मुनिवर गुण युक्ता, कहिये ते उवझाय ।
पद चौथे नमिये, अह निश तेना पाय ।।१०।।

पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार ।
तपसी गुण-धारी वारे विषय विकार ।।११।।

त्रस थावर पीहर, लोक माहिं जे साध ।
त्रिविधे ते प्रणमुं, परमारथ जिण लाध ।।१२।।

अरि करि हरि सायन, डायन भूत वेताल ।
सब पाप पणासे, वरते मगल माल ।।१३।।

इण सुमरियां संकट, दूर टले तत्काल ।
इम जंपे जिन प्रभ, सूरी शिष्य रसाल ॥१४॥

॥ सुख दुःख एक समान मनवा ॥

सुख दुःख एक समान, मनवा सुख दुख एक समान ।
ज्ञान तराजू लेकर तोलो, मिटे सभी अज्ञान ॥ मनवा ॥

इक आवे अरू जावे दूजा, सूरज चन्द्र समान ।
भाग्य गगन के हैं दोय तारे, अजब निराली शान ॥ १ ॥

जो जग में दुःख ही नहीं होता, सुख की क्या पहचान ।
बिछुड़ मिलन का है यह जोड़ा, धूप छांव समजान ॥ २ ॥

कभी पत झड़ कभी हरियाली हैं. ऋतु की गति महान ।
खिला रहा है कर्म खिलाड़ी, जीव करे अभिमान ॥ ३ ॥

दुःख के दरद भूल के मूरख, सुख में हो गलतान ।
उलट फेर की चपत लगे तब, भूल जाय सब भान ॥ ४ ॥

सुख दुःख में समभाव धरे जो, विरले हैं तूं जान ।
धन्य पागल उस धीर वीर को, दुःख में गावे गान ॥ ५ ॥

॥ सुखी न मिलिनो एक भी ॥

(तर्ज : म्हाने अबके बचाले मांरी माय)

मैं तो ढूंढयो रे सहु जग मांय, सुखी न मिलियो एक भी ॥ टेर ॥

हाट हवेली भरया खजाना, भोगण वालो नाय ।
भाटो भाटो देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय ।। सुखी ।।

पइसो पायो नाम कमायो, करे सवाई बात ।
कंवर साव कूपतां जनम्या, बापूजो रोवे दिन रात ।। सुखी ।।

पदमण मिली दयालु कहीं पर, सेठ न लावो लेय ।
मिली कर्कशा नार कर्म सूं, खावे ना खावण देय ।। सुखी ।।

छप्पर पलंग है महल मालिया, जाली झरोखादार ।
बिना कंत के झूरे कामनी, खारा लागे रे घरबार ।। सुखी ।।

करी कमाई लक्ष्मी पाई, बंगला मोटर कार ।
बिना नार के लगे अलूणा, छोड़ गई रे मझधार ।। सुखी ।।

।। सुण मनवा मेरा ध्यान लगावो ।।

सुण मनवा मेरा, ध्यान लगाओ ऐसा ईश से ।। टेर ।।

ज्यु पनिहारी सिर जल लावे, करे बात हुलसाई ।
ताल लगावे दोनों कर से, ध्यान गगरिया मांहि रे ।। सुण ।। १ ।।

जैसे गैया चरे विपिन में, सूरत वछरिया मांही ।
पतिव्रता का चित्त पति में, कभी बिसरतो नाहीं रे ।। सुण ।। २ ।।

ज्ञानी का चित्त रहे ज्ञान में, रोगी चित्त निरोग ।
लोभी का मन धन-धान्य में, भोगी के मन भोग रे ।। सुण ।। ३ ।।

कम्पित कांच वीच में देखो, सूरत नजर नहीं आवे ।
ऐसे मन चंचल भोगों में, प्रभु नजर नहीं आवे रे ।।सुण।। ४ ।।

पद्मासन कर हाथ मिला, नासाग्र दृष्टि लगावे ।
होठ वन्द कर मन में वोले, निजानंद मिल जावे रे ।।सुण।। ५ ।।

मारवाड़ में शहर सादड़ी, साल इक्यासी आवे ।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, ज्योति में ज्योति समावे रे ।।सुण।।६।।

।। सुणजो भाई रे संसारी ।।

सुणजो भाई रे, संसारी ने सुख सपने नाहीं रे ।। सुणजो ।। टेर ।।

सवसूं पहली संसारी ने, दुख रोटियां रो लागेरे ।
चिन्तातुर हो रोटियां खातिर, इत उत भागे रे ।। १ ।।

रोटियाँ है तो दुख कपड़ा रो, चहिये बढ़िया बढ़िया रे ।
कपड़ा है तो गहणा चहिये, रतना जड़िया रे ।। २ ।।

गहणा है तो दुख हवेली, चहिये रंग रंगीली रे ।
हवेली हैं तो रमणी चहिये, छैल छवीली रे ।। ३ ।।

परणे प्यारी निकले खोटी, तो नित छाती वाले रे ।
तड़का भड़का करे न सुख सूं, रोटियां घाले रे ।। ४ ।।

कदा सुपातार मिले कामिनि, तो तन रोग दवावे रे ।
नहीं संतान है लारे तव, इम जी घवरावे रे ।। ५ ।।

रोग मिटे कदां टावर हैं तो, पाल पोस परणाया रे ।
सगा सम्वन्धी करे रुसणा, पड़े मनाणा रे ।। ६ ।।

सगा कदाचित भला हुवे तो, निकले पूत कुपातर रे ।
सीख देवतां सिर में मार, जूत फड़ाफड़ रे ।। ७ ।।

वेटा कदाचित हुवे कह्या में, पिण बुढ़ापो आई रे ।
शुद्ध बुद्ध सारी खोकर, दे मांत्रो पकड़ाई रे ।। ८ ।।

परवश भी जो नाय पड़े तो, काल खड़ो सर सांधी रे ।
'धन्न' वचन सुणी पर भव रो भातो, लेवो बांधी रे ।। ९ ।।

।। सुन सजनी सच्च कह कथनी ।।

(तर्जः—मेरा मन डोले मेरा तन)

धन्ना– सुन सजनी सच कह कथनी, तेरा मुखड़ा आज उदास रे ।
क्यों वहती आंसू धार है ।।

शालीभद्र सा जिसका भाई, उसके भाग्य सवाये २ ।
फिर भी अचरज होता मुझको, नयन नीर क्यों आये ।
हो सजनी नयन नीर क्यों आये ।

कह सजनी सच कह कथनी, तेरा मुखडा आज उदास रे ।
क्यों वहती आंसू धार है ।। १ ।।

सुभद्रा – भैया ने वेराग्य रंग में काम भोग विसराया २ ।
नित प्रति इक भाभी छिटकाता, योग उसे मन भाया ।
हो स्वामी योग उसे मन भाया ।।

समझाया, समझ न पाया सुन स्वामी आज उदास रे यूं ।
यह बहती आँसू धार हैं ।। २ ।।

धन्ना—कायर सुनरी तेरा भाई, इक इक नारी छोड़े २ ।
सिहनी जाया शूर वीर तो, एक साथ मुँह मोड़े ।
हो सजनी एक साथ मुँह मोड़े ।।

जो करना, धीरे करना, हैं यह तो अबला रीत री ।
यह पुरुषों की हैं रीत नहीं ।। ३ ।।

सुभद्रा—कह दिखलाना सरल है स्वामी, उसमें जोर न आये २ ।
वह जननी का सच्चा जाया, जो करके दिखलाये ।।
हो स्वामी जो करके दिखलाये ।

धन जन को, इस वन्धन को, सब त्याग के संयम धारना ।।
कोई बच्चों का हैं खेल नहीं ।। ४ ।।

धन्ना—ठीक समय पर तूं ने सजनी, सोता सिंह जगाया २ ।
ले आज बतादूं मेरी मां ने, कैसा दूध पिलाया ।।
हो मुझ को कैसा दूध पिलाया ।।

नारी को, दुनियांदारी को, यह चला मैं ठोकर मार के ।
अब संयम पाल दिखाऊंगा ।। ५ ।।

सुभद्रा—स्वामी ! स्वामी ! कहां जाते हो ? हँसी को साँच न मानो २ ।
फिर से ऐसा नहीं कहूँगी, मानो, मानो, मानो ।।
हो स्वामी एक बार बस मानो ।

यह तेरी चरणों की चेरी, इसे करदो, क्षमा प्रदान रे ।
तुम यों मत छोड़ चले जाओ ।।६।।

धन्ना—वचन बाण का घायल शूरा, लौट कभी ना आये २ ।
चाहे हो वलिदान प्राण का, अपनी टेक निभाये ।।
हो भगिनी अपनी टेक निभाये ।।

जाऊंगा, बस अब जाऊंगा, मैं कठिन तपस्या धार के ।
मुक्ति महल ही जाऊंगा ।।७।।

कवि—प्रण पालक अहो शूर शिरोमणि, धन्य है धन्ना तुमको २ ।
इतिहास तुम्हारा पढ़ पढ़ होता, गर्व हमारे दिल को ।
हो धन्ना ! गर्व हमारे दिल को ।

जय रमणि! धन तेरी जननी! जिसने जना हैं तुझसा पूत रे ।
"पारस" तेरा गुण गाए ।। ८ ।।

।। सुनलो जैनों कान लगाकर ।।

(तर्ज : आओ बच्चों तुम्हें)

सुनलो जैनों कान लगाकर, वाणी तारणहार की ।
छोड़ो क्रोध लोभ मद माया, गलियां नरक द्वार की ।
हित की बात है २ । ध्रुव।।

क्रोधः—गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता ।
तेज चला जाता आंखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता ।
अकल न जाने कहां जाती है? ज्ञानी और गवार की ।। सुनलो ।।१।।

मानः-मानी के सब शत्रु बनते, कोई मित्र नहीं बनता है।
कोई उसकी बात न माने, साथ न कोई देता हैं।
फिर भी कहता हम हैं चौड़े, सकड़ी राह बाजार की ।।सुनलो।।२।।

माया:-औरों के लिए जाल बिछाता, मगर वही उसमें फंसता,
औरों के लिए खड्डा खोदे, मगर वही उसमें गिरता।
सच कहता हूं जग में माया, जननी दुःख अपार की ।।सुनलो।।३।।

लोभ:-पूज्य पिता से लड़ता लोभी, भाई की हत्या करता,
केवल नश्वर धन के खातिर, दुनियां से दंगा करता।
लोभ पाप का बाप न करता, परवा अत्याचार की ।।सुनलो।।४।।

इनको त्यागेंगे वे भविजन, भव भव में सुख पायेंगे।
जन्म जरा और मरण मिटा कर, शिवनगरी में जायेंगे।
'पारस' कहता सुनलो जैनों, गुरू केवल अणगार की ।।सुनलो।।५।।

।। सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा ।।

सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा।
बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा ।। टेर ।।

उसी के हृदय में लगन तेरी होगी।
जिसका कि पुण्य उदयमान होगा ।।सुबह।।१।।

जिसने भी हृदय में तुझे टटोला।
लगा खाक तन पे क्यूं हैरान होगा ।।सुबह।।२।।

तेरे नाम से जो भी गाफिल रहेगा ।
समझ लो बड़ा ही वह नादान होगा ।।सुबह।।३।।

जिसे मन में हर दम भजन तेरा होगा ।
वह वैकुण्ठशाही वह स्थान होगा ।।सुबह।।४।।

तू बेचैन मत हो, तू पी प्रेम प्याला ।
इसे जो पीये वो कदरदान होगा ।।सुबह।।५।।

।। सुदर्शन श्रावक, पूरण प्रिय धर्मी ।।

(तर्ज : ख्याल)

सुदर्शन श्रावक, पूरण प्रिय धर्मी, श्री महावीर नो ।। टेर ।।
राजगृही का बाग में सरे, वीर विचरता आया ।
सुनी बात सुदर्शन श्रावक, हृदय हर्ष भराया ।
ले आज्ञा निज मात तात की, तुरन्त वंदवा आया रे ।। १ ।।

देवाधिष्ठ कोप्यो थको स तिण, अवसर अर्जुन माली ।
नगरी में चहुँ फेर फिरेस वो, कर में मुद्गल झाली ।
बीत गया छः मास हणे नित, छः छः पुरुष एक नारी रे ।। २ ।।

ते तिणने रस्ता में मिलियो, देख रह्या नर नारी ।
सागारी अनशन कर लीनो, मन में निश्चय धारी ।
कुछ नहीं चाल्यो जोर देवता, निकल गयो तिण वारी रे ।। ३ ।।

अनशन पार लार लेई अर्जुन, आया बाग में चाली।
वीर वांद वाणी सुन संयम, लीनो अर्जुन माली।
छः महीने में मोक्ष गये, सब जनम मरण दुःख टाली रे ।। ४ ।।

ऐसा श्रावक होय गुरू की, सदा भक्ति मन भावे।
कभी कष्ट व्यापे नहीं सरे, जग मांही जस पावे।
महामुनि 'नन्दलाल' तणाँ शिष्य, जोड़ करी इम गावे रे ।। ५ ।।

।। सुनो वीर की वाणी ।।

(तर्ज : पंजाबी)

सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुनों वीर की वाणी।
धर्म अहिंसा मुख्य बताया, सब धर्मों का राजा।
बे गुनाह कोई जीव मारना, महा पाप बतलाया।
चींटी से हाथी तक जितने, दिखते तुम्हें जिनावर।
सभी चाहते सुख से रहना, आत्मा एक बराबर।
पेड़ वनस्पति पानी आदि, सब में जीव निशानी।
इसीलिये तो बतलाया है, पीओ छान कर पानी।
कोई मैं झूठ बोलिया, कोईना, भई कोईना २ ।। १

झूठ बराबर पाप न जग में, झूठा ठोकर खाता।
घर बाहर और राज्य सभा में, कहीं न आदर पाता।
झूठ बोलने वाले का, विश्वास न कोई लाये।
झूठ बोलना छोड़ो रे भाई, प्राण भले ही जाये।

सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणों वीर की वाणी।

कोई मैं झूठ बोलिया..........३ ॥ २ ॥

चोरी करने वाले लुच्चे, डाकू चोर कहलाते।
नाम न लेता कोई उनका, नाम से सब घबराते।
बहु तेरे चोरी करते, उपर से गिर मर जाते।
बड़े बड़े चोरों ने देखो, हार अन्त में मानी।
चोरी करना बहुत बुरा है, सुनो ध्यान से प्राणी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुनो वीर की वाणी।

कोई मै झूठ बोलिया..........३ ॥ ३ ॥

जूवे बाज की सुनो कहानी, मन चित लाके भाई।
द्रोपदी नारी पांडव हारी, शरम जरा नहीं आई।
जूवे बाज उचक्के पर, एतबार न करता कोई।
घर वाले सब भूखे मरते, घर की हुई तबाही।
इस पापी चण्डाल जूए से, अपनी जान बचानी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुनो वीर की वाणी।

कोई मैं झूठ बोलिया..........३ ॥

पर की माता बहनों को, न बुरी नजर से देखो। ४ ॥
काम वासना कभी न लाओ, माता बहन सम जानो।
इसीलिए रावण को देखो, अपनी जान गंवाई।
मान प्रतिष्ठा धन सम्पत्ति, सब यूं ही लुटवाई।
उच्च भावना रक्खो हर दम, निर्मल हो ज़िन्दगानी।

सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ बोलिया..........३ ॥ ५ ॥

इन दुर्व्यसनो को रे भाई, शुद्ध मन से तुम त्यागो।
ऐसे दुष्ट पापों से भाइयों, दूर दूर सब भागो।
यह अमोलक मनुष्य जन्म, ए बन्दे तूने पाया।
महावीर के फरमानों का, सब ने मिल गुन गाया।
महावीर के फरमानों की, सबने शान बढ़ानी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ बोलिया..........३ ॥ ६ ॥

॥ सेवो सिद्ध सदा जयकार ॥

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मंगलाचार ॥ टेर ॥

अज अविनाशी, अगम, अगोचर, अमल अचल अविकार।
अन्तर्यामी, त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भण्डार ॥ १ ॥

कर पणठु कमट्ठ अट्ठ, गुणयुक्त मुक्त संसार।
पायो पंद परमेष्ठी तास पद, वन्दूँ बारम्बार ॥ २ ॥

सिद्ध प्रभु को सुमिरण जग में, सकल सिद्धि दातार।
मन वंछित पूरण सुर तरू सम, चिन्ता चूरणहार ॥ ३ ॥

जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मंझार।
तीर्थङ्कर हू प्रणमें उनको, जब होवे अणगार ॥ ४ ॥

सूर्योदय के समय भक्तियुत, स्थिर चित दृढ़ता धार।
जपे सिद्ध यह जाप तास घर, होवे ऋद्धि अपार ।। ५ ।।

सिद्ध स्तुति यह पढ़े भाव से, प्रति दिन जो नरनार।
सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार ।। ६ ।।

"माधव मुनि" कहे सकल संघ में, बढ़े हमेशा प्यार।
विद्या विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ।। ७ ।।

।। संयम सुखकारी, जिन आज्ञा अनुसार ।।

(तर्ज : अब होवे धर्म प्रचार प्यारे भारत में)

संयम सुखकारी, जिन आज्ञा अनुसार। संयम।
धन्य पाले जे नर नार। संयम ।। टेर ।।

सुखकारी आनन्दकारी, धन्य जाऊं मैं बलिहार ।। सं. ।। १ ।।

कर्म-मैल ने शीघ्र हटावे, आतम ना गुण सब प्रगटावे।
जन्म मरण ना दुःख मिटावे, होवे परम कल्याण ।। सं. ।।२।।

संयम ना गुण प्रभु खुद गावे, हलु कर्मी जीवां मन भावे।
हुलस भाव से उठ अपनावे, मोह ममता को मार ।। सं. ।।३।।

परम औषधि संयम जाणो, तीन लोक नो सार पिछाणो।
शुद्ध समझ हृदय में आणो, अनुपम सुख की खान ।। सं. ।।४।।

तजे रिद्ध संयम अनुरागे, जिन आज्ञा ने राखे आगे।
निश दिन संयम में चित लागे, धन २ वे अणगार ।। सं. ।।५।।

काम कषाय को तजे हुलसाई, निंदा विकथा दो छिटकाई।
तप संयम में लीन सदा ही, धन जेनो अवतार ।।सं.।। ६ ।।

।। संवत्सरी आया पर्व महान् ।।

धन्य धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इन्सान।
संवत्सरी आया पर्व महान्।

राग द्वेष को त्याग के सारे, गावो प्रभु के गान।
संवत्सरी आया पर्व महान्।

गुरू चरणों में सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके।
रगड़े झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ बनाके।
प्राणी मात्र से मिल कर सारे, मांगो क्षमा का दान ।। १ ।।

यही पर्व उद्धार करेगा, नव जीवन संचार करेगा।
जो जन इसको प्यार करेगा, उसके सब सन्ताप हरेगा।
इसी पर्व से मिलेगा तुझको, मुक्ति का वरदान ।। २ ।।

भेद भाव को दूर निवारो, जागो वीरो उठो विचारो।
जीती बाजी व्यर्थ न हारो, मिल कर आज प्रतिज्ञा धारो।
जैन धर्म का तन मन धन से, करेंगे हम उत्थान ।। ३ ।।

पांचो के सब बन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोड़ो।
विषयो से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोड़ो।
'चन्द्रभूषण' जियो जीने दो, यही वीर फरमान ।। ४ ।।

।। शिक्षा हितकारी ।।

(तर्ज—होवे धर्म...........)

हैं उत्तम जन आचार, सुनलो नरनारी ।
तूं धार सके तो धार, शिक्षा हितकारी ।। टेर ।।

(१) जुआ—

जूआ खेलना बुरा व्यसन है, धन छीजे दुःख भोगे तन है ।
हारे राजकोष सब धन है, पांडव हारी नार ।।शिक्षा।।१।।

नल भूपति ने राज गंवाया, दमयंती संग अति दुःख पाया ।
बड़े बड़ों का मान विलाया, जाने सब संसार ।।शिक्षा।।२।।

(२) चोरी—

चोर दंड पाते नित देखो, राज समाज में निंदा देखो ।
रहता नहीं भरोसा देखो, करे न कोई इतबार ।।शिक्षा।।३।।

(३) वेश्यागमन—

वेश्या और परस्त्री त्यागो, रावणकुल में हुओ अभागो ।
सीता को लेकर वह भागो, हुआ सकल संहार । शिक्षा।।४।।

(४) परस्त्रीगमन—

लंपट तन धन का बल खोवे, सुख की नींद कभी नहीं सोवे ।
फल भुगतन की बेला रोवे, त्याग करो नरनार ।।शिक्षा।।५।।

(५) मांस—

मद्य मांस नहीं खाणो पीणो, दुर्व्यसनों से दूर ही रहणो ।
नशो भूलकर भी नहीं करणो, बुद्धि बिगाड़ण हार ।।शिक्षा।।६।।

(६) मद्य—

प्याली पी कई जन्म बिगाड़े, गली नली में पड़त निहाले ।
कुत्ते भी आकर मुंह चाटे, हंसे बाल गोपाल ।।शिक्षा।।७।।

(७) तम्बाखू—

बीड़ी और तमाखू छोड़ो, कैन्सर से मत नाता जोड़ो ।
धन जन का है नाश करोड़ों, मन से दो दुत्कार ।।शिक्षा।।८।।

जैन धर्म का सार यही है, दुर्व्यसनों से लाभ नहीं है ।
व्यसन बिगाड़े जन्म सही है, होते जन बेकार ।।शिक्षा।।९।।

।। शिक्षा सुखदायी ।।

(तर्ज होवे धर्म प्रचार..........)

तुम सुनो सभी नर नार, शिक्षा सुखदाई ।
यह करती जन्म सुधार, शिक्षा........।।टेर।।

तत्वातत्व पिछाणे जासे, पुण्य पाप को जाने जासे ।
सबको खुद सम जाने जासे, सुखी बने संसार ।।शिक्षा।।१।।

पढ़कर झूठ वचन जो छोड़े, गाली से मन को नहीं जोड़े ।
भांग तमाखू मद तन तोड़े, तजे विज्ञ नर नार ।।शिक्षा।।२।।

दुर्व्यसनों के पास न जावे, तन धन इज्जत खूब बचावे ।
पर धन पर नहीं चित्त लुभावे, ज्ञान पढ़े का सार ।।शिक्षा।।३।।

चोरी कभी न करना चाहे, धोखा दे नहीं नम्बर पावे ।
सादा जीवन मन को भावे, हरे ज्ञान कुविचार ।शिक्षा।।४।।

आप्त जनों का आदर करना, सबसे मैत्री भाव बढ़ाना ।
शिक्षा से सुविचार फैलाना, यही ज्ञान सुखकार ।।शिक्षा।।५।।

धर्म जाति का (द्वेष) गर्व न करना, बंधु भाव से वैर मिटाना ।
तोड़ फोड़ हिंसा नहीं करना, ज्ञान बढ़ावे प्यार ।।शिक्षा।।६।।

।। हम भूल गये हैं जिनको ।।

(तर्जः—ए मेरे वतन के लोगों)

'जिन धर्म के प्यारे लोगों, ये सुनलो अमर कहानी'

हम भूल गये हैं जिनको, जरा याद करो कुर्बानी ।। टेर ।।

वो सेठ सुदर्शन जिनको. रानी ने कलंक लगाया ।
शूली पर चढ़कर जिसने, महामंत्र का ध्यान लगाया ।
शूली का बना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी ।। हम ।।१।।

बारह वर्ष अञ्जना को, प्रीतम से हुई जुदाई ।
इक पल प्रीतम का पाया, तूफान की आंधी आई ।
घर छोड़ जंगल में भटकी, है आज वो अमर कहानी ।। हम ।।२।।

विजय सेठ विजया सेठानी, नई उमर थी नई जवानी ।
ब्रह्मचर्य जीवन दोनों के, कैसे बीती जिन्दगानी ।
क्या प्रेम था पति-पत्नी का, देवों ने महिमा बखानी ।। हम ।।३।।

राजा ने वलि चढ़ाने, ब्राह्मण का लाल खरीदा ।
वो अमर कुमार नन्हासा, जल्लाद ने खंजर खींचा ।
नवकार का ध्यान लगाते, वो धरती थर थर कांपी ।।हम।।४।।

सत्यवादी हरिशचन्द्र राजा, एक पल में वने भिखारी ।
मरघट में विक गया राजा, और विक गयी तारा रानी ।
वो अटल रहे थे सत्य पर, फिर हो गई सव आसानी ।।हम। ५।।

एक राजा की दो बेटी, सुर सुन्दरी मैना प्यारी ।
मना पे क्रुद्ध हो राजा, कोढ़ी संग करदी शादी ।
पति संग तप किया था उसने, हो गयी काया सुहानी ।।हम।।६।।

वाहुवल थे भरत के भाई, आपस में लड़ी लड़ाई ।
वाहुवल ने जीत लिया था, पर लाज भाई की आई ।
तज वैभव वन गये योगी, वो वीर थे स्वाभिमानी ।।हम।।७।।

भारत मां तेरी धरती, हैं आज यह कितनी प्यारी ।
महापुरुष हुए है जितने, हैं वन्दना सवको हमारी ।
'लक्ष्मी' हर दम गुण गाए, युवक मंडल सिरनामी ।।हम।।८।।

।। हां आज संवत्सरी आई ।।

सव पर्वों का ताज, पुण्य दिन आज, संवत्सरी आई ।
सव जन लो हर्ष मनाई ।। टेर ।।

चौरासी लाख जीवयोनि से, जो वैर किया मन वच तन से ।
भूलो वह और लो, मैत्री भाव वसाई ।। हां आज ।।१।।

जो जानबूझ कर पाप किया, या अन जाने अतिचार हुआ ।
लो दण्ड और दो, मिच्छामि दुक्कडं भाई ।। हां आज ।।२।।

अरिहंत सिद्ध आचार्य श्री, पाठक मुनिवर महा सतियांजी ।
श्रावक श्राविका इन, सबसे लेवो खमाई ।। हां आज ।३।।

जो खमता और खमाता हैं, वह प्राणी आराधक बनता है ।
आराधक की होती है, गति सुखदाई ।। हां आज ।।४।।

यह पर्व नित्य नहीं आता है, पाले वह मुक्ति पाता है ।
केवल कहते "पारस" अपना नरमाई ।। हां आज ।।५।।

।। हिरदे राखीजे हो भविजन ।।

प्रातः उठी ने सुमरिये हो, भविजन मंगलिक शरणा चार ।
आपदा मिटे सम्पदा हुवे हो, भविजन दौलत ना दातार ।। १ ।।

हिरदे राखीजे हो भविजन, मंगलिक शरणा चार ।। टेर ।।

अरिहंत सिद्ध साधु तणा हो, भविजन केवली भाषित धर्म ।
ए शरणा नित्य ध्यावतां हो, भविजन टूटे आठों कर्म ।। २ ।।

वाटे घाटे चालतां हो, भविजन रात दिवस मंझार ।
ग्राम नगरपुर विचरतां हो, भविजन कष्ट निवारण हार ।। ३ ।।

ए चारो सुख कारिया हो, भविजन ए चारो जय कार ।
ए चारो उत्तम कह्यां हो, भविजन ए चारो हितकार ।। ४ ।।

डायण सायण भूतड़ा हो, भविजन सिंह चिता ने सूर ।
वैरी दुश्मन चोरटा हो, भविजन रहे सदा ही दूर ।। ५ ।।

राखो शरणा री आसता हो, भविजन नेड़ो नै आवे रोग ।
आनन्द वरते इण नामथी हो, भविजन व्हाला तणा संयोग ।।६।।

सुख साता वरते घणी हो, भविजन जो ध्यावे नरनार ।
परभव जाता जीव ने, भविजन एह तणों आधार ।।७।।

मन चिंतित मनोरथ फले हो, भविजन वरते क्रोड़ कल्याण ।
शुद्ध मन से नित ध्यावतां हो, भविजन निश्चय पद निर्वाण ।।८।।

इण सरीखो शरणों नहीं हो, भविजन इण सरीखों नहीं नाम ।
इन सरीखो मित्र नहीं हो, भविजन गांव नगरपुर ठाम ।।९।।

दान शील तप भावना हो, भविजन जग में ततव सार ।
करो आराधो भाव सु हो, भविजन पामो मोक्ष द्वार ।।१०।।

जोड़ कीधी छै जुगति से हो, भविजन पाली सेखे काल ।
ऋषि 'चौथमल' इम भणे हो भविजन, सुणजो बाल गोपाल ।।११।।

।। हैं जिसने घड़ी तेरी घड़ी ।।

हैं जिसने घड़ी, तेरी घड़ी, ठीक घड़ी हैं ।
घड़ियां हैं बहुत, पर व घड़ो एक घड़ी हैं ।। टेर ।।

उसने तो घड़ी काम के, खातिर है बनाई ।
तूने घड़ी टेबल पे, कलाई पे लगाई ।
टिक टिक यह करती हैं, नित्य देती हैं दुहाई ।
क्यों मस्त घड़ियों में, घड़ी अपनी भूलाई ।
रूकती न घडी तेरी घडी, ऐसी घड़ी हैं ।। १ ।।

घड़ियां तो बिगड़ती हैं, संवरती है जहां में।
कायम वह कहां रहती है, तू देख जहां में।
लोहे कांच की घड़ियां, बनी हैं जहां में।
उस जैसी घड़ी एक न, बनती हैं जहां में।
आये न फर्क कुछ भी, वह ऐसी घड़ी हैं ॥ २॥

सैकन्डों से मिन्ट और, मिन्टों से घन्टा बनाया।
दिन साल बीत गये, यूं ही वक्त गंवाया।
विज्ञान चलाया, ज्योतिष हैं लगाया।
पर असली घड़ी का तो, मगर भेद न पाया।
रूकती न घड़ी, तेरी घड़ी ऐसी घड़ी हैं ॥ ३ ॥

॥ हैं दो दिन की जिन्दगानी ॥

(तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश, लगाकर ठेस)

जीवन का सच्चा सार, तू करले प्यार।
धर्म से प्राणी, हैं दो दिन की जिन्दगानी ॥ टेर ॥

एक पल में प्रलय हो जाता हैं, जब गया श्वांस नहीं आता हैं।
हो रंक राजा कोई, योगी ज्ञानी ध्यानी ॥ १ ॥

जिन भोगों में भूला डोले, वही बन जाते आखिर शोले।
मानव से मोती का, हर लेते पानी ॥ २ ॥

रे जाग जाग क्यों सोता हैं, सोने वाला तो खोता हैं।
तूं सम्भल कहीं लुट जाय न व्यर्थ जवानी ॥ ३ ॥

जब तक इन्द्रियों में शक्ति हैं, और कलम भी तेरी चलती हैं।
जब तक तूं धर्म हित, रहले सदा अगवानी ॥ ४ ॥

ले थाम नाव की पतवारें, दुःख सुख की हवा से क्या हारे।
तूफान भी करना, दूर "जीत" आसानी है ॥ ५ ॥

॥ होते होते हैं साधु ऐसे ॥

होते होते हैं साधु ऐसे, जैन मुनि जग मांय ॥ टेर ॥

कनक कामनी के है त्यागी, रजनी में नहीं खाय।
अरे कच्चे जल को कभी न पीते, अग्नि छूते नाय ॥ १ ॥

पंखा करे न करे सवारी, चलते जीव बचाय।
मधुकरि सी चर्या जिनकी, सब जीवन सुखदाय ॥ २ ॥

ऊंच नीच सहे वचन जगत के, क्षमाभाव मन लाय।
आर्शीवाद शाप नहीं देते, नशा पता नहीं चाय ॥ ३ ॥

मुंह पर सदा मुंहपत्ति राखे, सच्चा ज्ञान सुनाय।
त्यागी तपसी मुनिराजों के, चरणों शीश नमाय ॥ ४ ॥

॥ हो थांने जाणो-जाणो जाणो जरूरी ॥

हो थांने जाणो-जाणो जाणो जरूरी, दिल में करलो विचार ॥टेर॥

बाप का बाप दादा गया रे, अब थांकी कई आस।
एक दिन यहां से चालणों रे, रहणो नहीं थिर वास ॥ हो थांने ॥ १ ॥

देख रह्या हो आप आंखों से, आया सो ही जाय ।
काल बेरी तो किणने न छोड़े, सब दुनियां ने खाय ।। हो थांने ।। २ ।।

म्हारो म्हारो करतां गया सब, अब जनम्या छो आप ।
उमर थांरी घटती जावे, तो ही न आवे धाप ।। हो थांने ।। ३ ।।

अंतिम वेला सहुं रोवेगा, थे भी रोवोगा खास ।
धन दौलत ने कुटुम्ब कबीलो, कोई न रहे तुम पास ।। हो थांने ।। ४ ।।

समत उगणी से चहुत्तरे रे, रामपुरे सेखे काल ।
रामरतनजी गुरू प्रसादे, गायो 'चम्पालाल' ।। हो थांने ।। ५ ।।

।। होवे धर्म प्रचार ।।

होवे धर्म प्रचार—प्यारे भारत में ।। टेर ।।

ईर्षा करे न कोई भाई, दिल में सब के हो नरमाई ।
सरल वने नर नार ।। प्यारे ।। १ ।।

जूवा मांस शराब व चोरी, दूर हो जग में रिश्वत खोरी ।
न खेले कोई शिकार ।। प्यारे ।। २ ।।

मुनि गुणी जन जितने आवें, सारे उनसे लाभ उठावें ।
लेवें जनम सुधार ।। प्यारे ।। ३ ।।

तज कर निन्दा भूठ लड़ाई, गले मिलें सब भाई भाई ।
बहे प्रेम की धार ।। प्यारे ।। ४ ।।

मुख से कोई न देवे गाली, बोली बोले इज्जत वाली ।
मीठी और रसदार ॥ प्यारे ॥ ५ ॥

महावीर के बनें पुजारी, सत्य अहिंसा दया के धारी ।
मंत्र जपे नवकार ॥ प्यारे ॥ ६ ॥

धर्म का झंडा फहरे फर फर, नाम प्रभु का गूंजे घरघर ।
होवे जय जय कार ॥ प्यारे ॥ ७ ॥

'चंदन' और कहे क्या ज्यादा, वेश व भोजन सब हो सादा ।
सादा हो घर बार ॥ प्यारे ॥ ८ ॥

॥ हो नाथजी पाप आलोऊं ॥

हो नाथजी, पाप आलोऊं पाछला, दिन रात ना, कई जात ना ।
किया पंचेन्द्रि विनाश, मारया गले देई पाश, खाया घणा मद मांस ।
दीनानाथजी, जोड़ूं हाथ जी, ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

हो नाथजी प्राण लुट्या छः कायना, कई जाणता, कई अजाणता ।
मैं नही जाणी पर पीड़ा, चांप्या कुंथवा ने कीड़ा ।
चाब्या पान सेती बीड़ा, दीनानाथजी ॥ २ ॥

हो नाथजी, वनस्पती तीन जातरी, कई भांतरी, छमकी सांतरी ।
तोड्या पान फल फूल, सेक्या गाजर कंद मूल ।
खाया भर भर लूण, दीनानाथजी ॥ ३ ॥

हो नाथजी, आचार नाख्या हाथ से, चिरिया दांत से, किया खांत से ।
जामे पाड़िया मसाला, खाया भर भर प्याला ।
आया उलजिया जाला, दीनानाथजी ॥ ४ ॥

हो नाथजी अघर आकांशारा झेलिया, भर भर मेलिया ।
उना ठन्डा भेलिया, दिया अर्थ अनर्थ ढोल, किया अणछाण्या अंगोल ।
जाणे भैंसा मांडी रोल, दीनानाथजी ॥ ५ ॥

हो नाथजी पाणी उलेच्या तलाब ना, नदी नालाना ।
कुवा बावना, फोड़ी सरवरीया नी पाल, तोडी तरवरीया नी डाल ।
बरफ गड़ा दिया गाल, दीनानाथजी ॥ ६ ॥

हो नाथजी माता से पुत्र बिछावियां, घणा रोविया दूधा दोविया ।
कोस्या नानड़िया सा बाल, परपे महिलो झाल ।
तोडिया पंखीड़ारा वाल, दीनानाथजी ॥ ७ ॥

हो नाथजी जूं मांकड ने मारिया रोकी राखिया, रास्ते नाखिया ।
तड़के मांना दिया मेल, आगे होसी घणी हेल, दीनानाथजी ॥ ८ ॥

हो नाथजी सियाले सीगड़ी करी, खीरा भरी, चोवटे धरी ।
मांय पड पड मरिया जीव, कर्म बांधिया निस दिन ।
बांधी नर्क तणी नीव, दीनानाथजी ॥ ९ ॥

हो नाथजी उनाले ओविया जोविया, फूल विंधोविया, जल सींचिया ।
कीनी बागां मांय गोठ, खाया चूरमा ने रोठ ।
बांधी पाप तणी पोट, दीनानाथजी ॥ १० ॥

हो नाथजी चौमासे हल हांकिया, बैल भूखा राखिया ।
चामका मारिया, फोड्या जमी केरा पेट ।
मारिया सांपने सपरेट, दया नहीं आणि लेश, दीनानाथजी ॥ ११ ॥

हो नाथजी जूना नवां करी वेचिया, सुखा संचिया, नहीं सोचिया ।
दिया अणजोया पीस, इल्या मारी दस बीस ।
आगे रोसी देई चीस, दीनानाथजी ।। १२ ।।

हो नाथजी दूध दही छाछ आंछना, शरबत दाखना, केरी पाकना ।
वली घीरत ने तेल, दिया उघाड़ा ही मेल ।
कीड़ियां आई रेलां ठेल, दीनानाथजी ।। १३ ।।

हो नाथजी परनारी धन चोरिया खेली होलियां, गाई गोरियां ।
देख्या तमाशा ने तीज, गाल्यां गाई घणी रीझ ।
तास्लां पीटी घणी रीझ, दीनानाथजी ।। १४ ।।

हो नाथजी कूड कपट छल ताकिया, छाने राखिया ।
नहीं भाखिया, मुख से बोली घणी झूंठ ।
धाड़ा पाड़िया लूट २, जंत्र तंत्र मारी मूठ, दीनानाथजी ।। १५ ।।

हो नाथजी ओगुण वाद गुरां तणां, बोल्या घणा, अण सोचता ।
मैं नहीं जाण्यो अज्ञानो, निंदा कोनी छानी छानी ।
नहीं धाम्यो आहार पानी, दीनानाथजो ।। १६ ।।

हो नाथजो भली भली भांत का, कई जात का, खाया रात का ।
पिया अण छाणा पानी, मन में करुणा नहीं आणी ।
पर पीड़ा नहीं पिछानो, दीनानाथजी ।। १७ ।।

हो नाथजी सासू सोक सुवासीनी सताइ घणी ।
मुख से बोल्या मीठा गाल, केई दिया कूडा आल ।
तपसी बूढ़ा रोगी बाल, ज्यारी नहीं करी संभाल, दीनानाथजी ।१८।

हो नाथजी संशय किया मैं मोटका, कई छोटका हुआ खोटका।
करी राख्या छाने पाप, सो तो देखी रया आप।
म्हारे थेई मांय बाप, दीनानाथजी ।। १९ ।।

हो नाथजी, स्त्री सूं भांत पड़ाविया, गर्भ गलाविया जीवजलाविया।
मारी जूं ने फोड़ी लीक, वेठो पापी रे नजदीक।
नहीं मानी थांरी सीख, दीनानाथजी ।। २० ।।

हो नाथजी, थांपण राखी पारकी, केई हजार की।
साहुकारी की, कीनी सटपिट मांग्या, गयां तुरत ही नट।
लिया सेमुद्राइ गोट, दीनानाथजी ।। २१ ।।

हो नाथजी संयम जप तप शील री, देता दानरी, भणता ज्ञान री।
दीनी मोटी अंतराई, ते तो भुगती नहीं जाइ।
पड़ियो करसी हाई-हाई, दीनानाथजी ।। २२ ।।

हो नाथजी मात पिता गुरूदेव रो अविनय पण कियो घणो।
फिरियो चौरासी रे मांय जासूं कियो वैर भाव।
खमो-खमो चित चाव, दीनानाथजी ।। २३ ।।

हो नाथजी, सार करीने संभाल जो, मत बिसार जो।
पार उतार जो, संवत उगणीसे बासठ, ज्यां की मति करो हठ।
दर्शन दीजो मांने झठ, दीनानाथजी ।। २४ ।।

हो नाथजी, आलोयणा इम कीजिये मिच्छामी दुक्कडं दीजिये।
कर्म छेदीजे, जैपुर मांयजी जड़ाव आणी उज्जवल भाव।
ढाल कीनी घर चाव, दीनानाथजी ।। २५ ।।

॥ हो म्हारी मानो क्यों नहीं ॥

(तर्ज- मांड)

हो म्हारी मानो क्यों नहीं केण, बटाउड़ा खरची लेले लार ।टेर।

तू मुसाफिर खाने में सुतो, झलती मांझल रात ।
आस पास तेरे हेरु फिरत है, और न कोई साथ ॥ हो. ॥ १ ॥

तीन रतन तेरे बन्धे गठरी में, जिनका करियो जतन ।
गफलत में रहियो मतीरे, नरभव मिले कठिन ॥ हो. ॥ २ ॥

पर भूमि पर भूप कीरे, तेरो यहां पर कौन ।
वृथा माया में फंसी थे तो, भुगतो चौरासी जौन ॥ हो. ॥ ३ ॥

इस मुसाफिर खाने मांहीं, लख आवत लख जात ।
सुकरत खर्ची पल्ले बान्धो, तू मत जा खाली हाथ ॥ हो. ॥ ४ ॥

भोर भये उठ जावनो रे, चार पहर की बात ।
'चौथमल' कहे सुयश लीजो, ये जग में रह जात ॥ हो. ॥ ५ ॥

॥ श्री शांतिनाथजी को कीजे जाप ॥

श्री शांतिनाथजी को कीजे जाप, क्रोड़ भवांरा काटे पाप ।
शांतिनाथजी मोटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥

दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख सम्पत्ति पावे भरपूर ।
ठग फांसीगर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग ॥ २ ॥

राजलोक मां कीर्ति घणी, शांति जिनेश्वर माथे धणी ।
ज्यों ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधिको मान ॥ ३ ॥

गड़ गुम्बड़ पीड़ा मिट जाय, दोषी दुश्मन लागे पांव ।
सघलो भाँगो मन नो भ्रम, पामो समकित काटी कर्म ॥ ४ ॥

सुणजो प्रभु मोरी अरदास, हूँ सेवक तुम पूरो आस ।
मुझ मन चिंतित कारज करो, चिंता आरित विघ्न हरो ॥ ५ ॥

मेटो म्हारा आल जंजाल, प्रभु मुझने तू नयन निहाल ।
आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभुजी मारो काम ॥ ६ ॥

जो नित नित प्रभुजी रटे, मोती बंधा फूला कटे ।
चेप लावण दोनों झड़ जाय, विण औषध कट जावे छांछ ॥७॥

प्रभु नाम से आँख निर्मल थाय, धुन्ध पड़त जाला कट जाय ।
कमल पीलो जल जल झरे, शांति जिनेश्वर साता करे ॥ ८ ॥

गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मित्र नो मिले संयोग ।
ऐसा देव न दिखे ओर, नहीं चाले दुश्मन का जोर ॥ ९ ॥

लूंटारा सब जावे नाश, दुर्जन फीटा होवे दास ।
शांतिनाथ की कीर्ति घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवनधणी ॥१०॥

अरज करूं छूं जोड़ी हाथ, आपसुं नहीं कोई छानी बात ।
देख रया छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप ॥११॥

मुझ मन चिंतित करीये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ।
तुम सम जगमांही नहीं कोय, तुम भजवाथी साता होय ॥१२॥

तुम पासे चाले नहीं रोग, ताव तेज रो नाको तोड़ ।
मरी मिटाई कीधी संत, तुम गुणना नहीं आवे अन्त ॥१३॥

तुमनें सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जती ।
काटो संकट राखो मान, अविचल पदनुं आपो स्थान ।।१४।।

संवत अठारे चौराणु जाण, देश मालवो अधिक वखान ।
शहर जावरे चातुर्मास, हूँ प्रभु तुम चरणांरो दास ।।१५।।

ऋषि रुघनाथजी कीधो छंद, प्रभुजी काटो मारा फंद ।
हूं जोऊं प्रभुजी नी वाट, मुझ आरति चिन्ता सब काट ।।१६।।

।। श्री जिनराज माहराज, चौविश जिनवरजी ।।

श्री जिनराज महाराज, अर्ज मेरे मन की ।
तुम खेंचो हमारी डोर सूरत दरशन की । (एदेशी)

श्री जिनराज महाराज चौविश जिनवरजी ।
तुम रखो हमारी लाज सुनो गणधरजी ।। टेर ।।

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन स्वामी ।
श्री सुमति पदम सुपार्श्व नमो शिर नामी ।
श्री चन्द्र प्रभु सुविधि नाथ शीतल गुण गांऊ ।
श्री श्रेयांस वासु पूज्य महाराज कूं शीश नमाऊं ।।श्री।।१।।

श्री विमल अनन्त धर्मनाथ शान्ति जिन देवा ।
श्री कुन्थुनाथ अरनाथ की करता हूं सेवा ।
श्री मल्लिनाथ मुनि सुव्रत व्रत मोय दीजे ।
नमिनाथ नेम महाराज पार मोय कीजे ।।श्री।।२।।

श्री पार्श्वनाथ महावीर शरण रहूँ तेरी ।
मैं छूं चरणां को दास, अरज सुनो मेरी ।
तुम चरणन की शरण बिन काल अनन्त गमायो ।
अब जन्म भये मुझ सफल चरण तुम पायो ।।श्री।।३।।

हुवो चउवीसों महाराज को शरणो हमारे ।
तुम बिन नाथ अनाथ कहो कुण तारे ।
प्रभु दीनदयाल कृपाल सुनो तन मन की ।
तुम खेंचो हमारी डोर सूरत दरशन को ।।श्री ।४।।

तुम दरशन बिन महाराज काज मुझ बिगड़यो ।
तुम दरशन बिन महाराज काल वहु भटक्यो ।
मुनि राम कहे महाराज पूरण करो आसा ।
मुझे रखो चरण के पास न करिये निरासा ।।श्री।।५।।

।। श्री जिन मुझ ने पार उतारो ।।

श्री जिन मुझ ने पार उतारो, प्रभु मैं चाकर चरणारों ।
श्री जिन मुझ ने पार उतारो ।। टेर ।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, तारया है जीव अपारो ।
सुमति पद्म सुपार्श्व चंदा प्रभु, मेट्या विषय विकारो ।।श्रीजिन।।१।।

सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य मुक्ति तणा दातारो ।
विमल अंनत धर्मनाथ शांति जिन, साता करी संसारो ।।श्रीजिन।।२।।

कुंथु अरह मल्लि मुनिसुव्रतजी निरंजन निराकारो ।
नमिये नेम पारस महावीरजी, शासन का सिरदारो ॥श्रीजिन॥३॥

इग्यारे ही गणधर वीस विहरमान, सब साधु अणगारो ।
अनंत चौवीसी को नित उठ वन्दू, कर गया खेवा पारो ॥श्रीजिन॥४॥

राग द्वेष दोय वीज वाली ने, अशुभ कर्म किया छारो ।
केवल ज्ञान ने केवल दर्शन, निज गुण लिया लारो ॥श्रीजिन॥५॥

तरण तारण तुम विरद सुणी ने, शरणो लियो चरणांरो ।
रिख 'लालचन्दजी' इण पर विनवा मारो करो निस्तारो ।श्रीजिन।६।

॥ श्री आदि जिनंदं ॥

श्री आदि जिनंदं, समरस कदं, अजित जिनंदं, भज प्राणी ।
संभव जग त्राता, शिव मग राता, दो सुख साता हित आणी ।
अभिनन्दन देवा, सुमति सु सेवा, करो नित मेवा, रिपुघाता ।
चौविस जिनराया मन वच काया, प्रणमूं पाया दो साता ॥टेर॥१॥

श्री पद्म सुपासं, शशिगुण रास, सुविधि सुवासं, हितकारी ।
श्री शीतल स्वामी, अन्तरयामी, शिवगति गामी, उपकारी ।
श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भविजन व्हाला, जगत्राता ॥चौ०॥२॥

वासुपूज्य सुकुंतं, विमल अनन्तं धर्म श्री संतं सुखकारी ।
कुन्थु अरनाथ, तज जग साथं, मल्लि सुवासं जगधारी ।
मुनि सुव्रत सुनमि आतमा जे दमी, दुर्मति ने वमी तपराता ॥ ३ ॥

रिष्ट नेमी वड़ाई, नार न ब्याही, तोरण जाइ छिटकाइ ।
नाग नागिन ताई दिया बचाई, पारस साई सुखदायी ।। ४ ।।

जय जय वर्द्धमानं, गुण निधि खानं, त्रिजग भानं शुद्ध ज्ञाता ।
संसार का फदा दूर निकंदा, धर्म का छंदा, जिन लीना ।। ५ ।।

प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भवि समझाया, मुनि कीना ।
कहे रिख तिलोकं सदा तस धोकं, दो सुख थोक चित चाया ।। ६ ।।

।। श्री ऋषभ अजित ।।

श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन ।
सुमति, पदम, सुपारस, मन-रंजन ।
चद्र प्रभूजी ने सेवो ।
सुविधिनाथ, शीतल, गुण गाऊं ।
श्री श्रेयांस, वासपूज्य, जी ने ध्याऊं ।
विमल, सुनिर्मल देवो ।। १ ।।

अनंत, धरम, श्री शान्ति जिनेश्वर ।
कुंथुनाथ अति ही अलवेसर ।
वंदू श्री अर नाथो ।
मल्लीनाथ मुनिसुव्रत, स्वामी ।
नमि, नेमी, पारस, हितकामी ।
मिलियो मुगति नो साथो ।। २ ।।

चोवीसवां श्री वीर जिनेश्वर ।
पर उपगारी प्रभु श्री परमेश्वर ।

पहुँता पद निर वाणी ।
ए चोवीसां रा नित गुण गावे ।
दुख दारिद्र ज्यांरा दूर पुलावे ।
वरते क्रोड़ कल्याणो ।। ३ ।।

पुन जोगे मानव भव लाधो ।
चौबीसे जिनवरजी आराधो ।
लावो लेवोजी तुम लावो ।
ए चौबीस भजो सिर नामी ।
मोटा प्रभु साहिब अंतर्यामी ।
श्री मुक्ति तणाँ दातारो ।। ४ ।।

।। श्री जिन आयाजो हो ।।

श्री जिन आयाजी हो, प्रभुजी पधार्या जी हो ।
ऐ सोरठ देश मझार, हे द्वारमती नगरी भली ।। टेर ।।

श्री जिन वन्द्याजो हो, प्रभुजी ने वन्द्याजी हो ।
है कुंवर गजसुखमाल, हे अमिय सामने वाणी मै सुनी ।। १ ।।

माई मैं तो वन्द्याजी हो, अमां मैं तो वन्द्याजो हो ।
हे तारण तिरण री जहाज, हे अमिय सामने वाणी मैं सुनी ।।२।।

मांई मै तो जाण्योजी हो, अमां मैं तो जाण्योजी हो ।
यो संसार असार, हे स्वारथियो जग में सहू ।। ३ ।।

बच्चा तूं तो भोलो जी रे, जाया तूं तो भोलो जी रे।
है संयम खाण्डे री धार, है बाइस परीषह सेहणा दोयला ॥४॥

माता मांरो कालज हो, अमां मारो कालज हो।
यो नहीं गिणे वार तिवार, ऐ क्या जाणू अमां किण विध आवसी ।५।

अनुमती दीनी जी हो, आज्ञा दीनी जी हो।
है लियो संयम भार, लेकर काउसग्ग वन में रया ॥ ६ ॥

जठे सोमिल ब्राह्मण हो, जठे सोमिल ब्राह्मण हो।
है दीठा गजसुखमाल, हे कोप कियो छे मुनिवर ऊपरे ॥७॥

वैर विशेक लियो, पूरब वैर लीयो।
हे बांधी माटी री पाल, ऐ खेर राख्रो खीरा मस्तक मेलीया ।८।

मुनि समता आणी जी हो, जद समता आणी जी हो।
हे ध्यायो निर्मल ध्यान, ऐ कर्म निकाचित पिछला क्षय कीया ॥९॥

पाम्या पाम्या जी हो, पाम्या पाम्या जी हो।
पाम्या केवल ज्ञान, हे कर्म खपाई मुगते गया ॥ १० ॥

ऐ गुण गाया जी हो, ऐ गुण गाया जी हो।
ऐ सरवर नगर मझार, बेकर जोड़ी ने रतनो भणे ॥ ११ ॥

॥ श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥

श्री नेमीश्वर संभव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम।
अनन्त सुव्रत नमिनाथ सुजाणा।
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ १ ॥

अजितनाथ चन्दा प्रभु धीर, आदिश्वर सुपार्श्व गंभीर ।
विमलनाथ विमल जग जाण ।
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥२॥

मल्लीनाथ मंगलजिन रूप, वनुष पच्चीस सुन्दर स्वरूप ।
श्री अरनाथ नमु वर्द्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥३॥

सुमति पद्म प्रभु अवतंस, वासु पूज्य सीतल श्रेयांस ।
कुंथु पार्श्व अभिनन्दन भाण, श्री जिनवर मुछ करो कल्याण ॥४॥

इण पर जिनवर संभारिये, दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये ।
पच्चीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ५ ॥

इम भणता दुःख नावे कदा, जो निज पासे राखो सदा ।
धरिये पंच तणू मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ६ ॥

श्री जिनवर नामे वांछित मिले, मन वांछित सहू आशा फले ।
धर्मसिह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्पाण ॥ ७ ॥

॥ श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो ॥

शी महावीर स्वामी की, सदा जय हो सदा जय हो ।
पवित्र पावन जिनेश्वर की सदा जय हो २ ॥ टेर ॥

तुम्हीं हो देव देवन के, तुम्ही हो पीर पैगम्वर ।
तुम्हो व्रह्मा तुम्ही विष्णु, सदा जय हो, सदा जय हो २ ॥ १ ॥

तुमारे ज्ञान खजाने की, महिमा वहुत भारी है ।
लुटाने से वढ़े हरदम, सदा जय हो, सदा जय हो २ ॥ २ ॥

तुम्हारे नाम महिमा से, जागती वीरता भारी ।
हटाते कर्म लश्कर को सदा जय हो २ ।। ३ ।।

तुम्हारी ध्यान मुद्रा से, अलौकिक शान्ति झरती है ।
सिंह भी गोद पर सोते, सदा जय हो २ ।। ४ ।।

तुमारा संघ सदा जय हो मुनि मोतीलाल सदा जय हो ।
जवाहरलाल पूज्य वर की, सदा जय हो सदा जय हो ।। ५ ।।

।। श्री मुनि सुव्रत साहिबा ।।

(चेतरे चेतरे मानवी–यही देशी)

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीनदयाल देवा तणा देव के ।
तिरण तारण प्रभु मो भणी, उज्जवल चित्त सुमरू' नितमेव के ।१।

हूं अपराधी अनादि को, जनम-जनम गुणा किया भरपूर के ।
लूंटिया प्राण छः कायना, सेविया पाप अठार करूर के ।। २ ।।

पूर्व अशुभ कर्त्तव्यता, तेहने प्रभु तुम न विचार के ।
अधम उद्धारण विरुद छे, शरण आयो अब कीजिये सार के ।।३।।

किंचित पुन्य परभावथी, इण भव ओलख्यो, श्रीजिन धर्म के ।
निवर्तूं नरक निगोद थी, एहवो ही अनुग्रह करो परिब्रह्म के ।।४।।

साधुपणो नहिं संग्रह्यो, श्रावक व्रत न किया अंगीकार के ।
आदरया तो न आराधिया, ते हथी रुलियो हूं अनत संसार के ।।५।।

अब समकित व्रत आदरयो, तेने अराधी उतरू भव पार के ।
जनम जीतव सफलो हुवे, इण पर विनवूं वार हजार के ।। ६ ।।

'सुमति' नराधिप तुम पिता, धन-धन श्री 'पदमावती' माय के ।
तस सुत त्रिभुवन तिलक तूं, वन्दत 'विनयचन्द' शीश नमाय के ।७।

।। करलो २ ए प्यारे ।।

(तर्ज—जावो २ ऐ मेरे साधु रहो गुरू के संग)

करलो करलो, अय प्यारे सजनो, जिनवाणी का ज्ञान ।। टेर ।।

जिसके पढ़ने से मति निर्मल, जगे त्याग तप भाव ।
क्षमा दया मृदु भाव विश्व में फैल करे कल्याण ।।१।।

मिथ्या-रीति अनीति घटे जग, पावे सच्चा ज्ञान ।
देव गुरू के भक्त बने सब, हट जावे अज्ञान ।।२।।

पाप पुण्य का भेद समझ कर, विधियुत देवो दान ।
कर्मबन्ध का मार्ग घटाकर, कर लेओ उत्थान ।। ३ ।।

गुरूवाणी में रमने वाला, पावे निज गुण भान ।
रायप्रदेशी क्षमाशील बन, पाया देव विमान ।।४।।

घर घर में स्वाध्याय बढ़ाओ, तजकर आरत ध्यान ।
जन जन की आचार शुद्धि हो, बना रहे शुभ ध्यान ।।५।।

मातृ-दिवस में जोड़ बनाई (या) घर आदीश्वर ध्यान ।
दो हजार अष्टादश के दिन 'गजमुनि' करता गान ।।६।।

।। अगर जीवन बनाना है ।।

(तर्ज : अगर जिनराज के चरणों में)

अगर जीवन बनाना है, तो सामायिक तू करता जा ।
हटाकर विषमता मन में, साम्यरस पान करता जा ।। ध्रुवपद ।।

मिले धन सम्पदा अथवा. कभी विपदा भी आ जावे ।
हर्ष और शोक से बचकर, सदा एक रंग रहता जा ।। १ ।।

विजय करने विकारों को, मनोबल को बढ़ाता जा ।
हर्ष से चित्त का साधन, निरंतर तू बनाता जा ।। २ ।।

अठारह पाप का त्यागन, ज्ञान में मन रमता जा ।
अचल आसन व मित-भाषण, शांत भावों में रमता जा ।। ३ ।।

पड़े अज्ञान के बन्धन, सदा मन को घुमाता है ।
ज्ञान की ज्योति में आकर, अमित आनन्द बढ़ाता जा ।। ४ ।।

पड़ा है कर्म का बन्धन, पराक्रम तू बढ़ाता जा ।
हटा आलस्य विकथा को, अमित आनन्द पाता जा ।। ५ ।।

कहे 'गजमुनि' भरोसा कर, परम रस को मिलाता जा ।
भटक मत अन्य के दर पर, स्वयं में शान्ति लेता जा ।। ६ ।।

।। जिन मत पथ परिचायक जय हे ।।

(तर्ज : जन मन गण)

जिन मत पथ परिचायक जय हे, महावीर दुःख त्राता ।। टेर ।।

गुण गण खान राह दर्शाओ, जीवन प्राण हमारे ।
तीर्थंकर प्रणमुं प्रभु तुमको केवल ज्ञानी प्यारे ।

जीव अनेकों तारे, भवसागर के पारे, अनुपम ज्योति प्रदाता ।
महागुण गण भंडारक तुम हो, तीन भुवन के भ्राता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे ।।तीन।।१।।

गौतम सरीखे शिष्य तुम्हारे, गणधर हुए हमारे ।
साधु साध्वी चारों संघ को गिनती करत न जाये ।

देव मनुष्य, पशु आये, वाणी रसमय पाये, समवशरण मंडाये ।
हे सर्वज्ञ ज्ञान गुण दाता, इन्द्र नरेन्द्र महाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे ।।तीन ।।२।।

जन जन के जीवन में प्रभुवर, स्नेह की ज्योति जगाओ ।
वसुंधरा की प्यास बुझाकर नव संदेश सुनाओ ।

अब तो अवसर आया, 'गणेश' कच्चा पाया, पक्का जिसे बनाओ ।
हे दुर्जन के घ्राता, तुमको हम नत करते माथा ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे ।।तीन।।३।।

॥ थां तो दया करलो ॥

(तर्ज : पल्लो लटके)

दया करलो, हां सजनाँ दया करलो,

आज अवसर रूड़ो है, भाइयों थाँ तो दया करलो ॥ टेर ॥

पांच आश्रव सेवण रा तो, त्याग मुनिजी करावे ।
साथ साथ दया करणें में, आनंद घणो आवे ।
हो म्हारी सुणलो दया निधान ॥ थां ॥ १ ॥

बाया रो तो ठाट हमेशा, आगे धर्म में भारी ।
लारे उणां सुं रेणों नहीं है, करलो आगे त्यारी ।
जोर लगावो भारी ।
नंबर आगे दोनी लगाय ॥ थां ॥ २ ॥

शूरवीर सरदारां थां तो, लारे मत ना रहीजो ।
धर्म ध्यान री गंगा में थां, नित नित आके न्हाइजो ।
पियंकर जोर लगावो राज ।
मां तो ल्हावो लीजो राज ॥ थां ॥ ३ ॥

॥ जायेगा जब यहां से ॥

जाएगा जब यहाँ से, कुछ भी न पास होगा ।
दो गज कफन का टुकड़ा तेरा लिबास होगा ॥

मतलव को है ये दुनियां, क्या अपने क्या पराये।
कोई न साथ आया कोई न साथ जाये॥

दो दिन की जिन्दगी है, करले जो दिन में आये, जाएगा ..

यह ठाट वाट तेरा, यह आन वान तेरी।
रह जायगी यहीं पर, यह सारी शान तेरी॥

इतनी-सो है मुसाफिर वस, दास्तान तेरी, जाएगा ...

॥ नहीं सीखा तो क्या सीखा ॥

(तर्ज : आजा मेंरी वर्वाद........)

प्रेम की धार में बहना नहीं सीखा, तो क्या सीखा ?
परस्पर प्रेम से रहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

अगम है प्रेम का मारग, कठिन है शान्ति की मंजिल।
राह की आफतें सहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

तप्त व्याकुल कलेजों पर, लगा कर शान्ति की मरहम।
प्रेम के चुटकले कहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

भूल कर भूल औरों की, भूल को जानकर अपनी।
जगत में ज्ञान गुण गहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

॥ भारत से धर्म देखलो ॥

(तर्जः—आये भी वोह गये भी······)

भारत से धर्म देख लो. अब तो रवाना हो गया;
किसको सुनाएँ भाइयो ! बहरा ज़माना हो गया।

लड़के का बाप पूछता, कन्या के साथ दोगे क्या;
मोटर विना तो व्याह का, मुश्किल रचाना हो गया।

लड़की हो कैसी गुणवती, चाहे हो सीता सती;
लड़के का लालची पिता, धन पर दीवाना हो गया।

मिलनी का फ़कत नाम है, मोहरो से असली काम है;
काम अमीरों का ग़ज़ब, लूट के खाना हो गया।

लाए बहू जो दाज कम, करते हैं उसका दम खतम;
बेटी के बाप को सितम, सर पै उठाना हो गया।

सोने से जिनके भरे हैं घर, डूबे हैं हाय ! वे बशर;
बेचते हैं वे लख्ते जिगर, व्याह बहाना हो गया।

माला फिराएँ रात-दिन, छुरियाँ चलाएँ रात दिन;
'चन्दन' हरा-भरा चमन, आज वीराना हो गया।

।। प्रभु वीर नाम तो वालो ।।

(तर्ज:—थांरी उमर बीती जाय.........'मारवाड़ी)

प्रभुवीर नाम तो, बालो है सगलां ने, जी है सगलां ने,
तूं भवसागर तिरजाय, वीर ने भजले ।। टेर ।।

भव अनेक तूं फिर ने, है आयो मन रे, आयो मन रे।
थोड़ो बुरे भले रो ध्यान, करेलां कद रे ।। प्रभु वीर ।।१।।

ओ गर्व इतो कांई करे, तूं फूलियो चाले रे, फुलियो चाले ।
पर थने खबर नहीं है, होसी कांई काले ।। प्रभु वीर ।।२।।

तूं सामायिक स्वाध्याय, एक चित्त धर रे, एक चित्त धर रे ।
थारे मन ने वस में राख, भाव शुद्ध करले ।। प्रभु वीर ।।३।।

ओ मिनख जमारो है चोखो, काम कुछ करले, काम कुछ करले।
ओ पल पल वीतो जाय, करेलां कद रे ।। प्रभु वीर ।।४।।

थारे गोडा में होवे दर्द, कमर गई झुक रे, कमर गई झुक रे ।
थारी अंखियां सू दीसे नांही, कान गया रुक रे ।। प्रभु वीर ।।५।।

थारां नाती-पोता केवे, मरेलां कद रे, जावेलां कद रे ।
थांरो लेखो लेसी राम, मरेलां जद रे ।। प्रभु वीर ।।६।।

'अर्जुन मेहता' थारां दर्श पावण री चाहवे, पावण री चाहवे ।
प्रभु एड़ी शक्ति देय, ओ जनम सुधारे ।। प्रभु वीर ।।७।।

॥ किस को आता है ॥

(तर्ज—यहां दिल का लगाना........)

यहां लेकर जनम जीवन, विताना किस को आता हैं।
पुजारी सत्य का बनकर, दिखाना किस को आता हैं ॥

कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन हैं।
मगर ईमानदारी से, कमाना किसको आता हैं ॥

मिटाते गैर की हस्ती, हजारों हमने देखें हैं।
अहिंसा-सत्य पर खुद को, मिटाना किसको आता हैं ॥

अरे ! मनके पे मनका तो, गिराते हैं बहुत बन्दे।
महा चञ्चल मगर मन का, टिकाना किसको आता हैं ॥

हजारों हमने देखे हैं, मुहब्बत करते मतलब सें।
बिना मतलब मुहब्बत का, लगाना किसको आता हैं ॥

खिलाने के लिए छत्ती, पदार्थ भी खिला देतें ॥
विदुर बन प्रेम से किन्तु, खिलाना किसको आता हैं ॥

गिरा करके गिरी दुख कें, गरीबों को रुलाते हैं।
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन', हंसाना किसको आता हैं ॥

॥ देखते जाओ ॥

दशा इस देश भारत की, निराली देखते जाओ।
दमक ऊपर की सब अन्दर से खाली देखते जाओ ॥

धनी जो भी कहाते हैं, वे बेटा जब विवाहते हैं।
बड़ी झोली फैलाते हैं, कंगाली देखते जाओ ॥

ये जितने बाबू दिखते हैं, जो खुद को बी.ए. लिखते हैं।
सरे मैदान बिकते हैं, प्रणाली देखते जाओ ॥

बरातें जितनी आती हैं, शराबें बस उड़ाती हैं।
नहीं बिल्कुल लजाती हैं, दीवाली देखते जाओ ॥

जनम से है तो हिन्दी हर, सभी फैशन फिरंगी पर।
उधर ऊपर से इकदम सर, बंगाली देखते जाओ ॥

लगे मैया न अब चंगी, लगे गैया न अब चंगी।
दशा क्या हमने बे ढंगी, बनाली देखते जाओ ॥

कभी जो खीर खाते थे, दही-रबड़ी उड़ाते थे।
जरा सी चाय की पाते हैं, प्याली देखते जाओ ॥

क़दर हो त्याग वालों की, गुणीजन बे मिसालों की।
ये हीरे और लालों की, दलाली देखते जाओ ॥

भरे जो धर्म की उल्फत, सिखाए देश की खिदमत।
'मुनि चन्दन' की ये अद्भुत, क़व्वाली देखते जाओ ॥

॥ हो जाने वाले दुनिया में ॥

(तर्ज—इक प्रदेशी मेरा दिल ले गया)

हो जाने वाले ! दुनियां में नाम करजा।
भूले न ज़माना कोई काम करजा....॥ १ ॥

वही है भलाई, जो भुलाई करके।
कैसी वह भलाई, जो सुनाई करके।
स्वार्थों को सज्जना ! सलाम करजा....॥ २ ॥

जमी जड़ जग से, हिलाई पाप की।
भक्ति सिखाई, भाई-माई-बाप की।
अपने को 'महावीर' 'राम' करजा....॥ ३ ॥

दूर कर खुदी का, ख़याल दिल से।
बदियों-बुराइयों को, निकाल दिल से।
पर उपकार सुबह-शाम करजा....॥ ४ ॥

दीन-हीन दुखी, जो वेचारे पड़े हैं।
कर्मों के मारे, वेसहारे पड़े हैं।
दूर दुख उनका, तमाम करजा....॥ ५ ॥

बात है ये तेरे लिए, गहरे ग़ौर की।
अपने ही जैसी जान, जान और की।
खुशी का ख़जाना, ख़ास-आम करजा ॥ ६ ॥

ऊपर तू चाहे, जितना कठोर हो।
करुणा का अन्दर, मगर ज़ोर हो।
अपने को बांवरे ! बादाम करजा....॥ ७ ॥

कपट-कुटिलता, न कर कलेश तू।
मोह-द्रोह दिल से, विसार दे द्वेष तू।
सारा सनसार, सुखधाम करजा....।। ८ ।।

शुद्ध शील शान से, निभाया सेठ ने।
सूलो का सिंहासन, बनाया सेठ ने।
चर्णों में उनके प्रणाम करजा ...।। ९ ।।

सन्तों का संग हो, सुपात्र-घ्यान हो।
तप हो या जप, हो या ज्ञान-ध्यान हो।
'चन्दन' सभी तू निष्काम करजा....।। १० ।।

।। सदा याद अर्हम् ।।

सदा याद अर्हम्, किया कर – किया कर।
ये है नाम पावन, लिया कर लिया कर ।।

प्यास अपने ही दिल की, मिटाना जो चाहे।
प्रभु-प्रेम-प्याला, पिया कर – पिया कर ।।

तू तृष्णा के ज़खमों को, बनकर भक्त जन।
सबर की सुई से, सिया कर सिया कर ।।

सुखों की है ख़ाहिश, अगर तेरे दिल में।
तो औरों को सुख तू दिया कर—दिया कर ।।

बना करके 'चन्दन', सफल अपना जीवन।
तू लाखों वर्ष तक, जिया कर—जिया कर ।।

॥ नजर भर देखलो प्यारे ॥

नजर भर देखलो प्यारे ! अजब कर्मों की माया है ।
कोई नर महल में बैठा, उड़ाता ऐश मन माने ।
किसी ने टोकरी ढो-ढो, वक्त वन में बिताया है ॥ १ ॥

कोई नर पालकी चढ़कर, चला देखो हवा खाने ।
किसी ने शीश के ऊपर, उसे अपने उठाया है ॥ २ ॥

कोई नर इत्र को तन पर, लगाता है सदा सेरों ।
किसी को तेल इक तोला, नहीं खाने को पाया है ॥ ३ ॥

कोई नर पुष्प-शैया पर, खुर्राटे भर रहा लेटा ।
किसी ने कंकरों पर नींद, को देखो भुकाया है ॥ ४ ॥

कोई नर तख्त के ऊपर, हैं बैठा शान से डट कर ।
पड़ा इक जेल में सड़ता, अति दुःख दिल में छाया है ॥५॥

किसी के चांद से बेटे, हैं करते घर में क्रीड़ायें ।
किसी को है यही चिन्ता, नहीं घर एक जाया है ॥ ६ ॥

किसी का स्वर सुधा सा जो, मिटाता दर्द सब दिल के ।
किसी का बोल गोली सा, गजब जिसने कि ढाया है ॥ ७ ॥

किये जो कर्म जिस-जिसने, रहा वो भोग फल वैसे ।
पकड़ कर्मों ने अय 'चन्दन', जगत भर को नचाया है ॥८॥

॥ अरे ईश्वर ने दुनियां को ॥

(तर्ज : तेरे कूचे में अरमानों....)

अरे ! ईश्वर ने दुनियां को, नहीं भाईयो ! बनाया है ।
अनादि की ये है दुनियां, अड़ंगा क्यों लगाया है ॥ १ ॥

कहो गर कि बनाए बिन, न कोई वस्तु बन सकती ।
तो पूछेंगे हमीं-ईश्वर, को भी किसने बनाया है ॥ २ ॥

अगर हैं वो बनाए बिन, जगत को भी यूं ही समझो ।
जगत, ईश्वर अनादि के, जिनेश्वर ने बताया हैं ॥ ३ ॥

भला उसको जरूरत क्या, बनाए खामखा दुनिया ।
अमूरत बे जरूरत को, मुफत कर्ता ठहराया हैं ॥ ४ ॥

जगत रचने से क्या पहले, वो परमात्म अपूर्ण था ।
जो पूर्ण था, बना जग को, नफा क्या उसने पाया है ॥५॥

जरा सोचो-विचारो तो, असल में चीज क्या जग है ।
अलावा 'जड़' व 'चेतन' के नहीं कुछ हमने पाया हैं ॥६॥

बनाई हैं अगर रूहें, अमर फिर हो नहीं सकतीं ।
बनी चीजें मिटे जैसे, मिटे बादल की छाया है ॥ ७ ॥

रहा मादा, बना ईश्वर, कभी उसको नहीं सकता ।
असत की सत् से उत्पत्ति, बता जग क्यों हँसाया है ॥ ८ ॥

बनाया आस्मां तक जब, बताते हो उसी का तुम।
रहा फिर खुद कहां कोई, ठिकाना न बकाया हैं ॥ ९ ॥

अरे भाइयों! जरा देखो, ये अपनी खोल कर आंखें।
अन्धेरा आज तक ढो-ढो, जन्म यूं ही गंवाया हैं ॥१०॥

नहीं हैं हाथ-मुख उसके, बनाया किस तरह जग को।
यूं ही कहने से क्या हासल, रचाया है—रचाया हैं ॥११॥

नफा जिद में नहीं कोई, बने हो किस लिए जिद्दी।
कि मानो त्यागकर हठ को, जो 'चन्दन' ने सुनाया हैं ॥१२॥

॥ अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त ॥

प्रातः काल जो नींद बिसारा करे।
तेरे तन से जो सुस्ती किनारा करे।
हो कर प्रेम में मस्त पुकारा करे।
नाम प्यारा ये पल-पल उचारा करे।
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त ॥ १ ॥

राहे नेकी जगत को दिखा कर गये।
डंका जैनधर्म का बजा कर गए।
हिंसा, झूठ, पाखण्ड मिटा कर गए।
कौन जगत को जन्नत बना कर गए?
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त ॥ २ ॥

किया किसने विजय राग को द्वेष को ?
माया, मान और लोभ, कपट क्लेश को ?
गए निद्रा से कौन जगा देश को ?
देकर सत्य के सुखकारी सन्देश को ?
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त ।। ३ ।।

सच्चे धर्म के रहबर थे ज्ञाता यही ।
दया-सिन्धु, अभयदान दाता यही ।
जगत-स्वामी यही, पिता-माता यही ।
'मुनि चन्दन' सदा नाम ध्याता यही ।
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त ।। ४ ।।

।। वन्दे वीरम् ।।

जबां से कहो हर घड़ी, वन्दे वीरम् ।
लगाती है सुख की, झड़ी वन्दे वीरम् ।।

झुकाया ज्यों अर्जुन, सुदर्शन के आगे ।
हटाती है विपता, पड़ी वन्दे वीरम् ।।

ये आधि व व्याधि, उपाधि को जड़ से ।
मिटाने में कामिल, जड़ी वन्दे वीरम् ।।

तेरे तन-भवन का जो, है द्वार-मुखड़ा ।
रहे रक्षिका बन, खड़ी वन्दे वीरम् ।।

जगे ऐसी किस्मत, रहोगे जी ! विस्मित ।
अनोखी है जादू-छड़ी, वन्दे वीरम् ।।

रहेगा खुशी में, यहाँ भी—वहां भी।
जिसे होगी प्यारी, बड़ी वन्दे वीरम् ॥

अरे दुनिया वालों! हृदय पे सजालो।
समझ मोतियों की, लड़ी वन्दे वीरम् ॥

यही कामना हैं, यही भावना हैं।
रहे लब पे 'चन्दन', चढ़ी वन्दे वीरम् ॥

॥ नहीं हैं भरोसा जरा जिन्दगी का ॥

नहीं है भरोसा, जरा जिन्दगी का।
मजा लूट वन्दे! प्रभु-बन्दगी का ॥ १ ॥

निकलता हैं सड़कों पे, फैशन लगा कर।
अकड़ता हैं तन को, बड़ा तू सजा कर।
पिटारा है, इक ये भरा गन्दगी का ॥ २ ॥

लगाए मुहब्बत से, सुन्दर बगीचे।
सजाए भवन जो, बिछा कर गलीचे।
सदा साथ देते, नहीं आदमी का ॥ ३ ॥

चला कर के दिल में, दया का फव्वारा।
दिया दीन-दुखियों को, जिसने सहारा।
उसी का है जीवन, हंसी का-खुशी का ॥ ४ ॥

उमर देख पल-पल, घटी, जा रही है।
निकट मौत छिन-छिन, चली आ रही है।
समझ ले तू 'चन्दन' इशारा घड़ी का ॥ ५ ॥

।। अमोलक जन्म पाया हैं ।।

(तर्ज : बहारों फूल बरसाओ....)

प्रेम के गीत नित गाओ, अमोलक जन्म पाया हैं।
सुमानव बन के दिखलाओ, अमोलक जन्म पाया हैं ।।

समझते हो सिर्फ अच्छा, हमेशा पीने-खाने को।
बने हो किस लिए नास्तिक, भुलाकर जग से जाने को।
जरा अब होश में आओ, अमोलक जन्म पाया हैं ।।

कभी परलोक को दिल से, भुलाना हैं नहीं अच्छा।
भलाई तज बुराई का, कमाना हैं नहीं अच्छा।
कपट-छल-लोभ बिसराओ, अमोलक जन्म पाया है ।।

स्वर्ग के देव भी जिनकी, सदा सेवा बजाते थे।
कहां है चक्रवती वे, धरा को जो कम्पाते थे।
न धन-यौवन पे इतराओ, अमोलक जन्म पाया है ।।

रहे न कंस से जालिम, रहे रावन से न कामी।
मगर इक रह गई उनकी, जगत के बीच बदनामी।
समझकर सबको समझाओ, अमोलक जन्म पाया है ।।

'मुनि चन्दन' वचन मन से, वदन से व ईशारे से।
कभी भी कष्ट न कोई, किसी को हो तुम्हारे से।
सदा आराम पहुँचाओ, अमोलक जन्म पाया है ।।

।। लड़की को ।।

(कव्वाली)

जमाने का न जो चाहो, लगाना रंग लड़की को।
पढ़ाते हो भला लड़कों के, फिर क्यों संग लड़की को ।।

जो जल का संग पाता है, बिगड़ लोहा वो जाता है।
लगेगा लोह की भांति, से क्यों न जंग लड़की को ।।

जरा गहराई में जाएं, सचाई का पता पाएं।
कभी छोड़ेंगे क्या लड़के, किए बिन तंग लड़की को ।।

नहीं दश की पढ़ाई कम, खरीदो मत मुफत का गम।
पिलाओ हाथ से अपने, अरे ! न भग लड़की को ।।

पढ़ो मैट्रिक पढ़ाई है, सभी सीखी सिलाई हैं।
समझ लो आ गया घर का, सभी ही ढंग लड़की को ।।

पढ़ाना फिर भी हो ज्यादा, तो सारा वेश हो सादा।
पढ़ाना पर नहीं अच्छा, कभी वेढ़ंग लड़की को ।।

ये क्यों शृंयार कौलिज में, ये क्यों शृंगार नौलिज में।
लगा क्यों रोग फ़ेशन का, ये ऊटपटांग लड़की को ।।

पहन कर तंग पोशाकें, निरी वेढ़ंग पोशाकें।
दिखाना चाहिये दुनिया को, क्या यों अंग लड़की को ।।

सरलता-शील से 'चन्दन', चमकता जिसका था जीवन।
मगर है देखकर दुनिया, दसी अब दंग लड़की को ।।

।। न दुनिया में, दिल तूं ।।

(तर्ज—तेरे प्यार का आसरा....)

न दुनिया में दिल तू. फंसा अय मुसाफ़िर ।
न मंज़िल को अपनी, भुला अय मुसाफ़िर !

जगत के नज़ारे जो, लगते हैं प्यारे ।
रहे कर ईशारे, न जा अय मुसाफ़िर !

ज़रा बन सयाना, अगर मुक्ति जाना ।
न हरगिज़ कमाना, दग़ा अय मुसाफ़िर !

ये चञ्चल-चाल चित, टिकाने में हैं हित ।
यशः—कीर्ति नित की, कमा अय मुसाफ़िर !

कोई राजा-राणा, हमेशा रहा ना ।
हैं जाता ज़माना चला अय मुसाफ़िर !

सभी तज झमेले, हैं जाना अकेले ।
महल न तबेले, बना अय मुसाफ़िर !

ले बिगड़ी बना तूं, ले किस्मत जगा तूं ।
प्रभु-गीत गा तूं, ज़रा अय मुसाफ़िर !

अहिंसा-सचाई, न तजना अच्छाई ।
मगर कर भलाई, भुला अय मुसाफ़िर ।

रटे 'त्रिशलानन्दन', कटें कर्म-बन्धन ।
ये कहता है 'चन्दन' सदा अय मुसाफ़िर !

।। सुना आपने नहीं कभी क्या ।।

सुना आपने नहीं कभी क्या, वचन श्रीगुरु ज्ञानी का
तरने को संसार सदा, 'स्वाध्याय' करें जिनवाणी का ।।

पढ़ा स्वयं को जाए जिस से, स्वाध्याय कहलाता है।
कैसा है स्वाध्याय पता न, जिस से, अपना पाता है।
समकित-ज्योति जगाकर जोकि, सन्मार्ग दिखलाता है।
ग्रन्थ वही स्वाध्याय के बस, लायक माना जाता है।
उलटे राह चलाए जो क्या, पढ़ना कथा-कहानी का ।।१।।

यह तो सर्व विदित है तप से, कर्म सभी कट जाते हैं।
'वीरप्रभु' स्वाध्याय को, 'आभ्यन्तर' तप बतलाते हैं।
नर पुंगव जो इसको आलस, तज करके अपनाते हैं।
सुर दुर्लभ इस जीवन को बस, वे ही सफल बनाते हैं।
बाकी का तो जनम अरे ! है, केवल कौड़ी कानी का ।।२।।

ज्ञान-शून्य तो मानव जग में, जीवन व्यर्थ गंवाता है।
आत्म का-परमात्म का न, पता उसे कुछ पाता है।
चौरासी के चक्कर में फंस, कष्ट अनेक उठाता है।
अन्त कभी भी कष्टों का न, उस के फिर तो आता है।
दुख का ही बस बनता सागर, जीवन उस अज्ञानी का ।।३।।

राग-द्वेष का लेश नहीं है, देखो तो 'जिनवाणी' को।
पार तभी भवजल से पल में, करती है ये प्राणी को।

एक वार भी देखा जिसने, श्रद्धा से कल्याणी को।
पावन परम बनाया उसने, अपनी इस जिन्दगानी को।
पग-पग पर ही परम लाभ है, काम भला क्या हानि का ॥४॥

जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन की कली खिलायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन को शान्त बनायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन का तमस् मिट।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, सारे कष्ट भगायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय अतः, कर्त्तव्य प्रथम है प्राणी का ॥५॥

जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, आप स्वयं को जानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, सत्यासत्य पहचानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, हठ न झूठी ठानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, न्याय वचन को मानेंगे।
वैठेंगे न कभी बिलौना, भर करके फिर पानी का ॥६॥

नियम अतः स्वाध्याय करने का अय बन्धो ! करियेगा।
तरने के शुभ पथ पे अपने, कदम मुस्तैदी धरियेगा।
सफल मनोरथ आप वनेंगे, नहीं जरा भी डरियेगा।
कालअनादि के दुःख-संकट, सारे अपने हरियेगा।
कठिन नहीं सुलझाना कुछ भी, 'चन्दन' उलझी तानी का ॥७॥

॥ कुव्यसन सात दुखदाई ॥

कुव्यसन सात दुखदाई, सव त्यागो जी ! नर-नार....

जो जूआ खेल रचावें, नल-पाण्डव सम पछतावें।
जब जावें सब कुछ हार....

जो चोरी के दीवाने, हैं जाते बन्दीखाने।
दे चमड़ी पुलिस उतार....

बेतरस मांस जो खावें, खा-खा के पेट फुलावें।
मर, जाते यम के द्वार....

क्यों नर्क गति न पावें, क्यों मार न यम की खावें।
है जिनका शौक शिकार....

बन मदिरा के मतवाले, जो भर-भर पीते प्याले।
हो नर्कों में सत्कार....

पर पुरुष, पराई नारी, जो तकते दुष्टाचारी।
फिट लानत दे सनसार....

घर गणिका के जो जावें, नर नर्कगति वे पावें।
सिर पड़ती यम की मार....

इन सातों से भय प्यारे ! जब तक न रहो किनारे।
हैं जप-तप सब बेकार....

जो प्राणी हो बड़भागी, वही बनता इनका त्यागी।
औ स्वर्ग-मुक्त हकदार....

जो इन से करे किनारा, हो उन का ही निस्तारा।
यों 'चन्दन' कहे पुकार....

।। ईश है पूर्ण गुण भण्डार ।।

ईश है पूर्ण गुण भण्डार ।

राग, द्वेष, मोह, मद, मत्सर ।
काम, कपट, छल, कोप, अहितकर ।
लालच, चिन्ता, निर्बलता, भय ।
उस में नहीं हैं बाकी तिलभर ।
अजर-अमर पद अक्षय धार........

सृष्टि रचे न वो संहारे ।
जग-प्रपंच से रहे किनारे ।
देता नहीं कर्म के फल को ।
देखो गीता साफ पुकारे ।
पंचम लो अध्याय विचार........

अग-पावन में, नहीं है थल में ।
पर्वत पे न कहीं है जल में ।
दूर है वस्ती-जंगल उस से ।
रहता नहीं किसी महफिल में ।
सर्व शुद्ध वह अपरम्पार........

मृगों में गर ईश्वर रहता ।
झपट सिंह की कभी न सहता ।
खाता खौफ अगर वो फिर भी ।
कौन बली तब उसको कहता ।
निर्बल बनता जग मंझार........

सर्व व्यापी ईश्वर गर है।
वेश्या के भी तब तो घर है।
रोके क्यों न पाप वहां वो ?
मान रहा क्या उसका डर है।
बैठा देख रहा व्यभिचार.......

बात वास्तव में नहीं ऐसी।
लोग समझते उसको जैसी।
सर्व व्यापक उसे जो कहते।
वाकफियत है उनको कैसी।
मगज रहे हैं यूं ही मार.......

यह तो जाने सब संसारी।
जनम-मरण में है दुःख भारी।
उसे जरूरत क्या जो आये।
बीच गर्भ के वो अविकारी।
लेता कभी नहीं अवतार.......

नहीं जगत का वो संचालक।
क्या मतलब वो बने जो मालिक।
इच्छा रहित है जब कि इकदम।
खेल करे क्यों बन कर बालक।
सोचो दिल में करो विचार.......

सर्व शक्ति का गर हैं धारी !
क्यों नहीं रोके चोरी—यारी ?
फल भुगताने में ही गर वो।
खर्च करे हैं शक्ति सारी।
कर्माधीन कहे सनसार.......

पापों को गर देवे माफी।
फैले तब तो बेइनसाफी।
जुल्म करे ख्वाह जितना कोई।
क्षमा मांगना बस है काफी।
किन्तु नहीं वो वक्षन हार.......

जैसा जो कोई कर्म कमावे।
वैसा उसका का फल वो पावे।
मूरख बन्दा महा अज्ञानी।
दोषी ईश्वर को ठहराये।
भूला फिरता ये सनसार.......

परम पवित्र हैं वो प्यारा।
जग से 'चन्दन' हैं वो न्यारा।
दया भाव है उसकी भक्ति।
पाप कटे जिस से सारा है।
दुनिया को कहदो ललकार.......

।। अगर पत्तों के हिलने से ।।

अगर पत्ते के हिलने से, पता ईश्वर का मिलता है।
उसी के हुकम से बागों में, इक–इक फूल खिलता है।

तो जब जालिम का नश्तर, बेकसों के दिल पे चलता है।
बता यह भी तेरे परमात्मा का, हुकम चलता है।

गलत है अगर तू परमात्मा, को यों समझता है ।।१।।

अगर परमात्मा सब काम, दुनिया के चलाता है।
वही दुनिया रचाता है, इसे खुद ही सजाता है।

तो क्यों हमको सुलाता और, चोरों को बुलाता है।
भयानक आंधियां तूफान, और भूंचाल लाता है।

मुझे ये भेद न परमात्मा, का समझ आता है ।।२।।

हर इक इनसान और हैवान, अगर उसका बनाया है।
गरज चींटी से हाथी तक, सभी में उसकी माया है।

तो क्यों इक दूसरे के हाथों से, उनको सताया है।
कोई रहजन बनाया है, किसी का घर लूटाया है।

तू ही बतला कि इसमें भेद, क्या उसने छिपाया है ।।३।।

अजब हाकम है पहले चोर, से चोरी कराता है।
न चोरों को हटाता है, न मालिक को जगाता है।

मगर जब चोर चोरी करके, घर में पहुंच जाता है।
तो फिर क्यों बाद में पोलीस, को हरकत में वो लाता है।
कहीं रिश्वत दिलाता है, कहीं कैदें कराता है ॥४॥

कसाई को छुरा देकर क्यों, नाहक खूं बहाता है।
ये क्यों हैवान को इनसान, का खाना बनाता है।

किसी की जान जाती हैं, किसी को लुत्फ आता हैं।
कोई आंसू बहाता हैं, कोई खुशियां मनाता हैं।
मेरे परमात्मा को खेल ये, हरगिज न भाता हैं ॥५॥

तेरा कहना कि हर इक फल, किए कर्मों का पाता हैं।
सही है पर इसे क्यों मुफ्त, का जामन बनाता हैं।

मुझे ये फिलसफा तेरा, न हरगिज समझ आता हैं।
कराके फेल बद खुद हो, फिर उसका फल चखाता हैं।
तेरा परमात्मा पहले ही, क्यों न रोक पाता हैं ॥६॥

मगर परमात्मा को मैंने, निराकार समझा हैं।
उसे निर्दोष और निरपक्ष, निर आहार समझा हैं।

अमर, आनन्द, सत चित, जलवाए अनवार समझा हैं।
तू क्यों दुनियां के धंधों में, उसे गिरफ्तार समझा हैं।
हकीकत ये है तू परमात्मा, को गलत समझा हैं ॥७॥

।। देखते ही देखते जमाना ।।

(तर्ज—चुप-चुप खड़े हो जरुर कोई बात हैं)

देखते ही देखते, जमाना कहीं जायगा ।
आपको यकीन, किन्तु भाईयों ! न आयगा ।।

हमने जमाना चाहे, कम देखा-भाला है ।
फैशन का बोलबाला, खूब होने वाला है ।
फूफा फिरंगी का भी, हिन्द कहलायगा ।। १ ।।

सादगी अलोप होगी, खर के विषाण सी ।
चलेंगे जवान चाल, इंगलिस्तान सी ।
शोक ! शौक टाई का, सभी को तड़पायगा ।। २ ।।

मर्दो की चल चाल, बाल कटवायंगी ।
कोट और पतलून, भी तो नारियां डटायंगी ।
मरद मगर वन, देवी दिखलायगा ।। ३ ।।

पुरुषों से अधिक, आजाद होंगी नारियां ।
दो-दो गुत्तां, नंगे सिर, ब्याहियां-कुमारियां ।
आयगी न उन्हें लाज, आदमी लजायगा ।। ४ ।।

देख लेना तब आप, सुबह और शाम जी ।
दोस्तों के साथ होगी, सैर सरे आम जी ।
पतिदेव, रोयेंगे तो, कोई मुस्कायगा ।। ५ ।।

झगड़े सिखाते और, आप ही नचाते हो।
बाद में क्यों बेटियों को, बुरा बतलाते हो।
बोय के धतूरा कोई, कैसे आम खायगा ॥ ६ ॥

अधिक अच्छाई के या, अधिक बुराई के।
देखना नतीजे आप, साथ की पढ़ाई के।
अपने ही आप ये, जमाना बतलायगा ॥ ७ ॥

मरद बेकार होगा, कामनी कमायगी।
घर छोड़ दफतर, दौड़ी-दौड़ी जायगी।
आगे-पीछे चपरासी, चक्कर लगायगा ॥ ८ ॥

बचेंगे बहुत कम, अण्डे से-शराब से।
घर में न भुनी भांग, बनेंगे नवाब से।
नशा निर्लज्जता का, लज्जत चखायगा ॥ ९ ॥

लिया है जिन्होंने ठेका, पाप के प्रचार का।
फिल्में निकालेंगो, दिवाला सदाचार का।
फूटे भाग हर राग, आग बरसायगा ॥ १० ॥

रेडियो के राग भी, न होंगे कुछ काम के।
चरित्र बिगाड़ेंगे जो, खूब खास-आम के।
सुनेगा सयाना जो भी, वह पछतायगा ॥ ११ ॥

आन और मान दोनों, जान से भी प्यारे थे ।
शील-सत- लाज पर, प्राण तक वारे थे ।
कैसे कोई पद्मनी, राणी को भुलायगा ॥ १२ ॥

सदाचार-सादगी से, होगा वैर जग को ।
होटलों की भायगी, हमेशा सैर जग को ।
साफ-शुद्ध घर वाला, भोजन न भायगा ॥ १३ ॥

किसी-किसी सत्संगी, वीर के भगत में ।
थोड़ी-बहुत वची है जो, सादगी जगत में ।
इस की भी जगह ध्वज, फैशन फहरायगा ॥ १४ ॥

ऐसा अविवेकी होगा, बेटा सतसार में ।
समझेगा शान जो, पिता से तकरार में ।
माता का मजाक भी, चलाक वह उड़ायगा ॥ १५ ॥

भक्ति-स्थानों में भी, पाप डेरा डालेगा ।
लोभ और लालच-पाखण्ड घेरा घालेगा ।
विरला ही बन्दा कोई, रब को रिझायगा ॥ १६ ॥

बनेंगे लिफाफे होगी, अन्दर से पोल जी ।
बजते बरातों में, बहुत जैसे ढोल जी ।
'थोथा चना बाजे घणा' वक्त बतायगा ॥ १७ ॥

गधे को भी स्वार्थ से, सब बाप कहेंगे।
स्वार्थ बिना तो दूर बाप से भी रहेंगे।
सीधे मुख भाई को भी, भाई न बुलायगा ॥ १८ ॥

बनेंगे पथिक लोग, मर्जी की राहों के।
और के ही और होंगे, नक्शे विवाहों के।
कोई ही कड़ाही को, बरात को चढ़ायगा ॥ १९ ॥

कोई-कोई टीचर यों, टयूशन चलायेंगे।
करके किवाड़ बन्द, विद्या पढ़ायेंगे।
कान-पूंछ कोई भी न, आदमी हिलायगा ॥ २० ॥

दोजख न कहीं पै, न कहीं सुर-लोक है।
देखकर कहो कौन आया परलोक है"।
गीत नास्तिकता का, यों जग गायगा ॥ २१ ॥

तरसेंगे लोग दूध, दही को-मलाई को।
असली घी मुशकिल, मिलेगा दवाई को।
जो बर्फी से बिस्कुट, बदला चुकायगा ॥ २२ ॥

'चन्दन' चलेंगे चाल, लोग इस ढंग की।
सत्संग छोड़ लेंगे, राह राग-रंग की।
सूत्रों को बिरला ही, सुनेगा-सुनायगा ॥ २३ ॥

।। नेम तोरण पर आये ।।

नेम तोरण पर आए भारी भीड़ हो गई ।
पशु क्यु रोए, क्यु दौडे, होय क्या बात हो गई ।। नेम....१ ।।

बरात बडी भारी, देखे नर नारी, घोड़ा और हाथी बराती ।
देखो कानो में कुण्डल, अति प्यारे थे ।।
गले मोतियन की माला के नजारे थे ।
बैण्ड बाजा बाजे की आगे, होय क्या बात हो गई ।। नेम....२ ।।

पशु कुलराए की, नेम फरमाए, क्यु बाड़ा भरवाए बताए ।
सारे पशुओ का भोजन बनाया जाएगा ।।
जो बराती आए उनको जिमाया जाएगा ।
रथ को मोड़ो की दौड़ो, होय क्या बात हो गई ।। नेम....३ ।।

सुन नेम पिया, क्या जुल्म मैंने किया, राजुल का दुखे जीया हो पिया ।
नेम राजुल को छोड कर मत जाइए, मेरा कोई नही मत ठुकराईए ।।
मैं भी दीक्षा लुंगी चलुंगी, होय क्या बात हो गई ।। नेम....४ ।।

राजुल ने समझाए, सहेलिया सारी आवे ।
समझ नही आवे मनावे, काकड़ डोरा राजुल ने अब तोड़ दिया ।।
काजल टीकी, सोलह सिगार छोड़ दिया ।
महल में न रहना यह कहना, होय क्या बात हो गई ।। नेम....५ ।।

सुनो राजुल प्यारी, यह झूठी दुनियादारी ।
गिरनार की तैयारी, हमारे जोडी बिछड़ रही है ।।
छोड़ चले परवार, आशा पुरी करूगा, लुगा संयम भार ।
झुंठी दुनियादारी तुम्हारी, होय क्या बात हो गई ।। नेम....६ ।।

दया दिल आई, बंधन छुडवाई, की गिरनार जाई सुन भाई।
नेम राजुल, गिरनार पर संयम लिया॥
पिव से पहले, राजुल ने मोक्ष पा ही लिया।
"चुन्नु मुन्नु" गावे सुणावे, होय क्या वात हो गई॥ नेम....७॥

॥ उठ परदेसी प्रभात हो गई ॥

(तर्ज—इक परदेसी मेरा दिल....)

उठ परदेशी ! प्रभात हो गई।
सोते-सोते तुझे, सारी रात हो गई॥ १॥

सोया क्यों तू निन्दिया में, पाँव को पसार के।
देख जरा एक बार, अखियां उघाड़ के।
विदा तेरे साथ की, जमात हो गई॥ २॥

झूमते हैं फूल ये जो, खिली गुलजार है।
चन्द रोज दुनिया की, रौनक-बहार है।
कहके ये रवाना, बरसात हो गई॥ ३॥

रात को ईशारों में हीं, कहा यों सितारों ने।
मिटना है फौरन ही, सुन्दर नजारों ने।
होने ही उजेला, सच्ची बात हो गई॥ ४॥

दूर तू हटा के झूठे, मोह-अभिमान को।
जपा कर दिन रात, प्यारे भगवान को।
'चन्दन' से तेरी मुलाकात, हो गई॥ ५॥

—❁—

* प्रत्याख्यान सूत्र *

॥ नवकारसी ॥

उग्गए सूरे नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि. चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं । अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, वोसिरामि ।

॥ पौरुषी ॥

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं खाइमं, साइमं । अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।

॥ पूर्वार्द्ध (दो पोरसी) ॥

उग्गए सूरे, पुरिमड्ढं, पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं । अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

॥ एकाशन ॥

एगासणं पच्चक्खामि, तिविहं+पि आहारं-असणं खाइमं, साइमं । अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारणेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं, *महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।

+ यदि चौविहार करना हो तो 'चउव्विहं' कह कर 'असणं' के बाद 'पाणं' भी कहना चाहिए ।

* परिट्ठावणियागारेणं साधुओं के लिये बोला जाता है ।

॥ एकस्थान ॥

एक्कासणं एगट्ठाणं पच्चक्खामि तिव्हंपि चउविहंपि आहारं-असणं, पाणं खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं सागारियागारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

॥ आयम्बिल ॥

आयंबिलं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-गारेणं लेवालेवेणं उक्खित्तविवेगेणं गिहिसंसट्ठेणं, परिट्ठ वणियागारेणं महत्तारागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं वोसिरामि।

॥ उपवास बेला तेला आदि ॥

उग्गए सूरे, अभत्तट्ठं+पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं परिट्ठावणियागारेणं, महत्तागारारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

+ वेला के लिये छट्ठ भत्तं, तेले के लिये अट्ठ भत्तं, चोले के लिये दसमं पांच के लिये दुवादसं, छः के लिये चोदस इस प्रकार हर आगे एक २ दिन के आगे दो दो भत्तं बढ़ा देने चाहिये। या जितने उपवास के पच्चखाण करना हो उसके दुगने कर दो जोड़ कर उतने भत्तं बोलने चाहिये।

॥ दिवसचरिम ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

॥ अभिग्रह ॥

अभिग्गहं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

॥ निर्विकृतिक (नीवी) ॥

विगइयओ पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

॥ प्रत्याख्यान पारने का पाठ ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं......पच्चक्खाण कय त पच्चक्खाणं सम्म काएणं, फासियं पालियं, तोरियं, किट्टियं सोहियं आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ दया के पच्चक्खाण ॥

द्रव्य से हिंसाआदि पांच आश्रव के, क्षेत्र से लोक प्रमाण क्षेत्र में, काल से सूर्योदय तक, भाव से एक करण एक योग + से पच्चक्खाण, न करेमि कायसा तस्स भते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसि-रामि ।

+ या जितने करण योगो से लेनी हो उतने कहना ।